

अमरीकी इतिहास
की
रूपरेखा

यूनाइटेड स्टेट्स इन्फ़ॉर्मेशन सर्विस से जो बातें बहुधा पूछी जाती हैं उनमें से बहुतों का सम्बन्ध अमरीकी इतिहास से होता है। इस पुस्तक में उनका उत्तर संक्षिप्त और मुलम रूप में देने का और इस राष्ट्र के विकास की तथा उसकी प्रमुख विचार-धाराओं की दिशा का संकेत करने का यत्न किया गया है। यह संयुक्त राज्य अमरीका का पूर्ण इतिहास नहीं है। इसमें जिस ऐतिहासिक काल का विवरण कुछेक पृष्ठों में दे दिया गया है उसका प्रत्येक भाग विद्वानों द्वारा पूर्ण खोज का विषय बन चुका है। पृष्ठ १५८ पर, पाठकों की सुगमता के लिए, अमरीकी इतिहास के पूर्णतया अध्ययनार्थ, कुछ प्रामाणिक ग्रन्थों को सूची दी गई है। आशा है कि यह पुस्तिका अपने विषय का परिचय देने के लिए उपयोगी और ज्ञान का आदान-प्रदान करने में तथा अपने पाठकों और संयुक्त राज्य अमरीका की जनता को एक दूसरे को समझने-समझाने में सहायक सिद्ध होगी।

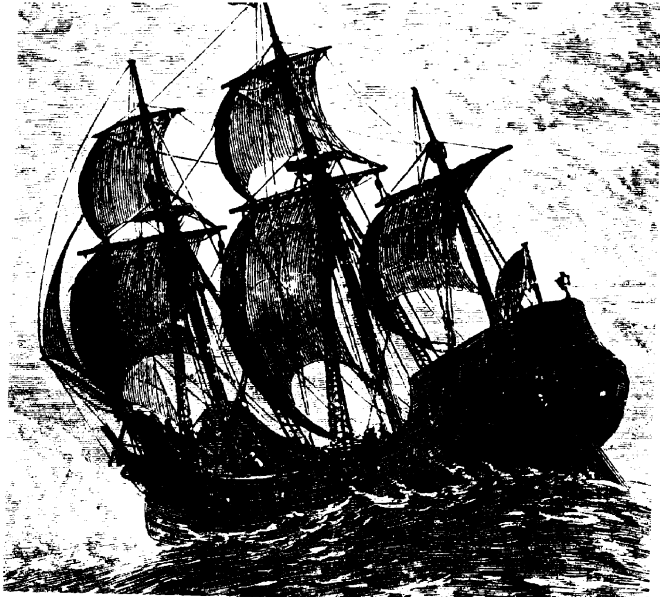
यह पुस्तिका फ्रांसिस हिट्टने ने तैयार की। परिवर्धन नयन मिलक ने किया। परामर्शदाताओं के नाम हैं : ड जार्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी (वाशिंगटन डी सी) के इतिहास के प्रोफेसर डा. बुद ग्रं और कोलम्बिया यूनिवर्सिटी (न्यूयार्क) के इतिहास के प्रोफेसर डा. रिचर्ड हाफस्टाडर।

चित्रों के लिए हम आभारी हैं : बार्ड्सवर्थ एन्थोनियस; न्यूयार्क हिस्टोरिकल सोसाइटी; पेन्सिलवैनिया एकेडेमी आब फाइन आर्ट्स; केंटरलिनस लियोग्रैफिक मेग्युफ़बर्चरिंग कम्पनी; येल यूनिवर्सिटी आर्ट गैलरी; न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी; डिपार्टमेंट आब

पब्लिक बिनिङ्गम, वास्टन (संथायुसेट्स); हिस्टोरिकल सोसाइटी आब पेन्सिलवैनिया; इन्टरनेशनल हाबैस्टर एक्सपोर्ट कम्पनी; स्टेट हाउस, संक्रामेण्टो, कैलिफोर्निया; टेनेसी बेलो एथारिटी, डिपार्टमेंट आब आर्मी; डिपार्टमेंट आब डेनेवी; डिपार्टमेंट आब द ट्रेजरी

विषय-सूची

	पृष्ठ
१. औपनिवेशिक काल	७
२. स्वतन्त्रता की प्राप्ति	२६
३. राष्ट्रीय सरकार का स्वरूप-निर्माण	४६
४. पश्चिम दिशा में विस्तार और प्रादेशिक मतभेद	६४
५. प्रादेशिक संघर्ष	८०
६. विस्तार और सुधार का युग	१००
७. विदेश में संघर्ष और स्वदेश में सामाजिक परिवर्तन	१२०
८. आधुनिक संसार में अमरीका	१३६



मेसलावर नामक जलवाहन

ओपनिवेशिक काल

“आरम्भ की वसतने के लिए इस स्थान की व्यवस्था करने में स्वयं और पृथो कभी भी इतना अधिक सहमत नहीं हुए।”

—जान रिमथ

वर्जिनिया उपनिवेश के संस्थापक, १८०७

सन्तुष्टि की वसतनी में लेकर अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक के कोई भी वर्षों तक यूरोप के अमरीका जाकर क्या बगने वाले आप्रवासियों का एक प्रवाहना चलता रहा। यह तुफानी प्रवाह टनिहाय की उन महानतम घटनाओं में से एक है जिनमें आबादी का बड़े पैमाने पर स्थानान्तरण हुआ है। दार्शनिकायती किन्तु विविध प्रयोजनों में प्रेरित इस आन्दोलन के फलस्वरूप एक विश्वासान कल्प प्रदत्त में एक नये राष्ट्र का उदय हुआ। आन्दोलन की प्रकृति ने एक अज्ञात महाद्वीप के गुण-धर्म और उसके भविष्य का स्वरूप प्रदान किया।

आज, संयुक्त राज्य अमरीका दो मुख्य दार्शनियों की देन है—विशेष विचारों, रीति-रिवाजों और राष्ट्रीय विधिगतताओं के यूरोपीय लोगों का आप्रवासन और इस नये देश का वह प्रवाह जिनमें उनमें निर्दिष्ट यूरोपीय सम्पत्ति के स्पष्ट लक्षणों में ओषित गुणधर्म हैं। आरम्भिकता के परिणामस्वरूप, ओपनिवेशिक अमरीका यूरोप का ही एक प्रत्यय था। एकात्मिक पार करने, एक के बाद एक, अर्थों, फार्मियों, जर्मनों, स्मार्टलेण्डवासियों, आयरलेण्डवासियों, डचों, स्वीडों और दूसरे विभिन्न लोगों के समूह आये और उन्होंने इस नये समार में अपनी आदतों और परम्पराओं को प्रतिरोधित करने के प्रयत्न किये। किन्तु अन्तिममें रूप में, अमरीका की निर्दिष्ट भौगोलिक स्थितियों की शक्ति, विविध राष्ट्रीय समूहों का परस्पर व्यवहार एवं एक दूसरे पर पड़े वाला प्रभाव और एक नए व अप्रोक्ष महाद्वीप में पुराने समार के गौरवशाली की बनाए रखने की शक्ति में आने वाली कठिनाइयों के कारण भी अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। व परिवर्तन धीरे-धीरे और प्रारम्भ में तो बहुत ही सूक्ष्म रूप में हुए। किन्तु उनके परिणामस्वरूप एक नये सामाजिक-आदर्श की रचना हुई जो यद्यपि अनेक वसतों में यूरोपीय समाज में मिलता-जुलता है फिर भी जिसका गुण-धर्म व चरित्रविशेष स्पष्टतः अमरीकी है।

जो राज्यक्षेत्र आज संयुक्तराज्य अमरीका के नाम में प्रसिद्ध है उसके लिए आप्रवासियों के पहले जहाजी-काफिले ने पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में होने वाली अमरीका की खोजों के भी से अधिक वर्षों बाद ऐतिहासिक पार किया। बीच के वर्षों में मैसिकों,

वेस्ट इण्डोस और दक्षिणी अमरीका में उपनिवेशीय स्थानों उपनिवेश स्थापित किए गए। उनमें अमरीका आने वाले ये यात्री छोटे और बेरहमी के साथ उपाहार भरे हुए जलयानों में आते थे। अपने छः में बाहर गयाह के टम गाकर में उन्हें स्वल्पाहार पर ही निर्भर करना पड़ता था। अनेक जलयान तुफानों की भेंट हो जाते थे। अनेक यात्री रातों के निकार होकर दम तोड़ देते थे और शिष्य नां शायद ही कभी यात्रा के अन्त तक जीवित रह पाते थे। कभी-कभी प्रचण्ड आंधियां रातों का उनके निर्दिष्ट मार्ग में हटाकर दूर, बहुत दूर, बाह्य ले जाती थीं और अन्तमें प्रस्थान स्थलों में वह जान के कारण जलयानों की यात्रा अत्यन्त रूप में विफल हो जाते थीं।

व्याकुल और उद्विग्न यात्रियों को अमरीकी तट के दलित माय में अवर्णनीय शक्ति मिलती थी। एक वृत्तान्त लेखक ने लिखा है “छत्तीस मील की दूरी में ही वायु सर्वोत्कृष्ट गुणों में सम्पन्न उद्यान की सुश्रुति समीर जैसी सुगंध लयती थी।” ओपनिवेशिकों को इस नये प्रदेश की प्रथम आरंभिक शक्ति अनेक ही नक्षत्रियाणों के रूप में मिली। विविध प्रकार के पशुओं में मूक और बहुत ही पना वह वन उपर में मन में लेकर दक्षिण में जाँचिया तक फैला हुआ था और मन्वे अर्थों में मूर्च्छा का लक्षणा था। वहा बरुमार धूप और लकड़ी मीठ-दो थी। वहा मसाना, फार्मियों की दम्बुओं, अज्ञानों के साथ ही पेटाया, रत और नौ-नालम सम्बन्धी आरम्भिक वस्तुओं के बनाने में काम आने वाला कच्चा माल भी उपलब्ध था।

वर्जिनिया नामक उपनिवेश के संस्थापक जान रिमथ ने इस उपनिवेश के बारे में लिखा है कि आरम्भ की वसतने के लिए इस स्थान की व्यवस्था करने में स्वयं और पृथो कभी भी इतना अधिक सहमत नहीं हुए। परिणतवातिया नामक उपनिवेश के संस्थापक विलियम पैन ने अपने उपनिवेश के सम्बन्ध में लिखा है कि वहा की वायु सुगंध और स्वच्छ है और मनाजल शान्त और निर्मल है। मायम की भाँति वहा पैदा होने वाले स्थानीय माय-नादाधों भी उस आश्चर्य के थे। वहा के समुद्र में बीसपटर, कैकटर, काड एवं लाभटर किस्म की मछलियों की बहुतायत थी। जपानों में, ‘माटी और अविश्वनीय वजन’ की टिफिया, बटरे, मिलहॉरिया, नींनर, बारहमाहा, कडहन के

अलावा इनके अधिक ज़िहन पाये जाते थे कि अनेक स्थानों पर ज़िहन का गोल अतिवृद्धा में ढाया जाने वाला मांस मसबहा जाने लगा था। कल-मेवा आदि सर्वत्र और स्वन-पेदा होने थे और वीर्य ही इस बात की खोज भी कर ली गयी कि मटर, मिम, मकका और कद्दू जैसे ठोस आहार मसबहा में उपाये जा सकते हैं। नवागन्तुकों को वीर्य ही यह भी मान्य हो गया कि बड़ा अनाज पंदा किया जा सकता है, फलों के पोषा की कलमें बढ-पोड सकती है। नये प्रदेश में गाय, बकरी, भेड़ और मुन्नर का पालन भी बढने लगा।

भूमि कैसे आबाद हुई

एक महादीप के ऊपर प्रकृति की विवेक कृपा थी। वह विविध प्रकार के प्राकृतिक माधुनों में सम्पन्न था फिर भी जिन वस्तुओं का उत्पादन बड़ा पर बमने वाले लोग नहीं कर सकते थे, उनके आवास के लिए युरोप के साथ व्यापार करना जरूरी था। इसके लिए महादीप का समुद्र-तट बहूत ही उपयोगी सिद्ध हुआ। नौन में ऊपर तक माग-रतट में स्थान-स्थान पर असह्य खाड़ियां व ऐसे उपयुक्त स्थान थे जहां बन्दरगाह बनाये जा सकते थे। मैन में कनेबक, कनेबिडकट, न्यूकार्क में इडसन, पेन्सिलवानिया में मसबेहाना, वजिनिया में पोर्टोमैक आदि अनेकानेक बड़ी-बड़ी नदियां थी जो तटवर्ती मैदानों को बन्दरगाहों में जोड़ती थी। वहां में आम युरोप तक जहाज-रावी द्वारा गोष्ठा मसबन्ध था। किन्तु उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट की अनेक बड़ी-बड़ी नदियों में कनाडा की मेण्ट लारंगन नदी ही ऐसी थी जो महादीप के भीतरी भागों में पहुँचने के लिए जलवाले का काम दे सकती थी। उस नदी पर तब प्रार्थीनियों का अधिकार था। इसलिए जलमार्गों के अभाव और उपार्थनिमित्त पब्लेन राज्यवाओं के अवरोध के कारण लोग काफी अल्पक समुद्र-नदीय मैदानों में आम बढकर भीतरी प्रदेशों में जाने के मायने में हनोमगाह होने लगे। केवल साँडे आदि जीवाणियों का फलने पाल निकारी और व्यापारी ही तटीय प्रदेश में आम भीतरी प्रदेशों में जाते थे। वस्तुतः एक जनाब्दी तक पूर्वी समुद्र तट पर ही उपनिवेशियों में अपनी बस्तियां बसायीं।

सागर तट पर जहां-जहां माधुनों के आने के स्थान थे, वहां-वहां में उत्तर और दक्षिण में आबादी का विस्तार सबसे पहले तट के किनारे-किनारे तथा नदियों के निकट हुआ। अनेक उपनिवेश स्वाधीन समुदाय थे और समुद्र तक की निकायी के लिए उनके पास अपने निजी मार्ग थे। इन उपनिवेशों के अलग-अलग होने तथा विस्तारों के बीच की दूरी के कारण एक-केंद्रीय व एक ममान शासन का विकास नहीं हो सका। अर्न्तिक, हॉक उपनिवेश एक अलग इकाई बनता गया और उसमें उनका अपना मौलिक स्वतन्त्र इतना दृढ़ होता गया कि वहाँ आम चलकर मयूकलराय अमरीका के इतिहास में 'राज्यों के अधिकार' की भावना का आधार बना। किन्तु वैश्विकक आरम्भाभिवानकी उप

प्रदति के बावजूद प्रारम्भिक काल में ही व्यापार, नौ-पालन, वस्तु-उत्पादन, और मुद्रा की समस्याओं को हल करने के लिए विभिन्न उपनिवेशों के बीच की प्राचीन तोड़ी गयी और यह जरूरी हो गया कि इन मसबन्ध में कुछ नये नियम बनाए जाएं जो सभी पर लागू हों। वीर्य रूप में यहाँ वह नथ्य था जिनमें आम चलकर इम्पेण्ट में मुक्ति पाकर, स्वतन्त्र हो जाने पर एक मसबन्ध के निर्माण का मार्ग प्रखर किया।

मनुष्यों जनाब्दी में उपनिवेशियों का आगमन माधुधारी के साथ किये गये नियोजन व प्रबन्ध का परिणाम नौ था ही साथ ही यह बेमसबन्ध सर्व और बन्दे का काम भी था। बमने वाले लोगों को समुद्र पार ३ हजार मील दूर जाना पड़ता था। उन्हें बनों, कपड़ों, बीजों, औजारों, अवन निर्माण की वस्तुओं, पशुओं, इधियाओं और गोलाबन्द की जरूरत पड़ती थी। दूसरे मोकों पर दूसरे देशों की उपनिवेश बमाने की नीतियों के विपरीत इम्पेण्ट वे हॉमिगान्ड इस आशयाम में वहां की गरकार किमी प्रकार को कोई मद्दायता नहीं दे रही थी। केवल गर-गरकारी दल या व्यक्तियों ने ही इसमें पहल की थी। वजिनिया और पेन्सिलवेनिय नामक दो उपनिवेश दो साम्प्रतिक (चाटर्ड) कम्पनियों द्वारा मसबन्धित किये गये थे जिनमें निजी विनियमकलाओं की पुत्री लगी हुई थी। कम्पनियों द्वारा यह निधि उपनिवेशियों को अत्यायक माधुनों में लंब करणे, उन्हें ले जाने और उनके निर्वाह पर सब की गयी। न्यू हेबन (जो बाद में कनेबिडकट राज्य में मिला गया) नामक वस्ती के भागमें में मसबन्ध आश्रयियों ने गरिबहन, परिचरों के लिए मात्र-मामान और नोकरीं आदि का सब स्वर्ण ही बढाविल किया था। न्यू हेरमफिकर, मैन, मेरीलैण्ड, उत्तरी व दक्षिणी कैरोलाइना, न्यू-जर्सी और पेन्सिलवानिया नामक बस्तियां शुरू में उन माधुनों की थी जो अबज रईसों में से या कुलीन घरानों के थे। इन्हीं इम्पेण्ट के राजा की ओर में वहां जागरीं दी गयी थीं और इन्होंने जागीरदारों की रमितय में अपने धन व माधुनों के बल पर उन लंबों में काबलकार व नौकर बनाये, शीक उद्योग तटवर्ती के तट स्वर्य अपने देश में जागरीं दी गयीं हों। उदाहरणार्थ, चार्ल्स प्रथम ने मेरिलैण्ड के लॉर्ड बार्निट्जर) और उनके उत्तराधि-कारियों का उस महादीप में लगभग २० लाख एकड़ भूमि का प्रनुदान दिया जो आम चलकर मेरीलैण्ड राज्य के साथ थे प्रसिद्ध हुई। उत्तरी और दक्षिणी कैरोलाइना तथा पेन्सिलवानिया के शत्रु चार्ल्स द्वितीय द्वारा अनुदान में दिये गये थे। तकनीकी दृष्टि में ये माधुिक और साम्प्रतिक कम्पनिया इम्पेण्टके राजा के किरायदार थे किन्तु वे इन बढ-ढेड़ इलाकों के बढने में राजा को केवल नामकार की अदायगी ही करते थे। उदाहरण के लिए, प्रथिवर्य लॉर्ड बार्निट्जर वहां के मूल निवासी इंडियनों के दो तरी के कलक और विलियम पेन दो इकाइयों की खाल राजा को भेंट किया करते थे।

कुछ उपनिषदों का विकास भिन्न-भिन्न दूसरी ग्रन्थों के अंग के रूप में हुआ था। रूद्रोद्धार-उद्देश्य और कैवेन्द्रकण्ड की उन ग्रन्थों ने बताया था जो मैसायुमेरुम में आय चंडा समूहों न्यू-इंग्लैण्ड का पितृ-उपनिषद थे। आज्ञिका नामक एक दूसरी ग्रन्थी जैम्य एडवर्ड ओपेन्हाइम तथा कुछ दूसरे परंपराकारी ग्रंथों ने अधिकांशतः एक कथानक की भावना में प्रेरित होकर बसायी थी। उनकी यात्राया यह थी कि उद्देश्य की कठोर में कृपों कैदियों को छुड़ाकर उन्हें जहाँ अवशेषों में रखा जाय और यहाँ उन्हें एक ऐसे उपनिषद में बसाया जाय जो दक्षिण के स्पेनवासियों के विरुद्ध एक परकीटा गिद्ध हो। इसी द्वारा १९०८ में स्थापित न्यू इंग्लैण्ड नामक उपनिषद १९०० बाद अंग्रेजों राज्य में मिला लिया गया और उसका तथा नाम न्यूसाक रखा गया।

उपनिषदियों का अपना पूरा ही धर छोड़ने की प्रथा होने वाला एक अकेला सर्वोच्चिक उनके कारण यह था कि उनमें अधोदाहृत अधिक आधिक उपनिषद के अवसरों की आकांक्षा थी। इस आकांक्षा का बल देने वाला दूसरे तत्व थे धार्मिक स्वधीनता की अभिलाषा, राजनीतिक दमन में बचने का महान् आर सार्वभौमिकता का करने का लोभ। १९१० में १९१५ तक उद्देश्य को अनेक आधिक कौन्सिलों का सामना करना पड़ा। बड़ी तादाद में लोग राजकारण हो गये। यहाँ तक कि कुण्डल में कुण्डल कारीगर भी भिन्न गेट करने लायक आधुनिक ही कर पाला था। फलतः की लम्बी ने संभावित की और भी बड़ा दिया। उसके साथ ही एक दुर्लभ कविता-संगीत इन उद्योग में कल्पों की बजाये रहने के लिए कश्चि इतनी को माय प्रत्यय बड़ ग्रीची की उदात्त भद्र पालने वाले उस सचि पर अतिरिक्त करने लगे कि पर अब तक लगी होनी थी।

धार्मिक स्वतन्त्रता की तलाश

सामान्य की बात है कि मास्डरों व मखडों आधुनिकी की धार्मिक उद्यम-पुनर्न के त्रामाने में परिचित करनेवाले वाले स्त्री-पुरुषों की एक अमान ने इंग्लैण्ड के स्थापित करने में आधुनिक मुधारों की मांग की। अनिवासेतः, उनका कोषेक्ष यह था कि विशेष रूप में जहाँ तक व्यक्ति के प्रति चर्च का दायित्व है, राष्ट्रीय चर्च का और भी अधिक प्रोत्साहित बना दिया जाय। उनके मुधारवादी विचारों में जनता के दो हिस्सों में बंट जाने और राजकीय चर्च की एकता की क्षति द्वारा राज-गता के लक्ष्य होने का स्वतंत्र पंदा ही गया। 'मैग्रेटिस्टम' नामक एक रिकल पथ का यकीन था कि उनकी रीच के मुताबिक स्थापित चर्च का मुधार कर्मो ही ही नहीं सकता। जैम्य प्रथम के सामन्त-काल में ऐसे लोगों का एक समूह—जिसमें देशतः के सामान्य लोग थे—उद्देश्य छोड़कर लेखन (हालैण्ड) चला गया, जहाँ उम अपनी उन्नातुमर धर्म का पालन करने की

उद्यत थी। कुछ वर्षों बाद इसी लोगों में से कुछ ने नई दुनिया में जाने का निर्णय लिया जहाँ उन्होंने १९२० में न्यू एन्ग्लैण्ड के 'पैपलियम' नामक उपनिषद की स्थापना की।

१९२५ में यहाँ प्रथम के मिहाराकाह होने के तुरन्त बाद ही एंग्लैण्ड नेताओं का उस स्थिति का सामना करना पड़ा जिसे वे बड़ा हुआ अथवा अन्त्याचार समझे थे। ऐसे अनेक पादरियों ने, किंतु बचन या उपदेश देने के अधिकार में बाँध कर दिया गया था, अपने अनुयायियों का एकत्र किया और दूसरे परम्यायियों का अनुकरण करने हुए वे भी अमेरिका की यात्रा पर निकल पड़े। फिर भी, १९३० में परम्यायेंतय का 'कौन्सिल' की स्थापना करने वाले इस दूसरे क्रम के लोग में आप्रवासियों के पहलू क्रम की तुलना में अधोदाहृत अधिक लोग सम्भव और अन्त्या स्थिति के थे। अगल इस वर्षों में कोई अपना दबने अथवा उपनिषदों पर परिचित की मध्य-रज्य गये। किंतु, धार्मिक कारणों से अमेरिका आकर बसने वाला वे भिन्न परिचित ही नहीं थे। उद्देश्य में क्वैरों के परिचय के प्रति असन्तोष होने के कारण ईश्वरियम पन ने पालिन्दकानिया नामक उपनिषद बनाने का दायित्व सम्भाला। बहुत बुरे इसी भावना में प्रेरित होकर मैगल हेल्बर्ट ने अनेक कथारिका के लिए 'मैग्रेटिस्टम' नामक उपनिषद की सम्स्थापना की। पालिन्दकानिया और उसमें कैवेन्द्रकण्ड के बचने से उपनिषदवादी जर्मनी और आयरलैण्ड के थे। वे बड़ा अधोदाहृत अधिक धार्मिक स्वतन्त्रता और अधिक अस्वयं की तलाश में आए थे।

धार्मिक कारणों का साथ ही राजनीतिक विचारों ने भी बहुत से लोगों का अमेरिका जाने के लिए प्रेरित किया। उद्देश्य में १९३० के दशक में यहाँ प्रथम में भूमिगत व स्वच्छाचारि वासन करने का प्रथम किया किन्तु लोगों की नई दुनिया में जाने और बड़ा बसने के लिए प्रेरित किया। बाद में कमबल के लक्षण में यहाँ के विग्रेथिया द्वारा की गई कानि और उनके मास्डरों के परिणामस्वरूप अन्त्या दशक में राजा के 'आदर्श' नामक अनेक कैवेन्द्रकण्ड का वीरविद्या में जल्दा भाग्य आभवाते आया गया। जर्मनी में विभिन्न छोटे राजाओं की विधागत धर्म-सम्बन्धी दमनात्मक नीतियों तथा यूद्धों की लम्बी ताकित ने जहाँ वाले किचक और विनाश में मखडों आधुनिकी के आरिगरे दमकों में तथा अट्टारुनकी आधुनिकी में अमेरिका आने तक आप्रवासियों की संख्या में और भी ज्यादा वृद्धि कर दी।

बहुत कम लोग यात्रा-व्यय वहन कर सके

बहुत न उदाहरण ऐसे भी मिलते हैं कि किंग-गुपीपुषों का अमेरिका में आकर नया जीवन प्रारम्भ करने में जरा भी रुचि नहीं थी उन्हें भी उपनिषद बनाने के कारण में

लगे लोगों द्वारा बड़ी चतुर्गई में बड़ा जाने के लिए राजी कर दिया गया। विविधयम पौन ने नत्तागन्तुकों के लिए पैमिल्लवानिया उपनिवेश में प्रतीक्षा करने हुए लोगों और अवसरों को जिग ब्रम में प्रचारित किया वह आधुनिक विज्ञान कला की आरंभ करने करता है। अज्ञात के कलाओं को उस जमाने में किसी काम का नोकरों के लिए किसी आदमी को नंगार कर लेते वर बड़-बड़ पार्लियामेंट भिन्ना करने थे। इसीलिए वे ऐसे कर्मचारियों व अधिकारियों को समुद्र पार ले जाने के लिए भूरे वायव्यों में लेकर जब्तन उड़ा ले जाने तक के सभी तरीके इस्तेमाल करने थे और अपने बजट में उसकी प्रभावानुसार ज्यादा-ज्यादा व्यक्तित्व ले जाने का प्रयत्न करने थे। व्यापारीशो और जल-अधि-कारियों को इन बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता था कि वे अग्रगणियों को कागजात का दण्ड भुगतने के बजाय अग्ररीया जाने का अवसर प्रदान करें।

महासागर पार आने वाले बंदुगार उपनिवेशवासियों में साधुप्रतया बहुत ही कम ऐसे थे जो अपना और अपने परिवार का सामं व्यव और इन सब देश में अपने-नवे जीवन का प्रारम्भिक लक्ष्य बर्दाश्त कर सकते। शुरू में आने वाले उपनिवेशवासियों का परिवहन और निर्वोह मन्वधो स्वयं राजनिष्ठा कर्मचारी तथा मंगानुसंग-के कर्मचारी जैसे उपनिवेश बसाने का काम करने वाली एजेंसियों ने किया था। बजट में बसने वालों ने एजेंसियों के लिए उनके के अधिक के रूप में काम करना मन्वर किया। लेकिन जो लोग इस तरह का करार करके तई दुनिया में आए थे उन्होंने शोध ही यह महसूस किया कि नोकरों या भाई पर काम करने के बन्धन में बंधे होने की इस स्थिति में तो वे इंग्लैण्ड में ही अच्छे थे। इस वष्य गोमान में आकर उन्होंने नाहक हो अपनी कठिनाइयों में पड़ि की।

शोध ही यह पद्धति उपनिवेश बसाने की मकलता में बाधक समझी जाने लगी। परिणामतः, अमरीका आकर बसने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने की एक नई पद्धति का विकास हुआ। कर्मचारियों, उपनिवेश मालिकों और स्वन्तन परिवारों न प्रव्यहित आप्रवासियों में ऐसे करार किये जिनके अन्तर्गत उनके द्वारा उठाया गए परिवहन और निर्वोह व्यय के बदले में आप्रवासी ४ में लकर ३ वर्षों तक को एक निश्चित अवधि तक उनके लिए श्रम करने के लिए बाध्य होता था। इस अवधि की समाप्ति पर उसे स्वन्तनता का पुरस्कार प्रदान किया जाता जिसमें कभी-कभी भूमि का छोटा टुकड़ा—आमतौर में ५० एकड़ का—भी शामिल होता था। ऐसे करारों के अन्तर्गत आने वाले आप्रवासी 'कॉन्वर्टेड' कर्मचारी कहलाते थे। अनुमान लगाया गया है कि न्यू इंग्लैण्ड के दक्षिण की बस्तियों में आप्रवासियों में आप्र व्यक्तित्व ऐसे ही करारों के अन्तर्गत अमरीका आए थे। आमतौर में उन सभी लोगों ने करार की शर्तों का कफादारी में पूरा किया। फिर भी, कुछ ऐसे भी थे जो पहले मौके में ही मालिकों को छोड़कर भाग गए। उन्हें

भी, या तो उसी बस्ती में जहां वे पहले आकर बसे थे, या पहांग की बस्ती में रहने व मनी करने के लिए प्रत्यागती वे भूमि मिल गयी।

इस प्रकार की अर्थ-सहायता की व्यवस्था में जीवन प्रारम्भ करने वाले किसी भी परिवार के नाम व सम्मान पर इसके लिए कोई सामाजिक या दूसरी तरह का दांव या लालच नहीं लगाया गया। 'सन्तुनः हरेक बस्ती में अनेक प्रमुख व्यक्ति या तो म्यब 'कॉन्वर्टेड' नोकर थे या उनको मन्तव्यं थे।' दूसरे उपनिवेशवासियों की तरह वे भी उम्र देश की महानतम् परि-सम्पत्तियों के समाप्त व कथोक्त बड़ा को बने बड़ी आरम्भकला यह थी कि वह आबाद हो। वास्तव में बस्तिया और उनकी मकलता में मंचि रखने वाले सभी सम्पत्तित्व समूह, आकर बगने वाले प्रवासियों की मकला के प्रत्यक्ष अनुपात में ही उदय और समृद्ध हुए, क्योंकि भूमि और दूसरे प्राकृतिक साधन असीमित थे और प्रगति इसी तथ्य पर निर्भर करती थी कि उनके विकास के लिए काम करने वाली आबादी किन्तनी है। मन्वधो महा-द्वी के पहले ३५ वर्षों में जो आप्रवासी अमरीका आए उनमें अग्रकों का प्रबल बहुमत था। देश के मध्य-अंच में कुछ शोर्ट में डच, स्वेड, और जर्मन, दक्षिणी कोलोराडोता व दूसरे स्थानों में कुछ फ्रान्सीसी प्रोटेस्टन्ट तथा यहा-यहा इतका-दुक्का मॉन्टी, इतालवी और पुर्तगाली लोग बिखरे हुए थे। लेकिन इन सबको कुल नाराद पुगी आबादी के १० प्रतिशत में अधिक नहीं थी।

अनेक संस्कृतियों का मेलमिलाप

१८८० के उपरान्त आप्रवासियों के आगमन का मुख्य स्त्रांत इंग्लैण्ड नहीं रहा। विविध कारणों में जर्मनों, आयरलैण्ड, स्काटलैण्ड, स्विटजरलैण्ड और फ्रांस में बड़ी मकला में आप्रवासी आए। यज्ञ की आग में बचने के लिए हज़ारों जर्मन यूरोप में भाग आए। सरकार द्वारा डावपी गई शर्तों और दूसरे खर्जीदारों के दमन में बचने के लिए एक बड़ी नाराद में स्काटो-आसरी लोग उनरी आयरलैण्ड में भाग आए। स्काट-लैण्ड और स्विटजरलैण्ड में भी लोग शरीरों के कारण भागे। आप्रवासियों का प्रवाह लहरों के चढाव-उतार जैसा था किन्तु बाहे किसी एक अवधि को क्यों न ले लिया जाय आप्रवागत की पाठा भीर व लयागत ही मिलेगी। १६९० में आबादी लगभग २५ लाख तक पहुँच गयी और १७५५ तक वह हर २५ वर्ष में दूनी होनी गयी। १७७५ में आप्रवासियों की आबादी २५ लाख में भी अधिक हो गयी।

अधिकतर मामलों में, पौर-अग्रज आप्रवासियों ने अपने आपका प्रारम्भ में आकर बसने वालों की संस्कृति के अनुसरण ढाल लिया। फिर भी, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सभी आप्रवासी बड़ा जाकर पूरी तरह अग्रज बन गए। यह सही है कि उन्होंने

अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी कानून, अंग्रेजी रीतिरिवाज और अंग्रेजी विचारधारा का अपनाया किन्तु उन्हें इनके उसी संशोधित रूप में अपनाया गया जो अमरीका में वहाँ की स्थितियों के अनुकूल और अंगीकृत था। यही नहीं, बाद के आर्थिकविकास तथा प्राथम्य में आकर बसने वाली के परम्परा में निष्ठा की प्रक्रिया के दौरान में और भी सांस्कृतिक सुधार प्रयत्न में लाये गये। उसी सांस्कृतिक सम्बन्ध में पंडितजी के परिणामस्वरूप एक अविनाश सम्पत्ति उत्पन्न हुई जिसमें अंग्रेजी संस्कृति और यूरोपीय महाद्वीपीय की सांस्कृतिक विद्योपत्तियों का ऐसा सम्मिश्रण था जो नई दुनिया की परिस्थितियों की भांगों की पूर्ति भी करता था। हालाँकि, अंग्रेज व्यक्ति और उनके परिवारों को, पिता जितनी रीतिरिवाजीय पुनः समाधिगत के, समावेशमय या दक्षिणी कैरीबियाईना छोड़कर अङ्ग्रेजिया या वेनिसुएलानिया जाकर बसने की पूरी इच्छा थी, फिर भी अल्प-अल्प उपनिवेशों की अपनी अल्प-अल्प विद्योपत्तियाँ थीं।

नवाम बस्तियों को तीन स्तर धर्मियों में बांटा जा सकता था। उनमें एक वर्षीय वह थी जिसमें न्यू इंग्लैण्ड आता था। न्यू इंग्लैण्ड मुख्यतः व्यापारिक और औद्योगिक बस्ती बन गया। जबकि उसके दक्षिण में अल्प-पधान समाज का विकास हो रहा था। भूमिहीन स्थिति निष्ठागत तथा थी। न्यू इंग्लैण्ड वर्षों के विकास में चिकने हुए तथा लोक रीतियों के इकाएक पवरीया श्रम का। वहीं की घाटियों के कुछ अपवादस्वरूप बस्ती का छोड़कर वहाँ की मिट्टी आमरीय में रहनी और प्रभावशाली थी। उसके बजाय बहुतराफी समाज अर्थ, धर्म, कानून की पृथक्ता और अन्तर्नीय संघर्षों के कारण यह प्रदेश मनीषाशरी के लिए एक प्रतिष्ठा क्षेत्र मानिये हुआ। लेकिन, न्यू इंग्लैण्ड के कारियों में शीघ्र ही दुर्भेद व्यापकताई परमं खोज निकाली। उदात्त बल-वर्तन में लाभ उठाया और एसी मित्रे स्थिति की हो या नो भेद और वक्ता पीसनी थी या घाटरीयों का काटकर मित्रे के लिए अन्तर्नीय लक्ष्मी पैसा करता थी। समुद्र तट की घाटियों अल्पे बन्दरगाहों की स्थापना में महाप्रयत्न हुई और उनमें व्यापार में प्रति हुई। बौद्ध महाद्वीपों के मुख्य द्वान के कारण अज्ञान बनावे के काम को भी प्रोत्साहन मिला। समुद्र स्वयं ही ठोस सम्पत्ति का सम्भाव्य श्रोत था। बाद नामक महाद्वीप का व्यवसाय ही एक अकेला ऐसा माध्यम था जिसने मंगोलभयम के लक्ष्यों को समाप्त की बनावट दी।

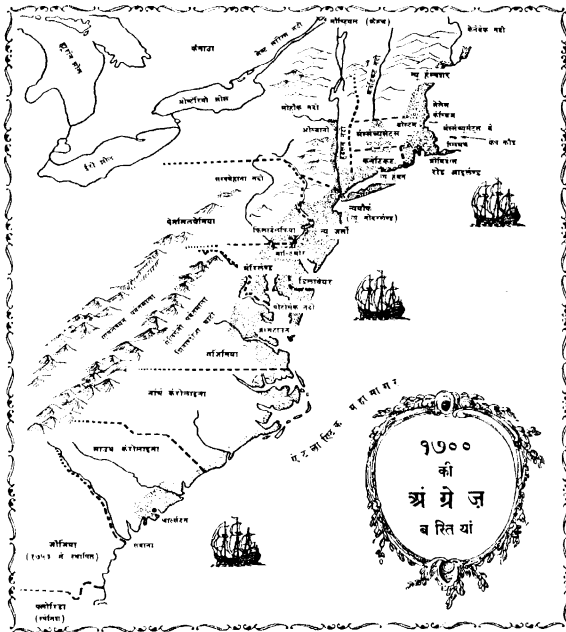
न्यू इङ्ग्लैंड में धर्म का शासन

बन्दरगाहों के अभावम जाते व बस्ती में बसकर न्यू इंग्लैण्ड जगलों में शीघ्र ही घाटी जीवन अपना लिया। जिन लोगों ने अपने नाम व कसबों के निकट ही अपने छोटे-छोटे फार्म बनाये थे उनकी आवश्यकता भूमिहीन चरगाहों व जंगलों में पुरी

होनी थी। ज्यादातर लोग वस्ती के साथ ही दुर्भेद अनेक प्रकार के व्यापार भी करने लगे। प्राथमिक निकटता के कारण मात्र के स्काउ, बच्चे, वस्त्र-सभा और आपसी मलाकायें व विचार-विनिमय सम्भव हो सका और इन सब ने मिल कर नवी विकासशील समाजा पर तबदील प्रभाव डाला। एक नैसी शिक्षकों का सामना करने हुए, एक नैसी पधरीयों भूमि पर वस्ती करने हुए और सामान्य शिक्षकों को व्यापार में लगे हुए, न्यू इंग्लैण्ड-वासियों ने तीव्र धर्म ने अपने में अपने में नैसी तीव्र गूण-धर्मों का निष्ठागत रूप लिया जिसके कारण उनका समाज अपने आपमें विचार और दुर्भेद में अति प्रतीत होने लगा।

कमना, उनके गूण-धर्म व बर्च की मर-उत्पत्ति और समुद्र-यात्रा में प्रतिष्ठ व प्रतिष्ठा एक ही हो जायिकी में प्राथम्य हुई थी जो वेस्टन और एलाइडव में केवल बाद तक आये थे। ये लोग अल्प (वैश्वविद्यालय) कर्मियों के महाप्राधान्य में वैश्वविद्यालय बसने में अति आये थे। किन्तु उनका जलाज हो मंगलाकर के नाम में उन्निष्ठता प्रसिद्ध हो, वैश्वविद्यालय पहुँचकर सुदूर उत्तर के तट में आ गया। कुछ महाद्वीप मात्र मात्राये करने के बाद उन उन्निष्ठता-व्यक्तियों ने वैश्वविद्यालय बने तथा जला पहुँच कर की रूप का विशेष किया। अपनी नैसी स्वर्गी के लिए उपकृत स्थान के रूप में उन्होंने एलाइडव बन्दरगाह को बना और जला-कि वहाँ से घटती घटी वहाँ की वस्ती की तथा बन्दरगाह किड हुई फिर आ लक्ष्मी स्वर्गी उन्ने भेजती हुई बन्दरगाहों की रही।

एलाइडव के लक्ष्मी अपने और अपनी बस्ती के अन्तिम के लिए सफल कर ही रहे थे कि उसके आसपास के क्षेत्र में संस्थापित बस्ती ने आम बन्दरगाह न्यू इंग्लैण्ड और पूरे राष्ट्र के विकास में विशेष रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। यह वस्ती लगभग २५ व्यक्तियों में संस्थापित की थी। उन्ने इंग्लैण्ड के राजा की आज में सादर-पत्र (वाटर) प्राप्त था। उनमें के कुछ राजा स्वयं प्रतीत आये। वे अपने सम्बन्ध बसने के इच्छुक लोगों का एक समुद्र तथा राजा का सामन्त भी साथ। वे अपनी सफलता के लिए दुहा के साथ उत्तम-रूप में। हालाँकि, न्यू इंग्लैण्ड का सब स्वयं में कुछ प्रतिष्ठा मिड हुआ और उनमें में कुछ लोग अपने स्वयं के लिए परमात्मा करने इंग्लैण्ड और भी एवं फिर भी उनमें में प्रतिष्ठाप करी का कर हीन विरोध तथा अपने स्वयं महत्त्व उन्ने के व्यक्तियों के समाज की रचना के काम में जोर मया। बादर हम वर्षों के भीतर वहाँ २५ विद्वान उपदेसक पहुँचे। वे सभी धर्म-साधक के ज्ञान थे। अपने नेताओं की विचार-धारा के अनुसार मंगोलभयम में धर्म-तत्त्व का विकास हुआ और वह स्वाभाविक था था। मिडाना-धर्म और राज्य का पथक सम्भाव्य थी। किन्तु व्यवहार में उन्ने एक मात्रा गया था। सभी संस्थापकों के अतीत की जा रही थी।



इस चित्र में बिन्दु रेखाओं द्वारा अटलार्थिक तट पर इंग्लिश बसियों का विस्तार दिखाया गया है। संगठित बसियां अभी समुद्र-तट से बहुत दूर तक नहीं फैली थीं और भोतरो प्रदेश में मीयाण स्थायी रूप से नहीं बनी थीं। ज्यों-ज्यों पश्चिम की ओर बसियां बढ़ने लगीं, त्यो-त्यो इन सीमाओं के कारण बार-बार भगड़ होने लगे।

वीर ही एक ऐसे सामन्त-वर्ग का विकास हुआ जो धर्मतन्त्रीय और मतावादी था। फिर भी नगर-नामाओं में सांस्कृतिक समझाओं पर विचार-निमित्तय करने के अन्तर्गत प्रान्त में और इस तरह सामाजिक का योद्धा-बहुत स्व-शासन का अन्तर्भव भी प्राप्त हुआ। नगरों का विकास धर्म-संगठन (चर्च) को केन्द्र मान कर ही रहा था फिर भी समस्त आवादी सीमाओं जीवन को आरम्भकलाओं के कारण नागरिक दायित्वों को पुनः और मन्दा-मन्दावर को मजबूती में पुनःपुनः योषादान करनी थी। जो भी, यहाँ तक पादरी व कविवादी रूप स्थापित चर्च के प्रति आस्था बनाए रखने का प्रयास करने गये।

फिर भी, वे प्रत्येक नागरिक के सैनिक का बाधन और परमाण्वुत्त-उत्साहियों का मूढ बन्ध करने में सफल नहीं हुए। एक पंगे ही विद्रोही आन्ध्र राजेर विरुद्धिय य। वे पादरीय और उनका जीवन बड़ा ही निकलकर एतदाय रहित था। वे कानून के विधान में पारमन एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। उन्होंने इण्डियनों (अमेरिका के मूल निवासी) पर कब्जा कर लेने के अधिकार और चर्च एत राय्य को एक बनाकर रखने को बुद्धिमता को लक्ष्यकाय। "संविदुष्टों की मता के विमूढ तथा और सन्तरताक अभिमान" प्रचारित करने के लूमें में उन्हे महात्म्यात्मक ने निर्वासन का दण्ड दिया। उन्हे हूडर अट-लैण्ड के इण्डियनों (अमेरिका के मूल निवासी) ने मरण दिये। बड़ा उन्नीस इस विचारधारा के आधार पर एक नवी बनी उगायो कि अन्तर्धार्मिक विध्वानों के सामने में आन्ध्र को अपनी उन्ना गवर्णर है और धर्म व राय्य यद्वे परम्पर पुनः रह्ये।

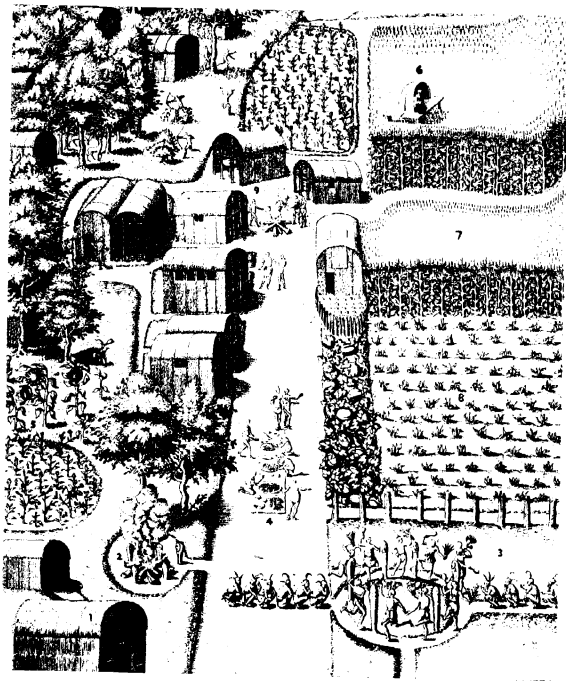
किन्तु मेसाचुसेट्स छोड़कर बाक्य में केवल वे धर्म-विरोधी ही नहीं थे का विचार व आस्था की स्वरूपिता के द्वारा वे। कविवादी परियान ने भी अपेक्षाकृत अच्छी भाँष और अन्तर्भव की मलाय में इस बन्धो ने प्रस्थान किया। उदाहरणार्थ, कनेक्टिकट नदी को घाटी की उर्वरता के समुदाय ने उन्निहितानों को प्राचीनत किया जिन्हे यदा मरण्य असीन होने के कारण अनेक विद्रोहों का सामना करना पडा था। एसी भूमि के लिए जो समतल ही और जिनमें मरुदाएँ तक मिट्टी हो, वे मूल निवासियों के स्वतंत्र का मुका-बला करने के लिए नैवार थे। मन्दाव को बात यह है कि उन मनुष्यों ने सामन्त-व्यवस्था बनाते समय माताधिकार को अपेक्षाकृत व्यापक बना दिया और माताधिकार प्राप्त करने के लिए चर्च का मरदाय होने की प्रावणिक अर्थ का रहू कर दिया। संघाथ में, मेसाचु-सेट्स के और भी बहुत से निवासी उन्नीस शताब्दी में चले गये और वीर ही स्थापना और भूमि की लाल करने वाले लामा द्वारा बर्माई मवी ग्लोर्म्भियर और चर्च नाम की बन्धिया नगण पर उभर आयी।

अर्थात् मेसाचुसेट्स-वर्ग का पचास अन्तर्भव रूप में बाहर विस्तार पा रहा था उसके जीवन की विकास हो रहा था और उसका व्यापार बढ़ रहा था। अन्तर्धी के मध्य में

वह क्षेत्र नेत्री के साथ मन्दाय होता गया। बायुत्त अमेरिका के मध्य में बड़े बन्दरगाहों में गिना जाने लगा। जहाजों का पेटा बनाने के लिए प्राक वृक्ष की लकड़ी, धन्य और मन्तुओं के लिए लम्बे पीठ और सन्धियों में बनने के लिए राक उन्नीस-पुर्वी मलाय में आयी थी। मेसाचुसेट्स-वर्ग के पात-कमान निजी जहाज बनाते और उन्ने मरण्य भर के बन्दरगाहों पर जाने-ले जाने थे। इस तरह उन्नीस एक देश में दूसरे देश तक मास की हुलाई के व्यापार की नीय रम्यो और यह व्यापार निरन्तर बढ़ने के साथ ही उन्नीस पर मन्तुवर्ण भी बनता गया। औपनिवेशिक युग के अन्त तक इन्डिया भण्ड के नीय जिनने ही पात थे उनमें से एक निदाई अमेरिका में बनाय गये थे।

दुसरी श्रेणी मन्तुवर्णो उपनिवेशों की थी। इन बन्धनों का समाज नियम पतार का और मित्र-बन्ध था। न्यू इन्ग्लैण्ड के समाज की तुलना में यह अधिक सहीण्य था। सैनिकबानिया और उनके पास के उपनिवेश दलबन्ध की प्राथमिक सफलता का येय नियमन पेन नामक एक बहुत ही व्यवस्थाभूतल कवचर को था जिनका उदय था— मन्दाय चाल्य विनियोग द्वारा उन्ने अन्तान में दिग्-एत विनाय क्षेत्र में बनने के लिए अन्-गिनन धर्मो, इरियनों और मनुष्यों के लोनों को आरुपित करना। वे सन्तु कर चुके थे कि यह उपनिवेश इस बात का आशय उपनिश्चन करे कि या डालियनो (मूल निवासियों) के साथ सामन्तवत और उदात्तवर्ग का व्यवहार किया जाता है। इसलिए उन्नेने उनके साथ अधिकार और किये बिनका पूरी तरह पालन किया गया और इस तरह उन स्वयं-पदेश में भाग लेनाय रही। बन्धी आशानों के साथ और वीर सनि में उन्नति करनी रह्ये। वे उनके आने के एक वर्ष के भीतर ही नीय हजार वर्षे सामाजिक पैमिन्तबानिया आरम्भ कर गये। उपनिवेश के केन्द्र में फिलाडेल्फिया नामक नगर था जो वीर ही अपनी उपायार और नोडो मरुदा, इत व पन्थो की बनी अपनी उगायन और व्यन्त रहने लगी-सांशियों की उन्नीस-वर्णन हुआ। औपनिवेशिक युग के अन्त तक बड़ा को अवादी ३० हजार श मयो इन्नेने अनेक भाषाभाषी, धर्मो और व्यवस्था के लोय भाषित थे। अन्तर्धी ने सप्त मनुष्यों और मुन्तुवर्णन-वर्णन में अपनी व्योफ-कल्पाय को भावना और सफल व्यावसायिक बृद्धि में इस नगर को उदात्तवर्गी अवादी के मध्य तक औपनिवेशिक अमेरिका की उन्नीस पर फलनी फलनी मन्तुवर्णो बना दिया।

यद्यपि फिलाडेल्फिया में कवचर का प्रभन्व था तथापि सैनिकबानिया के दुसरे स्थानों में अन्त लाना का भी जोर था। अन्त यदाकाल देश में एक बड़ी मन्थो में प्रभन्व लोय आये—नीय निरुद्ध के लिए सामन्तवर्ग को नीय में। वे वीर ही उस पान्त के सर्वोन्म दण्ड विधान मिद्ध हुए। बन्धी, क्विन्ट वमान आदि के कुटुंब उवायो में वे बड़े कुलल थे। उनका यह जान भी उपनिवेश के विकास में बहुत



मोलहरी प्रतापरी के एक कलाकार द्वारा चित्रित
 एक तत्कालीन दुर्गप्रदान (अमरावती के मूल निवासियों)
 बस्ती का स्थान चित्र। इसमें दिखाया गया है : १
 महिला का घर, २ प्राचीन-स्थल ३ पत्तों या उत्सव-
 विद्यालय होनेवाला मत्स्य-समारोह, ४ पीतभोज, ५
 तम्बाकू, ६ खेत का रक्कवाला, ७ भूषका का खेत, ८
 स्क्वाय का खेत, ९ अन्वृत्त-अग्नि, १० जल-प्रदाय

महावपुषं सावित्रं हुआ। नयी दुनिया में बड़े पैमाने पर स्टाडी-आयरी लोगों के आप्रवासन का मुख्य प्रवेश द्वार भी वेनिसलानिया ही था। वे बहुत ही भक्तिवादी सोमालनवासी थे। जहाँ चाहते थे भूमि पर कब्जा कर लेते थे। कहीं बन्दूक के जार पर तो कहीं बाइबिल के अलन उद्धरणों के बल पर वे अपने अधिपतारों की रक्षा करते थे। वे अन्ध गैर-कानूनी कारबाइयों भी करते थे और इमीग्रिएट वे नेकवलन क्वेचरों को दृष्टि में पेशा पहुँचाने वाले व्यक्ति थे। उनके इस दाय में उन्हें उनकी महावपुषं शक्ति बना दिया कि उनका अनुयायी ल्याना बॉटन थे। धर्म, विद्या और जन-प्रतिनिधियों की सरकार में विस्थापन करने वाले ये लोग ज्यों-ज्यों कन्य प्रदेश में आगे बढ़ते गये यों-यों वे सम्पत्ता के अग्रदूत मित्र होते गये।

वेनिसलानिया की आबादी मिन्नी-तुची थी ही, न्यूयार्क भी सत्रहवीं सताब्दी के मध्य में ही यह आभाग देने लगा था कि अमरीका बहुभाषा भाषी लोगों का गानु होगा। हडसन के किनारे-किनारे १६६५ तक एक दर्जन में ऊपर भाषायु मुनायो पढ़ने लगी थी। वहाँ की आबादी में डच, फ्लेमि, वायुनी, फ्रांसीसी, डन, नार्वेवासी, स्वेड, अंग्रेज, स्वाडी, आयरी, जर्मन, पोर्तुगैजवासी, बॉहेमियन, पुर्तगाली और इतालवी आदि शामिल थे। इनमें से अधिकतर लोग व्यापार द्वारा जीविकोपार्जन करते थे। उन्होंने व्यापारियों की सम्पत्ता विमंष की स्थापना की जिसमें भावी पतिव्रतों के गुण-धर्म परिचयित थे।

डचों का प्रभाव

न्यू जितर्लैण्ड, जो बाद में न्यूयार्क के नाम से प्रसिद्ध हुआ, ४० वर्षों तक डचों के अधिकार में रहा। किन्तु ये लोग आप्रवासणी संस्कृति के लोग न थे। हालाँकि वे ही इनके पास काफी जमीन थी। उपनिवेश बसाने के काम में उन्होंने एमा कोर्डे भी राजनीतिक या धार्मिक लाभ नहीं था जो उन्हें पहले से प्राप्त न हों। इसके हाथ ही, नयी दुनिया में बस्ती बसाने का काम करने वाली उनकी 'डच वेस्ट इण्डिया कम्पनी' को एमेशुल अधिकांती मिलने कठिन हो गए, जो आसानी के साथ उपनिवेश का संभालन कर सकते। फिर, १६६४ में, उपनिवेश सम्भन्धी गतिविधियों में ब्रिटेन की रुचि के पुनः जागरण के कारण डचों की बस्तियों को जौन लिया गया। फिर भी, इसके बहुत अगें बाद तक डचों का सामाजिक व आर्थिक प्रभाव पड़ना जारी रहा। यहाँ के मकानों की छतें स्थायी तौर पर उल्हों की स्थापत्य-कला के अनुसरण बनायी गयी और उनके व्यापारियों ने ही गहरा को एक व्यापारिक वातावरण प्रदान किया। यह डच लोगों की आदतें ही थी जिनसे प्रभावित होकर न्यूयार्क के लोगों में दैनिक जीवन के आनन्दों के प्रति एक उदार भाव पैदा हो सका जो कि बास्टन के प्यूरिटन लोगों के शुद्ध जीवन से कटई भिन्न था।

छुट्टी के दिन दाबनों और आनन्द-प्रमाद के आयोजन न्यूयार्क की विशेषता थी। डचों के अनेक रीति-रिवाज, जैसे, वर्ष के पहले दिन परम्परी के यहाँ बधाई देने जाना, उनके साथ बँडकर मद्रिदा पीना, बड़े दिन पर विनोदी सेण्ट निकोलस का आगमन आदि, देश भर में अपनाये गये और वे आज तक प्रचलित हैं।

डचों से ले लेने के बाद एक अंग्रेज प्रशासक ने न्यूयार्क के वैधानिक ढाँचे को ऐसा स्वरूप देना शुरू किया कि वह अंग्रेजी परम्पराओं के अनुकूल हो। उसने यह कार्य इतने धीरे-धीरे और एसी बुद्धिमानी से किया कि वह डचों और अंग्रेजों दोनों में दोगनी सहभाबता व सम्मान प्राप्त करने में सफल हुआ। नगर के शासन-तन्त्र में न्यू इंग्लैण्ड के नगरीयों की भांति स्वायत्त-शासन की विशेषतायें थी और कुछ शर्तों में ही डचों के अकमिष्ट कानून व रीतिरिवाजों और अंग्रेजों की प्रक्रियाओं और पद्धतियों में एक तर्क-संगत व व्यावहारिक सम्मेलन हो गया।

१६९६ तक न्यूयार्क निवासियों की संख्या ३० हजार हो गयी। हडसन, मोहॉक और अन्य गरिवाओं की उर्वर घाटियों में बड़ी-बड़ी जायशदें फली-फली। बड़े कामकाज और पूर्ण स्वाभिव्य वाले छोटे-छोटे किसान दलों ने टम क्षेप के सिन्ड्रिल विकास में योग दिया। घास के मैदानों व जंगलों में वर्ष पर्यन्त डोरी, भेंड़ों, घोंटों व मुशरों के लिए चारा मिलना रहता था। तम्बाकू और तंबाख की उपज आसानी से और काफी मात्रा में होती थी और फल विशेषतः सेब की, पैदावार तो बेमबाध थी। खेतिहर वस्तुओं की उपज के साथ ही फर का व्यापार भी न्यूयार्क और अल्बानी नामक नगरीयों के विकास में बड़ा महावपुषं मिश्र हुआ। अल्बानी जंगे सुदूर स्पिन नगर में फर और दूसरी कृषिगत वस्तुएं हडसन नदी के जलमार्ग द्वारा आसानी के साथ न्यूयार्क के श्वम्भ बन्दरगाह को भेजी जाती थी जहाँ से उनका निर्यात किया जाता था।

वर्जिनिया, मैरीलैण्ड, उनरी व दक्षिणी कैरोलाइना और जार्जिया नामक दक्षिणी बस्तिया प्रशासनः शायोण थीं। उनका स्वरूप न्यू इंग्लैण्ड और बीच के दूरग्रे उपनिवेशों की तुलना में सर्वथा भिन्न था। वर्जिनिया में जंगम टाउन ही वह पहली बस्ती थी जो नयी दुनिया में बच सकी। १६०६ के दिग्मन्त्र के आम्बिरीतियों में लन्दन की एक औपनिवेशिक कम्पनी द्वारा प्रतिष्ठ १०० व्यक्तिवृत्तों का मिश्रित-समूह अपनी महान् साहसिक यात्रा पर निकल पड़ा। उन्होंने स्वर्ण और हीरे जवाहरमन पाने तथा पल भर में ही धनी होने के स्वाद देखे थे। मुनभाव वन प्रदेश में रहना उनका लक्ष्य न था। उनमें से केवल ज्ञान रिम्य नामक व्यक्ति बड़ा ही जीवकवाला और मकल्प का धनी निकला। अपनी कम्पनी, भूखरों और इंडियनों (मूल निवासियों) के निरन्तर खनरो के बावजूद उसकी प्रबल दुच्छा लक्षित ही उस छोटी-सी बस्ती का उनके प्रारम्भिक

वर्षों में बिबरन से बचाये रही। प्रारम्भिक दिनों में प्रबन्धक कम्पनी ने जो सर्वे व शीघ्र लाभ के बचकर पर रहती थी, बस्मी में बरने वालों को फसल उगाते की आज्ञा देने या उनके पहले उनके अपने जीवन-निर्वाह के लिए इन बात की मांग की कि वे नौचालन सम्बन्धी वस्तुओं, लट्टों, ढाँड़ों (कन्द) आदि उन सभी वस्तुओं के निर्यात पर अपने मारे प्रवास केन्द्रित करें जो लन्दन के बाजारों में अच्छे दामों पर बिकी जा सकती थी।

कुछ दुर्भाग्यपूर्ण वर्षों के बाद कम्पनी ने अपनी माँगों में कमी की, उपनिवेश के वाणिज्य में भूमि का विनियम किया और उन्हें अपनी माँगियों को निजी उद्यमों में लगाने की इजाजत भी दी। १६९२ में एक ऐसी घटना घटी जिसने अंततोगत्वा न सिर्फ ब्रिटनिया की बल्कि उस सम्पूर्ण प्रदेश की अर्थ-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन कर दिया। वह महत्त्वपूर्ण घटना थी ब्रिटनिया तम्बाकू के पकाने व मुक्ताने की एक ऐसी नयी विधि की खोज जिसमें वह यूरोप के लोगों को बर्ष के अनुकूल हो सकी। ऐसी तम्बाकू का पकाना जहाँ १६९६ में लन्दन पहुँचा और दस वर्षों के भीतर हर तरह से यह मिश्र हो गया कि तम्बाकू का पीसा आर का एक ठोस एवं लाभकारी साधन हो सकता।

दक्षिण में सेतो का ज़ोर

तम्बाकू को बेचने के लिए नयी और उर्ध्व भूमि की ज़रूरत थी क्योंकि जिस मिट्टी में उसे तोत-चार बार बोया या काटा जा चुका था वह इतनी निर्जीव हो जाती थी कि उसमें उगाई गयी तम्बाकू पलिया जिसमें की नाशित हो जाती लगती थी। इसलिए तम्बाकू को बेचने करने वालों के लिए यह आवश्यक हो गया कि उनके पास दुनया विस्तृत भू-स्वच्छ हो कि वे बीना पकने पर नये क्षेत्र बना सकें। और नूतिक उद्यम की दुहाई और परिश्रम की मुक्तियाँ को गन्ध्या भी महत्त्वपूर्ण थी इसलिए वे लोग उस क्षेत्र के अनगिनत जलमयों के दोनों और फेंके। इन क्षेत्र में अब तक नगर नहीं बने थे। स्थल ज़ेम्सटाउन में ही जो कि राजधानी थी कुछ बाँड़े में मकान थे। तम्बाकू को बेचने वालों को शीघ्र ही दूर-दूर के स्थानों में व्यापार करने का अवसर हो गया। लन्दन, ब्रिस्टल और इंग्लैण्ड के अन्य बन्दरगाहों में उनका माल जाने लगा। वहीं उनकी माल के होट-केन्द्र थे।

ब्रिटनिया के अधिकतम प्राप्रवासी अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने की दृष्टि में आये थे। किन्तु पारिक् व आर्थिक कारणों में उनके पड़ोस की बस्मी में मेरीलेण्ड का विकास हुआ। वहाँ फेलबर्ट परिवार उस नये प्रदेश में कैपिटलिज्म सम्प्रदाय के लोगों के लिए एक प्रारम्भिक की स्थापना में प्रयत्नशील था। वह ऐसी जायदाद कायम करने में भी दिलचस्पी रखता था जिनमें वह मुताफ़फ़ा बना सके। इन उद्देश्यों की पूर्ति और अर्थव्यवस्था में किसी प्रकार का भ्रमटा न होने देने के लिए उन्होंने कैपिटलिज्म व प्रोटेस्टैण्ट दोनों सम्प्रदाय के लोगों को

बस्म के लिए प्रोत्साहित किया। सामाजिक दान और सामन्तत्व में फेलबर्ट ने मेरीलेण्ड को पुरानी परम्परा के अनुसार अर्मागाना दंग का बताने का प्रयत्न किया। उनकी आकांक्षा थी कि वह राजाओं की गान-सौजन्य के साथ उस प्रदेश का शासन करें। किन्तु सीमान्त भ्रमाज के लिये स्वतन्त्रता एक स्वाभाविक आवश्यकता होती है भले ही उनका प्रारम्भिक दायरा बाहरे कैसा ही क्यों न हो। यह सामन्तशाही के बंधनों के साथ मेल नहीं खाती। दूसरे उपनिवेशों की भाँति मेरीलेण्ड में भी अधिकारीगण बाणिज्यों में मोजूद इंग्लैण्ड के सर्व-मायाज का बलून डारा सम्भाषित वैश्वस्तिक स्वतन्त्रता को गारण्टी और प्रतिनिधि सम्राज्यों के जरिये शासन तन्त्र में हिस्सा लेने के अधिकार की मुद्द बावलाओं को धुमिल न कर सके।

मेरीलेण्ड में एक ऐसी सम्पत्ता का विकास हुआ जो ब्रिटनिया में विकसित होने वाली सम्पत्ता में बहुत कुछ मिलनी-जुलनी है। दोनों बस्निया कृषि-प्रधान थी जिनमें तट-प्रदेश में तम्बाकू की खेती करने वाले बड़े-बड़े बागान मालिकों (प्लेटिरो) का प्राधान्य था। दोनों के पीछे ऐसे प्रदेश थे जिनमें पूर्ण स्वात्मियों वाले छोटे किसान आते व जमते जा रहे थे। एक फसल होने की पद्धति के अरवीध में दोनों ही पीठित थी और अट्टारहवीं शताब्दी के मध्य तक दोनों उपनिवेशों को सम्भरित तीषों लोगों की गुलाबी में आबलान थी। दोनों उपनिवेशों में अमीर बागान मालिकों ने सामाजिक कर्तव्यों को सम्भरिता में ग्रहण किया। वे अपने क्षेत्र में शान्ति बनाये रखने वाले न्यायाधीशों, मैन्य टकाडी के वर्तनों और विधान मन्त्र के मन्त्रियों के रूप में कार्य करते थे। किन्तु पूर्ण स्वात्मिय के कितानों ने मार्बेनिक सम्राज्यों में भी भाग लिया और इस नाते वे राजनीतिक पदों पर आसानी में फसला कर सके। उनकी स्वात्मन्तता सम्बन्धी स्पष्ट एवं सुहृष्ट श्रावना बड़े बागान मालिकों की अल्पतन्त्र व्यवस्था को निरन्तर चेतानी देती रहती थी कि वे स्वतन्त्र इन्सान के अधिकारों को हड़ने में ही ज़रूरत में व्योधा कोशिश न करें।

सहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में लेकर अट्टारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों तक मेरीलेण्ड और ब्रिटनिया में वे गुण उदय हो चुके थे जो मुह-मुद्द तक कायम रहे। गुणाम महज़ूरी की सहायता में राजनीतिक शक्ति और भूमि पर अधिकारिता बड़े बागान मालिकों का ही कब्ज़ा रहा। उन्होंने बड़े-बड़े मकान बनाए, जीवन के अमीराना तौर-तरीके आनाया और समृद्ध पार के मुसम्भ संसार में सम्पद कायम रखा। सामाजिक व आर्थिक दृष्टि में दूसरी श्रेणी में वे लोग आते थे जो पीछे के इलाकों में छोटे पैमाने की खेती करते थे और जिनकी सम्पन्न और समृद्ध होने की उम्मीदें पीछे या भीतरी इलाके की नयी भूमि पर टिकी हुई थी। मध्यम कम्प मयूद्द के किमान थे जो दासों में खेती कराने वाले मध्यम बागान मालिकों में प्रतिबन्धिता करते हुए अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे थे।

न वर्जिनिया में और न मेरीलेण्ड में ही किसी बड़े व्यापारी वर्ग का विकास हुआ क्योंकि बयान मालिक स्वयं ही भूमि ख़ुदने में व्यापार करते थे।

य उत्तरी व दक्षिणी कैरोलाइना के प्रदेश ही थे जो सामर्थ्य नैम प्रमुख बन्दरगाह होने के कारण दक्षिण में व्यापार के केंद्र के रूप में विकसित हुए। यहाँ के बसने वालों में सोझ ही ऊँच और व्यापार में सम्बन्धित करना सीख लिया। यहाँ स्थापित बाजार के कारण यह उपनिवेश मत्तय और सम्पत्तिदाओं ही गया। यने जगकों में भी आमदनी हुई। लम्बी पनी वाले चीड़े में रोजिन और टार का उत्पादन होता था। ये वस्तुएँ विदेश-व्यापार की दृष्टि में बड़ी महत्त्वपूर्ण भिन्न हुईं। वर्जिनिया की भाँति यहाँ के किसान केवल एक फसल ही उगा पाने के लिए विवश न थे। यहाँ कई फसलें पैदा हो सकती थी। कैरोलाइना में भावल, पीले और तौ-चालन सम्बन्धी दूसरी वस्तुओं का उत्पादन व निर्यात होता था। १७५० तक उत्तरी व दक्षिणी कैरोलाइना में कोई एक लाख में अधिक बाँसिन्दे रहने लगे थे।

दक्षिण में भी दूसरे अन्य उपनिवेशों की भाँति—बर्माहद पर्वतों में लेकर—व्यसाक में मोहाक नदी पर कटे हुए जगलों के क्षेत्र तक, नीचे एकत्र-नीज के पूर्वी किनारे तक और वर्जिनिया के अनामनरोहा तक—भीतरी दुलाकों का जाँति 'सोमान' कहलाते थे, विकास विशेष महत्त्व का चीनक बन गया। सागर तट पर बसी मूल वस्तियों की तुलना में आशा की अनेवाहन अधिक आजादी की आकाशा रखने वाले लोग उन वस्तियों की सोमाकों को लायक कर भीतर की ओर बढ़ने लगे। जिन लोगों को सागर तट पर उर्वरा भूमि नहीं मिल सकी अथवा जिनको भूमि बेकार और बर हो चुकी थी उन्होंने पश्चिम में और आगे बढ़कर पहाड़ी दुलाकों में सरण लेना लाभप्रद समझा। यद्यपि ही भीतरी दुलाकों में काम दिवाली पड़ने लगे। उनके मालिक कृषकत्व में खेती करने के साथ ही अपनी पुरानी बस्ती में अधिक की तुलना में अधिक आध्यात्मिक चरकतता का उपयोग करने थे। भीतरी दुलाकों की भूमि की ओर साधारण व उाट विमान ही आकर्षित नहीं हुए। अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति टाथम जैकसन के पिता पीटर जैकसन भी जो एक उद्यमी मखैलक थे, इस पर्वतीय प्रदेश में बने थे। उन्होंने एक प्याला पगब के बन्दे यहाँ की ६०० एकड़ भूमि खरीदी थी।

पर्वतीय नगरों में जाकर बसने वालों में हालाँकि कुछ बड़े-बड़े भू-मालिक भी थे किन्तु पूरे की बनी हुई वस्तियों का उाडकर यहाँ जाने वालों में ज्यादातर लोग उाट विमान ही थे। वे लोग इतिहासों (मूल निवासियों) के अशेषों के पहाड़ों में रहने थे। इनके कोटर ही उनके घुंघुं में और आरम्भिक के लिए इन्हें अपनी नैज विगाह और निरन्तर-नीय बस्तुओं का ही भरोसा था। आरम्भिकता ने उन्हें दबन और आध्यात्मिकता बना

दिया था। उन्होंने यहाँ की भूमि साक की, जंगल काटे, भाँडियों को जलकर जमीन को खेती के योग्य बनाया और फिर कटे हुए जंगली पौधों के उठा के आग-पाग गंड़ व मक्का की खेती की। मदे विकारी-कमीनें और पौधों में हिरन की खाल के खोत पहिनें थे। मित्रा पर के बने-मिके पीटीकोट पहिनीं थी। उनका भोजन था: सुअर का मोहन और मक्के का दालिया, भूना हुआ हिरन का मोहन, जपनी टर्की, तीतर या चकौर और पशुम के जल-पौधों में मिलने वाले मीठियाँ। उनके मूल-उद्योगों व आरम्भिक पहाड़ के तरीके भी अतीव और जवदम्य थे—एक प्याला उर्वरक जिसमें एक पुरा यहाँ चौपाया मनुष्य भूना जाता था, नव दम्पति के पृष्ठ-प्रवेश का जसन, नाच, मदिरापान, निगानेबाजी के दगल आदि।

शिक्षा की व्यवस्था कैसे हुई

पुराने और नए, पूर्वे और पश्चिम, एतद्देशिक के तट पर के बसे हुए दुलाकों और भीतरी क्षेत्रों की वस्तियों के बीच की खाटों परकत दृष्टिकरण ही रही थी। समय-समय पर ये सम्बन्ध बढ़ा व नायकीय रूप ले लें थे। फिर भी, प्रत्येक क्षेत्र ने दूसरे पर अपना प्रभाव डाला क्योंकि हर तरफ में अलग-अलग के बावजूद एक में निर्मित विभिन्न तत्वों का दूसरे क्षेत्र के विभिन्न तत्वों के साथ निरन्तर भेद-मिलन व आदान-प्रदान होता रहता था। प्रथमामी लोग पश्चिम को आगे बढ़ते गये और अपने साथ अनेकज्ञान पुरानी मरम्मत की जाने भी लेते गए। उन्होंने नए दुलाकों में जिस मरम्मत और मरम्मत का विकास किया उनमें वे परम्पराएँ भी शामिल थीं जो उनकी मूल्यव विमान का ही हिस्सा कहा जा सकता था। पहिले जाने वाले अनाक यार्पी लोट कर आने और अपने स्वच्छ व मिश्रों का अपनी समकक्षता बना कर उनके मन में मरम्मत, ज्ञान व उद्युक्तता पैदा कर देते। पहिले प्रवेश के लगाने में राजनीतिक अलगाव में भी अपनी आवाज बुलन्द की जिसमें रोजिन-रिवाजों व परम्पराओं की निरन्तरता भंग हो जाती थी। हमें भी अधिक महत्त्वपूर्ण रूप पड़ था कि एक स्थापित उपनिवेश का कोई भी व्यक्ति आसानी के साथ सीमाना पर एक नया घर बना सकता था। यह एक प्याला मरिक्ताशीत्य तथा जिसको बहने में पुराना वस्तिगत के अधिकारी पसन् और पश्चिम की रोकने में सकल नही था मके। हम तरफ में तरकीबी वस्तियों पर औपचार्य प्रधान वाले लोग समय-समय पर राजनीतिक नीतियों, भूमि विचारण व्यवस्था और पार्थिक नियमों की जगता की माय के अनुसार अनेकज्ञान उदाय बसान के लिए विवश होने लगे। जगता की उद्य माय के पीछे मरदम बना की पसकरी भिन्न रहती थी कि यदि उसकी मामों पुरी न हुईं ता वे बड़ी-तादार में उन बस्ती का उाडकर सीमाना

की ओर चले जायेंगे। विस्मर पाते हुए देग के शक्तिवाली समाज में गन्नाप के लिए बहुत घोड़ा ही स्थान था। पर्वनीय प्रदेश की ओर आप्रवासियों का जाना सम्पूर्ण अमरीका के भावी इतिहास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था।

आपनिबन्धिका युग में स्थापित अमरीकी शिक्षा और संस्कृति की आधारशिलायें भी भविष्य के लिए उनती ही महत्वपूर्ण थी। सैन्चुमेंट्रम का हाबर्ट कालेज १६३९ में स्थापित किया गया। इसी शताब्दी में वॉरिन्गिया में कालेज ऑफ विलियम एण्ड मेरी स्थापित किया गया और उसके कुछ साल बाद फॉनविकट के विधानानुसार पब्लिक विन्सविद्यालय स्थापित हुआ। किन्तु अमरीका के शैक्षणिक इतिहास का सब से महत्वपूर्ण अंग उसकी पब्लिक स्कूल पद्धति का विकास है जिसका अधिकांश श्रेय न्यू इंग्लैण्ड को है। वहां के निवासियों ने मार्ब्रजिक संस्था के रूप में एक साथ मिल कर पूरे समाज के माधवी को स्कूल के निर्माण में लगाया और १६८७ में सैन्चुमेंट्रम में कानून के द्वारा अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था की गयी। धीरे धीरे रूहोड आइलैण्ड को छोड़ कर न्यू इंग्लैण्ड के सभी उपनिवेशों में इस तरह के कानून बनाये गये।

दक्षिण में फार्म और बागानों के दूर-दूर होने के कारण इस तरह के सामुदायिक स्कूल खोलना असम्भव था। बागान मालिक अक्सर अपने निकटतम पड़ोसियों के साथ मिल कर आगवानी के सभी बच्चों के पढ़ाने के लिए अध्यापक रख लेते थे। अक्सर पढ़ाने के लिए बालकों का इंग्लैण्ड भेजा जाता था। अपेक्षाकृत घनी आबादी में कुछ पड़ोसी स्कूलों द्वारा शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी। लेकिन आमनीय में अध्यापकों की निम्नलिखित आदि का लक्ष्य वे दायित्व बागान मालिकों को ही बहन करना पड़ता था।

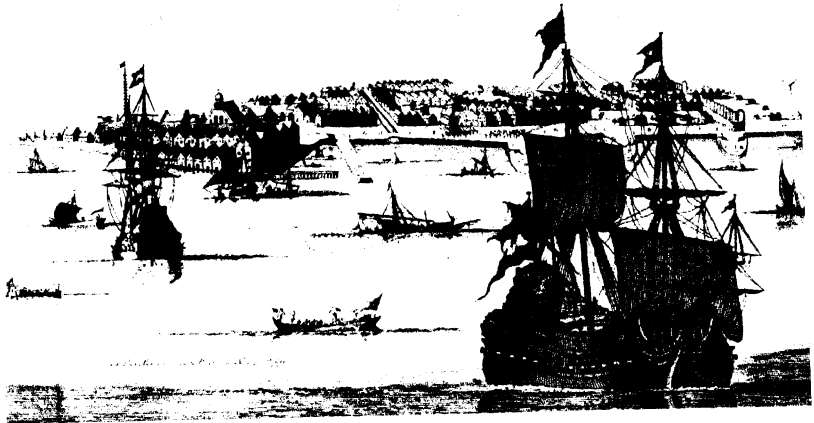
सम्बन्धी उपनिवेशों में विविध प्रकार की गलत पद्धतियाँ प्रचलित थी। भौतिक उन्नति के लिए अत्यधिक व्यस्त रहने वाले व्यापारों के लोगों को सामुहिक मामलों की ओर ध्यान देने की कुरमट न थी। इसीलिए वे लोग शिक्षण व्यवस्था के क्षेत्र में न्यू इंग्लैण्ड और दूसरे सम्बन्धीय उपनिवेशों में बहुत पीछे थे। स्कूलों की दसा लम्बा थी और सम्पूर्ण नागरिक अपने बच्चों को घर पढ़ाने के लिए अध्यापकों की निम्नलिखित करने थे। अधिकतर बालकों को मार्ब्रजिक शिक्षा की मुखियाएँ उपलब्ध न थी। इंग्लैण्ड की शाही सरकार की ओर से इस दिशा में कुछ छूट-पूट प्रयत्न किये गये। लेकिन उनसे वहां की शिक्षा व्यवस्था में कोई विशेष तरक्की नहीं हुई। प्रिन्सटन स्थित यूजर्स कालेज, किंग कालेज (जो कोलम्बिया विश्वविद्यालय कहलाता है) और रबींसन कालेज (स्टुडमं) १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही स्थापित हुए हैं।

गिला के क्षेत्र में सर्वाधिक उद्यमी उपनिवेशों में पेन्सिलवानिया का नाम पहले आता

है। वहां १६८३ में खूबने वाले सर्वप्रथम स्कूल में पढाई, लिखाई और गिगाब-किताब को गिला दी जाती थी। इसके बाद प्रत्येक बनेकर समाज ने अपने बच्चों की प्रारम्भिक गिला के लिए किमी न किमी तरह की व्यवस्था की। प्राचीन भाषाओं, इतिहास और साहित्य के उच्च अध्ययन की व्यवस्था फॉन्डम पब्लिक स्कूल में थी। यह स्कूल अब भी फिलाडेल्फिया में विलियम पेन चाटंग स्कूल के नाम से मौजूद है। गरीबों को इस स्कूल में मुफ्त शिक्षा दी जाती थी किन्तु गिन विद्यार्थियों के अधिकांश शुल्क आदि दे सकते थे उनके लिए अपने बच्चों की पढाई का शुल्क देना आवश्यक था। फिलाडेल्फिया में अनेक स्कूल ऐसे थे जो किमी धर्म विशेष में सम्बद्ध नहीं थे। वहां भाषाओं गणित और प्राकृतिक विज्ञान को गिला दी जाती थी। लक्को के लिए गति-पाठ-शालाएँ थी। स्वीडिश भी पूरी तरह उपेक्षित नहीं थी क्योंकि फिलाडेल्फिया के सम्पन्न निवासियों की पुत्रियाँ निजी अध्यापकों से फ्रांसीसी भाषा, गणित, नृत्य, चित्रकारी व्याकरण और कभी-कभी बहोताने का काम तक सीखती थी।

पेन्सिलवानिया के उत्तरी बौद्धिक व सांस्कृतिक विकास में मुख्यतः दो महान व्यक्तियों के प्रबल प्रतिकूल परिचलित होते हैं। इनमें एक थे उपनिवेश के सभी जेम्स लोयन जिनके सम्पूर्ण पुस्तकालय में पुस्तक बेजामिन फोर्लिन ने नवीनतम वैज्ञानिक ग्रन्थों का अध्ययन किया था। लोयन ने १७६५ में एक संवहालय बनना का निर्माण कराया और उसे तथा अपने पुस्तकालय को मार्ब्रजिक उपयोग के लिए नगर व्यवस्था को सौंप दिया। इसमें भी सम्बद्ध नहीं कि फोर्लिन ने स्वयं भी फिलाडेल्फिया की बौद्धिक गति-विधियों में प्रेरक योगदान किया। उनका योगदान किमी भी अकेले नागरिक के योगदान से कम नहीं कहा जा सकता। उन्होंने की वजह से एंसी संस्थाएँ स्थापित हो गयीं जो न सिर्फ फिलाडेल्फिया बल्कि सभी उपनिवेशों की सामुहिक प्रगति में स्थायी योगदान कर सकीं। उल्हाथार्थ, उन्होंने 'यूटी' नाम का एक मल्ल बनाया। वही आगे चलकर 'अमेरिकन फिन्नासिकल सोसाइटी' का जन्मदाता माना गया। उनके प्रयत्नों से ही एक मार्ब्रजिक अकादेमी की स्थापना हुई जो बाद में पेन्सिलवानिया विश्व-विद्यालय के रूप में विकसित हुई। उन्होंने चन्दे से चलने वाली एक लाइब्रेरी की स्थापना की जिसे वे 'उत्तरी अमरीका में पुस्तकालयों की जननी' कहते थे।

जातोपार्जन की आकाशा भरतीभानि स्थापित बस्तियों तक ही सीमित न थी। सीमान्त प्रदेश के स्काटी-आपरी लोग हालांकि प्राचीन ढंग के काठ के कोठरों में रहते थे, फिर भी उन्होंने अज्ञानाधिकार में रहना पसन्द नहीं किया। वे हृदय में ज्ञानोपासना के कायल थे। उन्होंने विद्यालय पाठशालाओं को अपनी बस्तियों में लाने के प्रयत्न किये। वे इस बात में यकीन करते थे कि उनके जैसे साधारण व आम लोगों को भी हूतरो की



१८वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में ग्वेयार्क का बन्दरगाह। प्राकृतिक सुविधाओं से सम्पन्न इस उत्तम कोटि के बन्दरगाह को बहोलात इस बस्ती को नए संसार के व्यापारिक केन्द्रों में प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ।



न्यू एंग्लस्टॉन में बच्चों उपनिवेशों अपने साथ
बिलासपुर में जीवन के तौर-तरीकों को लाए
जिन पर प्यूरिटन न्यू इंग्लैण्ड के अपेक्षाकृत
आत्मसंयमी बापिनदे नाक-भी लिकोइते थे ।

भाति अपनी ममलत बौद्धिक शक्तियों व क्षमताओं का विकास करना चाहिए।

प्रेस द्वारा अपनी स्वाधीनता पर बल

दक्षिण में, बागान मालिक मध्य मगार में अपना मम्क बनाव् रक्षने के लिए अधिकतर पुस्तकों पर निवार रहते थे। इतिहास, धोक और लैटिन के मोररषण, विज्ञान और कानून आदि सभी विषयों को पुस्तकें इम्बेण्ड में भणारी जाती थीं और बागान-मालिकों द्वारा उनका आग्रम में रक्षितव्य होता था। दक्षिणी कैरोलाइना में बार्नमेटन नामक नगर में १३०० ई० में एक प्रांतीय पुस्तकालय की स्थापना हुई। वहा मगीन, नाट्यकला और चित्रकला का भी प्रायःसाह मिलता। एक अरमे तक बार्नमेटन के प्रति अभिनेताओं की विशेष अनुरक्ति रही क्योंकि वहा उन्हें दूसरे उपनिवेशों को तुलना में अधिक स्नेहपूर्ण स्वागत मिलने का विश्वास रहता था।

न्यू इम्बेण्ड के प्रथम आवागो अपने साथ अपने छोटे पुस्तकालय भी लाये। वे लन्दन से भी पुस्तकें मगाने रहे। एरिडन लोगों में धार्मिक साहित्य के प्रति परम्परा में ही एक ज़बर्दस्त चाव था। उनका पठन-पाठन केवल उभी विषय तक सीमित न रहा। १६८० के दशक तक बार्नमेटन के पुस्तक विक्रेता शास्त्रीय साहित्य, इतिहास, राजनीति, दर्शन, विज्ञान, धर्मोपदेश (सर्मेन्स) धर्मशास्त्र और उदात्त साहित्य को ज़ोरदार बिक्री करने लगे थे।

कैम्ब्रिज (मैसाचुसेट्स) में प्रारम्भ में ही एक छापाखाना खुल गया था। १३०४ में बार्नमेटन में पहले मुद्रक सम्पादा-पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसके उपरांत न केवल न्यू इम्बेण्ड में बल्कि दूसरे शहरों में भी दम दिया में कदम बढ़ाया गया। उदाहरणार्थ, न्यू यार्क में एक ऐसी घटना घटी जो अमरीकी पत्र के इतिहास की महानतम घटनाओं में से एक है। वहा जेम्स जेम्स नामक व्यक्तिने १७३३ में 'न्यू यार्क बोकली जर्नल' नामक एक अवकाश निकाला। यह पत्र वहा की सरकार के विरोधी दल का मुखपत्र था। दो वर्षों तक यह पत्र प्रकाशित होता रहा। इस बीच इमने सरकार की खरीद आलोचना की। वहा का औपनिवेशिक गवर्नर उसके तीक्ष्ण व्यर्थ-प्रहारों का सहन न कर सका और उसने जेम्स को मानहानि के अभियोग में जेल में बन्दी करा दिया। नी महोने तक मुकदमा चलता रहा और इस बीच जेम्स जेल में पत्र का सम्पादन करता रहा। फलस्वरूप, उपनिवेशों में सभी जगह उसके मुकदमे के प्रति एक गहरी दिलचस्पी और उल्लेखना मौ फेल गयी। एडु. मैगिस्टन जेना मुद्रयिद्ध वकील उसको पंखी कर रहा था। उसने दबोले ही कि पत्र में जो भी आरोप प्रकाशित किए गए थे वे सभी सत्य

थे इमलिए मन्वे अधी में उसे मानहानि का मायला वहा ही नहीं जा सकता। जुरियों ने अपना निर्णय उसके हक में दिया और जेम्स का निरपराध घोषित करने हुए आजाद कर दिया गया। इस घटना के बाद ही दूरगामी परिणाम हुए, जिनमें न सिर्फ औपनिवेशिक अमरीका वरन अमरीका का भावी स्वल्प भी प्रभावित हुआ। इस मुकदमे का फौमला, इस देश में प्रेस की स्वाधीनता के सिद्धान्त की स्थापना के लिए पथ-प्रदर्शक निरू बन गया।

उपनिवेशों में साहित्य प्रकाशन का कार्य बहुत दूर तक न्यू इम्बेण्ड में ही सीमित रहा। वहा मुख्यतः धार्मिक विषयों पर ही ध्यान केंद्रित रहा। प्रमों में छप कर निकलने वाली अतिमिनत कृतियों में अधिकांशतः धर्मोपदेश को पुस्तक-पुष्पिकाएँ ही होती थीं। वादरी 'पेन्सेन्ड काउन्स गवर्नर, जो 'डेल एण्ड रिमस्टोन मिनस्टर' के नाम से प्रसिद्ध थे, ने अकैले ही लगभग १०० प्रमों की रचना की। उनका सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ 'मैसाचुसिटा क्रिस्टी अमेरिकावा' इतनी वृद्ध रचना थी कि उसे लन्दन में छपाया गया। इस पत्र में न्यू इम्बेण्ड के प्रथम इतिहास का उभी रूप में प्रस्तुत किया गया जिस रूप में उसके मुद्रक विचारविधानों सेवक ने अपनी रचितों के अनुसार देखा और समझा था। इस आशाने की सर्वाधिक लोकप्रिय अकैली कृति थी—'रिचर्डस माइकेल विनिंगन बर्ष की 'द वे आर दू' धार्मिक लम्बी कविता। इस कविता में कथामय के दिन 'अनिम फौमले' का दिल दहला देने वाला तथा दर्दनाक वर्णन किया गया है। हर विनिये इस अथकाली सारकताथ को पढा और इसको एक प्रति का खरीद कर अपने पास रखा।

विदेशी शासन का अन्त

औपनिवेशिक विकास के सभी पहलुओं में, एक विश्वस्त पहलु अथरी सरकार के नियन्त्रणकारी प्रभाव का अभाव था। अपने निर्माण काल में सभी उपनिवेश अपनी प्रकृतियों और परिस्थितियों के अनुसार विकास करने के लिए बहुत दूर तक स्वतन्त्र रहे। जात्रिया का छोट कर, प्रायः किसी भी बन्दी को बगान में अथरी सरकार न कोई प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया था। इसके राजनीतिक श्लक में प्रभावित करने के लिए यदि उसने कोई कारवाई की तो वह भी बहुत धीरे-धीरे। इम्बेण्ड के मन्घाट ने नयी दुनिया की बस्तियों के स्वतंत्रता-सामताधिकार कल्पनाओं और मालिकों का मोह दिये थे। किन्तु इसका जालय यह न था कि अमरीका में उपनिवेश बनाने का काम करने वाली ये कम्पनियाँ और मालिक दास नियन्त्रण से पूर्णतः या अलग-स्वतन्त्र थे। उदाहरणार्थ बर्जिनिया और मैसाचुसेट्स के



हाथों, अमरीका का प्रथम कालिज। इसकी स्थापना १६३६ में मैसाचुसेट्स में हुई। यह आज भी राष्ट्र की सर्वोत्तम विद्यापीठों में से एक है।

घाटों में दी गयी वनों के अनुसार आगत की सम्पूर्ण मत्त सम्बद्ध कम्पनियों को दे दी गयी थी और यह अधिगत समझा गया था कि ये कम्पनियां दुर्लभ रहे रह कर ही अपना कार्य-व्यापार करेंगी। ऐसी दशा में, अमरीका के निवासियों की अपनी सरकार में कोई आशा न रही।

फिर भी, एक न एक तरह से बाहरी एकाधिकारी शासन क्षीण होता गया। इन दिना में पहला कदम क्लन्दन (बर्जिनिया) कम्पनी ने उठाया। उसने बर्जिनिया के औपनिवेशकों को शासन में प्रतिनिधित्व प्रदान करने का निर्णय किया। कम्पनी की ओर से १६१९ में अपने तत्कालीन गवर्नर को दृढ आग्रह का निर्देश दिया गया कि बड़े-बड़े फार्मों और बागानों के स्वतन्त्र निवासियों अपने प्रतिनिधि चुनने और वे प्रतिनिधि बस्ती के कल्याण व उसकी तरक्की के लिए आडिनेन्स बनाने व लागू करने में गवर्नर व नामजद 'परिषद' की सहायता करेंगे।

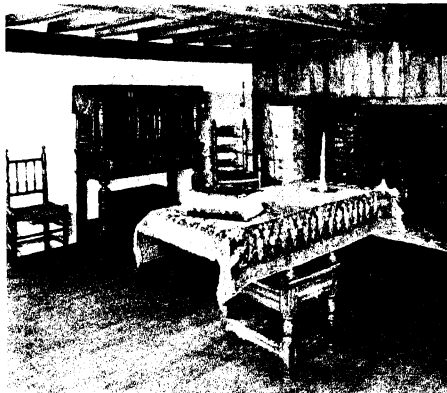
इस घटना का प्रभाव औपनिवेशिक काल की सभी घटनाओं की तुलना में सर्वाधिक दूरगामी सिद्ध हुआ। इसके बाद आमनीय पर यह माना जाने लगा कि उपनिवेश निवासियों को यह अधिकार है कि वे अपनी सरकार में भाग लें। बाद के ज्यादातर अनुदानों में दुर्लभ के मन्त्रालय ने घाटों में यह व्यवस्था दी कि बस्ती के सभी सम्बद्ध स्वतन्त्र निवासियों को उन्हें प्रभावित करने वाले विषयों में आवाज होनी चाहिए। इस प्रकार मेरीकेण्ड के सेविल कालवर्ट, पेन्सिलवानिया के विलियम पेन, दोनों कैरोनाइनाओं तथा न्यूजर्सी के मानिकों को दिये गये घाटों में इन बात को स्पष्ट व्यवस्था थी कि उन बस्तियों के विधान स्वतन्त्र निवासियों को सहमति में बनाये जाएँ। केवल दो उपनिवेशों में स्व-शासन-व्यवस्था की उोशा की गयी। एक था न्यूयार्क, जो चार्ल्स द्वितीय के भाई डपुक ऑब यार्क जो बाद में दुर्लभ के मन्त्रालय जेम्स द्वितीय कहलाए, को दिया गया था और दूसरा था जॉर्जिया जो एक न्यायी समूह का प्रदान किया गया था। फिर भी, इन दोनों मामलों में यह अपवाद अधिक समय तक कायम न रहा, क्योंकि इन उपनिवेशों में विधि-निर्माण में प्रतिनिधित्व की मांग इतना बल पकड़ती गयी कि अधिकारियों ने उसके समक्ष झुक जाना ही काकोचिन समझा।

प्रारम्भ में, सरकार की विधि-निर्माणों शाखा में उपनिवेशवासियों के प्रतिनिधित्व का अधिकार सीमित महत्त्व का था। तो भी, अन्ततः उसी के आधार पर बस्तियों के निवासियों को प्रशासन में लगभग पूर्ण मत्त प्राप्त हुई। यह स्थिति निर्वाचित असेम्बलियों द्वारा प्राप्त हुई जिनमें पहले विन्हीय मामलों का नियन्त्रण इतनगत किया और फिर उमत्त अधिकतम उपयोग किया। एक के बाद दूसरे

उपनिवेश में यह विद्वान् अपनाया गया कि निर्वाचित प्रतिनिधियों को सहमति के बिना न तो कर लगाए जायेंगे और न एकत्रित व संचित राजस्व निधि खर्ची जायेंगे। यहाँ तक कि इस विद्वान् ने गवर्नर और दूसरे नियुक्त अधिकारों के वेतन में होने वाले खर्च के लिए भी निर्वाचित प्रतिनिधियों को स्वीकृति आवश्यक मानी गयी। यदि गवर्नर और उपनिवेश के दूसरे नियुक्त अधिकारी निर्वाचित प्रतिनिधि सभा को सत्रों के अनुसार काम नहीं करते थे, प्रतिनिधि सभा धन व्यय करने को अनुमति नहीं देनी थी—चाहे वह कोई और आवश्यक कार्य ही क्यों न हो। फलतः ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं कि कुछ स्वच्छन्द दिमाग के गवर्नरों के वेतन के लिए या तो प्रतिनिधि-सभा ने कठोर इन्कार कर दिया है या वेतन के रूप में एक पैसो को स्वीकृति दी है। इस घमकी के कारण गवर्नर और दूसरे नियुक्त अधिकारी मीघ हो उपनिवेशवासियों की दुःखा के सामने झुकने चले गये।

एव इन्फ्लेण्ड में बहुत वर्षों तक दूसरे उपनिवेशों की अपेक्षा अधिक पूर्ण स्वायत्त रहा। यदि धर्मशास्त्री (गिलघिम्स) लॉग वर्रिनिया में ही बसे होते तो वे लन्दन (वर्रिनिया) कम्पनी की सभा के अधीन होते। किन्तु वे स्व प्लाइमाउथ की अपने निजो बस्ती में थे इसलिए वे किंगो भी सरकारी अधिकार क्षेत्र के बाहर थे। फलतः उन्होंने अपना अलग राजनीतिक संगठन कायम करने का निर्णय किया। मेग्लान्ग नामक जहाज पर ही उन्होंने सामन्य भावधर्मो प्रपत्र तैयार किया था। उसका नाम था—'मेग्लान्ग कम्पक्ट'। इन प्रपत्र के अनुसार उन्होंने स्वीकार किया था कि 'पहल अपनी सुव्यवस्था और सुरक्षा के लिए एक नागरिक संस्था के रूप में मर्यादित होने है...और इस नाते एम स्वयं-गमन और समदर्शी विधानों, अध्यादेशों, अधिनियमों, मन्त्रालयों और पदों की रचना करने तथा उन्हें लागू करते हैं जो उपनिवेश के मासंगिक हित में सर्वाधिक गमन और सुविधाजनक मोचे जायेंगे।' हालाँकि इन याचिका के नाम इस प्रकार के अपने निजो स्वयामत-तन्त्र की स्थापना के लिए कोई वैधानिक आधार नहीं था फिर भी इसकी वैधता को बिम्बोने चूनीती नहीं दी और मरिदा के अनुसार प्लाइमाउथ के निवासी अनेक वर्षों तक बिना बिम्बो बाहरो हस्तक्षेप या निर्दोष के अपने निजो मामलों को व्यवस्था स्वयं ही करते रहे।

ऐसी ही स्थिति मेग्लान्गुएट्स में भी विद्यमान हुई। यहाँ के सामन्य के अधिकार 'मेग्लान्गुएट्स वे कम्पनी' की सधि गये थे। कम्पनी अपना माग कारोबार लेकर चाटेंर सहित अमरीका चली गयी इस तरह पूर्ण गता बस्ती में रहने



न्यूयार्क के केन्ट्रोज कला-संग्रहालय में सुरक्षित ओपनिवेशक काल के रसोईघर का प्राथमिक नमूना। प्रतिच्छेप यहाँ ज़ारों वंशक आते हैं और सुदूर अतीत की जीवन-पद्धति को भाँकी देख जाते हैं।



४३५

परिचय : यू इंग्लैण्ड में कुछ गैर-जिम्मेदार उपनिवेशवासी गाने-गायते हुए अपने पड़ोसियों को बिड़ाने और उनका उपहास करने में मजा लेते थे । बित्र में एक धर्मनिष्ठ बयोवृद्ध उनलोगों से धर्म का मार्ग अपनाने का अनुरोध करता हुआ दिखाया गया है ।

वाले कुछ व्यक्तियों के हाथ में थी। शुरू में अमरीका आने वाले कम्पनी के कोई एक दर्जन संस्थापक सदस्यों ने स्वेच्छाकारी शासन करने का यत्न किया। लेकिन शीघ्र ही उपनिवेश के दूसरे निवासियों ने सार्वजनिक मामलों में हिस्सा लेने के अधिकार की मांग की। उन्होंने इस बात का स्पष्ट संकेत भी दिया कि यदि उनकी यह मांग स्वीकार न की गयी तो वे सामुहिक रूप से इस उपनिवेश को छोड़ कर किसी दूसरे क्षेत्र में जा बसेंगे। कम्पनी के सदस्यों को इस धमकी के सामने झुकना पड़ा और शासनिक नियन्त्रण निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में आ गया। न्यू इंग्लैण्ड के पटवॉन की बस्नियाँ—न्यू हेवेन, रूहोड आइलैण्ड और कनेक्टिकट—के लोग भी अपने-अपने वहाँ स्वशासन की स्थापना में सफल हुए। उन्होंने इसके लिए इस तर्क का सहारा दिया कि वे वैधानिक रूप से किसी भी सरकारी तन्त्र के अधिकार-क्षेत्र में नहीं आते। उन्होंने अपने-अपने यहाँ न्यू प्लाइमाउथ के धर्म यात्रियों के तब स्थापित स्वशासन को आदर्श मानकर उसी पैमाने पर अपने निजो शासन-तन्त्र स्थापित किया।

उपनिवेश जिन बड़े पैमाने पर स्वशासन का उपयोग कर रहे थे उसका ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा समय-समय पर विरोध भी किया गया। मैसाचुसेट्स चार्टर के विरुद्ध अदालतों को कार्रवाई की गयी जो १६८४ में रद्द कर दी गयी। इसके बाद न्यू इंग्लैण्ड की सभी बस्तियाँ शाही नियन्त्रण के अधीन करके उनके शासन को पूर्ण सत्ता एक नियुक्त गवर्नर के हाथों में दे दी गयी। उपनिवेश निवासियों ने घटनाचक्र के इस मोड़ का दुःख से विरोध किया और इंग्लैण्ड में होने वाली १६८८ की क्रांति, जिनमें जेम्स द्वितीय को पराजित कर दिया गया था, के बाद शाही गवर्नर को भगा दिया। रूहोड आइलैण्ड और कनेक्टिकट, जिनमें अब न्यू हेवेन की बस्ती भी शामिल थी, पुनः स्वयंसे तौर से अपनी वस्तुतः स्वतन्त्र स्थिति कायम करने में सफल हो सके। लेकिन, मैसाचुसेट्स, शीघ्र ही पुनः शाही अधिकार में ले लिया गया लेकिन इस बार शासन में जनता की भी एक 'हिस्सा' दिया गया। दूसरे उपनिवेशों की भांति यहाँ भी जनता का 'हिस्सा' समय-समय बढ़ता गया। यहाँ तक कि वह स्थिति आ गयी जब शासन में जनता के प्रतिनिधियों का प्राधान्य हो गया और अन्य स्थानों की भांति यहाँ भी वित्तीय नियन्त्रण का परिणामकारी उपयोग किया गया। तब भी गवर्नरों को ऐसे निर्देश निरन्तर आते रहते थे कि वे उन्हीं नीतियों पर चलें जहाँ अंग्रेजों के व्यापक हितों के अनुकूल हों। साथ ही, इंग्लैण्ड की प्रीबी कोमिंसल को उपनिवेशों में बनने वाले सभी कानूनों की समीक्षा करने का अधिकार भी प्राप्त था। किन्तु

उपनिवेशों के निवासी इन प्रतिबंधों में जब कभी ये उनके वृत्तिवादी हितों को प्रभावित करते थे, बचकर निकल जाते में प्रवृत्त थे। दूसरी तरह से, उपनिवेशवासियों के लिए आमतौर से यह सम्भव हो गया था कि जब कभी भी अंग्रेज उनके बौद्धिक सम्बन्धों को विरोध में व्यापारिक सम्बन्धों को, विधि द्वारा मर्यादित करने का प्रयास करें, तो वे उन प्रस्तावों को, यदि वे उनके हित में नहीं हों तो, प्रत्येक सम्भव तरीके से शक्य कर दें। १६५१ और उसके बाद अंग्रेजी गवर्नर ने उपनिवेशों के व्यापारिक और आर्थिक जीवन के निर्णयित करने के उद्देश्य से समय-समय पर अनेक कानून बनाये। इनमें से कुछ अमरीका के लिए हितकारी थे लेकिन ज्यादातर ऐसे थे जो अमरीका को लागत पर इंग्लैण्ड को लाभ पहुँचाने वाले थे। जो बहुत ही हानिकारक कानून थे उनको उपनिवेशवासियों आम तौर पर उल्लेख कर जाते थे। अंग्रेज कभी-कभी उद्दिष्ट भी ही उठते थे और उन कानूनों को पुरो तरह लागू करने का यत्न भी करते थे किन्तु ये प्रयत्न लगभग निश्चित रूप से हर बार अस्वास्थ्यक तक ही जाँरी और अधिकारी शीघ्र ही 'आय लोटे जायें' की नीति अपनाते लमते थे।

उपनिवेश एक बड़े पैमाने पर राजकीयिक स्वतन्त्रता का उपयोग कर रहे थे। परिणामस्वरूप वे उत्तरोत्तर ब्रिटेन से दूर होते जा रहे थे। उनमें 'अंधेरे' होने के बजाय 'अमरीको होने' की भावना निरन्तर बलवती होती जा रही थी। यह प्रवृत्ति दूसरी राष्ट्रियता और संस्कृतियों के समूहों के उत्तरोत्तर होने वाले मिश्रण व मिश्रण में और भी मजबूत होती गयी। इस प्रक्रिया और इसके द्वारा किस प्रकार एक नए राष्ट्र की नींव पड़ी इसका विस्तृत और समीक्ष वर्णन जे. हेक्टर मेन्ट जान केवळूर नामक एक चतुर फ्रांसिसी वसतिहर ने इस प्रकार किया है—
 "तब फिर यह दुःमान, 'अमरीकी कीन है?' यह प्रश्न वह अपनी पुस्तक 'लेटर्स फ्रॉम एन अमेरिकन कार्मर' में पूछता है।" वह था तो यूरोपीय है या यूरोपीय लोगों की सन्तान है, अतः खत तब एक विशिष्ट मिश्रण, जो आपकी किसी देश के वासियों में नहीं मिलेगा। मैं आपको एक ऐसा परिचय बना सकता हूँ जिसका पितामह एक अंग्रेज था, उसकी पत्नी डच थी और उसके पुत्र ने एक फ्रांसिसी महिला से विवाह किया और उन दोनों के चार पुत्रों की पत्नियाँ नार बिभिन्न राष्ट्रों की हैं। तो, वही अमरीकी है जो अपने पुत्रों पुरोषों और तौर-तरीकों को पीछे छोड़कर नया का अपना है, उस नयी जीवन-पद्धति में जो उसने अपनायी है, नयी सरकार से जिम्मे प्रति वह बकादार है, उस तय पद में जिस पर वह आसीन है।"

स्वतन्त्रता की प्राप्ति

“हम इन सत्यों को स्वयं सिद्ध मानते हैं कि सभी जन जन्मतः एक समान हैं, सबको उनके निरञ्जनहार के कुछ ऐसे अधिकार प्रदान किए हैं जिन्हें छीना नहीं जा सकता और इन अधिकारों में जीवन, स्वतन्त्रता और अपनी लुगहाली के लिए प्रयत्नशील रहने के अधिकार भी शामिल हैं।”

स्वतन्त्रता की घोषणा, ४ जुलाई १७७६

संयुक्त राज्य अमरीका के द्वितीय राष्ट्रपति जॉन एडम्स उस परिपक्व बुद्धिमत्ता तक ब्रीचिन रहे जिसमें व्यक्ति अपनी युवावस्था की गतिविधियों को दार्शनिक दृष्टि में आंकने में उल्लास का अनुभव करना है। अपने अन्तिम वर्षों में उन्होंने एक पत्र लिखा था जो अनीन की स्मृति दिखाना है। उस पत्र में उन्होंने घोषित किया था कि “अमरीकी क्रांति का मूलपान १७७० में हुआ था।” उन्होंने उगमें दम बान पर बल दिया था कि “युद्ध धारम्भ होने के पहले ही क्रांति शुरू हो चुकी थी। जनता के मन और मस्तिष्क में क्रांति जड़ पकड़ चुकी थी।” उन्होंने आगे कहा कि जिन विद्वानों और भावनाओं ने अमरीकी जनता को विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया था उन्हें दो गो वर्ष पहले का मानना चाहिए। देस के दुर्निवास में उनकी खात्र उस समय के कर्मी बाहिर जब वहां पढ़ना बान या काम नैवार किया गया था।

फिर भी, व्यावहारिक रूप में, इम्बेण्ड और अमरीका की राई १७७३ में अलग-अलग होना शुरू हो गयी थी। उस समय तक जेम्स टाउन (वॉशिंग्टन) की पहली बस्ती का स्थापित हुए कोई डेढ़ गो वर्ष में उत्तर हो चुके थे। उस बीच अनेक बस्तियां आर्थिक दृष्टि और सामाजिक उपलब्धिया की दृष्टि में अव्यक्त विकास कर चुकी थीं। लगभग सभी बस्तियों में एक लम्बे अरसे में स्वामित्व की व्यवस्था बनी आ रही थी। उनकी सम्मिश्रित जनसंख्या १५,००,००० तक पहुँच चुकी थी अर्थात् १७०० के वर्ष की तुलना में आबादी में ०,५०,००० व्यक्ति की वृद्धि हो चुकी थी।

उपनिवेशों के भौतिक विकास के अभिप्रेत अर्थ जनसंख्या की वृद्धि में प्रकट होने वाले आमय में कड़ी अधिक थे। अठारहवीं सताब्दी में औपनिवेशिक विस्तार तक एक नया दौर शुरू हुआ। इस काल में यूरोप में बेगमार आप्रवासी आये और नूँक सामर नर के आम-गाम की नवीनम भूमि पहले से ही घि चुकी

थी इंग्लिश देर में आनेवाले इन लोगों को भीतरी क्षेत्रों की ओर जाना पड़ा। व्यापारियों ने पोटों के क्षेत्रों की खोजपूर्ण यात्राएँ की और वहाँ की समुद्र-सम्पद पाटियों की कवार्ण गुनायी। इन कथाओं ने माहरो किमानों का अच्छी व मम्मी भूमि की खोज में निकल पड़ने तथा मुद्दर भीतर जाकर बढ़ा के जंगलों को साफ करने की ब्रीह-विद्यावान में अपने परिवारों सहित रहने के लिए प्रेरित किया। उनकी कठिनाइयों व दिक्कतों का वागचार न था किन्तु कामयाबी के पुरस्कार भी कुछ कम न थे। अतः बगने वाले निरन्तर आते गये जब तक कि भीतरी क्षेत्रों को पाटियां इन स्वावलम्बी अग्रदूतों ने भर न गईं। प्रताप्यो की नीचे दमक तक पैग्लिबलिया के सीमाश्रेष्ठ पर संननराडा पाटी तक सीमान्ती लोगों व उनके परिवारों का आना शुरू हो चुका था। यही में आप्रवासी व उनके परिवार दूरसे जल मार्गों द्वारा उन मुद्दर क्षेत्रों में फैलने गये, जिनको ‘पश्चिम’ कहते है।

१७६३ तक ब्रेट ब्रिटेन ने अपनी औपनिवेशिक भित्तिबन्दी के लिए कोई मुम्बद साम्राज्य-नीति नहीं बनायी थी। निदेशक सिद्धान्त केवल व्यापारिक दृष्टिकोण का हो था अर्थात् उपनिवेश अपने मान्-देस इम्बेण्ड को कच्चा माल भंत्रने रई और माल नैवार करने के मामले में उसके प्रतिद्वंद्वी न बनें। किन्तु उमे भी लम्बर दम में लागू किया गया और बस्तियों न कमी भी यह माना तक नहीं कि वे अर्द्धी याआय की एक मुफ्तित इकाई के अन्वित्य अंग है। इसके विपरीत के मरा अपने आपकी ऐसा ‘कामयेल्ल’ व ‘गठ्य’ समझते रहे जो बहुत कुछ इम्बेण्ड के समान हो ही और जिसका लन्दन के मनाधारियों के साथ एक हलका-सा ताता है। समय-समय पर इम्बेण्ड में यह भावना उद्भित भी हुई और वहाँ की मगर नया राजमला की ओर में दम बान के प्रयास भी किये गये कि उपनिवेशों की आर्थिक गतिविधियों व मरकार को इम्बेण्ड की मर्जी और उसके द्वित के अधीन व अनुकूल बनाया जाय, किन्तु उपनिवेशों का बहुमत इस

प्रकार की अधीनता के विरुद्ध था। नयी दुनिया और मान-देस के बीच तीन हजार मील चौड़ा समुद्र होने के कारण उपनिवेशों की यह आसना भी कभी बल न पा सकी कि यदि वे इम्पेरियल की आज्ञा का उल्लंघन करेंगे तो वह उनके किसी प्रभावकारीरूप में बढावा भी दे सकता है।

दस दूरी के साथ ही अमेरिकी स्वतंत्रता के बीज की परिस्थितियाँ भी एक साथ महत्व रखती थीं। धनी आबादी और पैसा के उन देशों में, जहाँ स्थान की किल्लत थी, जाने वाले आप्रवासियों को यहाँ बसो-बसो सदियों व घने जंगलों में मनुष्य अधीन भूमिस्थान प्राप्त हुआ। वे जंगल भूत्यों और गाँवों में गले थे और यहाँ आकर उन्हें प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुसार समाज-प्रदान जीवन के बजाय व्यक्ति-प्रदान जीवन अपनाता पाया।

सीमान्त द्वारा स्वावलम्बन को बढावा

नयी परिस्थितियों और नये साम्राज्य की इष्ट वस्तु ने आप्रवासियों को ऐसा बना दिया कि वे ब्रिटिश सभित को ही नहीं ब्रिटिश सरकार की आवश्यकता को भी भूल गये। राजनीतिक मजबूत का आधार इम्पेरियल आज्ञा ही रहा किन्तु अत्यधिक जटिल अर्थो जो मनुष्य व्यवस्था बनाए रखने के लिए आ हजारों सालों आवश्यक व वे यहाँ के विचित्रे हुए समाज के लिए अयोग्य और अनुपयोगी मिट्टी हुए। उनके स्थान पर उपनिवेश विभागियों ने अपने नए सामन बनाये। सीमान्त निवासियों को न तो सरकार में रहने का कोई साम कारण था और न वे उसे आवश्यक ही समझते थे। अपनी मुरझाते अर्थों प्राप्त करने थे। वे अपने ऊपर लाने गये किसी भी स्वतंत्र या नियन्त्रण में परफुल करने थे। उनमें इच्छानुसार काम करने की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर उभर हीनी गयी।

राजनीतिक स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने की एक तीव्रभावने अर्थो विरासत पहले से ही मौजूद थी। उनमें प्रतिफलित पाठ्यार्ण परिस्थितियों के पहले चाट्टर (अधिकारों का घोषणा-पत्र) में औपचारिक बोली में व्यक्त की जा चुकी थी। चाट्टर में कहा गया था कि अर्थो उपनिवेशों में रहनेवाले सभी जन उन सभी स्वतन्त्रताओं, मताधिकारों व मुविधाओं का उगी प्रकार उपयोग करेंगे जो हमारे इस अर्थो राज्य क्षेत्र में पैदा होने वाले नागरिकों को प्राप्त है। खन्तु, उन्हें मैनाकाटों में बर्णित अधिकारों तथा आम कानूनों के सभी लाभ प्राप्त होने थे। प्रारम्भिक काल में उपनिवेश निवासी अपने परम्परागत अधिकारों को कायम रखने में सफल रहे क्योंकि इम्पेरियल के मन्त्रालय की यह धारणा थी कि उपनिवेश

ब्रिटिश संघ के नियन्त्रण के बाहर के क्षेत्र हैं। जाने जाने अनेक वर्षों तक, इम्पेरियल के मन्त्रालय अपने देश में लक्ष्मणवाले भूगर्भ में ही उलभते रहे। यह वह भगदा था जो अन्ततः प्वाशियन क्रान्ति के रूप में सामने आया। इसी भगर्भ के कारण उन्हें उनकी दुःखता को लागू करने का मोहवा नहीं मिल सका और उनके पहले कि ब्रिटिश संघ उपनिवेशों को माली नीति के अनुकूल बनाने की ओर ध्यान दे गये, उपनिवेश मजबूत और स्वतन्त्रानुसार चलने के योग्य ही नहीं रहने अपने खुले मार्ग पर चलकर समुद्रिगायी भी हमने लगे थे।

नए महाद्वीप पर बरण रखने के पहले वर्षों में ही उपनिवेशवासियों ने अर्थो सामन व परिवारन के अनुसार काम करना शुरू किया था। उन्होंने विधान-सभाएँ, प्रतिनिधि सरकार को प्रयाशी और वैयक्तिक स्वाधीनता को माग्शी करने वाले आम कानूनों की मान्यता के आदेशों का ही अनुसरण किया लेकिन विधान की प्रकिया उत्तरोत्तर अर्थोकी दृष्टिकोण की दृष्टि गयी। अर्थो प्रयाशी और नयीरों पर कम-से-कम ध्यान दिया गया। फिर भी, उपनिवेशों को प्रभावकारी अर्थो नियन्त्रण से मुक्ति पुरी नहीं मिल गयी। उपनिवेशों के इन्हास एवं दुःखानों में अर्थे पहले ही क्रियम जन-परिनिधियों की विधान-परिषदों और इम्पेरियल के मन्त्रालय नियुक्त मन्त्रों के बीच भगर्भ और सघर्ष हुए थे। उपनिवेशों में मन्त्रों एक स्वतन्त्रताक अनियन्त्रित मन्त्र का प्रतिनिधि था। यह उपनिवेशवासियों की स्वाधीनता के लिए हर समय मौजूद रहने वाले मन्त्र का प्रतीक था। फिर भी उपनिवेशवासी अन्तर-द्वीपीय मन्त्रों को परिभाषित करने में सफल ही जाया करने थे क्योंकि मन्त्रों का अपने निर्वाह-सर्वों के लिए 'परिषदों' के ही अधीन रहना पडना था। कभी-कभी मन्त्रों को इस आशय का निर्देश दिया जाता था कि वे प्रभावकारी उपनिवेशवासियों को आभारों पर या भूमि-अनुदान देकर माग्शी परिश्रमताओं के लिए उनका समर्थन प्राप्त करें। किन्तु एक नहीं, अनेक अर्थो पर उपनिवेशवासियों अधिकारियों ने पर और भीम अन्तर्गत प्राप्त करने के बाद अपने स्वाधीनता हितों का पहले से भी अधिक ध्यान दिया।

राजनयन के सिद्धान्त और सामन के आस नयन्त्रण के प्रतीक स्वाधीन मन्त्रों तथा स्वाधीन स्वसासन और आत्मशासित सिद्धान्त की प्रतीक परिषदों के बीच नियन्त्रण होनेवाले भगर्भ उपनिवेशवासियों में इस भावना का उत्तरोत्तर जागृक करने लगे कि इम्पेरियल और अर्थोकी कठिनाई में काफी विघ्नन है। उषो-ज्यों समय बीतता गया परिषद मन्त्रों और उनकी परिषदों के कामों को अपने हाथों में लेती गयी। धन, धन, उपनिवेशों के सामन का सुव्यव केन्द्र

लन्दन में हज़रत अमरौकी प्रान्तों की राजधानियों में आ गया। १७७० के बाद के पहले कुछ वर्षों में उपनिवेशों और मान्य-देश के इन सम्बन्धों में आकस्मिक और आन्त परिचलन जाने को चेष्टा की गयी। घटनाओं के इस मॉड का प्रधान कारण यह था कि अमरौका के उत्तरी भाग में फ़ार्मोसियों का पूर्वतः निकाला जा चुका था।

अंग्रेज़ और फ़ार्मोसियों का संघर्ष

जब अंग्रेज़ लोग एट्लान्टिक महासागर के नए प्रदेश में फ़ार्मो, बागानों और आबादी में भरे नगरों की स्थापना कर रहे थे उस समय पूर्वी कॅनाडा की मूल लारंस घाटी के क्षेत्र में फ़ार्मोसी लोग एक दूर-दूर प्रकार का आधिपत्य जमा रहे थे। उन्होंने बाविलने नौ कम भंजरे किन्तु अश्वेक, मिगनरो (धर्म प्रचारक) और अवापारी अधिक मश्या में भंजरे। उन्होंने मिर्मिसियो नदी पर अधिकार जमा लिया और उत्तर पूर्व में ब्यूबेक में लेकर दक्षिण में न्यू आलियन्स तक धीरे-धीरे किन्तु मजबूती के साथ दुर्गों व व्यापार-बौद्धियों की स्थापनाएँ करने हुए एक अर्धचन्द्राकार आरुति का राज्य कायम कर लिया। और इस प्रकार उन्होंने अफ़िशियल पर्वतों के पूर्व की सफ़री पट्टी में अंग्रेज़ों को भौच देना चाहा।

अंग्रेज़ों ने बहुत पहले ही फ़ार्मोसियों को इस गनिबिध का विरोध किया था क्योंकि उनके अनुसार यह फ़ार्मोसियों का अतिक्रमण था। अंग्रेज़ और फ़ार्मोसियों के बीच १६१३ में ही कई टक्करें हुई थी। मगटिन रूप से युद्ध भी हुआ था जो कि इन्केंड और फ़ाग के बीच होने वाले दो-दो-बांधि मश्या का एक अमरौकी अंग मात था। १६८१ और १६९० के बीच 'किंग विलियम्स वार' नामक युद्ध लड़ा गया जिसे यूरोप के 'वार आव द पॅन्सिलवेनिया' नामक युद्ध के अमरौकी पक्ष के रूप में माना जा सकता है। १७०१ में १७१३ तक यहाँ 'क्वीन एन्स वार' हुई तो यूरोप में 'स्पेनी उत्तराधिकार युद्ध'। १७४४ से १७४८ तक यहाँ 'किंग जार्जस वार' हुई तो यूरोप में 'ऑस्ट्रियायी उत्तराधिकार युद्ध'। इन युद्धों में हालाँकि इन्केंड को कुछ लाभ हुए किन्तु वे सभी युद्ध आमनीय पर अनिर्णित रहे और अमरौकी महाद्वीप में फ़ाग की स्थिति बहुत मजबूत हो रही।

१७५० के दशक में यह विवाद अपने अन्तिम दौर में पहुँचा। १७४८ की एम्बन्डा-बैवल सन्धि के बाद, फ़ाग ने मिर्मिसियो की घाटी में अपनी सिन्धिवन को और भी मजबूत करना चाहा। उसी उमाने में अलबेनीज के पार अंग्रेज़ उपनिवेशशासियों का आन्दोलन भी तीव्र हो उठा। इस प्रकार एक ही क्षेत्र पर

अधिकार करने की होड़-भी लग गयी। १७५४ में मशय टक्कर हुई जिसमें बाइस बर्षीय जार्ज वॉशिंगटन के नेतृत्व में बर्जीनिया की मिलिटिया ने फ़ाग की एक पेसेवर प्रगतिस्त सेना से लोहा लिया। यह युद्ध फ़ार्मोसियों और इण्डियनों (आदिवासियों) के युद्ध के नाम से पुकारा गया जब कि इसमें अंग्रेज़ और उनके इण्डियन मित्र फ़ार्मोसियों तथा उनके इण्डियन गणियों में लड़े थे। इस युद्ध ने मदा के लिए इस बात का निर्णय कर दिया कि उत्तरी अमरौका में फ़ार्मोसियों का प्रभुत्व रहेगा या अंग्रेज़ों का।

अंग्रेज़ों उपनिवेशों में एकता और सन्धि होने को इनती अधिक आवश्यकता कभी भी न हुई थी। फ़ाग की स्थिति ने न केवल अंग्रेज़ो माशाज्य के लिए ही बल्कि अमरौको उपनिवेशवासियों के लिए भी खतरा पैदा कर दिया था क्योंकि मिर्मिसियो घाटी पर उनके अधिकार में फ़ार्मोसी अमरौको आवासियों को पश्चिम की ओर फ़ैलने व बढ़ने से रोक सकते थे और इस प्रकार वे उपनिवेशों की सक्ति और समृद्धि का गला घोट सकते थे। कॅनाडा और न्यूज़िल्याना की तरफ़-कीन फ़ार्मोसी सरकार मशकत हो नहीं हो चुकी थी माथ ही इण्डियनों (आदिवासियों) पर भी अपने अलगा प्रभाव डाल रहा था। यहाँ तक कि इरोक्वर्ड जाति के लोगों का डिल भी, जो परम्परा में अंग्रेज़ों के मित्र थे, फ़ाग ने जोत लिया था। नए युद्ध से इण्डियनों (आदिवासियों) के मामलों का ज्ञान प्रत्येक अंग्रेज़ अग्रगण्यो यह जानता था कि बिनाया से बचने के लिए नए आकस्मिक और मजबूत कदम उठाने पड़ेंगे।

एकता की पहली तरंग

इस मौके पर, ब्रिटिश व्यापार बॉर्डर ने, जो एक अरने में इण्डियनों के माथ उत्तरोत्तर खराब होनेवाले सम्बन्धों के समाधान मुनता आया था, न्यूयार्क के सक्सेर और दूरसे उपनिवेशों के कमिश्नरी को इरोक्वर्ड सरदारों के माथ एक सम्मिलित सन्धि की रूपरेखा तैयार करने के लिए उनकी बैठक बुलाने का आदेश दिया। इस उद्देश्य को पूर्ण के लिए १७५४ में न्यूयार्क, पेन्सिलवानिया, मेरीलैण्ड और न्यू इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि अलबानी में इरोक्वर्ड सरदारों में मिले। इण्डियनों ने अपनी शिकायतें पेश की और प्रतिनिधियों ने उन्हें स्वीकार करते हुए अपनी रिपोर्ट में वर्णयित करेखाई की माग की।

लेकिन वांशय इण्डियनों की मसस्याएँ हल करने के बुनियादी मकसद में भी आये बड़ गयी। उसने घोषणा की कि अनेक अमरौकी उपनिवेशों की भिलाकर

एक संघ बनाना अतिरिक्त रक्षाके लिए अतीव आवश्यक है। उपनिवेशों के जो प्रतिनिधि यहाँ मौजूद हैं उन्होंने युजिन की (संघ बनाने की) अलखानी योजना स्वीकार की। इस योजना का समर्थन बेंजामिन फ्रैंकलिन ने तैयार किया था। योजना में इस बात की व्यवस्था की गयी कि राजा द्वारा नियुक्त राष्ट्रपति उपनिवेशों को परिषदों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की एक महापरिषद् की महायत्ना में काम करे। इस महापरिषद् में हरेक उपनिवेश का जनरल टुंजरी में उसके विशेष योगदान के अनुपात में प्रतिनिधित्व हो और पश्चिम में अंग्रेजों के सभी हिस्स जिनमें इण्डियनों में होनेवाली सन्धि, व्यापार, मुद्रा, सम्भोजा आदि बांटे थी, सरकार के मानहूत हों। किन्तु किसी भी उपनिवेश में फ्रैंकलिन की यह योजना मजूर नहीं की क्योंकि किसी को यह स्वीकार नहीं था कि टैक्स लगाने या पश्चिम के विकास पर नियन्त्रण लगाने का अधिकार किसी बाहरी मस्या को दीया जाय।

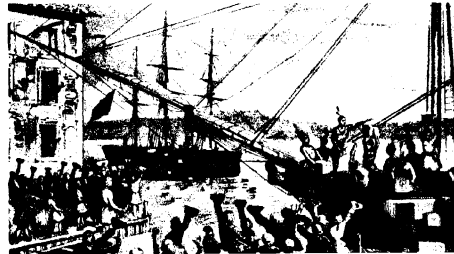
जहाँ तक उपनिवेशों का मसाल था उनमें युद्ध के लिए मुख्यव्यक्ति महायत्ना और समर्थन नहीं मिल रहा था। 'राजा के प्रति कर्तव्य पालन की भावना से प्रेरित करने की सारी योजनाएँ निष्फल हो रही थी। कुछ कुछकर उपनिवेशों ने यदि इस प्रकार की महायत्ना दी भी तो वह व्यापक उद्देश्य के अभाव में उन्मूलन अवस्था में ही रहती। उपनिवेशवासी युद्ध को ही पारो ताकतों—रामेश्वर और फॉर्म—के बीच का युद्ध ही समझ सकते थे। उन्हें इस बात के लिए जरा भी परभावना न था कि औपनिवेशिक युद्धों के लिए ब्रिटिश सरकार को बड़ी लादाय में फीस भेजनी पड़ रही थी। न उन्हें इस बात का अकाम्य था कि प्रान्तीय सेनाओं के बजाए लाल कोट वाले युद्ध जीत रहे हैं। ये इस बात में भी कोई नकं नहीं पाते कि वे उस व्यापार को बन्द कर दें जिसे 'शत्रु के माघ व्यापार' की मजा दी जाती थी। उपनिवेशों के सम्पूर्ण महयोग के अभाव तथा अनेक फौजी कमियों के बावजूद अखण्डतम युद्धनीति और तेजस्व की योग्यता के बल पर जीत इम्पेच की ही हुई। ८ वर्षों के निरन्तर संघर्ष के परचात कौनारा और मिमिसिपी की घाटी के उत्तरी इलाके पर अंग्रेजों का आधिपत्य हो गया और उसी अमरीका में फ्रांसीसी साम्राज्य का स्तन काटूर हो गया।

काम पर विजय पाने के उपरान्त न केवल अमरीका में बल्कि भारत और संसार के दूसरे उपनिवेशों में भी ब्रिटेन को आतिरकार उस समय का मानना करना ही पडा जिसकी वह लम्बे अरसे से उमेक्षा करता आया था। वह समय का ही—साम्राज्य की समय। अब यह आवश्यक हो गया कि वह मुद्रा, भिष-



अमरीकी फ्रान्स के सुत्रधार सेम्पुअल ऐडम्स, जिन्होंने अमरीका को इम्पेच से मुक्त करने की भावनायुक्त एवं उन्मत्त अपील करने में ही अपना सारा जीवन लगा दिया।

इन्ट इन्डिया कम्पनी का एकाधिकार समाप्त करने के लिए लिए गए शांतिपूर्ण प्रयास अब असफल हो गए तो उपनिवेशवासियों को प्रत्यक्ष कार्रवाई की जरूरत फेनी पड़ी। वे वहाँ के मूलनिवासियों का वेत धारण करते जहाजों पर चढ़ गये और लोड-फोइ का काम करते हुए उन्होंने चाय की पेटियों को समुद्र में फेंक दिया।





पेट्रिक हेनरी, जो अपने उत्तेजक और प्रभावशाली भाषणों के लिए प्रसिद्ध थे, बर्जिनिया को बिधान सभा में 'स्टायप टेक्स' व बिना प्रतिनिधित्व के टेक्स लगाने को व्यवस्था के विरुद्ध भाषण दे रहे हैं।

भिन्न प्रदेशों के लोगों के विविध प्रकार के स्वाभाविक गमन-व्यवहार और शाही-प्रशासन में होने वाले तथ्य के औपेक्षाकृत समान विवरण की दृष्टि में अपने अतीत उपनिवेशों का नये सिरे से परीक्षण करें। अर्केने उनको अमेरिका में ही ब्रिटेन का समुद्र पारोय राज्य-क्षेत्र दुगुना हो चुका था। ऐतिहासिक महाभाग के नष्ट की पट्टी में अब कैनाडा का लुब्ला-बोड्रा मैदानों इत्याका और सिमिगियो में लैकर एनवेन्सोड नक का बीच का डेग भी मिल चुका था और इस तरह ब्रिटेन का महाप्राय्य काफ़ी बड़ा आकार ले चुका था। पहले जिसमें प्रधानतः प्रोटेस्टेंट अरबों और अश्रितियन अमानने वाले यूरोपीय लोगों की आबादी थी, अब बिस्नाग हो जाने के कारण उगी महाप्राय्य में कैथोलिक फ्रांसिसियों और भारी लताद में अधुने इण्डियन ईसाइयों की वृद्धि भी हुई। पुराने राज्य-क्षेत्रों को यदि छोड़ भी दिया जाय तो-भी सिर्फ़ नये राज्य-क्षेत्रों की रक्षा और प्रशासन-व्यवस्था के लिए ही अनुप धन रार्ति और अत्याधिक व्यक्तियों की आवश्यकता थी। पुरानी ओपनिवेशिक प्रणाली, जो वस्तुतः अभावपूर्ण थी, स्थिति की माग को देखने हुए बरी हो आयोजन थी। जब यह देसी उन सम्भीर स्थिति में ही, जिसमें स्वय उपनिवेश वासियों का अस्तित्व भी खतरे में था, यह पुरानी प्रणाली उनका सहयोग व समर्थन पाने में नाकामयाब हुई तो शान्त काज में, जब कि किसी बाहरी संकट का अंदेश भी न था, उसमें नया आशा की जा सकती थी।

कड़े नियंत्रणों का विरोध

यह बात स्पष्ट थी कि ब्रिटिश दृष्टिकोण में नयी शाही-व्यवस्था आवश्यक थी किन्तु अमेरिका की स्थिति इस परिचयन के अनुकूल न थी। उपनिवेशों की वस्तुतः अधिकारिक स्वाधीनता की एक अर्थ में आदी ही नहीं हो चुकी थी वरिष्ठ वे फ्रांसिसी संकट टल जाने के कारण अपने विकास के उस स्तर तक पहुँच भी चुकी थी जब उन्हें औपेक्षाकृत अधिक स्वतन्त्रता की आवश्यकता महसूस हो रही थी। उसमें किसी प्रकार की कठोरता का तो प्रश्न ही नहीं था। नयी शासन पद्धति को लागू करने में शान्ति निकलण की ओर भी दृष्ट करने में इंग्लैण्ड के राजनयिकों की स्वशासन में प्रसिधित और हस्तक्षेप का अधीनता में विरोध करने वाले उपनिवेशवासियों, स्वाधनन्वी और माझमी व्यापारियों, राजनीतिक दृष्टि वे जागरूक वाशियों, शाही अनुशासन का दृढ़ता से विरोध करने वाले अधिमान्नी बागान-मानिकों, कानून से बहुत कुछ अनभिज्ञ तथा उसकी उपेक्षा करने के अभ्यन्त उत्तरी इलाके के लोगों और अपने वैधानिक अधिकारों में जग

भी हस्तक्षेप न बर्दाश्त करने वाली उपनिवेशों की विधान सभाओं ने मान्यता देना था। अक्सर बान तो यह है कि ज्यादातर अमरीकी ख्रिष्टियन साम्राज्य की रूनी भद्र परवाह न करने थे। कुछ छोटे न लोगों को छोड़कर सभी उप रूप में यह मकल्य किये हुए थे कि जिन अमरीका को उन्होंने विवाधान जमान में रहने नासक देन बताया है उसमें वे अपने ही दंग में रहने और जाने करे।

अबद्धा ने सर्वप्रथम आल्फ्रिक क्षेत्रों का संयुक्त किया। कैनाडा और ओहायो घाटी की विजय में अर्थों के लिए यह जरूरी हो गया कि वे ऐसी सरकारों संरचना और ऐसी धार्मिक व भूमि सभ्यता नीति अपनाएँ जिनमें फार्मीसी या इण्डियन निवासी प्रसन्न न हों। किन्तु उनका यह कदम तबकी उपनिवेशों के हितों के विपरीत सिद्ध हुआ। इन उपनिवेशों की आवादी लोग रनि में बढ़ रही थी और यहां के लोग दम बान के लिए कटिबद्ध थे कि जो नए क्षेत्र जीन गए हैं उनके प्रमापनों का लाभ वे स्वयं उठाएँ। नयी भूमि की आवश्यकता होने के कारण अनेक बस्तियों ने अपने अधिकारगर्भी के आचार पर विस्तार करने के हक का दावा किया। विस्तार का यह दावा पश्चिम में मिगिगिपी नदी तक पहुँचना था। विजित प्रदेश को अपना मानने हुए लोग भारी संख्या में पर्वतीय दरों को पार करने हुए बहा पहुँचने लगे। उनको यह बाद उत्तरीयन बर्करी मयी। लेकिन अनेक सरकार को यह आसका हुई कि उन गए क्षेत्र में यदि इन अवदून किसानों का प्रवाह लगातार बढ़ता रहा तो वे लोग इण्डियनों के साथ युद्धों की एक लम्बी श्रान्तिका को अवस्थाभार्य बना देंगे। अर्थों का खयाल था कि इण्डियन इण्डियनों को शांत करने के लिए कुछ अधिक समय दिया जमा चाहिए और उपनिवेशवासीयों को भूमि धीरे-धीरे दो जानी चाहिए।

फरवबर, १७६३ में एक घाटी परमान डांग एलबेनीय के बीच के तथा फ्लोरिडा, मिगिगिपी और स्पेक के इनके केवल इण्डियनों के उपयोग के लिए सुरक्षित घोषित कर दिए गए। इस तरह, एक ही हाथ में अर्थों मना में तेज उपनिवेशों के सभी भूमिसम्बन्धी पश्चिमी दलों का मकल्य करने तथा पश्चिम की ओर होने वाले विस्तार को रोकने का बहुत कुछ उपाय प्रकार का प्रबल किया जो उन्होंने फार्मीसी अधिपत्य की श्रांतिका के समय किया था। यह परमान हालांकि कभी भी प्रभावपूर्ण दंग में लागू नहीं किया गया तो भी कुपित औपनिवेशिकों की दृष्टि में यह कदम उनके प्राथमिक अधिकार की स्पष्ट अवबेचना थी। उनके अनुसार पश्चिमी दलों की भूमि पर आवश्यकतानुसार कब्जा करना तथा उसका इस्तेमाल करना उनका बुनियादी अधिकार था।



'सन् '७६ की भावना' नामक इस चित्र से प्रत्येक अमरीकी परिचित है। 'स्वाधीनता की घोषणा' होने के एक शताब्दी बाद इस चित्र को ए. एम. विल्ड ने बनाया था।

जिस दिन 'स्टॅम्प ऐक्ट' लागू हुआ उस दिन स्ट्याम्पो की श्रेष्ठता सहको पर जलया गया। उन्हें बजाए गए, बुकाने बन्द रभो गयो, अर्थों गिरा दिए गए और समाचार-पत्रों ने स्ट्याम्प चिपकाने के स्थान पर नर-मुग्धों की तस्वीरें छापी।



दसरे भी अधिक सम्भरी परिणाम हुए बिट्टेन की नयी वित्तीय नीति के। बड़े हुए साम्राज्य के संचालन न प्रबन्ध के लिए धन आवश्यक है और यदि इन्हें के करदाताओं से यह सबका सब वसूला नहीं जा सकता था तो उपनिवेशों के लिए उनमें अपना योग देना आवश्यक था। लेकिन उपनिवेशों से राजस्व तभी वसूला जा सकता था जब एक मजबूत केंद्रीय प्रशासन हो। युद्ध केंद्रीय प्रशासन की व्यवस्था उपनिवेशों के स्वावलम्बन मानन की नीतिम पर ही की जा सकती थी। नयी प्रणाली क प्रारम्भ का पहला कदम था १९०४ का 'ग्लोबल ऐक्ट'। एम ऐक्ट में दो वर्ष बाद स्वावलम्बन भी किया गया। इनका एकदम उद्देश्य राजस्व की रकम में वृद्धि करना था, व्यापार को नियमित करने में इनका कोई सम्बन्ध न था। वस्तुतः ऐसे एक व्यापार-नियमन विधि के स्थान पर पास किया गया था। १९३३ के 'माल्मेज ऐक्ट' द्वारा गैर-अंग्रेजी देशों में शीपे के आयात पर निष्कात्मक चुगी लगा दी गयी थी। सर्वोपि 'ग्लोबल ऐक्ट' के जरिए नयी प्रदनों में आयात किये जाने वाले शीपे पर एक राजकी चुगी लगायी गयी। इस कानून के अन्तर्गत पागवा, मिन्क, वाफो तथा दूसरी बहुत सी विलास को वस्तुओं पर चुगी लगायी गयी। कानून को लागू करने के लिए चुगी अधिकाशियों को औपशासन अधिकारियाँ लुका और सम्भरी वरतने की आज्ञा दी गयी। अमरीकी समुद्रों में भी वर अंग्रेजी जमी बंदों को नाकटों की पकड़ने के आदेश दिये गये। विशिष्ट सघातों को आर में नियन्त्रण अधिकारियों को 'बिना नाम के वारण्ट' देकर यह अधिकार दिया गया कि वे प्रत्येक समुद्रपर्यटन स्थल को अधिकतम तलाशी ले सकें।

'बिना प्रतिनिधित्व के कर लगाने के अधिकार' का विवाद

यू इन्वेष्ट के व्यापारियों के विस्मय होने का यह कारण नहीं था कि उन पर नये कर लगाये गये। उन्हें असली डैंगनो इस बात की थी कि नये कर लागू करने के लिए ३० मिनट का समय देना पड़े। यह पृथक एक नयी बात थी। यू इन्वेष्ट के यानी एक पीछे से अधिक काल में ज्यादातर चीज फामिली और इन्वो के परिवर्तनी दीप समुद्रों में बिना किसी तरह की चुगी दिए आयात करने थे। उनका कहना था कि हम पर नाम मात्र की चुगी लगाना भी विनाशकारी होगा। 'ग्लोबल ऐक्ट' की प्रस्तावना ने उपनिवेशवासियों को इस बात का अस्वभाविक प्रदान किया कि वे अपने अन्तर्गत का वैधानिक आधार पर औचित्य स्थापित करें। प्राची व्यापार के नियमन के लिए औपनिवेशिक वस्तुओं पर कर लगाने

का समय का अधिकार सिद्धान्त रूप में बहुत पहले स्वीकार किया जा चुका था, हालांकि उस पर कभी जमल नहीं किया गया, किन्तु जेता कि १७६४ के राजस्व-कानून में कहा गया था 'इस साम्राज्य के राजस्व-भार को बढ़ाने के लिए' कर लगाने का अधिकार एक नयी बीज भी थी और बिनावास्तविक भी।

यह वैधानिक मामला उस बड़े विवाद का मूल बिन्दु हुआ जिसके फलस्वरूप साम्राज्य को अन्तर्गतवा छिद्र-भिन्न होना पड़ा। एक प्रारम्भ कालीन देशभक्त, जेम्स ओटिस ने लिखा कि 'मन्द की इस एक अकेली कारंवाई में छः महीनों में इतने अधिक व्यक्तियों को इतना अधिक सोचने के लिए बाध्य कर दिया जितना उन्होंने कदाचित् अपने जीवन भर में न सोचा होगा।' व्यापारियों, विधान-सभा के सदस्यों तथा नगर-सभाओं द्वारा इस कानून के औचित्य का विरोध किया गया। मेमब्रल ऐक्ट्स जैसे उपनिवेश के वकीलों ने इस प्रस्तावना में ही 'बिना प्रतिनिधित्व के कर लगाने' की पहली झलक पायी। यह एक प्रेरक नारा बन गया और इसने कितने ही देशभक्तों को मानुदेश के विरोध में सज्ज कर दिया। इसके बाद इसी वर्ष 'कनेन्सी ऐक्ट' लागू किया गया जिसके जरिए 'हिज मेजस्टी' के अधीन उपनिवेशों में जारी की गयी दुष्टिवा अर्थ कर दो गयी। चूकि उपनिवेश घाटे के व्यापार-क्षेत्र व और उनमें नियन्त्रण दुर्लभ मुद्रा का अभाव रहता था इसलिए इस कानून ने औपनिवेशिक अर्थ-व्यवस्था पर एक गहरा बोझ आ गया। उपनिवेशवासियों के हृदयकोष में १७६५ में पास होनावाला 'बिलोडिंग ऐक्ट' भी उनका ही आपनिजनक था। इसके अन्तर्गत उपनिवेशों से यह अपेक्षा की गयी कि यदि उनके महा वाशी मेनाग तैनात की जाती हैं तो यह उपनिवेश उनके लिए पर तथा कुछ अन्य जरूरी सामग्री देने के लिए बाध्य होगा।

इन कानूनों का तीव्र विरोध भी ही रहा था, नवी औपनिवेशिक प्रवाली की प्रारम्भिक कारंवाइयों के रूप में जो अन्तिम कानून पास किया गया उसने उनमें संघर्ष विरोध आन्दोलन का रूप प्रदान कर दिया। यह कानून था— 'स्टेज ऐक्ट' जिसके अनुसार यह आदेश दिया गया कि सभी समाचार पत्रों, शासनादशों, पुस्तिकाओं, लाइसेन्सों, इकरारनामों और दूसरे कानूनी आलेखों पर रमोरी टिकट लगाये जाएँ। कानून में कहा गया कि इस प्रकार उपाजित राजस्व उपनिवेश की 'रक्षा, आरक्षा और सुरक्षा' पर खर्च किया जाएगा। इसमें कर वसूली के लिए केवल अमरीकी लोगों की नियुक्ति की व्यवस्था की गयी। यह भार सब पर इतने सरल और समान रूप में डाला गया कि यह कानून मंद में बिना किसी खास बड़े बहस-मुवाहिने के ही स्वीकृत हो गया।

इसकी ओर किसी ने विशेष रूप से ध्यान तक नहीं दिया।

किन्तु १३ उपनिषदों में इसका अभिनन्दन इतने उच्च रूप में हुआ कि उनमें हर जगह का औपम्य-रसान हेतुन में पड़ा गया। इस कानून का दूसरा दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष यह हुआ कि इसमें उपनिषद-समाजों के सबसे प्रभावशाली और विचार व्यक्त करने की क्षमता रखने वाले अंग उदाहरणार्थ, पत्रकार, बकील, पादरी, व्यापारी और व्यवसायी होने, नाराज हो गये जिनका प्रभाव अतः, दक्षिण और पश्चिम देश के सभी भागों पर समान रूप में पड़ा। सोच ही प्रमुख व्यवसायियों ने, जिन्हें माल के हरेक नदान पर कर देना पड़ना था, मित्रकर आगान विरोधी मंच बनाए। व्यापार अस्थायी रूप से ठहरा हो गया और १७६५ की गतियों में मानु-देश में होने वाले व्यापार में भारी गिरावट आ गयी। प्रमुख व्यक्तियों ने 'स्वतन्त्रता के सपुन' नामक दल बनाया और सीधा ही राजनीतिक विरोध में द्वािमासिक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होने लगी। भारत के टंटे-मेड़े राज्यों पर उन्मजिन भीड़ दिवासी देने लगी। मैगाबुनेट्स से साउथ कैरोलाइना तक कानून की भयंरता की गयी। जन-समुहों ने जिनह-जगद भाग्यहीन अभिकर्ताओं को अपने पद से इस्तीफा देने के लिए विवश किया और चर्ची के स्टैण जो फटी आय भी नहीं मुलाते थे, स्थान-स्थान पर जलाए व तण-भण्ट किये गये।

'स्टैण ऐक्ट' का महत्व केवल क्रांतिकारी विरोधी-आन्दोलन को प्रेरणा देने तक ही सीमित नहीं है। वह इस कारण से भी अत्य महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसमें अपरीकियों को ऐसे शाही सम्भन्धों की परिकल्पना करने पर विवश किया जो स्थितियों के अनुरूप हों और जिनका स्थितियों के साथ ताल-मेल बँट सके। उदाहरणार्थ, वज्रिनिचा की विधान-सभा ने पंडित हेनरी को प्रेरणा से ऐसे कई प्रस्ताव पास किये जिनमें जन-प्रतिनिधित्व का अधिकार दिने विन्ना कर लगाने की नीति को अनोखा व खतरनाक परिवर्तन तथा उपनिषदों की स्वतन्त्रता के लिए एक पक्षकी कह कर उनकी भयंरता की गयी। कुछ दिनों बाद, मैगाबुनेट्स की सभा ने सभी उपनिषदों को 'स्टैण ऐक्ट' के संकेत पर विचार करने के लिए सूचार्क में आयोजित 'कारेस' के लिए अपने प्रतिनिधि भेजने के लिए आमन्त्रित किया। यह कारेस १७६५ में हुई। यह अपरीकी लोगों द्वारा आयोजित सभी उपनिषदों की पहली महासभा थी। अपरीकी समाजों में गमदीय हस्तक्षेप के विरुद्ध जनमत तैयार करने के लिए २० दसम और बांय व्यक्तियों ने इस अवसर का उपयोग किया। काकी विचार-विनिमय के बाद कारेस ने कई प्रस्ताव पास किये जिनमें मुख्यतः इस बात पर बल दिया गया कि 'द्वितीय विधान सभाओं

के प्रतिनिध, हम पर न कभी विरोध कर लयाये दे और न स्थिधान के अनुसार कयाये जा सकये दे।' 'स्टैण ऐक्ट' के संभवतः प्रस्तावों में कहा गया कि "इस कानून में उपनिषदसभामियों के अधिकारी व उनकी स्वतन्त्रता का तण-भण्ट करने की प्रवृत्ति माक भलकरनी है।"

इस तरह यह संवैधानिक विवाद अन्तः-प्रतिनिधित्व के प्रस पर केन्द्रित हो गया। औपनिषदियों के अन्तःसाम्य अवसर से स्वयं चुनाव द्वारा चुनकर अपने प्रतिनिधि पालिसिण्ड में लगी भेजने तक उनके लिए यह महत्त्वपूर्ण कर्त्ता असंभव था कि पालिसिण्ड में उनका प्रतिनिधित्व है। 'सार्वभौमिक प्रतिनिधित्व' का अर्थही मिददान इसमें मेल नहीं खाता था क्योंकि उसमें प्रतिनिधित्व स्थान के आधार पर न होकर सब ओर प्राणियों के आधार पर माना जाना है। अतः अर्थेज अफसरों की यह धारणा थी कि ब्रिटिश मन्द बृत्ति शाही सभा तथा दूसरिण्ट वद उपनिषदों की भी उननी ही प्रतिनिधि और मान्यकारी भाषिणा है जिननी कि मानु-देश को। यह जिम तरह इम्पेण्ट के बर्कनवर के लिए कानून बना सकती है उनी तरह अन्तःसाम्य प्रस्ताव लिखा था। इस बात में वे महत्त्व थे कि राजा इम्पेण्ट और मैगाबुनेट्स दोनों का राजा था किन्तु अर्थेजी मन्द को मैगाबुनेट्स के लिए कानून पास करने का उनी पहार अधिकार नहीं है जिम प्रकार मैगाबुनेट्स की विधान सभा का इम्पेण्ट के लिए। यदि राजा किसी उपनिषद में कुछ धन वाहता है तो वह अन्तःसाम्य संकेत है किन्तु एक विशेष नार्थिक पर, ताहे इम्पेण्ट में हो या अर्थेजी में, काल उसके प्रतिनिधियों द्वारा ही कर लगाया जा सकता है। रिट्टेन के मन्दीय अधिपतता, जैसा कि सार्वभौमिक ही था, उपनिषद सत्ताओं को इन बातों में महत्त्व होने की नीधार न थे। लेकिन अर्थेज व्यापारियों ने दबाव डालने में पूरा जोर लगा दिया। अपरीकी वापसाट में प्रभावित होकर इन्होंने पार्लमि में एकर कानून को मास्य करने के आन्दोलन में अपना सारा जोर लगाया। १७६५ में ब्रिटिश पार्लमिण्ट को भूकरना पड़ा। स्टैण ऐक्ट मसूय कर दिया गया और 'सुधार ऐक्ट' में भी काकी संशोधन किए गए। सभी उपनिषदों में उन्माद और अनेकता के साथ सविधान मान्यगी गयी। व्यापारियों ने अपना विरोधी-समाजोते को सत्य कर दिया, स्वतन्त्रता

के मजबूत नामक संस्था भी गान्त हो गयी। व्यापार पूर्व गति में चलने लगा और ऐसा प्रतीत हुआ कि दार्शनिक गति ही है।

किन्तु यह एक अल्पक विधायक मात्र था। १९५० में कुछ नए कानून आए जिन्होंने नए दिग्गों में विरोध के साथ लोगों को भड़का दिया। तत्कालीन ब्रिटिश बामनकर आनंद एक्सप्लेनर नामी टाउनमेन्ड की सरकार के नए वित्तीय कार्यक्रम का मन्विदा बनाने का दायित्व मीणा गया। उनमें अर्थों पर लगे करों की घटाने के उद्देश्य में अमरीकी व्यापार पर मड़ने वाली चुगी की मजूरी का मूकन करने के साथ ही चुगी प्रगाम पर मड़ने वाली चुगी की मजूरी का मूकन करने के साथ ही चुगी प्रगाम में मड़नी लाने का प्रगाम किया। साथ ही, ब्रिटेन में अमरीकी उपनिवेशों की निर्पान होने वाले कामज, काच, मीणा, चाय आदि पर नयी चुगी लगा दी। यह काम उपनिवेशों में नियुक्त गवर्नरों, जजों, चुगी-अधिकारियों और वहां रहने वाली अर्थज मेना के खर्चे व रखरखाय के लिए आवश्यक रकम की पूर्ति के उद्देश्य में भी किया गया था। टाउनमेन्ड द्वारा एक अर्थ कानून का प्रस्ताव भी रखा गया जिसमें उपनिवेशों के उच्च-स्वतंत्र व्यायालयों की ऐसी व्यवस्था करने के अधिकार दिये गये थे कि वे बिना नाम के तन्वशी के तारण्त जारी कर मकें जिनमें चुगी अधिकारी जिय मयय बाहे मन्वेड के आधार पर हर किमी त्वाज की तलाशी ले मकें। यह एक ऐसी व्यवस्था थी जिसके प्रति हरेक उपनिवेशवासी पृथा थे पर उठा।

टाउनमेन्ड द्वारा लगी गयी चुगियों के विरोध में जो आन्दोलन लड़ा हुआ वह हासिक स्टैंडप मुंकेट विरोधी आन्दोलन बैसा उष न था फिर भी मा मखन। व्यापारियों ने एक बार पुनः अवागन विरोधी गमभीते किये। मरों ने पर के बने कारें (मारों) पहनने शुरू किये, औरतों ने चाय का विकल्प दुडू निकाला, विद्यार्थी स्टूडेंटों कागड इन्तेमाल करने लगे। घर अनुते रहने लगे। बॉस्टन में, वहां के व्यापार मानड पर प्रत्येक प्रवाण के हम्पसंग की तीव्र व नुदंन प्रतिक्रिया हासी थी, इन नए कानूनों के कार्यान्वयन ने प्रिगामक कारंसादयों को भड़काया। मजूरी के लिए आये चुगी अधिकारियों का धमकाया और भगा दिया गया। चुगी कर्मचरों की रथायें वहां दों मैन्य दुकडिमा अंजी गयीं।

पुगामे एंफ्रिडन नगर में अर्थज मेनाओं की मीतृदयी म्यव ही एक निगमन अणवस्था का जन्मन वनी हुई थी। तारणिकों और मैनिकों की कथमकथ १८ माय तक नमक के बाड ५ मार्च, १९५० में खले दगे के रूप में भड़क उठी। 'जाल कोट वार्ड' अर्थज मियारिडियों पर किमी न वरक के माले फंक दिये। यह माधारण-नी बात यहा तक बढ़ गयी कि मीड और मैनिकों में मूडभेड हो गयी।

फिर किमीने गोली चलाने का हुक्म दे दिया और बॉस्टन के तीन निवासी गोमियों के शिकार होकर वही बर्क पर बित हो गये। इम घटना में उपनिवेशों के आन्दोलनकारियों को दुर्मन्ड के विरुद्ध जनता को प्रभावपूर्ण तरीके से भड़काने का अवसर मिला। 'बॉस्टन हत्याकाण्ड' के नाम में इम घटना को अर्थजों की निर्दयता और अत्याचारिता के प्रमाण के रूप में प्रकाशित किया गया। सामने इतना तीव्र विरोध देखते हुए ब्रिटिश पार्लियमेंट ने पीछे हटना ही मुताबिक समझा। चाय पर लगी चुगी को छोड़कर टाउनमेन्ड द्वारा लगाए गये सभी कर वापस ले लिए गए। 'चाय-कर' इमलिए रखा गया क्योंकि जेसा कि जाइं तृतीय का कथन था कि अधिकार बनाए रखने के लिए कम-से-कम एक कर लगाए रखना आवश्यक होता है। ज्यादातर उपनिवेशवासियों को यह कारंसाईं जिकायतों के निवारण की दिशा में उठाया गया कदम जैनी ही लगी और दुर्मन्ड विरोधी आन्दोलन बहुत कुछ छोड़ दिया गया। दुर्मन्ड वे जाने वाली चाय के सिलसिले में बांड़ी बहुत हकावट उकर थी किन्तु आन्दोलन बहुत ही मन्द था और हकावट पर पूरी तरह अमल नहीं किया जाता था। शाही सम्बन्धों के लिए स्थिति आमनौर में अनुकूल थी। मम्डि बढ़ रही थी और उपनिवेशों के अनेक मेना षटनाचक के प्रति उदासीन होने के लिए तय थे। दसग नीति के बजाय उपेक्षा की नीति सकल होनी प्रतीत हुई। उपनिवेशों में सर्वत्र ओमत वगों द्वारा इम दार्शनिक मध्यान्तर का अभिनन्दन किया गया।

देशभक्तों द्वारा आन्दोलन : बॉस्टन की "टी पार्टी"

तो भी तीन वर्षों के दालन मध्यान्तर के दौरान में एक नव, बिबाद को जिन्दा रखने का निरन्तर और जतनत प्रगाम करता रहा। धोंडे में देशभक्तों या 'रेडिकल्स' का यह कहना था कि उपनिवेशों की यह विजय महज एक भ्रान्ति है। जब तक 'चाय-कर' लागू है तब तक उपनिवेशों पर ब्रिटिश पार्लियमेंट का अधिकार मिदालन रूप में कायम माना जायगा और भविष्य में किमी भी मयय इमी आधार पर यह मिदालन अगने प्रयाक परिणामों के साथ पूर्ण रूप में लागू करके उपनिवेशों की स्वतन्त्रताओं को खत्म किया जा सकता है।

इन देशभक्तों में सबसे ब्रिडगट, और प्रभाकाली थं मेमाचुसेट्स के मेयुअल एंड्रम जिनका एकमात्र लक्ष्य था—स्वाधीनता और जो इम लक्ष्य के लिए अनपक परिश्रम करने रहे। हावर्ड कालेज की म्नाकतीय प्रोफेसा पाम करने के बाद वे मदेव किमी न किमी मांरंजकिक पद पर ही रहे—निर्मानियों के निरीक्षक, टेबल

उत्तरी ग्युयार्क में टाइफोइडरोगा के किले पर जो अंधेजों का था, बरमाण्ट के ईथम एलन ने स्थानीय स्वयं सेवकों की सहायता से अकस्मात काबूबा कर लिया। यहाँ काफी पीला-बाब्द और बन्धुके अमरीकियों के हाथ लगीं जिसकी उन्हें बेहद डरकरन भी थी।



अप्रैल १७७५ में कान्काइ के पीओ-स्टोर को नष्ट करने का ब्रिटिश-प्रयास बुरी तरह असफल हुआ। इस घटना से प्रेरित होकर कोई १६,००० देशभक्त बास्टन की रक्षायें उभर पड़े।

कलेक्टर और नगर मंत्रियों के संबालक। व्यापार में उन्हें हमेशा हानि हुई किन्तु राजनीति में वे बहुत ही दूरदर्शी तथा योग्य सिद्ध हुए। न्यू इंग्लैण्ड की नगर मन्त्रियों के कार्यवाहियों का समर्थन और पादरी लोग। उनकी सबसे बड़ी कामगामी यह थी कि वे इन मायावी व्यक्तियों के मन में उनके सामाजिक और राजनीतिक चिन्तनों का आसंकर डरा सके और उनमें उनके अर्थों में सहज की भावना पैदा कर सके। उनका दूसरा काम था उन्हें मरिचक होने के लिए जागरूक करना। उन्होंने अन्धकारों में लेख लिखे और उनकी लोकतांत्रिक भावनाओं को जाग्रत करने के लिए उन्होंने नगरमन्त्रियों और प्रान्तीय असेम्बलियों में प्रस्ताव पाम करवाए और भाषण आयोजित किये। १७७२ में ऐडम्स ने ब्रास्टन की नगरमन्त्रियों की एक 'पत्रव्यवहार समिति' के निर्माण की प्रस्ताव दी जिसका काम था उपनिवेशवासियों के अधिकारों और उनकी शिक्षाओं को लिपिबद्ध करना तथा इस सम्बन्ध में दूसरी नगर-मन्त्रियों में पत्रव्यवहार करने के उन्मुख के उत्तरों का मतविदा नैवार करने की प्रयत्न करना। शीघ्र ही, यह विचार विस्तार पा गया। लगभग सभी उपनिवेशों में ऐसी समितियाँ बन गयीं और यही समितियाँ आगे चलकर प्रभासनाथी कानिकारी मण्डलों का आधार बनीं।

१७७४ में ब्रिटेन ने ऐडम्स और उनके साथियों को एक अशोच्य अवसर प्रदान किया। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपनी शान्तिपूर्ण विनियमन के कारण ब्रिटिश सरकार से अपील की और सभी उपनिवेशों को निर्वात होने वाली चाय का एकाधिकार प्राप्त कर लिया। टाउनसेण्ट के चाय-कर लगने के बाद उपनिवेशों ने कम्पनी की चाय का बहिष्कार कर रखा था। और १७७० के बाद चाय का परिकल्पना आधार देना बंद गया था कि अमरीका में जिनकी चाय की खपत होती थी उसका १० प्रतिशत भाग ब्रिटेन में आना था और उस पर बुरी नदी दी जाती थी। कम्पनी ने अपनी चाय अपने एजेंटों द्वारा बाजार भाव में मन्त्री बेचने का निर्णय किया। इस तरह कम्पनी ने एक नया देश में चाय को आने वाली चाय के व्यापार को लाभहीन बनाया और दूसरे उपनिवेशों में चाय के स्वतंत्र व्यापारियों का स्थापना कर दिया। इस कुविवेकपूर्ण निर्णय ने उपनिवेश के व्यापारियों को भड़का दिया और उन्होंने देवभक्तों से पुनः मात-मात करनी शुरू कर दी। उन्हें मिलकर कार्टवार्ड करने की प्रेरणा देने वाली बीज चाय का व्यापार के बजाय एकाधिकार का मिडलन था। सभी उपनिवेशों में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की योजना को रोकने के लिए कार्टवार्ड

की गयी। ब्रास्टन को छोड़कर दूसरे बन्दरगाहों में कम्पनी के एजेंटों को एजेंटों को छोड़ने के लिए राजी कर लिया गया और नवी आर्पी हुई चाय का वा दो इंग्लैण्ड लौटा दिया गया या उसे गांदाओं में डाल दिया गया। लेकिन ब्रास्टन के एजेंटों ने एजेंटों को छोड़ने में इत्तम कर दिया। उन्होंने दस विरोध की परवाह न करते हुए शाही गवर्नर की महायज्ञ में आगे वाली चाय को जहाज से उतारने की नैयारियाँ की। ऐडम्स के नेतृत्व में काम करने वाले देशभक्तों ने इनका उत्तर 'डिमा' में दिया। १९ दिसम्बर, १७७३ की रात का लोगों का एक विरोध मोहाक आदिवासियों के वेश में चाय में लदे तीन जहाजों पर चढ़ गया और उसने अपमानजनक चाय के स्टार्क को समुद्र की भेंट कर दिया।

उपनिवेश का दमन : दूसरों द्वारा सहायता

ब्रिटेन के सामने एक मुकदमा आ पड़ा। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने तो पार्लो-मेण्ट के एक कानून का पालन किया था। पार्लोमेण्ट यदि चाय के इस विनाश पर ध्यान नहीं देती तो बहुत शर्दों में यह समार के सामने बंद स्वीकार करनी कि उपनिवेशों पर उसकी मत्ता नहीं के बराबर है। ब्रिटेन के अधिकारियों ने एक स्वर में 'ब्रास्टन-टी-पार्टी' को विनाश और विध्वंस का कार्य घोषित कर उपदबी उपनिवेशवासियों को पकड़ कर दण्डित करने के लिए आवश्यक कार्रवाहों का भरपूर समर्थन किया। फलस्वरूप एक के बाद एक, कई नये कानून लागू किये गये जिन्हें उपनिवेशवासियों ने 'दमनात्मक करतूतों' कह कर पुकारा। पहला था, 'ब्रास्टन पोर्ट बिल' जिसके जरिए ब्रास्टन का बन्दरगाह तब तक के लिए बन्द कर दिया गया जबतक कि नष्ट की गयी चाय का पूरा मूल्य न चुका दिया जाय। इसमें नगर के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया क्योंकि ब्रास्टन का बन्दरगाह बन्द करने के मायने वे सागे जहर का तवाह कर देना। इसके बाद शीघ्र ही दूसरे बिलों द्वारा राज का मंत्राच्युतदम के कौमिलरों की नियुक्ति के अधिकार दिये गये। पहले इन कौमिलरों का निर्वाचन होता था। इसके अलावा जो जुरी लोग नगर मन्त्रियों द्वारा चुने जाते थे उन्हें आगे से पेरिफो, गवर्नर के एजेंटों द्वारा आमन्त्रित करने की व्यवस्था की गयी। आगे से नगर मन्त्रियों गवर्नर की स्वीकृति से ही चुनाई जा सकती थी। जुरी और पेरिफो की नियुक्ति या बर-वास्तनी का अधिकार भी गवर्नर के हाथों में दे दिया गया। 'क्वार्टरिंग ऐक्ट' पास करके ब्रिटिश सैनिकों के रहने के लिए यथाचित क्वार्टर तलाश करने का दायित्व स्वानीय अधिकारियों पर छोड़ा गया। यदि वे अपने इस कर्तव्य की उपेक्षा

करने हे तो उस दमा में तयनेर को यह अधिकार दिया गया कि वह मरायो, मरिदायलो या दूसरे उपयुक्त अरुनो पर कब्जा करके उनमें भेनिको के डहरने की व्यवस्था कर दे। लगभग इसी जमाने में 'क्वबेक ऐक्ट' भी पास किया गया और कदाचित् इसीलिए दूने भी विरोध की दृष्टि से देया गया। इस कानून के अंग्रेज क्यूबेक की प्रान्ती की मोमाओं में विस्तार किया गया तथा वहाँ के फानोयो निवासियों को धार्मिक स्वाधीनता के साथ ही अपने विधि सम्मन रोमिन्सियों के अनुसार रहने का अधिकार दिया गया। इस कानून का विरोध इमरिज हुडा तथाकि प्रीपनिशियको की दृष्टि में यह परिचयो भूमि पर उनके दावो को स्वीकार करने वाले कांटेर की लखी उपेक्षा थी। इसने परिचय की ओर उनके विस्तार पर रोक लगनी थी और उनर तथा उनर-परिचय को योग्य रॉमन-कैथोलिको के पुण मनयादारी प्रान्त द्वारा नियन्त्रित होओ-सो प्रबने होओ थी। हालांकि 'क्वबेक ऐक्ट' किमो प्रकार की दृष्ट की भावना से पास नहीं किया गया था फिर भी उस समय के अमरीकियों ने इसको गणना भी तांच अगदनीय कानूनों में की।

ये कानून मेयाकुम्दम को दबा नहीं ओके हालांकि उनके पीछे उद्देश्य नहीं था। उल्टे, पड़ोसी उपनिवेश उसको महासत्तय संगठित होने लगे। वर्जीनिया बर्सेसु के मुद्दापर पर 'उपनिवेशों को भीरुहा दुबद् स्थिति पर विचार करने के लिए सभी उपनिवेशों के प्रतिनिधियों की एक बैठक ५ नवम्बर १७७४ को फिन्सलेन्डिका में बुलाई गयी। यह बैठक पहली महाद्रीय कांग्रेस थी। यह कानूनो परिधि के बाहर थी क्योंकि इसके प्रतिनिधियों का चुनाव उपनिवेशों की कांग्रेस या सार्वत्रिक अधिवेशनो द्वारा किया गया था तथा उसीको हिदायतों के अनुसार उसका संचालन किया गया था। दूसरे पक्ष में देवभक्तों के दृष्ट ने, जो कानूनो श्रेय के अनिश्चन काम करने के लक्ष में था, स्थिति पर व्यवस्था पा लिया था और अंग्रेजो कानून के विरोध-आन्दोलन से काई मरौतार न रखने वाले परम्परावादियों का इसमें काई प्रतिनिधितय न था। वेने, कांग्रेस में शामिल होने वाले महम्मों में निम्न अमरीकी मनो के सभी वर्गों का स्वाया प्रतिनिधितय था। श्राजिया को छोड़कर हरेक उपनिवेश ने कम से कम एक प्रतिनिधि उद्धर भेजा। कुल ५५ प्रतिनिधि आए। विविध प्रकार के मनो की अभिव्यक्ति के लिए यह सस्था भले ही सफल थी किन्तु उसने विचार विनिमय या प्रभावकारी कदम उठाने की दृष्टि से दूने अप्रवर्धन ही माना गया।

उपनिवेशों में मनो की विभिन्नता के कारण कांग्रेस को एक कठिन दुविधा का सामना करना पड़ा। रिषायतों देने के लिए ब्रिटिश सरकार को राजी करने

के उद्देश्य से कांग्रेस को 'संगठित और एक मन' होने का प्रदर्शन करना था। साथ ही कानिवाद या स्वतन्त्रता की पूर्ण भावना की प्रदर्शन से भी बचना था जिम्मे नरम विचारों के अमरीकी चोक न पड़े। एक अत्यन्त सावधान व भारसभित भाषण के उपरान्त परन्तु पास करके देव बान की घोषणा की गई कि दमनकारी कानूनों का पालन करना आवश्यक नहीं है। फिर वेंड ब्रिटन और उपनिवेशों की जनता के नाम 'अधिकारों और शिकायतों' का घोषणापत्र पास किया गया। ब्रिटन के राजा के नाम एक प्राबन्धनापत्र भी तैयार किया गया जिसमें अमरीकी विरोध के परम्परागत तरीके के साथ ही वास्तु व्यापार और विद्द शाही मामलों में निरन्तर रखने के ब्रिटिश पालीमण्ट के अधिकार को स्वीकार किया गया। फिर भी कांग्रेस का सर्वेस मद्रकपूर्ण कार्य था एक एमे मय का निर्माण व गठन जा उसमें दो गयो अरुथा के अनुसार व्यापारिक सयकाट का पुनरुद्धार कर सकता था। उसमें हरेक शहर व वाश्टी में निवाते विरोध, आघात विरोध और दुम्नमात के विरोध का निरोक्षण करने वाली समितियों की व्यवस्था की गयी। समितिना चुपौ खाना कर मकती थी, सयकाट समझौता तोड़ने वाले व्यापारियों का नाम प्रकाशित कर मकती थी और उनके द्वारा आघात किए गए माल को जप्त भी कर मकती थी। फितरियवता, बबन और उदास को प्रान्साटन देना भी इन समितियों का काम था।

'मय' में एक महान कानिकारी तन्त्र का सुघात हुआ। "परम्यवहार समितियों" द्वारा प्रस्तुत आघारणिका पर निर्मित स्वाधीन संगठना ने सभी मामला का नेतृत्व अपने हाथों में सम्भाल लिया। उद्देशो शाही प्रभाव के अवस्था का उन्मूलन करने के लिए तीव्र आन्दोलन चलाए। किमकने वल्लों को भी व जन-आन्दोलन में भाग लेने के लिए तैयार कर देने तथा विरोधियों का निर्दंड दण्ड देने थे। उन्होंने मैसिक सामग्री एकत्र करना तथा मैसिको को संगठित बनाना शुरू किया। जनमत भी उनकी ओर आकर्षित होने लगा।

क्रान्ति का पहला धमाका

'मय समितियों' की कारवायवों में जनता के बीच की जो खाई पॉरि-पॉरे बढ़ रही थी, उमने अन्तथा रूप धारण कर लिया। पिछले एक अरुने में बहुत से अमरीकी लॉज विरोध आन्दोलन में अत्यधिक साकारणी बनने से त पताचानी रहे थे। वे बहुत अंश तक अमरीकी अधिकारों में अंग्रेजो द्वारा किए जाने वाले हस्तगतों के विरोधी उद्धर थे लेकिन वे सम्बन्ध नाइने के बजाय बातचीत और

समझौते द्वारा विवाद के समाधान के पक्ष में था। इस तरह के लोगों का समूह विभिन्नताओं में बरा पड़ा था। इसमें ज्यादातर लोग अधिकारी वर्ग के थे (अर्थात् विभिन्न प्रकार के ऐसे अधिकारी जिनकी नियुक्ति ब्रिटिश राजा की ओर में होनी थी)। बहुत से छांट-बंटे स्केकर, हिजा के विद्वान के विरोधी दूसरे सम्प्रदायों के मध्य, बहुत में व्यापारी, (विशेषतः बीच के उपनिवेशों के) दक्षिणी उपनिवेशों के भीतरो इलाकों के कुछ अल्पसंख्यक किसान व मोसामबानी आदि भी इनमें शामिल थे। दूसरी ओर देशभक्तों का न केवल अल्प-संख्या में वरन् अनेक व्यवसाय के लोगों में भी समर्थन मिल रहा था। इन लोगों में विशेषतः बकील, दक्षिण के बड़े-बड़े बागान मालिक और वस्तु-विक्रेता शामिल थे।

दमनकारी कानूनों के पास होने की बाद की घटनाओं में राजभक्त तबका व्याकुल और भयभीत हो गया था। ब्रिटिश राजा यदि चाहता तो उनमें मिल कर, उन्हें विशेष सुविधाएं देकर उनकी स्थिति इतनी मजबूत बना सकता था कि देशभक्तों के लिए विरोधी आंदोलन चलाना बहुत कठिन हो जाना। किन्तु जार्ज नूनीय सुविधाएं देने के लिए नैवार न था। सितम्बर, १७७८ में उनमें किलाडिन्क्रिया के स्केकरों का प्रायःतापत्र टुकड़ों में टूटा लिखा "अब तो ठपा लग चुका है, उपनिवेशों की या तो उनके अनुकूल होकर आत्मसमर्पण करना है या फिर विजय हासिल करना।" इस सब ने कफारों या 'टोरियों' को जड़ में हिला दिया। उनके पास अपने माथियों को समझाने के लिए कुछ भी धैर्य न था किन्तु इमके कि वे पूर्ण और अपमानजनक आत्मसमर्पण करने की राय देते। इस तरह मिताचारियों के सामने देशभक्तों का, जिन्हें अब 'हिल्लम' के नाम से पुकारा जाने लगा था, समर्थन करने के अलावा दूसरा चारा न था क्योंकि दूसरे सभी रास्तों का अपनाने के मायने में अपनी स्वतन्त्रताओं में हाथ धो लेना। राजभक्तों का पीटना तीव्र गति से प्रारम्भ हो गया। चक्की वालों ने उनके लिए आटा पीसना बन्द कर दिया, मजदूरों ने उनकी नौकरियां छोड़ दीं। न वे कुछ बेच सकते थे न कुछ खरीद सकते थे। उन्हें 'गद्गार' कहकर पुकारा जाने लगा और सर्मातियों ने उनके नाम प्रकाशित करना शुरू किया जिसमें "भावी मन्तानों में उन अपयुक्त के भागियों में परिचित होनी रहे।"

बास्टन में सेनापति गेनरी मेना का मेनाप्यक्ष जनरल टामस गेज नामक एक अंग्रेज था। उसकी पत्नी अमरीका में पैदा हुई थी। नगर की सारी धार्मिक परिधिधि राजनीतिक हलचल में बदल चुकी थी। डा. जॉर्ज वॉरन नामक एक प्रमुख स्थानीय देशभक्त ने अपने एक अंग्रेज मित्र को २० फरवरी, १७७५

के दिन लिखा था, "अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है, मामला मिलबैठ कर सुलभ सकता है। मेरी धारणा है कि यदि जनरल गेज को हाल के कानूनों को अमली रूप देने के लिए अपने मैजिस्ट्रेटों के साथ एक बार भी प्राथमिक क्षत्रों में भेज दिया गया तो प्रेंट ब्रिटेन का काम में कम स्पृहार्थण्ड के उपनिवेशों से तो जरूर ही और यदि में गलती नहीं करता तो सम्भव अमरीका में, हाथ पाना पड़ना। यदि राष्ट्र में जरा भी विवेक है तो भगवान के नाम पर निवेदन है कि उनका अविश्वस्य उपयोग किया जाय।"

लेकिन जनरल गेज का फर्ज था कि दमनकारी कानूनों को लागू कराये। उसे खबर मिली कि २० मील दूर स्थित काकाई में मोंगाचेट्टम के देशभक्त बास्टन और मेना का सामान जमा कर रहे हैं। १८ अप्रैल, १७७५ की रात को उसमें अपनी मेना की एक मजबूत टुकड़ी को वहां गोलाबारूद जम्न करने तथा मेम्पुअल गैदम्स और जान हैन्काक को, जिन पर इंग्लैंड में मुकदमा चलाने का आदेश दिया जा चुका था, गिरफ्तार करने के लिए भेजा। सारा प्राथमिक इलाका मजबूत हो उठा और जब रात भर चलने के बाद अंग्रेज मेना की टुकड़ी लेनिम-गटन गांव के निकट पहुँची तो उन्होंने भोर के धूपलके में पचास मघात्र मिन्ट-मेंनों की मुकाबले के लिए मजबूत पाया। क्षण भर के लिए दोनों पक्ष झिझके। दोनों ओर कुछ धोर हुआ, कुछ आदेश दिये गये और इसी शोरगुल के भीतर कियो ने एक गोली चला दी। फिर क्या था दोनों ओर से गोली चलायी जाने लगी। वहाँ की हरी-हरी घास पर अपने आठ आदमियों की लाशें छोड़ कर अमरी-कियों का निरन्तरित होना पड़ा। अमरीकी स्वाधीनता सङ्ग्राम का पहला रक्त-पात हो चुका था।

अंग्रेज मैजिस्ट्रेट काकाई की ओर बढ़े और एक पुल के पास किसानों ने उनमें मोर्चा लिया। वहाँ किसानों ने जो गोली वर्षा की उसके "धमके संसार भर में गुंजते चले गए।" कुछ हद तक अपना उद्देश्य पूरा करने के बाद अंग्रेज तिपहाड़ी वापस लौटे। किन्तु मडक के किनारे बनी पत्थर की दीवारों, मकानों व पहाड़ी टोलों के गोले गावों और फार्मों में मिलिदिया के जवान आ धमके और उन्हींने 'लाल कोंट वाली' की मिथाना बनाता शुरू कर दिया। क्रांति के इस प्रथम युद्ध में सारे प्राथमिक इलाके का योगदान इतना अधिक और व्यापक रहा कि जब तक २५०० अंग्रेज मैजिस्ट्रेटों की टुकड़ी नष्ट-भ्रष्ट होनी हुई बास्टन पहुँची तब तक उसके आहत मैजिस्ट्रेटों की संख्या उपनिवेशवादीयों के आहतों की तुलना में तीन गुना से अधिक हो चुकी थी।

कांग्रेस में स्वाधीनता पर बहस

दूसरे उपनिवेदों पर लेक्सिंग्टन और कार्नाई के समाचारों का प्रभाव ब्रिजजी के भेद के बी भाति हुआ। यह जहिर हो गया कि यूद्ध—वास्तविक यूद्ध—निकट ही है। स्वामीय कमेटियों के जर्गि इस बात के मकते नेरहो उपनिवेदों में भेज दिए गए। उन्हें एक संगठित स्थापकित के रूप में मण्डित होने के लिए केवल लेक्सिंग्टन जैसी एक घटना की ही आवश्यकता थी। इस समाचार ने २० दिन के भीतर ही मन में लेकर जातिया तक सर्वत्र देशभंग की भावना जाग्रत कर दी।

अभी लेक्सिंग्टन और कार्नाई की वेतावरतियां गुंज ही रही थी कि १० मई, १७७५ को फिलाडेल्फिया में दूसरी महाद्वीपीय कांग्रेस की बैठक शुरू हुई। वास्तव का एक अभीर व्यापारी जान डैनका उसका अध्यक्ष था। टामस जेफरसन वहाँ मौजूद थे। श्रेष्ठ्य बंजामिन फ्रैंकलिन भी उन्हीं दिनों अनेक उपनिवेदों के प्रतिनिधि के रूप में ममभोजे के लिए निष्कल प्रयास करने के उपरान्त लन्दन में लौट आए थे। कांग्रेस अभी भन्नी प्रकार संगठित थी न हो पायी कि उसे लुन्नी लड़ाई के प्रश्न का सामना करना पड़ा। हालाँकि शांति-बहुत विरोध मौजूद था फिर भी कांग्रेस की वास्तविक प्रवृत्ति 'शस्त्र उठाने के कारण और उसकी आवश्यकता' की उन्तजनापूर्ण घोषणा में प्रकट हुई। उनमें कहा गया:

"हमारा लक्ष्य न्यायसंगत है। हमारा मध अपूर्ण नहीं है। हमारे आन्तरिक मामल अपीमिन्त हैं और यदि जरूरत नहीं तो हम विदेशी सहायता भी निस्सन्देह प्राप्त कर सकते हैं... अशुओं ने यदि हमें शस्त्र उठाने के लिए विवश किया है तो हम उन्हें अवश्य उठाएंगे... अपनी स्वतन्त्रताओं की रक्षाथं हम उनका उपयोग करेंगे, एक ही मकलन के माध कि गुलाम होकर जीने के बजाय आजाद इमान की मोत मरना कड़ी अपिक श्रेयस्कर है।"

अभी इस घोषणा पर बहस हो ही रही थी कि कांग्रेस ने मिनिस्त्रिया की महाद्वीपीय मेवा के अन्याय लेकर जात्रे वांगमण्डन की अमरीकी मेनाओ का मेता-घरत नियुक्त कर दिया। अपनी माहासिकता और बहादुरी तथा मुद्दह, मभमान-पूर्ण और भव्य आचरण के कारण वह अत्यन्त ही कुशल व योग्य अर्कित थे। उनके मन में उन्माह और धीरज परमप मनुजित रहते थे। वह एक पूर्ण नैतिक व शारीरिक साहस के प्रतीक थे। निरंश देने की उनकी धायता देवन योग्य थी। निर्णय करने में उनकी मुद्दता और जानकारी की परिगभवता ने उन्हें महान बना दिया। उनके सामान्य ज्ञान ने ही उन्हें अद्वितीय विवेक का

व्यक्ति बना दिया। वे एक ही रास्ते पर चलने के हाभी थे, उमी पर दृढ़ रहना उनकी विशेषता थी। उन्होंने लिखा है कि "पराजय केवल पुन, ओसाकन अधिक प्रयास करने की घेरणा देने वाला कारण मात्र है, अगली बार हम इसमें अधिक अच्छे ढंग में काम करेंगे।" दृग भावता और उतम मौद्द संन्य प्रशासन सम्बन्धी प्रतिभा ही वे मुक्त चिन्त थे जिन्हें देन कर कहा जा सकता था कि भविष्य में विजय का मेहरा उनके मन्तक को ही मुर्गाभित करना।

किन्तु, इस गैरिक उन्माह और मेनापन्थ को नियुक्ति के वाजजद काथम के बहुत में मदद्यों तथा अमरीकी अना के एक बड़ हिस्से का इन्वेण्ट में पुणं सम्बन्ध-विच्छेद करने का विचार प्रिय नहीं था। इसी आक्रामक और गंगीत कारंवाट के लिए जनमत भी नंवार न था। फिर भी वह स्पष्ट था कि उपनिवेद हमेशा के लिए माशास्य के आध भीतर और आध बाहर गरी रह सकें। गिताचारियों ने अपने मन की ममकाने के लिए कहा कि वे ब्रिटेन के राजा के विरुद्ध नहीं वरन् मन्थिमण्डल के विरुद्ध लड़ रहे हैं। यहा तक कि जनवरी, १७७६ की गानों की गैरिक अकमरी के भोत्रनालय में जात्रे वांगमण्डन की अवस्थता में इन्वेण्ट के राजा के स्वास्थ्य की मन्तनामना की जाती थी।

मसय के माध-माध, ब्रिटिश माशास्य का अंग रह कर एक यूद्ध का निर्वाह करना उन्गोतर कठिन होता गया। इन्वेण्ट की शर में ममभोजे का कोई लक्षण दिवायी नहीं दिया। २३ अगस्त १७७६ का इन्वेण्ट के राजा जात्रे की शर में यह घोषणा कर दी गयी कि इन्विंश विटो के स्थिति म है। पाष महीने बाद टामस पेन की ५० पृष्ठ की पुष्पिका 'कायमनमेन्स' (मायामय ज्ञान) प्रकाशित हुई। इसमें मसकन और आरत्यों घंटा में स्वतन्त्रता की आवश्यकता का प्रतिपादन किया गया। पेन की पैनी लेखनी ने अन्ग्राय के अन्वरी मुद्दे पर नकार में जाट की। बस परमपरा पर आभारित राज्य व्यवस्था के विचार का मन्त्रक उठाने हुए उनमें राजाओ को भी नहीं बरुणा। उनमें लिखा कि पुष्पों पर अब तक जितने भी मुकुटधारी पुत्र हुए हैं, समाज के लिए उन सब में अधिक मूल्यवान एक माशास्य ईमानदार व्यक्ति है।" उनमें दो विकल्प पने लिए: अत्याचारों राजा और जत्रे सरकार के मामने निरन्तर आयममार्ण भव्य आम-निर्भर स्वतन्त्र गणतन्त्र के रूप में स्वतन्त्रता और मुक्त का जीवन। पेन की इस पुष्पिका के प्रभाव के बारे में अभिप्रयोजित की गुहादय ही नहीं है। कुद ही महोने में, अभी उपनिवेदों में हजागें प्रतिया भेज दी गयी किन्तान प्रतिनिधन दुविधा में पड़े लार्थों के चिन्तारों को मण्डित किया।

लोग स्वतन्त्रता के विचार को निःसंकोच भाव से ग्रहण करने लगे थे फिर भी एक बान अमी शेष थी और वह थी अंग्रेजी साम्राज्य से सम्बन्ध विच्छेद करने की औपचारिक घोषणा के बारे में सभी उपनिवेशों की स्वीकृति। पेन क्ल ही चुना था कि उपनिवेश अस्मंगति की पराकाष्ठा तक पहुँच चुके थे। वे पूरी तरह विद्रोह की स्थिति में थे। उनकी अपनी नेता व नीतिना थी। उनकी सरकारें ब्रिटिश राजा व उनकी समद की उपेक्षा करनी थी। इनका मत होने पर भी अन्तिम व निर्णायक कदम न उठाना ब्रिटिशशासकों की चाम सीमा ही थी।

इस बात का एक आपसी सम्झौता-ना था कि महाद्वीपीय कांग्रेस उपनिवेशों से स्पष्ट आदेश पाए बिना स्वाधीनता की घोषणा करने जैसा निर्णायक कदम नहीं उठाएगा। लेकिन कांग्रेस को प्रतिदिन कानून के बाहर की गयी उपनिवेश सरकारों की स्वायत्ताओं और स्वाधीनता के पक्ष में बोल देने के लिए प्रतिनिधियों की नियुक्ति के समाचार मिलते रहते थे। उन दिनों कांग्रेस में 'निडकल्लों' का प्रभाव बढ़ा हुआ था। पत्र-व्यवहार के काम को विस्तृत करके कमजोर प्रतिनिधियों में प्राण फूस कर तथा जोर भरे प्रस्तावों द्वारा देशभक्तों का उत्साह बढ़ाकर वे लोग दिन प्रतिदिन शक्तिशाली होने जा रहे थे। अन्तर्गत, १० मई, १७७६ को 'पार्लियमन्ट' को काट डालने का प्रस्ताव पास कर दिया गया। अब केवल एक औपचारिक घोषणा करना शेष था। ७ जून, १७७६ को वर्जीनिया के रिचर्ड हेनरी ली ने अपने राज्य के आदेशानुसार स्वाधीनता, विदेशों से संबंधी सम्बन्ध रखने तथा अमरीकी फेडरेशन (राज्यों का महासंघ) स्थापित करने का प्रस्ताव पेश किया। तुरंत ही एक समिति नियुक्त की गयी और उसे यह दायित्व सौंपा गया कि वह एक ऐसा औपचारिक घोषणापत्र तैयार करे-जिसमें उन कारणों का उल्लेख हो जिन्होंने उन लोगों को ऐसे प्रयत्न निरर्थक पर पहुँचने के लिए बाध्य किया था। उसमें जैकमन का अग्रशतना में पांच व्यक्तियों की एक समिति इसका समर्थन बनाने के लिए नियुक्त की गयी।

जैकमन जो उस समय केवल २३ वर्ष के थे वर्जीनिया के 'हाउस ऑफ बर्गमन' में किन्नादर्शिकया आए। उनकी स्थिति पहले ही दूर-दूर तक फैल चुकी थी। उनका क्रम हाश्याकि वर्जीनिया के एक रईस घराने में हुआ था फिर भी उनका शार्वर्यिक जीवन पीछे के दुश्मन के जोखिमपूर्ण तातावरण में बीता था। इसलिए वे अमीराना हकूक के विरोधी थे। बुद्धिमती, शिष्ट और फिटिल (एक प्रकार का वाद्ययन्त्र) के शौकीन होने हुए भी उनमें ज्ञान के प्रति अतार पालम थी, जिसे बुझाने का समय वे निकाळ ही लेते थे। इसमें सन्देह नहीं कि

जिस घोषणा का समर्थन बनाने के लिए उन्हें चुना गया था उसके महत्व को देखते हुए उस समय उनमें अधिक योग्य उपयुक्त व्यक्ति चुना ही नहीं जा सकता था। जैकमन जानते थे कि उनमें अमरीका एक भयकर युद्ध में फस जायेगा लेकिन उनका विश्वास था कि "स्वाधीनता की बेल को समय-समय पर देशभक्तों और अन्यायियों के खून में पोचना जरूरी होता है।" हाश्याकि जिस वास्तु में नाट्य करने का इरादा किया जा रहा था उसके स्थान पर किसी नयी मजबूत शासन पद्धति की व्यवस्था अब तक नहीं हुई थी फिर भी जैकमन का स्थाल था कि सरकार सन्च अर्थों में स्वयं जनता द्वारा ही बनायी जानी है, वही उसकी मुख्य आधार होती है। कदाचित् इसीलिए जैकमन किसी बहुत ही मजबूत शासन के पक्ष में न थे। उनका कहना था कि कुछ चुने हुए लोगों का आधिपत्य "जनता की मुख्य समृद्धि के विरुद्ध एक गुटबन्दी मात्र है।" घोषणापत्र में जिन महान सिद्धान्तों का जिक्र किया गया उनके प्रति जैकमन ने जैसा ही महसूस किया जैसा कि वे लोग महसूस करते थे जिनके लिए उन्होंने उसे लिखा था। उन्होंने उन्हीके विचार और उन्हीकी भावनाएँ उन्हीकी भाषा में व्यक्त की। एक तत्कालीन लेखक ने कहा है, "स्वाधीनता के इस श्मरणीय आलेख में उन्होंने समूचे महाद्वीप की आत्मा भर दी है।"

स्वाधीनता की घोषणा

४ जुलाई, १७७६ को स्वाधीनता की घोषणा हुई। उसने केवल नए राष्ट्र के जन्म की सूचना ही नहीं दी, बल्कि मानवीय स्वाधीनता का एक ऐसा दर्शन भी प्रस्तुत किया जिसे आम चलकर समूचे पश्चिमी संसार में एक सत्तीय प्रेरक शक्ति का रूप देना था। वह किन्हीं खास विचारधरों पर आधारित न था। उसकी बुनियाद मानव-स्वतन्त्रता के उन व्यापक और मूल सिद्धान्तों पर टिकी हुई थी जिसका समर्थन अमरीका भर में सर्वत्र हुआ। घोषणा में निहित राजनीतिक दर्शन भी स्पष्ट ही था :

"हम इन सभ्यों की स्वयंमिद मानते हैं, कि सभी लोग एक समान सिरधे हैं, कि सिरजन्तहार ने उन्हें कुछ ऐसे अधिकार प्रदान किए हैं जो छीने नहीं जा सकते और इन अधिकारों में जीवन रहते, स्वाधीन रहते और मुक्त-समृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहने के अधिकार भी शामिल हैं। इन्हीं अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए मानव समाज में शासन-तन्त्रों की स्थापना होती है जिसमें शान्ति की स्वीकृति से शासन को यथाचित अधिकार प्रदान किये जाते हैं अर

कभी कोई दामन-तन्त्र इन लक्ष्यों के प्रति घातक मिश्र होने लगता है, तब जनता को इस बात का पूरा हक प्राप्त है कि उसे बदले या मसाल कर दे और एक ऐसे नए शासन की स्थापना करे जिसको बुनियाद ऐसे मिश्रत्वों पर हो और जिसका गठन इस प्रकार का हो जिससे उन्हें पूर्ण सुरक्षा और प्रमत्तता का आश्वासन मिलना प्रतीत होगा।

ये 'मध्य' जैकमैन के दिमाग की उपज न थे। वे उस राजनीतिक मिश्रत्व के मूलाधार थे जिसे उनके समकालीन और बाद के लोगों ने 'स्वतंत्रमिश्र' माना था। उनको इस विभिन्न विचारधारा और व्यक्त करने की विविध शब्दावली के मूत्र थे अंग्रेजी राजनीति के दर्शन शास्त्रियों के ग्रन्थ, विद्योपन, जेम्स हैरिस्टन क्ल 'सोवियताना', जान श्याक का 'सेक्रेट ट्रोटाइज आन गवर्नमेंट' आदि। लेकिन अलिखित के भावना पत्र का उद्गम-मूत्र भी जनता की यह जागृकता कि "सरकार लोगों के लिए है न कि लोग सरकार के लिए"। जैकमैन के अनुसार सरकार का काम है जनता को उनके जोरन की रक्षा, स्वाधीनता की रक्षा और मुख्य-मस्त्रि के लिए उनके प्रयासों में सहायता करना न कि उनका दमन करना या प्राण अधिकारी का दुष्टयोग करना।

स्वाधीनता की घोषणा सम्बन्ध-विच्छेद की सूचना ने भी कहीं ज्यादा उपयोगी मिश्र हुई। इसमें व्यक्त किए गए विचारों ने जनता में एक नयी चेतना, एक नया उत्साह लहरा उठा। क्योंकि उसने जनता को अपना महत्व समझने के साथ ही अपनी स्वतन्त्रता, स्वशासन और समाज में सम्मानप्रद स्थान के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा भी दी थी। इसमें विशेष रूप से अंग्रेज राजा जार्ज नृतीय को केन्द्रबिन्दु बनाया गया। भगई ने व्यक्ति-व्यक्ति के बीच होने वाले विवाद का रूप दे दिया था। अब संघर्ष कुछ निर्विरोध कानूनों और अमूर्त के विरुद्ध नहीं रह गया था बल्कि हाथमग में बने एक व्यक्ति विशेष में था। माधारण जनसमुदाय का संघर्ष का वैयक्तिक कारण और व्यक्तिगत शत्रु प्रदान करके घोषणा-पत्र के विचारों ने कानून को लोकप्रिय बनाने के साथ जनता की अपरिचित शक्ति में मजबूत बना दिया।

फ्रान्स युद्ध ६ वर्ष से भी ज्यादा काल तक चलता रहा। हरक उपनिवेश में लड़ाइयां हुईं। कोई एक दर्जन महत्वपूर्ण और घमासान युद्ध हुए। स्वाधीनता की घोषणा के पहले भी कुछ सैनिक कार्रवाइयां की गयी थी जिनमें इस युद्ध की सम्भावना बढ़ाने में काफी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। १७७६ की फरवरी में मार्थ कैरोलाइना के राजप्रवक्तों को कुचला गया। मार्च में वास्टन से ब्रिटिश

सेना को दबाव डालकर बाहर निकाला गया। घोषणा के कुछ महीनों बाद तक अमरीकियों को अनेक असफलताओं का सामना करना पड़ा। पहली नाकासपाखी न्यूयार्क में मिली। वाशिंगटन ने दूर में ही बह दिया था कि अंग्रेजों सेनाओं का पहला निशाना न्यूयार्क होगा क्योंकि यूरोपियनकों वही से सैनिक सामर्थ्य और सहायता मिलती थी। फिर भी, अंग्रेज सेनापति जनरल सर विलियम होब ने तुरंत ही उस पर हमला नहीं किया। अमरीका का मित्र होने के नाते उसने साम व दण्ड दोनों के उपयोग के लिए संयोग होकर यह प्रस्ताव रखा कि यदि बिंदोही लड़ाई बन्द कर दें तो उन्हें राजा की आर से क्षमा कर दिया जायेगा। किन्तु वह स्वाधीनता के उपभोग का आश्वासन न दे सका। उसका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया गया और २० हजार अंग्रेज सैनिकों और अंग्रेज नौसेना का मुकाबला वाशिंगटन के १८ हजार स्थल सैनिकों को करना पड़ा।

न्यूयार्क की रक्षा सफलतः एक दुर्गमा मात्र थी किन्तु वाशिंगटन ने महत्प्रयत्न किया कि उन्हें उस दुर्ग को बिना युद्ध किए आगामी नव नवों छोड़ना चाहिए। जो युद्ध हुआ उसमें वाशिंगटन की योजना सफलतापूर्वक मिश्र हुई। उसके सेनापतियों ने अपना नियत कार्य नहीं किया। अंग्रेजों की सहाय्य अधिक थी। स्थिति नाजुक प्रतीत हुई और वाशिंगटन छोटी-छोटी ताबों के महान् नदी पार कर अपनी टुकड़ी सहित ब्रुकलिन में संगठन तट की ओर आ गया। मौसम में हवा का रुख उत्तर की ओर था इसलिए अंग्रेजों का जमी देहा ईस्ट नदी के अंतर्गत ऊपर की ओर नहीं आ सका। होब की कल्पना कभी पता न चल सका कि हो क्या रहा है और कानिद दसवीं-अमरीकी लोगों को शरारी मान देने का सुनहरा मोक्ष उनके हाथ में निकल गया। क्योंकि यदि उस समय वाशिंगटन की सेना पकड़ी जाती तो काथय में लिए दूसरी सेना नया करना कठिन हो जाता।

हालांकि वाशिंगटन को निरन्तर पीछे हटना पड़ रहा था किन्तु उसने अपनी सेना को वर्ष के अंत तक पूरी तरह संगठित रखा। ट्रेटन और प्रिन्स्टन की जितनी से उपनिवेशों की आशा-फाल्गरी पुनः हरी हो उठी। किन्तु दुर्भाग्य का एक जबरदस्त झोका ओर आया। सितम्बर १७७७ में फिलाडेल्फिया पर अधिकार कर लिया और वाशिंगटन को वीलीफोर्ड में अपने सैनिकों सहित मायूसी के साथ सदिया बिनाने पर विवश होना पड़ा। अपने सिविलों की आग के सामने टिड्डरने तथा बर्फ पर अपने रक्तम पदचिह्न छोड़कर भागने हुए निराश देशभक्त सैनिक अपनी पगजब के बंधन पर शान पड़ने थे।

दूसरी ओर १७७७ में ही अमरीकियों की एक बड़ी जीत भी हुई। सैनिक

दृष्टि में हमने कानिा को एक मनावाङ्गित मांड प्रदान किया। अंग्रेज मेनापति बरगोवन अपना मेना के साथ बंगालेन भोल मे लेकर हदसन नदी तक के क्षेत्र पर अधिकार करके न्यू इंग्लैण्ड का अन्य उपनिवेशों मे कानई अलग कर देने के उद्देश्य मे केगाडा मे भेजा गया। हदसन नदी के उत्तरी भाग मे पहुँच कर उमे मिनस्वर के मध्य तक रसद आदि की प्रतीक्षा मे रुकना पडा। अमरीका के भूगोल से अपारिचित होने के कारण उसने माना कि बरगाम्ण को पार करके कॅनडिडकट नदी के किनारे-किनारे जाकर रास्ते मे कानई १३ मी घाँडे तथा मांस, पशु तथा गाइयों एकत्र करके लोट आन का काम एक छोटी टुकड़ी द्वारा जो सनाह मे आसानी के साथ किया जा सकता है। सापन जूतने के इस साहसिक कार्य के लिए उनमे ३०५ हॉसियान ड्रगन (बिना घाँडे के) और लगभग ३०० टॉरी जूने। वे बरगाम्ण पकिन तक भी न पहुँच पाए। स्थानीय मिलिटिया मे उनकी टक्कर हुई और कुछ घाँडे मे हॉसियान ही जान बचाकर लोट पाए। इसी बीच मोंहाक की घाटी मे मौजूद अमरीकी सैनिकों मे उन अंग्रेज मेनाओं को भी रोक दिया जो ईरी झील मे बरगोवन की मेना मे मिलने जा रही थी।

विजय और स्वाधीनता का प्राप्ति

बरगाम्ण के युद्ध में उत्तरी न्यू इंग्लैण्ड के लगभग सभी युद्धक्षेत्रे निरामो शामिल हो गए थे। बरगोवन द्वारा की गयी देर ने वॉशिंगटन को हदसन के निकले भागों मे नियमित मेना भेजने का मोका प्रदान कर दिया। जब तक बरगोवन अपनी विशाल मेना के साथ आगे बढ़ा उसका सामना करने के लिए वहा की गांधी मिलिटिया तैयार थी। यह मेना अपने साथियों को कामयाबी मे उत्साहित थी, इसमें प्रमिशित व नियमित सैनिक नों थे ही साथ ही इसे अनुभवी जानकार निर्देशकों का नेतृत्व भी प्राप्त था। मुश्किल के पाले के साथ ही युद्ध प्रारम्भ हुआ। बरगोवन के दो आक्रमण विफल कर दिए गए। अंग्रेजों को सगटौना की ओर भागना पडा। शरदकालीन वर्षा शुरू हो चुकी थी। अनेक हॉसियान सिपाही भंग गए। अंग्रेजों को अपने बरारों और विशाल सख्या में अमरीकी दिव्वायी देने लगे। १७ अक्टूबर, १७७७ को बरगोवन ने अपने ५ हजार मे अधिक सैनिकों की विशाल मेना के साथ अमरीकी मेनापति जनरल मॅट्स के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। यह युद्ध का एक निर्णायक प्रहार था क्योंकि इसका न केवल सामरिक महत्त्व था वरन् इसमें प्रभावित होकर इंग्लैण्ड का पुरुवनी शत्रु फ्रांस अमरीका की ओर आ गया।

फ्रांस अपनी १७६३ की पराजय के बाद से ही बदला लेने की फिराक में मौन बैठे था। अमरीका के मामलों मे भी उसका उसाह काफी बढ़ा हुआ था। फ्रांस का बौद्धिक जगत, हालांकि गणतन्त्रवादी विचारधारा मे अब भी काफी दूर था फिर भी सामन्तवादी व्यवस्था और विधायाधिकारों मे विद्य था। स्वाधीनता की घोषणा के उपरान्त फ्रांस के दरबार में बॅंजामिन फॅंकलिन का भ्रम्य स्वागत हुआ। फ्रांस सरकार शुरू से ही तटस्थ न थी। वह संयुक्त राज्य (अमरीका) को सैन्य सामर्थी व रसद की मदद दे रही थी। किन्तु प्रत्यक्षतः इंग्लैण्ड से युद्ध छड़ने की प्रार्थना नहीं उठाना चाहती थी। बरगोवन के आत्मसमर्पण के बाद फॅंकलिन व्यापार व सैन्य सन्धियाँ करने मे सफल हुआ और दोनों गण्टों ने संकल्प किया कि जब तक अमरीकी स्वाधीनता का मामला नहीं मिल जाती वे एक साथ मिल कर उसके लिए सन्धय करेंगे। इसके पहले ही बहुत मे फ्रांसीसी स्वयमेवक अमरीका के महायतायें चल पडे थे। इनमें सब से प्रमुख था मानिबन द लाफायेत। वह एक तीजवान मेना अधिकारी था। अमरीकी स्वाधीनता का बहावा देने, फ्रांस का उँचा सम्मान प्रदान करने, इंग्लैण्ड को नीचा दिखाने और इन सबके साथ ही अपनी सैन्य सम्बन्धी योग्यता का प्रदर्शन करने की महत्वाकांक्षाओं के साथ वह वॉशिंगटन को मेना में अवैतनिक जनरल के पद पर भर्ती हुआ। वहा उसने ईमानदारी और लगन के साथ काम किया और जिन 'महान अमरीकी' को वह आदर्श पुरुष की भाँति उपासना मा करता था उमी वॉशिंगटन ने उसे समुचित सम्मान और आदर प्रदान किया।

१७७९-८० की शरद ऋतु में लाफायेत बसिलेज गया। वहा उसने अपनी सरकार का इस बात के लिए राजी करने का ठोस प्रयास किया कि वह अमरीका में चलने वाले युद्ध को समाप्त करने के लिए कुछ शरतनिक प्रयत्न करे। शरद ही लुई १६वें ने जनरल रोसबुम्बू के नेतृत्व में ६००० जवानों की श्रेष्ठतम आक्रमक मेना भेजी। साथ ही, फ्रांसीसी नौसेना ने अंग्रेज सेनाओं को भेजी जाने वाली रसद आदि के संभरण को और भी कठिन बना दिया। फ्रांस और अमरीकी ध्वंसकारी जहाजों ने, जिन्हें उस समय 'श्राइबैटियम्' के नाम से पुकारा जाता था, अंग्रेजी व्यापार की भी तहम-तहम कर डाला। इस साहसिक कार्य के मिलमिले में बहादुर फ्रांसीसी नौ-कप्तान जॉन वाल जॉन्स का नाम बहुत ही प्रसिद्ध है। स्पेन और नितरलैण्ड के युद्ध-अवधे से भी अंग्रेजों की हानि हुई।

फिर भी, अंग्रेजी सेनाओं ने बिना चमत्सान युद्ध किये मरान नहीं छोड़ा। १७७८ में उन्हें फ्रांसीसी जमी बेंडे के भय के कारण फिलाइफिका छोड़ने पर



४ जुलाई १७७६ को जिलादेल्फिया में स्वतन्त्रता की घोषणा। पर हस्ताक्षर होने के उपलक्ष में पंचधाम से उत्सव मनाया गया और तरह-तरह के रंगीन भण्डे कहराए गए।



लाई कार्नेवालिस का आत्मसमर्पण, १९ अक्टूबर १७८१

विषय कर दिया गया। इस साल उन्हें आहापो बेली में और भी कई बार मृतु की खानी पड़ी। इससे उत्तर-पश्चिमी इलाकों में अमरीकी आधिपत्य निश्चिन्त हो गया। किन्तु दक्षिण में अंग्रेजों का दबाव जारी था। १७८० में मुद्रिग्ड दक्षिणी बन्दरगाह चार्ल्सटन पर उनका कब्जा हो गया। कुछ समय के लिए कॅरोलाइना प्रदेश भी उनके हाथ में आ गया। अगले साल उन्होंने वर्जिनिया पर अधिकार करने का प्रयत्न किया परन्तु सत्र वर्ष की गर्मियों में फ्रांसीसी नौसेना का नैसार्थीक की खाड़ी और अमरीकी समुद्र तट पर अस्थायी अधिकार हो गया। वाशिंगटन और रोचम्ब्यू की सेनाएँ जल-मार्ग से खाड़ी के दक्षिण में हॉली हुई मिश सेनाओं से मिल गयीं और कुल मिश्र कर उनकी संख्या १५ हजार हो गयी। इस विशाल सेना ने लाई कार्नेवालिस के ८ हजार सैनिकों को वर्जिनिया के तट पर याकंटाउन में घेर लिया। १९ अक्टूबर, १७८१ को कार्नेवालिस ने आत्मसमर्पण कर दिया और इसके साथ ही क्रांति को रोकने वाले सैनिक प्रयासों का अन्त हो गया।

याकंटाउन में अमरीका की जीत का समाचार जब यूरोप पहुँचा तब इंग्लैण्ड के हाउस ऑफ कामन्स में युद्ध समाप्त करने का प्रस्ताव पास किया गया। इसके तुरंत बाद प्रधान मन्त्री लाई नार्थ ने इस्तीफा दिया और राजा ने एक नयी सरकार बनाकर उसे अमरीकी स्वाधीनता के आधार पर शांति-सन्धि करने का दायित्व सौंपा। अप्रैल, १७८२ में शांति की वार्ता शुरू हुई और नवम्बर तक चली। नवम्बर में अंग्रेजों के साथ शार्विभक सन्धिया पर हस्ताक्षर हुए। किन्तु इन सन्धिियों पर असल तब तक नहीं हो सकता था जब तक फ्रांस भी इंग्लैण्ड से सन्धि न कर ले। १७८३ में अन्तिम और निश्चित रूप से सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किए गए। सन्धि में अमरीकी के १२ राज्यों की स्वतन्त्रता और सत्ता को मान्यता दी गयी। मिशिगिपी के पश्चिम की विस्तारवादी भूमि भी उन्हें प्रदान की गयी और उत्तर में लगभग वही सीमा मानी गयी जो आज तक मौजूद है। कांग्रेस ने राज्यों से इन बातों की सिफारिश करने को कहा गया कि वे राजभक्तों की उच्च सम्पत्तियां वापस कर दें। यूनाइटेड स्टेट्स (संयुक्तराज्य) के लोगों को यह अधिकार मिला कि वे न्यू फाउण्डलैण्ड के समुद्र में मछलियां पकड़ सकें तथा उन्हें नौवा क्लारिया और लेबारांडर के अनबन्धे इलाकों में मुवा सकें।

वैयक्तिक स्वतन्त्रता की भावना का अभिनन्दन

स्वाधीनता ने अमरीकियों को विदेशी आधिपत्य से ही मुक्त नहीं किया, वे नयी परिस्थितियों में विकसित होने वाले नए विचारों व धारणाओं के अनुसार

एक नए समाज का निर्माण करने के लिए स्वतन्त्र होये। विद्रोह के समय हालांकि उपनिवेश इंग्लैण्ड के संविधान के अनुसार अपने अधिकारों को मांग कर रहे थे किन्तु सन्धे अर्थों में वे अपना एक नया राजनीतिक दर्शन प्राप्त करने का संघर्ष कर रहे थे। वह दर्शन था स्वयं जनता का स्वतन्त्रता—अमरीकी लोकतन्त्र का यह बुनियादी सिद्धान्त है। एक दूसरे राजनीतिक सिद्धान्त भी उन्हें प्रिय था—स्वाधीन स्वशासन का सिद्धान्त अर्थात् हजारों मील दूर बनाए गए कानूनों से शांति नहोने का विचार। अमरीकी भावना ने मनुष्य-मनुष्य के बीच के कानूनी भेदों के उन्मूलन को बढ़ावा दिया। सनाधिकार हालांकि क्रांति के तुरंत बाद मौलित हो था किन्तु प्रत्येक दशाब्दी में उनका तब तक विस्तार होता रहा जब तक कि हर नागरिक को वह अधिकार प्राप्त न हो गया। 'मनुष्य के अधिकारों' की भावना संसार भर में फैली और ४० वर्षों के भीतर ही महाद्वीपीय अमरीका के स्पेनी उपनिवेशों ने इंग्लैण्ड के उपनिवेशों का ही अनुसरण किया। यूरोप में नयी दुनिया के आप्रवास में उन्हें उनकी चिराभिलाषित राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त हुई। क्योंकि क्रांति का उत्पन्न होना ही ही संसार के सभी भागों में स्वतन्त्रता के प्रेमी अमरीका आए। युद्ध के जमाने में ही फ्रैकलिन ने काम में यह भविष्यवाणी की थी कि संसार में अत्याचार इतने सामान्य रूप में स्थापित हो चुका है कि अमरीका के स्वतन्त्रता के प्रेमियों का आश्रय स्थान बनने की आशा बड़ी ही मधुर और मोहक है।

वर्षों बाद नार्थ विचारों हेतु रिश्लि गिट्फेल्ड ने अपने बचपन के उस दिन के विशेष सम्मरण लिखे जब औपनिवेशिक विजय का समाचार उनकाकें में पहुँचा था।

उन्होंने लिखा: "मुझे वह दिन भरीभानि याद है जब स्वाधीनता सन्धे की विजय और शांति-समापन का उत्सव मनाया जा रहा था। मेरे माता का घर बन्दरगाह पर सभी जहाज और नौकाएँ मरायी गयी थी। उनके मस्तुलों पर फ्रिण्डिया लहरा रही थी।... पिता जी ने घर में कुछ मेहमानों को आमन्त्रित किया था और प्रचलित रिवाज के बिन्कुल विपरीत हम बालकों को भी मंत्र पर बुला लिया गया था। पिता जी ने उत्सव का महत्त्व बताया, हमारे गिलासों को भी पंच नामक मंदिर-पंच में भर दिया गया। और हमने नए गणतन्त्र की सफलता की मंगल कामना करने हुए पंच ग्रहण किया। हमारे बायींभे में एक इनिश और एक उत्तरी अमरीका का ध्वज फहरा रहा था। सभी लोग इन विजय के बाद की सम्भावित महान परनाओं की परिक्लपना कर रहे थे। वह इतिहास के एक रचिनम दिवस का संश्लेषण विज्ञान था।"

राष्ट्रीय सरकार का स्वरूप निर्माण

“धरती के हर व्यक्ति और व्यक्तियों के हरेक समुदाय की स्वशासन का अधिकार है।”

—टामस जैर्ज़सन, १७९०

शु.

रैण्ड के विपक्ष कायमाबा हीने वाली कानिने ने अमरीकी जनता को गाण्टुी के परिवार में एक स्वतन्त्र स्थान प्रदान किया। इससे उनकी समाज-व्यवस्था में भी परिवर्तन हुआ। बंग परम्परा और विधेयाधिकारो का महत्त्व गिर गया और मानवीय समानता का तर्कीह दी गयी। यम्मिलित आशा और सपने की महद्यो म्मूनिया उनके मन-मनम पर छापी हुई थी। इनमें सबसे बड़ी देन कानिने की यह बनोनी थी कि उन्हे यह मिड करना था कि उनमें अपना नया स्थान सुरक्षित रखने की योग्यता तथा स्वशासन के लिए अपेक्षित क्षमता मौज्द है।

कानिने की गहनता ने अमरीकी-जनों को यह मौका मिला था कि वे स्वतन्त्रता की घोषणा में अग्रसर किए गए विचारों व सिद्धान्तों का वैधानिक रूप व अभिव्यक्ति दे सकें और राज्यों की विधान-सभाओं द्वारा कुल्लेक शिकायतों को रफा कर सकें। मुद्रकनराज्य अमरीका के बीच राष्ट्रपति जेम्स म्दिगन ने लिखा था, “अमरीका में जिन प्रकार स्वतन्त्र सरकारों की स्थापना हुई है उसमें अधिक प्रथमा किसी ने नहीं प्राप्त की, क्योंकि यह पहला मौका था...जब कि स्वतन्त्र निकायियों को स्वशासन के स्वरूप पर विचार करने तथा उसके मंचालन के लिए विन्यासवाच नागरिकों का चुनाव करने हुए देखा गया था।”

आज अमरीकी जन लिबिन सविधानके अनुगार बनने व काम करने के इतने अभ्यस्त हो जाके हैं कि वे उनकी हर बात को सुनने हो सही काम लेते हैं। नो भी, लिबिन सविधान को परम्परा का विकास अमरीका में ही हुआ और वह इतिहास के सर्वप्रथम सविधानों में से एक है। अमरीका के दूसरे राष्ट्रपति जान एडम्स ने लिखा था: “सभी स्वतन्त्र राज्यों में सविधान ही अन्तिम प्रमाण है।” हर जगह अमरीकी-जनों ने एक ऐसे स्थायी कानून की मांग की जिसके अन्तर्गत मुक्त रूप में जीवन यापन किया जा सके। १० मई, १७७६ को कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पास करके उपनिवेशों को यह अधिकार दे दिया कि वे ऐसी नयी सरकारों का गठन करें जो अपने नागरिक को अधिक से अधिक सुख व सुरक्षा प्रदान कर

सकें। कुछ ही पहले ही ऐसा कर चुके थे और स्वाधीनता की घोषणा के उपरान्त वर्ष भर के भीतर तीन को छोड़ कर हरेक राज्य ने सविधान बना लिया।

इन अनेकों की रचना ने लोकतन्त्रीय तत्वों को अपनी शिकायतों के निवारण करने तथा आम मजबूत शासन को अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति करने का अवसर प्रदान किया। बनने वाले अधिकतर सविधानों में लोकतन्त्रीय विचारधारा का प्रभाव परिलक्षित होता था हाज़ाकि किसी में अनीय से नाना नही शोहा गया था क्योंकि उनकी रचना उन अमरीकीयों द्वारा की गयी थी जिनकी पृष्ठभूमि में औपनिवेशिक जमाने के अनुभव, अनेकों आचार-व्यवहार और कामीसी राजनीतिक दर्शन था। निस्सन्देह, राज्यों के सविधानों के मसविदों की रचनाओं में ही कानिने की पूर्णता प्राप्त हुई। जैसा कि स्वाभाविक है सविधान की रचना करने वालों का पहला लक्ष्य उन जनअपहारण्य अधिकारों को सुरक्षा करना था जिनके अपहरण के कारण उन्हें दुःखीह में सम्बन्ध नोइने पड़े थे। परिणामतः, हरेक सविधान का प्रारम्भ ‘अधिकारों की घोषणा’ में किया गया। वजिनिया के सविधान में, जिसके आशर पर अन्य सभी राज्यों के सविधानों की रचना हुई थी, इस प्रकार के सिद्धान्तों की तालिका भी दे दी गयी थी। उदाहरणार्थ, जनता की प्रथमता, पदाधिकारियों का बदलेन रहना, निर्वाचन की स्वतन्त्रता और मौलिक अधिकारों का विस्तृत उल्लेख—नागराण जमानन और मानवीय दण्ड, स्थायी सेना के बजाय मिलिटिया, मुद्रकमो का वैधानिक तरीको से वीधर नियंत्रण, जूरियों द्वारा अभियोग पर विचार करने, लिबिन, व प्रकाशन करने की स्वतन्त्रता, बहुमत द्वारा शासन में सुधार करने या उसे बदलेन का अधिकार तथा बिना नाम के वार्टों की जारी करने का निषेध। दूसरे राज्यों में इस तालिका में कुछ और वृद्धि की गयी। आषषष व सभा करने की स्वतन्त्रता, प्राण-नापच या अपीछ करने का अधिकार, शस्त्र रखने की स्वतन्त्रता, हेरियस कार्पस की अपील दाखिल करने, सबके लिए समान रूप से कानून का उपयोग करने आदि के अधिकार और शामिल किए गए। इसके साथ ही प्रत्येक राज्य के सविधान में शासन की कार्यकारी,

विधिवारी और न्यायकारी शाखाओं के विद्वानों को स्वीकार करने हुए यह माना गया कि इनमें से प्रत्येक शाखा दूसरी दोनों शाखाओं की नियरानी करने के साथ ही आपस में संतुलन बनाए रहे।

जिम समय तेरह मूल उपनिवेश राज्यों में परिणत होने के साथ-साथ स्वतन्त्रता की नयी स्थितियों के साथ समझौता कर रहे थे उस समय समुद्र तट की बस्तियों के पश्चिम में दूर-दूर तक फैले प्रदेश में नए गणतन्त्रों का विकास हो रहा था। देश की सर्वोत्तम मृदा और समृद्धिशीली भूमि के लालच में अग्रगामी लॉग अफ़ासियन पर्वत के पश्चिम की ओर भारी लाटाद में बढ़ने लगे गए। १७७५ तक जलमार्गों के किनारे-किनारे दूर-दूर तक दमिरी हज़ार लोग बस चुके थे। इन वाशिंग्टन और पूर्व के राक्षसीक मत्ता केंद्रों के बीच पर्वत मालाएँ तथा मैकडाँ मील की दूरी थी। इसलिए उन्होंने अपनी निजी सरकारों का गठन किया और यहां के समाज फलते-फूलते गये। जिन नदों पर समुद्री जुगाट से क्षति की आवश्यकता रहती थी वहां के निवासी भीतरी प्रदेशों में नदियों की उर्वर घाटियाँ, पक्की लकड़ी के जंगलों और 'पैरी' क्षेत्रों में जाकर बसने लगे। १७७० तक अफ़ासियन पर्वतों के पार की आबादी १ लाख २० हज़ार से ज्यादा हो गयी।

नए राष्ट्र की समस्याएँ

क्रान्ति का समापन होते ही संयुक्तराज्य अमरीका के सामने एक पुराना अनसुलझा पश्चिमी प्रश्न मौजूद था। भूमि, फर के व्यापार, आदिनामी दृष्टिकर्मों, बस्तियों और अधीन क्षेत्रों की शासन व्यवस्था सम्बन्धी अपनी लतामूल जटिलताओं के साथ 'माझाज्म' की समस्या सामने थी। युद्ध के पूर्व अनेक उपनिवेश अफ़ासियन पर्वतों के आगे की भूमि पर बड़े-बड़े और परस्पर मिश्रित दावे कर रहे थे। इन राज्यों को इस समुद्र भूमि के मित्र जाने की सम्भावना में उन राज्यों को अनौचित्य दीख पाया जो पश्चिम के लिए एंभा कोई दावा नहीं कर सकते थे। इन राज्यों के प्रवक्ता के रूप में मेरीकेण्ट ने एक प्रस्ताव पाम करके यह भाग की कि पश्चिमी भूमि को संविधानित सम्पत्ति माना जाय और कांग्रेस उसे स्वतन्त्र और स्वाधीन सरकारों में विभाजित कर दे। इन विचार का अन्धा उरसाहसपूर्ण स्वागत नहीं हुआ। १७८० में न्यूयॉर्क ने संयुक्त राज्य के एक में अपना दावा वापस करके मार्ग प्रदर्शन किया। जीस ही अन्य उपनिवेशों ने भी उसका अनुसरण किया और युद्ध के अन्त तक यह प्रतीत होने लगा कि आहायो नदी के उत्तर तथा सम्भवतः अलबॅनी पर्वतों के पश्चिम की समस्त भूमि कांग्रेस



अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति तथा स्वतन्त्रता की घोषणा के लेखक टॉमस जेफरसन।

के अधिकार में आ जायेगी। लासो कोड़ो एकद भूमि को यह परिमित मिल-कोयन एका और राष्ट्रियता को प्रत्यक्ष मासो थी। युद्धकाल के मकरमय वर्षों में इसने राष्ट्रिय प्रभुता के विचार को भी बल प्रदान किया। फिर भी, यह एक बड़ो समस्या थी जिसका समाधान आवश्यक था।

यह समाधान 'अर्टिकिल आउ कान्फेरेसन' द्वारा प्राप्त किया गया। यह एक गुंता ओपचारिक करार था जिसने १७८१ में उपनिवेशों को एक त्रिजल मूर में बांध रखा था। इन अर्टिकिलों (अनुच्छेदों) के अनुसार नयी पश्चिमी भूमियों के मयले में स्वतन्त्रता को एक मोतिम प्रणाली अपनाई गयी। इस प्रकार जल जैमी स्थिति और राज्य व्यवस्था के बीच को खाई सन्तोषजनक दूरी में पाटो गयी। यह प्रणाली १७८७ के 'गार्थ वेस्ट आर्डिनेन्स' द्वारा घोषित की गयी और उसके बाद महाद्वीप के सभी राज्यक्षेत्र तथा मूलतः राज्य के अधीन ज्यादातर द्वीपों पर लागू की गयी। १७८७ के अध्यादेश में उत्तर-पश्चिम के राज्य क्षेत्र को एक जिले के रूप में संगठित करने तथा वायस द्वारा नियुक्त गवर्नर और न्यायाधीशों द्वारा उसके प्रशासन की व्यवस्था की गयी थी। अध्यादेश में यह भी कहा गया था कि जब इस राज्य-क्षेत्र में मत देने योग्य आयु के ५ हजार से अधिक पुरुष हो जायेंगे तब इसे दो सदनों की विधान सभा बनाने का अधिकार दिया जायेगा जिसमें से लोअर हाउस (नीचे का सदन) के सदस्य यहाँ के लोगों द्वारा चुने जायेंगे। साथ ही, उस समय यह राज्य क्षेत्र कांग्रेस को अपना एक प्रतिनिधि भी भेज सकता जिसे वायस देन का अधिकार नहीं होगा। इस राज्य क्षेत्र में अधिक से अधिक ५ और कम से कम ३ राज्य बनाए जा सकेंगे और जब उनमें से किसी भी राज्य में ६० हजार से अधिक स्वतन्त्र निवासी रहने लगेंगे तो उसे 'सभी मामलों में मूल राज्यों के समान आधार पर' अपने आप एक प्रतिनिधि भी भेज सकता जिसे वायस देन का अधिकार नहीं होगा। इस राज्य-क्षेत्र के लः अनुच्छेदों द्वारा नागरिक अधिकारों और स्वतन्त्रताओं के आश्रयन के साथ ही शिक्षा को प्रोत्साहन तथा इस बात को गारण्टी भी दी गयी कि "इस राज्य-क्षेत्र में न तो दाम व्यवस्था रहेगी और न किसी ने उनको इच्छा के विपरीत धर्म करवाया जायेगा।"

इस तरह समानता के सिद्धान्त पर आधारित एक नयी औपनिवेशिक नीति का मसाम्म हुआ। नयी नीति ने एक प्रमान में सम्मान न देने वाले इस सिद्धान्त का स्पष्ट रूप दिया कि उपनिवेशों का अस्तित्व मान्यदेव के लिए ही है और वे राजनीतिक दृष्टि से अधीन व सामाजिक दृष्टि से हीन हैं। इस धारणा के

बजाय यह विचार स्वीकार किया गया कि उपनिवेश मूल राष्ट्र के ही विस्तार-भाग हैं, उन्हें समानता सम्बन्धी सभी लाभ विशेष कृपा के रूप में नहीं बरन अधिकार के रूप में प्राप्त होना चाहिए। अध्यादेश को व्यवस्थाओं द्वारा अमरीका को राजक्षेत्र सम्बन्धी पद्धतियों तथा औपनिवेशिक नीति की नींव पड़ी और इन्होंने ही उसे इस योग्य बनाया कि वह पश्चिम में प्रशास्य महासागर तक विस्तार पा सके तथा १३ राज्यों के राष्ट्र में ५० राज्यों के राष्ट्र तक, मापेसतया स्वल्प कठिनाइयों के साथ, विकास कर सके।

शासन सम्बन्धी नयी धारणाओं की आवश्यकता

फिर भी, दुर्भाग्यवत अल्प समस्याओं का मुकामने में 'अर्टिकिल आउ कान्फेरेसन' निगमादायक सिद्ध हुए। अध्यादेश को स्पष्ट कमी यह थी कि वे उन तरह राज्यों को मयले अर्थों में राष्ट्रिय सरकार नहीं प्रदान कर सके जो १७७६ में, जब कि उनके प्रतिनिधि अर्थों सेना के अतिक्रमण में अपनी स्वतन्त्रताओं को रक्षाथ मिले थे, सम्भोगना के साथ एक होने की चेष्टा में थे। इन्सेपर में हुए युद्ध के दबाव ने उनके बीच वर्ष पहले के उस रवैय को काफ़ी बदल दिया था जब उपनिवेशों की विधान सभाओं ने राज्यों का मय बनाने की 'अल्लानो योजना' को रद्द किया था। उस समय तो वे अपनी स्थानीय स्वाधीनता का श्रुद से श्रुद भाग भी किसी मस्या को देने के नैवार न थे, भले ही उस मस्या के लोभा का बुराव उन्होंने स्वयं ही स्वयं न किया हो। किन्तु, कालि के दौरान में पारम्परिक महायात्रा फलान्यादक व हितकारी सिद्ध हुई और वैयक्तिक अधिकार लिम्सा अनेक क्षेत्रों में बहुत हद तक घट गयी।

१७८१ में अनुच्छेद लागू किए गए। यद्यपि महाद्वीपीय कांग्रेस-पद्धति द्वारा जो शासन व्यवस्था को गयी थी उसमें इन अनुच्छेदों द्वारा अर्थव्यवस्था तत्र काफ़ी प्रगतिशील था, फिर भी इस शासन-तन्त्र में भी अनेक खामियाँ थी। सीमादेश्यों को लेकर भगई होने थे। न्यायालयों के निर्णय एक-दूसरे के साथ टकराने लगे थे। मेगबुसेट्ट, न्यूयार्क और पैन्सिलवैनिया को विधान सभाओं ने सीमाकर सम्बन्धी ऐसे कानून बनाए जिनसे छोटे पड़ोसियों को ठेस पहुँची। अन्तर्जमीय व्यापार पर लगाए गए प्रतिबन्धों ने परस्पर कटुता उत्पन्न हुई। उदाहरणार्थ, एक कानून के अनुसार न्यूजर्सी के लोग हरसन नदी पार करके बिना भारी चुनो दिए, न्यूयार्क के बाजारों में मक्की आदि नहीं बेच सकते थे।

यथोचित सीमा शुल्क लगाया राष्ट्रिय सरकार का काम है, व्यापार को निय-

मित व नियमित करना भी उसी का फर्ज है लेकिन अन्तच्छेदों में ऐसी कोई व्यवस्था न थी। राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कर लगाने का अधिकार भी उसे होना चाहिए, यह भी उसे प्राप्त न था। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के नियंत्रण का अधिकार एकमात्र उसे ही होना चाहिए था, परन्तु अनेक राज्यों ने विदेशों के साथ स्वतन्त्र रूप में सम्झौता शर्तियाँ बना रखी थीं और अनेक राज्यों के पास अपनी छोटी-छोटी नौसेनाएँ भी थी। मुद्राओं के बारे में भी एक विचित्र प्रणाली थी। लगभग एक दर्जन विदेशी राष्ट्रों ने स्विकृत चला रखे थे। साथ ही राष्ट्रीय सरकार व राज्यों की ओर से विविध प्रकार के नोट व कागजी हुण्डियाँ भी जारी थीं जिनका उत्तरोत्तर अवमूल्यन होता जा रहा था।

युद्ध के परवान् की आर्थिक कठिनाइयों के कारण सर्वत्र और विशेषतः किमानों में अगम्यता फैल रहा था। बाजार में खनिहर पैदावार की अभाव भी। कर्जदार किसानों में बँबोनी थी। वे निरकी रखी गयी अपनी सम्पत्ति की अवधि के भीतर ही लुट्टा लेने अथवा कर्ज न देने पर कौद भुगतने के विषय कुछ ठोस कारबाइयों की मांग कर रहे थे। अदालतों में कर्जों सम्बन्धी मुकदमों का ताता लगा था। १७८६ की गमियों में कई राज्यों की जनता ने विविध परिषदें बनाकर और सभाएँ बुलाकर राज्यों को प्रशासन में सुधार की मांग पेश की। बहुत से किमान कर्ज न दे पाने के कारण जेल भुगतने या बंशारम्पगान लेनी की क्षति में पचराकर हिंसा पर उतर आये।

मैसाचुसेट्स में तो एक भूतपूर्व सैनिक कोंट्रेन डेनियल गेज के नेतृत्व में किसानों के झुण्ड के झुण्ड १७८६ की वायट क़ानून में ज़िला अदालतों को, राज्य का अगला चुनाव होने तक कर्ज सम्बन्धी मुकदमों का निर्णय करने में रोकते लगे। राज्य सरकार ने उनका कठोर विरोध किया। कुछ दिनों तक नों यह आसंका बनी रही कि कहीं वायटन का राजकीय दायन उन्मोजित किसानों द्वारा घेर न लिया जाय। किन्तु विद्रोहियों को राज्य को मिलजुलिया में पहाड़ियों तक खदेड़ कर निरन्तर-बिन्तर कर दिया। विधानसभा ने विद्रोह दान्न होते ही किसानों को विनाशियों के अधिकार तथा उनके निन्तार पर विचार किया।

इस समय वासिगटन ने लिखा कि राज्यों को एकता बान् की नींव पर टिकी हुई है और कायेंन का प्रभाव अत्यन्त क्षीण हो चुका है। पोटोमैक नदी में नौ-चालन के प्रवण पर मैरिलैण्ड और वर्जिनिया के भगदों के कारण १७८६ में ऐंसाचुसिस में पांच स्टेटों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ। इसमें से एक प्रतिनिधि ऐंजेल्बेण्डर हैमिल्टन भी शामिलने अपने मायियों को इस बात में

यहयन करवा दिया कि व्यापार का प्रवण अत्य बहुत ने प्रवनों में इतना उलभा हुआ है कि मोबुदा जटिल सम्मस्या को बर छोटा-सा सम्मेलन नहीं सुलभा गकता। उनने उलम्बिन प्रतिनिधियों में कडा कि वे सभी राज्यों में ऐंने प्रतिनिधि नियुक्त करने को कहेँ जिनका सम्मेलन ऐंसी व्यवस्था पर विचार कर सके जो एनियन की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने वाला संघीय शासन प्रदान करने में समर्थ हो। महाद्वीपीय कायेंन पहले नों इस दयग कारकोई पर विचार हुई परन्तु यह समाचार सुनकर शासो ही गयी कि वर्जिनिया ने जार्ज वाशिंगटन को अपना प्रतिनिध चुना है। अगली चीन क़ानून तक र्हाइड आर्लैण्ड को छोड़कर शेष सभी राज्यों में प्रतिनिधियों के चुनाव हुए।

जटिल प्रश्नों पर विचार

मई, १८८७ में फिलाडेल्फिया में हुए इस सम्मेलन में जो संघीय अधिवेशन हुआ उसमें विभिन्न व्यक्तियों ने भाग लिया। राज्यों की विधान सभाओं ने चुन कर अनुभवी नेताओं को भेजा था। जार्ज वाशिंगटन फॉर्निकाल में अपने सैनिक नेतृत्व और अपनी ईमानदारी तथा स्याति के कारण सम्मेलन के सम्मानित नागरिक माने जाते थे। उन्हें इस अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया। साधु आदमा बेंसायिन फॉर्कलिन अर ८१ वर्ष के हो चुके थे। बृद्धि ने उन्हें बहुत लज्ज बना दिया था। उन्होंने अधिकतर सान्नीन नयुक्तों को ही सन्ने दी। परन्तु उनके दयालु हेंगमूल स्वभाव और जगपत अनभव ने अनेक प्रतिनिधियों को अनेक कठिनाइयों हल करने में सहायता मिली। अर गतिक मद्दयों में प्रसूय ग वॉर्नरग मॉरिंग, जो वाय और वायनों थ और एक राष्ट्रीय शासन को आवश्यकता में असहिष्ण रूप में वकील हाने थ, जग फिल्लन, पैरिगलवानिया से आये थ और राष्ट्रियता के विचार को पूर्ण के लिए निरन्तर व्यस्त रहने थ; वर्जिनिया का जेम्स मैडिसन जो एक अक्लदार कुशल नवयुक्त राजनीतिज्ञ था और राजनीति तथा इतिहास का विद्वान था। अपने एक साथी को सम्मति में वह अपने श्रेय, अथकसाय और लम्पयता के कारण विचार के किसी भी प्रवण पर गंभीरक जानकार स्वयिन मिड्ड होना गा। मैसाचुसेट्स ने स्फुम फिया और एल-ब्रिज गरी को भेजा था। वे दोनों वाय और अनुभवी युवक थे। कनेक्टिकट का प्रतिनिधि राजर डोयर्मन था जो माँची के पेग में लकड़ी कयने-कयने ज़र बन चुका था। न्यूयॉर्क में ऐंजेल्बेण्डर हैमिल्टन आये था। तब उत्तरी आय केंद्र ३० वर्ष को थी परन्तु उन्हें प्रगिड हुए अनेक वर्ष चीन चुके थे। ओपनिर्विचक

असरीका के जो महापुरुष वहाँ अनुपस्थित थे उनमें से एक टायम जेकमैन भी थे। वे एक गमय राट्टू के किमी काम से काम गए हुए थे। पब्लन प्रतिनिधियों में अधिकतर युवक थे और उनकी औसत आयु केवल ४० वर्ष थी।

अधिवेशन को सिर्फ "आर्टिकल्स आब कान्फेडरेशन" में संशोधन करने का अधिकार दिया गया था। परन्तु प्रतिनिधियों ने मॉडलन के शब्दों में "देश के प्रति बड़ा दुःखाना यकीन के साथ" उसे एक किताबें रख दिया और वे शासन के सर्वथा नए रूप को परिष्कृत करने में जुट गए। प्रतिनिधियों ने अनुभव किया कि इस समय सर्वाधिक आवश्यकता दो विभिन्न सलाहों में जानमेल लाने की है। "पहली सलाह है स्वतंत्र नियंत्रण की जो १३ राज्यों द्वारा पहले से काम कर रही है और दूसरी सलाह है केंद्रीय सरकार की। उन्होंने यह मिडलन स्वीकार किया कि राष्ट्रीय शासन के कर्तव्य और अधिकार चूकित यह नए, सर्वसाधारण और नए सम्बद्ध है, इसलिए उन्हें स्पष्ट रूप से और सावधानी के साथ परिभाषित होना चाहिए। बाकी सभी कर्तव्य व अधिकार राज्यों के हाथ में छोड़ देने चाहिए। उन्होंने राष्ट्रीय शासन को वास्तविक अधिकार देने की आवश्यकता भी अनुभव की और हमीलिण्ड उन्हीने इस तथ्य को भी मायना दी कि अन्य कार्यों के साथ ही मुद्रा डालने, व्यापार नियंत्रित करने, युद्ध घोषित करने तथा सैन्य करने का अधिकार राष्ट्रीय शासन को ही रहेगा। इन कर्तव्यों की पूर्ति के लिए अनिवार्यतः राष्ट्रीय शासन के संगठन की आवश्यकता थी।

नेताओं द्वारा अधिकारों व कर्तव्यों के विभाजन का समर्थन

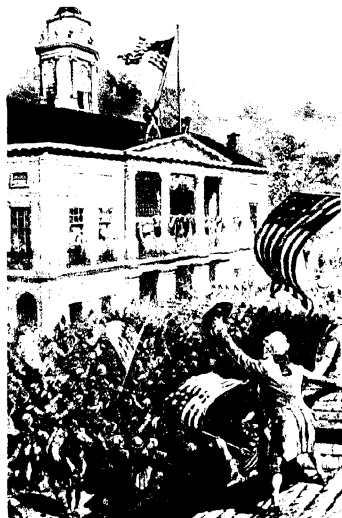
१८वीं शताब्दी के जो राजनयिक किलाडेलफिया में एकत्र हुए थे वे राजनीति में सैनिक-सन्तुलन की माध्यम्यवादी विचार धारा के समर्थक थे। इन मिडलन का समर्थन ओपनिवेशिक-अनुभव से तो होता ही था, साथ ही फ्रांस के लेख भी, जिनमें प्रतिनिधि लोग अजी प्रकार परिचित भी थे, इसकी पूर्ति करने थे। इन प्रभावों के कारण सभी इस बात पर सहमत हो गए कि शासन को तीन स्पष्ट विभागों में बांट दिया जाय और उनमें प्रत्येक एक-दूसरे के समान तथा उनका पूरक हो। विधि निर्माण, प्रशासन और न्यायपालिका के अधिकारों को इस प्रकार से संभाला और परस्पर सम्बद्ध करना था कि वे एक-दूसरे के बाधक न होकर पूरक सिद्ध हो सकें परन्तु सन्तुलन बनाए रहें। साथ ही इस बात की आवश्यक भी आवश्यक है कि इनमें कोई दूसरे पर हावी न हो सके। प्रतिनिधियों द्वारा यह मान लेना भी स्वाभाविक ही था कि उपनिवेशों

को विधान सभाओं में अर्धजो संसद की भांति दो सदन हों।

इन मोटे-मोटे और सामान्य विचारों पर सभी सहमत थे। परन्तु अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचने के उपायों पर सभा में तीव्र मतभेद लक्ष्य हो। न्यूजर्सी जैसे छोटे राज्यों के प्रतिनिधियों ने, 'आर्टिकल्स आब कान्फेडरेशन' की राज्य के आधार पर प्रतिनिधि चुन जाने को परम्परा को बदल कर आबादी के आधार पर प्रतिनिधियों के चुनाव का विरोध किया और कहा कि इससे संघीय शासन में उनका प्रभाव घट जायगा। इसके विपरीत प्रतिनिधि जैसे बड़े राज्यों के प्रतिनिधियों ने आबादी के अनुपात में प्रतिनिधित्व के मिडलन का दृढ़ता से समर्थन किया। इस प्रश्न पर ऐसी बहस हुई कि लगना था मानो वह कभी लग ही न होय। अन्त में, केनेडिकट के प्रतिनिधि ने एक बहुत ही योग्य तर्क प्रस्तुत किया अर्थात् "कार्य के एक सदन में प्रतिनिधित्व राज्यों की आबादी के अनुपात के अनुसार रखा जाय और दूसरे में सभी राज्यों के बराबर-बराबर प्रतिनिधि हों।"

दूसरे बड़े राज्यों का छोटे राज्यों के विरुद्ध गठबन्धन भंग हो गया। लगभग सभी नए प्रश्नों पर नए कारणों में नए नए बतने और फिर नए समझौतों द्वारा ही भिंटने। कुछ सदस्य चाहते थे कि संघीय शासन की कोई भी शक्ति जनता द्वारा सीधे निर्वाचित न की जाय। दूसरे लोग चाहते थे कि निर्वाचन का आधार यथासंभव व्यापक रहे। कुछ प्रतिनिधि कँठने हुए पश्चिमी प्रदेश को राज्य का स्तर प्राप्त करने के अस्मर से बचिन रखना चाहते थे। अन्य १७८७ के अध्यादेश में निहित समानता के मिडलन के पक्षपाती थे। कागजी मुद्रा, टैण्डर, कानून और दुकान-नामों की विभेदकारी को हानि पहुँचाने वाले कानूनों जैसे आर्थिक प्रश्नों पर अधिक तीव्र मतभेद नहीं था। किन्तु विभिन्न स्थानीय आर्थिक स्थाव्यों में समन्वय लाने, कार्यात्मिका विभाग के अधिकारों, कार्यकाल और अधिकारियों के चुनाव, सम्बन्धी तोड़ विवादों को हल करने तथा न्यायाधीशों के कार्य काल तथा अवकालों की किस्मों में सम्बन्धित समस्याओं के समाधान की आवश्यकता सामने आई। किलाडेलफिया के कठोर प्रोग्राम ऋतु में हुए इस अधिवेशन में इन समस्याओं को ईषानदारी और दृढ़ता से मुकामया गया। अन्ततः, एक समन्वयजनक समझौदा तैयार किया गया जिसमें अब तक की मनुष्य निर्मित सरकारों में सर्वाधिक जटिल सरकार के संगठन का संक्षेप में उल्लेख किया गया था—एक ऐसी सरकार का संगठन जो अपने क्षेत्र में सर्वोपरि थी और जिसके सीमित क्षेत्र की सुस्पष्ट परिभाषा कर दी गयी थी। १७९१ में १० वें संशोधन द्वारा यह स्पष्ट कर दिया गया था, कि जो अधिकार सविधान द्वारा सङ्कलनराज्य को नहीं सौंपे गए हैं अथवा

'अटिकलस ओब कांफेडरेसन' में संगोपन करने के लिए जो संघीय सम्मेलन हुआ। उसकी अध्यक्षता जार्ज वाशिंगटन ने की।



३० अगस्त १७८९ को जनसाधारण के हर्षोल्लास के मध्य जार्ज वाशिंगटन ने अमरीका के पहले राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली।

राज्यों के लिए निरिद्ध नहीं किए गए हैं वे राज्यों अथवा जनता के लिए सुरक्षित हैं। और मधीय कानूनों की सर्वोच्चता इस बात तक सीमित है कि वे "सविधा-मानुकूल बनाए गए हों।" राज्य अपने-अपने क्षेत्रों में समान रूप में सर्वोपरि हैं: वे किसी भी सर्वभौतिक अर्थ में अपनी इकाइयां नहीं हैं। चाहे वह मधीय धामन हो या राज्योंय धामन, दोनों की नींव जनता की प्रभुमता के व्यापक आधार पर स्थित है। बाद के वर्षों में, मधीय अधिकार-क्षेत्र मधीयनों, निहित अर्थों, न्यायालयों द्वारा की गयी व्यवस्थाओं और राष्ट्रीय संघटनों की आवश्यकताओं द्वारा व्यापक होना गया। यही बात राज्यों के अधिकार क्षेत्रों के विषय में भी कही जा सकती है। अब बीमवी दानावदी में भी, अमरीकी नागरिक का वास्तु मध धामन की अपेक्षा राज्य सरकार के साथ अधिक पड़ता है। क्योंकि नगरपालिका और स्थानीय प्रशासन का नियन्त्रण, पुलिस, कारखानों व मजदूर सम्बन्धी विषयान, कर्मचारियों बताने की स्वीकृति लिखित कानून वा विकास, दीवानों और फौजदारी के मामलों में न्याय, शिक्षा का नियन्त्रण और जनता के स्वास्थ्य, उमकी सुरक्षा और मुख्यभूमिका का ध्यान रखने आदि के सारे काम राज्य सरकारों द्वारा ही किए जाते हैं।

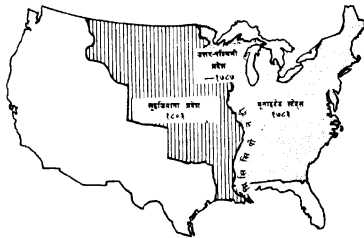
अधिकारों का निर्णय करते हुए अधिवेशन ने सूचन और पूर्णरूप में मधीय धामन को कर लगाने, ऋण लेने, एक-दूसरी चीजों तथा उत्पादन कर लागू करने का अधिकार दिया। मध-सरकार को मध अधिकार भी दिए गए कि वह सिक्के बनाए, नायजील के मानक निर्धारित करे, पेटेंट और कारीगरी की स्वीकृति दे, शाकघरों की स्थापना, मंचार सम्बन्धी व्यवस्थाएँ करे। स्थल व नीचे सेनाएँ संगठित करने और रखने तथा अन्तर्राज्यीय व्यापार को नियमित और नियन्त्रित करने के अधिकारों के साथ मध सरकार को आदिवासी इण्डियनों के लिए व्यवस्था करने, अन्तर्राज्यीय सम्बन्धों को बनाने, कायम रखने व तोड़ने के तथा युद्ध सम्बन्धी सभी अधिकार भी दिए गये। वह विदेशियों को नागरिक बनाने के कानून पास कर सकती थी, सार्वजनिक भूमियों पर नियन्त्रण रख सकती थी और पुराने राज्यों को बराबरी के स्तर पर सवे राज्यों के मध में शामिल कर सकती थी। इन परिभाषित अधिकारों को पुरा करने के लिए आवश्यक व मही कानून बनाने की शक्ति ने मध-सरकार को इतना लोकशैल और मधीय बना दिया कि वह भावी पीढ़ियों तथा भाविष्य के बहुत विस्तृत राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती।

संजे हुए सिद्धान्त

सरकार को इस संरचना के निर्माण में हरेक बात पर ब्रिटिश साम्राज्य के अलिखित संविधान का प्रभाव दिखायी पड़ता था। साथ ही, ऐसी एक भी धारा न थी जो वेल्शों अमरीकी राज्यों में से किसी एक न एक के संविधान में अथवा ओपनिवेशिक व्यवहार में सूत्र रूप में न मिलनी हो। सरकारी शक्तियों को अलग-अलग विभागों में बांटने के सिद्धान्त से बहुत-सी ओपनिवेशिक सरकारें परिचित थी, अनेक राज्यों के संविधानों में उन्हें मफलतापूर्वक आका जा चुका था। इतोलिपु अधिवेशन ने एक ऐसी धामन प्रणाली निर्धारित की जिसकी विधिविधियों, कार्यकारी और न्यायकारी शाखाएँ अलग-अलग होने हुए भी एक-दूसरे पर नियन्त्रण रखती थीं। कार्ययें द्वारा पास किए गए विधेयक तब तक कानून नहीं बन सकते थे, जब तक कि राष्ट्रपति उन पर हस्ताक्षर न कर दे। राष्ट्रपति को अपने कार्य को गयो सारो नियुक्तियों और मन्त्रियों अनुममयें के लिए सितेट में पेश करनी थी। दूसरी ओर कार्ययें राष्ट्रपति को हटा भी सकती हैं और उस पर महाभियोग भी लगा सकती हैं अथवा कार्ययें उस पर अभियोग लगा कर उसे दण्ड भी दे सकती हैं। कानून व संविधान के अन्तर्गत आने वाले सभी मुरुद्यों को मुनवाही न्यायापालिका का काम था। इसलिए न्यायालयों को मौलिक व विधान मन्त्रियों द्वारा नियमित कानूनों की परिभाषा करने का हक था। किन्तु, राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त और सेनेट द्वारा अनुममयित न्यायापालिका पर कार्ययें अधिभय भी कर सकती हैं।

संविधान में संशोधन व परिचरनों की भावी आवश्यकता का ध्यान रखते हुए अधिवेशन ने एक ऐसे अनुच्छेद की व्यवस्था भी की जिसमें इस प्रकार के परिचरनों की विधि और पद्धति का उल्लेख किया गया। इस अनुच्छेद की क्रम-संख्या ५ है और इसमें संविधान को अनाश्रयनाय परिचरनों में बताने की व्यवस्था भी की गयी। तब से अब तक इसका मफल उपयोग केवल २३ बार ही हो सका है। अनुच्छेद में कहा गया है कि कार्ययें के दोनों सदर्यों के दो तिहाई सदस्य अथवा अधिवेशन में शामिल राज्यों के दो तिहाई सदस्य ही संविधान में संशोधन का प्रस्ताव रख सकते हैं। ये प्रस्ताव दो तरीके से कानून बन सकते थे: तीन चौघाई राज्यों की विधान मन्त्रियों या तीन चौघाई राज्यों के अधिवेशनों द्वारा परिशोधन करके स्वीकृत किए जाते पर। इन दोनों में से कौन-सा तरीका अपनाया जाय, इन बारे में कार्ययें मुभाब देती हैं।

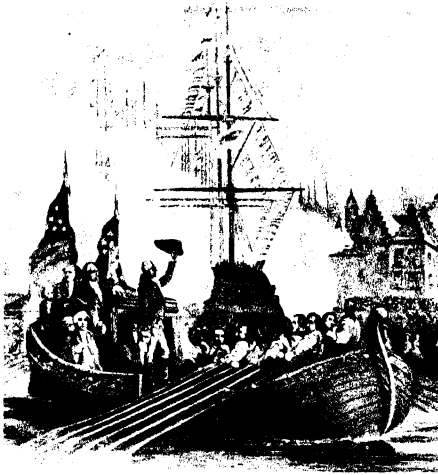
अन्ततः अधिवेशन को सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या का सामना करना पड़ा :



१८०३ में लुइसियाना क्षेत्र की खरीद से अमरीका का क्षेत्रफल दुगुना हो गया और देश को मिसिसिपी नदी की घाटी का उबेर क्षेत्र प्राप्त हुआ।



थॉमस जेफर्सन ने मेरीबेयर लेबिस और विलियम क्लार्क के नेतृत्व में एक दल मिसिसिपी नदी के पश्चिम के अज्ञात क्षेत्रों का पता लगाने के लिए भेजा।



संयुक्त राज्य अमरीका की प्रथम राजधानी न्यूयार्क में राष्ट्रपति वाशिंगटन का अभिनन्दन। कुछ समय बाद शासनाधिष्ठान फिलार्डेल्फिया को स्थानांतरित हो गया। फिर इस स्थान को वाशिंगटन की स्त्री को राजधानी बनाया गया।

नयी सरकार को दिए गए अधिकार व्यवहार में कैसे लागू जाए? पुराने 'आर्टिकलम आब कान्फेडरेशन' के अन्तर्गत राष्ट्रीय सरकार को बहुत से अधिकार दिए गए थे, किन्तु वे सब 'कांग्रेसों' तक ही सीमित थे। व्यवहार में उनके अधिकार नहीं के बराबर भिन्न हुए क्योंकि राज्यों ने उन पर कतई ध्यान नहीं दिया। नयी सरकार को ऐसी बाधा से बचाने के लिए क्या किया जाय? ज्यादातर प्रतिनिधियों का एक यही उद्देश्य था कि ऐसी दशा में दक्षिण का उपयोग किया जाय। किन्तु तीव्र ही यह भी महसूस किया गया कि राज्य के विरुद्ध व्यक्ति के उपयोग में यह का अस्तिवर्ध भी अन्तरे में पड़ सकता है। बहुमत होने होने इन तरीके पर पहुँचा गया कि आगम को राज्यों पर कार्रवाई न करके राज्य के नागरिकों पर कार्रवाई करने की चाहिए। अर्थात्, राष्ट्र भर के प्रत्येक निवासी के लिए कानून बनाना व उस पर लागू करना उसका काम है। अधिवेशन में संविधान की आधारशिला के रूप में एक उच्चकोर्ट का संसिध और महत्वपूर्ण उपाय स्वीकार किया गया।

"कार्बेम की अधिकार होना... कि वह ऐसे सभी तरह के कानून बनाए जो संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार को संविधान द्वारा प्राप्त सभी अधिकारों के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक और उचित माने जायें।" (अनु. १, धारा ८)

"यह संविधान, इनके अनुसार बनाए गए संयुक्त राज्य (अमरीका) के सभी कानून तथा संयुक्तराज्य द्वारा की गयी सभी सन्धिपत्रों इन देश के सर्वोच्च कानून होंगे... और प्रत्येक राज्य के न्यायाधीश, उस या किसी राज्य के संविधान या कानूनों में किसी ब्रेकेल वान के बावजूद उन सर्वोच्च कानूनों में बाधित होंगे।" (अनु. ६)

इन तरह संयुक्त राज्य के कानूनों का राष्ट्रीय न्यायालयों तथा उसके द्वारा नियुक्त जजों और मार्शलों द्वारा चालन करना अनिवार्य हो गया। साथ ही वे राज्यों के न्यायालयों में राज्यों के जजों और कानून अधिकारियों द्वारा लागू करने योग्य भी हो गए। विचार विमर्श के १६ सप्ताह के अन्त में १७ सितम्बर, १७८७ को संविधान पूरा हुआ और सभी उपस्थित राज्य-प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से स्वीकार करते हुए उस पर हस्ताक्षर किए। प्रतिनिधिमण मीके की संजीवनी से प्रभावित थे और वाशिंगटन गम्बोर जिनसन में खोए हुए थे। फंकलिन ने इस सम्भरिता को एक विनोदपूर्ण उक्ति से भंग किया। वाशिंगटन की कुर्सी की पीठ पर मुनहरे रंग में एक अर्ध-सूर्य का चित्र बना हुआ था। उसकी ओर संकेत करते हुए फंकलिन ने कहा कि कलाकारों को उदास होने वाले और अस्त्र होने वाले सूर्य में भेद करने में मदा ही कठिनाई हुई है।

उन्होंने कहा 'मैं इस बैठक या विचार विनिमय के दौरान मैं तथा इसके सम्बन्ध में अपनी आशाओं व आसंकाओं में दृढ़ता-उत्तरता हुआ बारबार राष्ट्रपति की कुर्सी को पीठ पर बने अधिकार सूर्य को देखा रहा हूँ। परन्तु मैं अभी भी यह निश्चय नहीं कर सका कि यह चित्र उदय होने वाले सूर्य का है या अस्त होने वाले सूर्य का। किन्तु अब इसकी देर बाद मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि यह बढ़ता हुआ सूर्य है, डलता हुआ नहीं।' अधिवेशन विमर्जित हुआ, भाग लेने वाले प्रतिनिधियों ने विज्ञापन को मास जो, एक मास वाप्या-पिया और एक-दूसरे से बिदा लो। किन्तु, पूर्ण पृथिव्य के निर्माण के कठिन सपर्ष का कठिनतम हिस्सा अभी शेष था। क्योंकि इस आलेख को लागू करने के पहले राज्यों के जन-निर्वाचित अधिवेशनों द्वारा उपकी स्वीकृति आवश्यक थी।

अधिवेशन में यह निर्णय किया गया कि १३ में से ९ राज्यों के अधिवेशनों द्वारा स्वीकार होते ही संविधान पर अमल करना शुरू हो जायेगा। १७८७ के अन्त तक तीन राज्यों ने उसे स्वीकार कर लिया था। अनेक संसंधाधारण लोगों को यह आलेख बतरी में भरा जान पड़ता था। उन्हें डर था कि इसके द्वारा जो शक्तिशाली केंद्रीय व्यवस्था को जा रही है वह उन पर कही अत्याचार न करे, उन पर भारी कर न लगाए या उन्हें युद्धों में न घसीटे। इन प्रश्नों को लेकर दो दल सामने आए। एक फेडरलिस्ट (संधावादी) जो मजबूत संघ-संरकार के पक्ष में था और दूसरा एंटी फेडरलिस्ट (संघ-विरोधी) जो विभिन्न राज्यों के एक छोटे-छोटे संघ के पक्ष में था। सभाकार्यक्रम में, विधान सभाओं में और राज्यों के अधिवेशनों में इस पर काफी बहसें हुईं। दोनों पक्षों की ओर से आवेद्यपूर्ण दलीलें पेश की गईं। इनमें से सब में योग्यतापूर्ण 'फेडरलिस्ट पेंपन' थे जिन्हें संविधान के समर्थन में हेमिस्टन, मैटिजन, और जार्ज मे ने लिखा था। मेसाचुसेट्स में, जहाँ को शायीण जनता में अग्रत्वाय फैला हुआ था, होने वाले तीव्र विवाद के परिणामस्वरूप संविधान में संशोधन के रूप में एक अधिकार-पत्र जोड़ा गया। अन्य राज्यों ने भी संविधान में इस प्रकार के संशोधनों को जोड़ने का महत्त्व दिया और वे अधिकार जो पहले राज्यों के संविधान में थे देश के संविधान में भी जोड़ लिए गए। इस तरह संविधान के मूल आलेख में जुड़ने वाले संशोधनों की संख्या दस हो गयी और ये संशोधन, 'पहले दस संशोधन, के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके जगि, संयुक्तराज्य अमरीका के नागरिकों को निम्न-लिखित अधिकारों को गारंटी की गयी: धर्म, भाषण, प्रेस और सभा करने की स्वतंत्रता; स्थायी सेना के स्थापन पर मिलिटिया रखने का अधिकार; जुरियों

द्वारा मुनवाई का हक; देश के कानूनों के अनुसार शीघ्र मुनवाई व निर्णय और बिना नाम के वारण्टों का निर्णय। इस अधिकार-पत्र को स्वीकार करने के फलस्वरूप जो राज्य संविधान का समर्थन करने में हिचक रहे थे, उन्होंने भी उसे तुरन्त स्वीकार कर लिया और वह २१ जून, १७८८ के दिन अन्तिम रूप से स्वीकार कर लिया गया। कान्फेडरेशन की कार्यभार में राष्ट्रपति के पहले चुनाव की व्यवस्था की और यह पांचवा करके कि नवी संरकार ४ मार्च, १७८९ से काम शुरू करेगी, वह गणित के माध्य विमर्जित हो गयी।

वाशिगटन की विवेकपूर्ण आयोजन

राष्ट्र के प्रधान के पद के लिए हरेक आदमी को ज़ुबान पर एक ही नाम था। वाशिगटन को सर्वसम्मति में राष्ट्रपति चुना गया। ३० अप्रैल, १७८९ को उन्होंने अपने पद को शपथ लेते हुए कहा कि वे वफादारी के माध्य संयुक्त-राज्य अमरीका के राष्ट्रपति पद की जिम्मेदारीया निभारण तथा अपनी सारी योग्यता व सामर्थ्य के माध्य, 'संयुक्त राज्य के संविधान का परिश्रम, संरक्षण और प्रति-रक्षण करेगे।'

जीवन पथ पर अग्रगण्य होने वाला वह एक जीवन गणतन्त्र था। युद्ध जितन अधिक समस्या उत्पन्न के पथ पर थो और देश मजबूती के माध्य विधान कर रहा था। समने के उद्देश्य में यूरोप से आने वाली की संस्था बहुत बड़ गयी थी। वटिया कामें समने दामों में मिल रहे थे। मजदूरों की मांग निरन्तर बड़ रही थी। उत्तरो न्यूयार्क, पेन्सिलवार्निया और वर्जिनिया की समूह घाटो शीघ्र ही महुँ को पैदावार के लिए प्रसिद्ध हो गये। हालांकि बहुत-सी वस्तुएँ अब भी परों में हो बनायी जाती थी फिर भी न्यू-जर्सीवासी की संस्था बड़ रही थी। मेसाचुसेट्स और र्हाइ आइरैण्ड में वस्त्र उद्योग की नीचे जाली जा रही थी। कैनेडिकर में टीका के मासाम का और पड़ियों का उत्पादन होना शुरू हो गया था। न्यूयार्क, न्यूयॉर्क और पेन्सिलवार्निया में कानज, कांच और लोहे का उत्पादन हो रहा था। जहाज उद्योग का विकास अपना हो गया था कि महुँ पर इरैण्ड के वाइ अमरीका का ही तन्वर था। १७९० के पहले में ही अमरीकी जहाज 'क' बचने चीन तक जाने थे और जापान पर ने चाय, मसाले और रेशम लाने व।

अमरीकी शक्ति सम्बन्ध: पठिनय की शार उन्मय थी। न्यू इरैण्ड और पेन्सिलवार्निया के लोग आहायों में बड़ रहे थे। वर्जिनिया और दानो केगलाइनाओ

के निवासी केन्द्रकी और टेनेसी की ओर बढ़ रहे थे। अलबेनीज की लम्बी इकाओं पर आप्रवासियों की मफेर छत वाली गाड़ियों की कनारें चढ़नी नजर आनी थीं। केन्द्रकी में चमड़े की पोशाकों वाले शिकारी तथा अग्रगामी लोग, फर्नीचर, बीज, सामान्य ऋषि उपकरणों में लदी गाड़ियों और पालतू चौपायों के साथ नजर आते थे। अनेक ऐसे स्थानों पर, जहाँ के जंगल मामूली तौर पर माफ किए गए थे, मीमांसी कियानों ने लट्टों के ढाँचे बना लिए थे। मिमि-मिमी के रास्ते न्यू आल्बिन्स जाने वाले जून, गोलन, मसक और पोटाश से भरी नावों व बेंड़ों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़नी गयी। पश्चिमी नगरों का महत्व उत्तरांतर बढ़ता गया। हालांकि जगहों जानबरो, रोगों, व अन्य आपदाओं तथा कठिनाइयों का मामला करना पड़ता था फिर भी बसने वालों की महशुष घागरों उनी कस्य प्रदेश की ओर प्रवाहित होनी गयी। प्रारम्भिक काल का लोकप्रिय वाक्य कि 'मास्राज्य की राह पश्चिम की ओर है' अब भी लोगों को आकर्षित किए हुए था।

वाशिगटन ने जब पदग्रहण किया उस समय देश की यह स्थिति थी। नया संविधान भावी गतिविधियों की सांकेतिक रूपरेखा ही माना जा सकता था। उसके पीछे न तो कोई परम्परागत विरामन था और न संगठित जनमत का समर्थन। संघरायी दल सुदुर्ब केन्द्रीय सरकार के समर्थकों, उन्नतियशील व्यापारियों, और व्यावसायिक स्वार्थी का दल था। संघवाद के विरोधी दल में राज्य के अधिकारों के समर्थक तथा शास्यवादो लोग थे। नई सरकार को स्वयं ही अपनी कार्य व्यवस्था का विकास करना था। करों की वसूली ही नहीं रही थी। न्यायपालिका के अभाव में कानून लागू कराने का कोई माधन मौजूद न था। येना छोटी धो और तो-येना तो समान प्रायः ही थी।

इस समय वाशिगटन के विवेकपूर्ण नेतृत्व की सक्क आवश्यकता थी। जिन गुणों ने उन्हें कान्ति का सर्वप्रथम सैनिक बनाया था उन्हीं योग्यताओं के आधार पर वे नवगठित राष्ट्र के पहले राजनयिक भी माने गए। वे दूरदर्शी थे, एक सफल निराक्रम थे और उनमें अवीमित काम करने की क्षमता थी। उन्होंने लोगों में प्रेरणा और विश्वास का संसार किया। उनमें चतुर्गई की अपेक्षा मीथी सही बात कहने की आदत थी, लोचनीयता की अपेक्षा दुर्भा थी। वे तेजस्वी और गर्मरार होते हुए भी संकोचशील, नम्र, और आर्यसंयमी थे।

दो मजबूत दृष्टिकोणों की होड़

सरकार का संगठन कोई छोटा-मोटा काम न था। कांग्रेस ने शीघ्र ही

'डिपार्टमेंट आब स्टेट्स' (विदेश मन्त्रालय) और 'डिपार्टमेंट आब ट्रेड्जरी' (राज्यकाष मन्त्रालय) की स्थापना की। वाशिगटन ने टामस जेफर्सन को 'सेक्रेटरी आब स्टेट्स' (विदेश मन्त्री) और अलेक्जेंडर हैमिगटन को, जो कान्ति काल में उनके महायक रह चुके थे, 'सेक्रेटरी आब ट्रेड्जरी' (वित्त मन्त्री) के पद पर नियुक्त किया। दूनों दोरान में कांग्रेस ने न्यायपालिका की स्थापना भी की। उसने एक मुश्रीम कोर्ट (सर्वोच्च न्यायालय) स्थापित किया जिसमें एक महान्यायाधीश तथा पांच महायक न्यायाधीशों की व्यवस्था की गयी। (महान्यायाधीश के लिए जॉन जे को नियुक्त हुई)। सर्वोच्च न्यायालय के अलावा 3 नगरिक कोर्ट और 13 जिला रुचरगिया भी स्थापित की गयी। प्रथम प्रमाणन में ही एड मन्त्री और महान्यायाधिकारी को नियुक्तिया भी की गयी। चूकि वाशिगटन कोई निर्णय लेने के पहले आमतीर से उन लोगों की मन्हाह लेना पसन्द करते थे जिनकी निर्णय लेने की क्षमता पर उन्हें विश्वास था इसलिए अमरीकी मन्त्रिमण्डल (जिसमें कांग्रेस द्वारा बनाए गए विचारों के शीर्ष-अधिकारी शामिल होते थे), बना, हालांकि वैधानिक रूप से उसे 1९०७ तक मायसा प्राप्त नहीं हुई।

जैसे कान्तिकालीन अमरीका ने विश्वव्यापी स्थिति के दो महान् व्यक्तित्व— वाशिगटन और कंकजिन प्रदान किए उन्हीं प्रकार उदीयमान अमरीकी गणतन्त्र के युग में दो अत्यन्त ही योग्य व विवेकशील व्यक्तित्व— हैमिगटन और जेफर्सन—ने प्रतिदिन प्राप्त की। इनका एक ही समुद्र पार के देवांनक फँसा। इतिहास में उनका महत्व केवल इसलिए ही नहीं माना गया कि उनमें महान वैयक्तिक योग्यताएँ थीं। उन्हें सम्मान मिला मुश्कत। इसलिए कि उन्होंने अमरीकी जीवन के दो सन्तिसाली और अतिवर्ष तबों का प्रतिनिधित्व किया था जो कुछ हद तक परस्पर विरोधी भी थे। हैमिगटन ने और भी मुगुटिन मुनियन और अपेक्षाकृत मजबूत केन्द्रीय सरकार के लिए काम किया और जेफर्सन का भूभाक अपेक्षाकृत व्यापक और स्वतन्त्र लोकतन्त्र की ओर था।

हैमिगटन के सार्वजनिक जीवन का मुख्य आधार था—कार्यकशलता, व्यवस्था और संगठन के प्रति उसका प्रेम। 1७७५ से 1७८९ तक कमबोरी और कार्य-कुशलता के अभाव की जो मिसालें उनमें देखीं गयीं उन्हींके कारण उसमें अपने नए राष्ट्र की येना करने की उग्र भावना पैदा हुई थी। हैमिगटन के पास साहसिक योजनाएँ और सुनिश्चित नीतियाँ थीं जबकि दूसरों के पास कूक-कूक कर कदम रखने के विचार और अस्पष्ट सिद्धान्त थे। प्रतिनिधि सभा द्वारा जब 'सार्वजनिक साख के पर्याप्त समर्थन के लिए योजना बनाने की मांग की गयी तो

हैमिन्टन ने सार्वजनिक मितव्ययिता के साथ ही मुद्दू शासन के मिद्वान्तों का प्रतिपादन और समर्थन किया। औद्योगिक विकास, व्यापारिक प्रतिविधियों और सरकारी कामकाज के लिए अमरीका को साक्ष ऊँची रहना जरूरी था। उसे जनता का पूर्ण समर्थन और विश्वास प्राप्त होना था। बहुत से लोग राष्ट्रीय ऋण की अदायगी न करने या आंशिक अदायगी करने के पक्ष में थे। परन्तु हैमिन्टन ने पूर्णतः सरकारी ऋण को पूरा किए जाने पर जोर देने के साथ ही एक ऐसी योजना भी पेश की जिसके अनुसार राज्यों द्वारा कानून की महामता के लिए दिए गए ऋणों के भुगतान को खिस्मेदारी भी मंजूर सरकार ने अपने ऊपर ले ली। उसने, 'बैंक ऑफ यूनाइटेड स्टेट्स', की स्थापना करवाई और उसे देश के विभिन्न भागों में अपनी शाखाएँ खोलने का अधिकार दिया। राष्ट्रीय टकसाल की स्थापना का मुद्दा भी उसने किया। राष्ट्रीय उद्योगों के विकास को बढ़ावा देने के लिए उसने संरक्षण के सिद्धान्त पर आधारित नटकर व्यवस्था के समर्थन में बहुत कोशिशें कीं। इन कार्रवाइयों का तुरंत ही प्रभाव पड़ा। मंजूर शासन को साक्ष मुद्दू ही गये और उसे जितने राजस्व को इकट्ठन घों वह भी उपलब्ध हो गया। व्यापार एवं उद्योग को प्रोत्साहन मिला जिसके फलस्वरूप व्यापार में लगे लोगों का एक विशाल भूखर्न नया हो गया जो राष्ट्रीय सरकार का समर्थक होने के साथ ही उसे कमजोर करने के किसी भी प्रयास का मुकाबला करने के लिए हर समय तैयार रहने लगा।

दूसरी ओर टामस जैकसन क्रियाशील होने के बजाय विचारशील व्यक्ति था। हैमिन्टन में प्रशासनिक गुण थे। जैकसन की प्रतिभा चिन्तन मन्वन्धी और दार्शनिक थी। सम-सामयिक राजनीतिक विचारकों और लेखकों में वह बेजोड़ था। राजनीतिक दृष्टि से, उसका हैमिन्टन से सामान्यतः मतभेद रहता था। जब वह अमरीका का राजतंत्र बन कर फॉर्म गया तब उसने बंदेशिक मन्वन्धों के मामले में एक मुद्दू केन्द्रीय सरकार का महत्व महसूस किया। फिर भी दूसरे बहुत से मामलों में वह उसकी दृढ़ता का समर्थक नहीं रहा क्योंकि उसे भय था कि वह दृढ़ता मन्वन्ध के लिए अवरोध भी बन सकती है। उसका जन्म रईसी में हुआ था। किन्तु उसके प्रवृत्तियों और विचार समानतावादी लोकतंत्र की भावना में आकाशित थे। वह सर्वे अर्थो मिहासन, चर्च के नियन्त्रण, जमींदारों और मन्वन्ध की विषयमात्र के विरुद्ध स्वतंत्रता के लिए मंजूर करता रहा। हैमिन्टन का लक्ष्य देश को एक अंशोक्त कुशल समष्टि प्रदान करने का था और जैकसन का लक्ष्य था हरेक व्यक्ति को अंशोक्त व्यापक स्वाधीनता

दिमाने का; क्योंकि उनका यकीन था कि 'धरती के प्रत्येक व्यक्ति और व्यक्तियों के प्रत्येक मनुष्य को स्वातंत्र्य का अधिकार है।' हैमिन्टन को अराजकता का भय था और वह शान्ति और व्यवस्था की भाषा में सोचता था; जैकसन को अनाचार का भय था और वह स्वतंत्रता-स्वाधीनता की भाषा में सोचता था। मनुष्य राज्य अमरीका को दोनों प्रभावों की आवश्यकता थी। उसे अंशोक्त मन्वन्ध सरकार की आवश्यकता थी थी और मन्वन्ध मुक्त नागरिकों की भी थी। इसे देश का मोभाग्य ही कहना चाहिए कि उसे दोनों प्रकार के व्यक्तिगत प्राप्त थे और वह कालान्तर में दोनों के विरोध योगदानों में लाभ उठाने के साथ ही, बहुत हद तक, उनमें तालमेल बिठा सका।

जैकसन द्वारा विरोध मन्वन्धों का पद समर्थन के कुछ समय पदान्त ही उन दोनों का मतभेद प्रकट हो गया, जिसके परिणामस्वरूप मन्वन्धान की एक नयी और ठोस परिभाषा हो सकी। हैमिन्टन ने राष्ट्रीय बैंक की स्थापना के लिए विधेयक प्रस्तुत किया, जैकसन ने उनका विरोध किया और राष्ट्रीय बैंक के विरुद्ध राज्यों के अधिकारों तथा बड़े कार्पोरेशनों की आयका योग देवने वालों का पक्ष लिया। उसने कहा कि मन्वन्धान में मंजूर सरकार ने अपने सभी अधिकारों की स्पष्ट तालिका प्रस्तुत की है, मंजूर गाँव अधिकार राज्यों के लिए सुरक्षित है। बैंक स्थापित करने का अधिकार उसे नहीं दिया गया है। हैमिन्टन का कहना था कि राष्ट्रीय सरकार के सभी अधिकार शब्दः नहीं दिए जा सकते थे। क्योंकि इनके लिए बहुत ही विस्तार में जाना आवश्यक हो जाता। उसने कहा कि अनेक अधिकार उसके आम अनुच्छेदों में निहित होते हैं और इनमें से एक के द्वारा कार्य का वह अधिकार दिया गया है कि वह 'आवश्यक व उचित मन्वन्ध पर हर तरह के कानून बना सके।' मन्वन्धान में धारित किया गया है कि राष्ट्रीय शासन को कर लगाने, उसे वसूल करने, ऋण लेने व उसे चुकाने का अधिकार होगा। राष्ट्रीय बैंक राष्ट्रीय सरकार के दत्त कर्तव्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगा। अतः कार्य का दत्त 'निहित अधिकारों के आधार पर बैंक स्थापित करने का पूरा अधिकार प्राप्त है।' वाशिंगटन और कार्य में विधेयक को स्वीकार करने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया।

यद्यपि देश के मामलों उसका पहला काम प्रैक्ट अर्थ-व्यवस्था को मन्वन्ध करने पृथिव्य को सुरक्षित करना था फिर भी वह उदीयमान देश बाहर की राजनीतिक घटनाओं के प्रति उदासीन नहीं रह सका। वाशिंगटन की विदेश नीति का मुन्वन्धान शान्ति का कायम रखना था। युद्ध से देश को जो शक्ति पहुँची थी उसको



“हम शत्रुओं का सामना कर चुके हैं और वे हमारे ही हैं” कॅप्टन ओल्डर वेरी ने बताया। कॅप्टन वेरी की शक्ति और निपुणता से ही अमरीको को मैं ‘लेक एरी का युद्ध’ जीत सको।

पुनित तथा राष्ट्रिय एकता के कार्य को दृढ़ गति में चलाने के लिए दानिन् आवश्यक थी। किन्तु यूरोप की घटनाओं ने इसके लिये खतरा पैदा कर रखा था। अनेक अमरीकी फ़ार्मोमी क्लानिन् को बड़े दिलचस्पी और मशानभूति में देख रहे थे। अर्बन्ड, १७९३ में एक ऐसा समाचार आया जिसमें इन मसयों को अमरीकी राजनीति का प्रश्न बना दिया। फ़ार्म ने इम्ब्रेण्ड और स्पेन के विशद युद्ध पोषणा कर दी थी। मिडिजन जोने फ़ार्मोमी गणतन्त्र का राजदूत बन कर अमरीका आ रहा था।

अमरीका अब भी औद्योगिक रूप में फ़ार्म का मित्र था। इन युद्ध में अमरीकी लोगों को फ़ार्म के प्रति अपनी कृतज्ञता मिद करने तथा इम्ब्रेण्ड के प्रति अपने रोष-प्रकाशन का मौका मिलता था। लेकिन जहाँ अमरीका के ज़ेबादानर प्रयासक फ़ार्म के हितावासी थे वहीं वे अमरीका को युद्ध में अलग रखने को चिन्ता में भी थे। यही कारण था कि वाशिंगटन ने इन मामलों में अमरीकी नरदखतना को पोषणा कर दी और जब ज़ोने अमरीका पहुँचा तो उम्का स्वागत कौरी आवभगत कर दी सीमित थी। इन व्यवहार में स्पट होकर उनमें अमरीका को हम आजा का उल्लंघन करने का प्रयास किया कि अमरीकी बन्दरगाहों को फ़ार्मोमी प्रादेवित्थर अपनी कार्रवाई था अड्डा नहीं बनाएँगे। कुछ समय पश्चात् फ़ार्म की सरकार ने उम्का वापस बुला लेने की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

१७९३ में १७९५ की अर्थात् में अमरीकी लोकमत के दो पक्ष मामने आए। कुछ लोगों को दृष्टि में फ़ार्मोमी क्लानिन् राजतन्त्र और गणतन्त्र, दमन और स्वाधीनता, एकतन्त्र और लोकतन्त्र के बीच का निष्पक्षिक मसय था। लेकिन कुछ दूसरे लोग इसे अराजकता और व्यवस्था, नास्तिकता और आस्तिकता, गरीबी और अमीरी के बीच एकएक वडा हो जाने वाला मसय समझते थे। पहला पक्ष रिपब्लिकन दल के साथ हो गया। दूसरा कंस्टर्रिक्शन्टी का साथ। अमरीका के मौजूदा दोनों बड़े दल इन्ही दलों के स्थानान्तर हैं। मौजूदा डेमोक्रेटिक दल उस युग के रिपब्लिकन दल का तथा आज की रिपब्लिकन पार्टी उस समय के कंस्टर्रिक्शन्टी के ही बढते हुए रूप हैं।

'जोने-जाण्ड' के परिणामस्वरूप फ़ार्म के प्रति अमरीकी उन्माद मन्द पड गया। इम्ब्रेण्ड के साथ अब भी मन्तोषजनक सम्बन्ध नहीं हो पाए थे। ब्रिटिश नेताएँ अब भी पश्चिमी किनो पर कब्जा किए हुए थीं। क्लानिन्ड में अर्बन्ड गैरिन्ड जो सन्धिनाश ले गए थे वे अब तक वापस नहीं हुई थीं, न उनका मुआवजा ही दिया गया था और अर्बन्ड नी-सेता अब भी अमरीकी व्यापार को क्षति पहुँचा

रही थी। इन प्रश्नों को मुलभूतने के लिए वाशिंगटन ने अपना एक असाधारण राजदूत लन्दन भेजा। वह थे अनुभवी राजनयन जान जे, जो उस समय के सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश भी थे। जान जे ने वहा समय में काम किया। वह एक ऐसी मधि करने में कामयाब हुए जिसके द्वारा पश्चिमी किनो पर वे अर्बन्ड नेताएँ, हट गयीं और अमरीका को कुछ व्यापारिक मुनिधायी मिली। फिर भी, गैरिन्ड की वापसी, भविष्य में अमरीकी जलधानों की पकड़-पकड़ तथा अमरीकी नी-नालकों की अर्बन्ड नी-सेता में उबरन भरी के विषय में इस मन्धि में कुछ भी नहीं कहा गया।

इस तथाकथित 'जे-मन्धि' में आमरण पर अन्तर्भाव होता। किन्तु वाशिंगटन के द्वितीय कार्यकाल की समाप्ति के पहले ही यह उन्गरोनर स्पष्ट होना गया कि दूसरे अनेक क्षत्रों में अनेक महत्वपूर्ण कामयाबिया प्राप्त की जा चुकी थी। सामन्य मुसुठिन हो चुका था, राष्ट्रिय साथ जमाई जा चुकी थी, गम्भीर ध्यापार में बृद्धि हो रही थी, उन्तर पश्चिम के इलाकों पर कब्जा किया जा चुका था और सर्वत्र दानिन् और व्यवस्था थी।

१७९७ में वाशिंगटन ने अन्तका पदछन किया। राष्ट्र के सर्वोच्च प्रधान के रूप में आठ वर्ष में अधिक काम करने में दुर्दान्तपूर्वक शूकर कर दिया। इन पंद्रहम राष्ट्रपति बना गया, वह साथ और जेने निवारो वाला किन्तु दुष्ट और हठी व्यक्ति था। उम्का राष्ट्रपति बनने से पूर्व ही उम्का हैमिल्टन से भ्रमण हो चुका था जो सामन्य के प्रथम दो कार्यकालों में बहुत ही योगदान कर चुका था। इसलिए पंद्रहम के मामने एक विस्मृत स्मरण्य थी। उनमें पौछे एक विभाजित दल था और मामने एक विभाजित मन्त्रिमण्डल। यही नहीं अन्तराष्ट्रिय मगन में भी घने कानि बाढल छा रहे थे। फ़ार्म ने, अमरीका द्वारा इम्ब्रेण्ड के साथ की गयी 'जे-मन्धि' में नाराज होकर ज़ामे वहाँ अमरीका का राजदूत रखने में इन्कार कर दिया था। पंद्रहम ने तीन दूसरे मन्त्रिमन्त्रों को पेशिन् भेजा। उम्हें भी नए-नए आपमानों का सामना करना पडा। उम्में अमरीकी लोगों का रोष अत्यधिक बढ गया। मैनिकों की भरी गुल हो गयी, नी-सेता मगठिन की जाने लगी। १७९८ में फ़ार्मोमियों के साथ अनेक गम्भीर मुसुठने हुई जिनमें अमरीकी पौन हम्सा विजयी भी हुए। इन गरी पटनाओं में युद्ध अवस्थामात्री प्रतीत होने लगा। हैमिल्टन युद्ध के पक्ष में था। उम्की गयन मामने हुए पंद्रहम ने पुनः एक दृढ़ फ़ार्म भेजा। नैनीयकानने लक्षमण उम्की मसय गाय की बागडार मसभानी थी। उम्ने अमरीकी दूत का हादिक स्वागत किया और युद्ध की आग का रत्न गयी।

जैफर्सन के लोकतन्त्रीय विचार

थेल्डू मामलों में ऐडम्स लोकप्रिय नहीं था। सन् १८०० में देश परिचयन के लिए परिचयक प्रवृत्ति होता था। वाशिंगटन और ऐडम्स के नेतृत्व में फंडर-लिट्टी ने सरकार का मंचालन योग्यतापूर्वक किया था और उसे मजबूत बनाया था। लेकिन उन्होंने कुछ ऐसी नीतियों का अनुसरण भी किया था जिनसे जनता का एक बड़ा भाग उनसे घृष्ट हो गया था। जैफर्सन ने, जो एक जन्मजात लोकप्रिय नेता थे, अपने पीछे छोटे-छोटे किसानों, दूकानदारों और दूसरे बहूत-से कार्यकर्ताओं की एक सामीप्य सभा एकत्र कर रखी थी। १८०० के निर्वाचन में उन्होंने अपनी असाधारण शक्ति का परिचय दिया। उन्होंने अपने एक मित्र को लिखा था कि "हमारे पौन के मजबूत पादर्यों की पूर्णतः परीक्षा हो चुकी है। अब हम उसे गणतन्त्रीय मार्ग पर बढावमें और वह अपने गति-सौन्दर्य में अपने निर्माताओं की दृष्टि का परिचय देगा।"

जैफर्सन, निस्सन्देह, असाधारण रूप में लोकप्रिय हो रहे थे, क्योंकि उनसे अमरीकी आदर्शवाद, मादमी, यौवन, और आजापुर्ण भविष्य की प्रेरणा मिलती थी। १८०१ में जिम डेव ने वह राष्ट्रपति के पद के लिए निर्वाचित हुए थे उससे स्पष्ट हो गया था कि लोकतन्त्र मना प्राप्त कर चुका है। जैफर्सन अपनी आदत के अनुसार लापरवाही को बेशुद्धा में अपने कुछ मित्रों के साथ, पहाड़ी पर स्थित अपने निवास स्थान में कार्यरत रहन गए। निरन्तर भवन में प्रवेश करने हो उन्होंने उप-राष्ट्रपति बर ने हाथ मिलाया जो मिथिले चुनावों में उनके प्रतिद्वन्द्वी उन्मीदवार थे। सर्वोच्च-न्यायालय के नव-निर्वाक महा-न्यायाधीश जान मार्शल ने उन्हें उनके पद की शपथ दिलायी। अपने उच्चाटन अभिभाषण में उन्होंने मिल-व्यवस्था और विवेक में शासन का मंचालन करने का मन्तव्य किया। उन्होंने कहा कि "बे देशवासियों को अपने कामकाज और उद्योग में उप्रति करने के मामले में मुक्त रहने देंगे।"

ब्राइट हाउस में जैफर्सन की उपस्थिति मात्र ने ही लोकतन्त्रीय प्रणालियों को प्रोत्साहन मिला। उनकी दृष्टि में साधारण व्यक्ति को अपनी ही इच्छत की जितनी कि ऊँचे-ऊँचे अफसर की। उन्होंने अपने मानहों को मिलाया कि वे अपने-आपको जनता का विश्वासमान मेवक समझे। उन्होंने कृषि कार्यक्रम और पश्चिम की ओर विस्तार को प्रोत्साहित किया। नागरिक बनाने के कानून की भी उदाहरण कर दिया, क्योंकि उनका विश्वास था कि अमरीका अत्याचार पीड़ितों के लिए स्वयं में। १८०१ के अन्त में उनके दूरदर्शी अभ्यन्त्री एल्बर्ट

पेलाटिन ने राष्ट्रिय ऋण को घटाकर ६ करोड़ में भी कम कर दिया। राष्ट्र में "जैफर्सनवादी" भावना की लहर चल जाने के परिणामस्वरूप एक के पीछे दूसरा राज्य मनाधिकार के लिए सभासि की योग्यता को समाप्त करने के और कर्बदारों तथा अपराधियों के लिए अधिक मानवीय कानून बनाने लगा।

जैफर्सन के एक काम ने देश का क्षेत्रफल दुगुना कर दिया। मिर्सिपी नदी का पश्चिमवर्ती प्रदेश उसके मुहाने पर स्थित न्यूऑर्लिन्स बन्दरगाह सहित विरकाल में स्पेन के अधिकार में था। जैफर्सन ने पदाब्ध होने के तुलना पश्चान् न्यू-ऑर्लिन्स ने दुर्बल स्पेनी सरकार को लुद्धियाना नाम का एक बड़ा प्रदेश फ्रांस को वापस करने के लिए विवश किया। ज्यों ही उनसे ऐसा किया, अमरीकी लोभ भय और आशका से कापने लगे, क्योंकि न्यू ऑर्लिन्स का बन्दरगाह उनके लिए अत्यावश्यक था। संयुक्तराज्य के शक्ति पश्चिम में ओपनिबैशिक साम्राज्य बनाने की नैपोलियन की योजनाओं में, भीतर की अन्व गब ब्रितियों के व्यापारिक अधिकारों और सुरक्षा के लिए बनना पड़ा था गया।

जैफर्सन ने बलपूर्वक कहा कि लुद्धियाना फ्रांस के अधिकार में चला जाय तो "उसी क्षण मे हमें ब्रिटिश जेटे और ब्रिटिश राष्ट्र ने गठबन्धन कर लेना चाहिए", और यूरोपीय युद्ध में पहला मोला न्यू ऑर्लिन्स पर एम्बो-अमरीकी सेनाओं की चढाई का मकैत होगा। नैपोलियन को निन्द्य हो गया कि "आमिन की अलकाजीन सन्धि" के पश्चान् पेट ब्रिटेन के साथ पुनः युद्ध होने वाला है और जब वह होगा तब लुद्धियाना हमके हाथ में निकल जायगा, इसलिए उसने लुद्धियाना को अमरीका के हाथ बेचकर अमरीकी मित्रता प्राप्त कर लेने का निन्द्य कर लिया। डेड करोड़ डालर में यह विन्सू प्रदेश लोकतन्त्र के हाथ में आ गया। इसे खरीदने के लिए जैफर्सन ने संविधान को "दस्ता खीचा कि वह खरचराने लगा" क्योंकि संविधान की कोई भी धारा उसे विदेशी प्रदेश खरीदने का अधिकार नहीं देती थी। उसने यह कार्य कांग्रेस की अनुमति लिए बिना ही कर डाला। इसके परिणामस्वरूप संयुक्तराज्य को १८०३ में दस लाख बर्गमील में अधिक बड़ा प्रदेश और उनके साथ न्यू ऑर्लिन्स का बन्दरगाह प्राप्त हो गया। देश का सम्पन्न मैदानों का बहुत बड़ा प्रदेश मिल चुका था। जो आगामी ८० वर्षों के भीतर संसार का सबसे बड़ा अन्न-भण्डार बनने वाला था। इसके द्वारा महाद्वीप के बीच की समस्त नदियों का नियन्त्रण भी किया जा सकता था। कुछ ही वर्षों में पूजा उड़ाने हुए जहाज भूमि पर बमने के अधिकारी

आप्रवासियों को लेकर पश्चिमी जलमार्गों पर बढ़ने नजर आए। जोरते हुए वे अपने साथ फर, अन्न, सूखा मांस और अन्य सैकड़ों पदार्थ लाते लगे।

इंग्लैण्ड से द्वितीय युद्ध के कारण

अपने प्रथम शासनकाल की परिणामात्मक के समय भी जैकमैन की व्यापक लोकप्रियता अनुपम रही। उनका पुनर्निर्माण निश्चित था। अपने द्वितीय शासनकालमें, जैकमैन ने दुबारा गरीब यत्ना का असाधारण प्रयोग किया और ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के भयंकर युद्ध में अमरीकी तटस्थता को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया। दोनों पक्षियों ने व्यापार की भारी बाड़ पहुँचायी थी। अंग्रेजों ने यह किया कि वे अमरीकी जहाजों द्वारा फार्मासी वेस्ट इण्डोस के माल का लाना रोक दें, और इसलिए उन्होंने ब्रैन्ट में लेकर एन्जे नदी तक यूरोपियन तट की बेरगन्दी घोषित कर दी। फार्मासियों ने आज्ञा दी कि वे अमरीकी जहाज अंग्रेजों को अपनी तलाशी लेने देना या किसी बन्दरगाह का स्थान भी करेगा उसे वे पकड़ लेंगे। युद्ध घोषित हो ऐसा स्थिति में पहुँच गया था कि कोई भी अमरीकी जहाज फ्रांस द्वारा नियंत्रित विस्तृत प्रदेश के साथ व्यापार नहीं कर सकता था क्योंकि उसे अंग्रेजों द्वारा पकड़े जान का भय था और इसी प्रकार इंग्लैण्ड के साथ व्यापार करने में फ्रांस का भय बना हुआ था। इन परिस्थितियों में आचार उभर गया।

एक िकायत और भी थी जिसने अमरीकी भावनाओं को ग्रेट-ब्रिटेन के विरुद्ध भड़का दिया। युद्ध जोरते के लिए अंग्रेज लोग अपनी जलयोता इनको अधिक बढ़ा रहे थे कि उनमें युद्धपोतों को सम्हा ३०० में ऊपर पहुँच चुके थे जिन पर इन्हें लाख सैनिक तथा कर्मचारी थे। इसमें ब्रिटेन सुरक्षित रहता था, उसके व्यापार को रखा होना था और उसके उपनिवेशों के साथ उसका वातायान बना रहना था, परन्तु उसके बड़े के आदिमियों को इतना तप बेचन व खराब भोजन मिलना था, उनके साथ ऐसा दुर्व्यवहार होना था कि स्वनर भग्नी द्वारा नाविकों का मिला असम्भव हो गया था। बहुत-से नाविक भाग कर अधिक सुखी और सुरक्षित अमरीकी जहाजों पर आश्रय लेने लगे। इन परिस्थितियों में ब्रिटिश अधिकारी अमरीकी जहाजों को तलाशी लेने और ब्रिटिश जनों का वहाँ से हटा लेने का अधिकार अपने हाथ में लेना अत्यन्त आवश्यक समझने लगे। जब अंग्रेजी बोलने वाला प्रत्येक नागरिक ब्रिटिश प्रजाजन था तब तो 'जबरन भर्ती' में भूख प्रायः नहीं होती थी। परन्तु अब, युद्धकालय एक स्वनर गाड़ बन चुका था

और बान बदल चुकी थी। अमरीकी जहाजों के लिए ब्रिटिश कूजनों की तांगों के सामने फिर झुक कर, उनके एकाध सँचितनष्ट और नाविक दल के मामले अपने कर्मचारियों को पकित बनाकर तलाशी के लिए वेग करना आपमानजनक था। इसके अनिश्चित बहुत ने ब्रिटिश अक्षर उड़ान और असाधारण व्यवहार के अपराधों से और वास्तविक अमरीकी नागरिकों का खतरास्वी भर्ती कर लेने से।

जैकमैन ने बिना युद्ध के ग्रेट-ब्रिटेन और फ्रांस का जितने तब असाधारण कराने के लिए कायम को प्रेरित किया कि वह 'एम्बार्गो' एकट पाव कर दे जिससे वैदेशिक व्यापार संभव निषिद्ध कर दिया गया। इसके परिणाम भयंकर हुए। एक आंग ना दुसरे जहाजों का राजपार प्रायः नष्ट हो गया और इंग्लैण्ड और स्यूयार्क में असन्तोष अंग्रेजी पोसा पर पहुँच गया और दूसरी ओर खेती करने वाले भी यह अनुभव करने लगे कि उन्हें बहुत हाजि हो रही है। जब दक्षिण और पश्चिम में किसान अपना अन्न, मांस और तस्बाक समूह पार भेजने में असमर्थ हो गए तब खरुब्री को मूल्य गिरने लगे। एक वर्ष के भीतर अमरीकी निर्यात-व्यापार गिर कर निरुद्ध माल की तुलना में पचमास रह गया। यह आज्ञा अपने दुई कि 'एम्बार्गो' के कारण भूखा हांकर ग्रेट-ब्रिटेन अपनी नीति बदल देगा। जब आन्तरिक असन्तोष बढ़ने लगा तब जैकमैन ने एक तरह उपाय का अवलम्बन किया। उसमें आन्तरिक जहाजों व्यापार कुछ मरनुए हो गया। 'एम्बार्गो' एकट के स्थान पर एक 'जान इन्टरकोम' अधीन असम्भव कानून लागू किया गया जो ब्रिटेन, फ्रांस और उसके अधीन देशों के अनिश्चित सबके साथ व्यापार को इजाजत देता था और राष्ट्रपति को अधिकार देता था कि इन दोनों देशों में वे जो कोई अमरीकी व्यापार पर प्रतिबन्धी को उठा ले उसके विरुद्ध कानून का प्रयत्न रोक दिया जाय। १८१० में संपोषितयने ने प्रतिबन्धी को उठाने को नियमपूर्वक पांचपा कर दी, किन्तु प्रयत्न में वे भारी रहे। लेकिन युद्धकालय ने उस पर विराम करके उसके पक्षानु अपना असम्भव केवल ब्रिटेन में जारी रखा।

१८०९ में जैकमैन का द्वितीय कार्यकाल समाप्त हो गया और जेम्स मैडिसन राष्ट्रपति बना। ग्रेट-ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध और भी बिगड़ गए और दोनों देश घोषण युद्ध की ओर झुकने लगे। राष्ट्रपति ने कायम के मामले एक विस्तृत रिपोर्ट वेग की जिसमें दिखलाया गया था कि अंग्रेजों ने तीन वर्ष के भीतर ६०५७ बार अमरीकी नागरिकों को बन्धुपूर्वक भर्ती किया। इसके अनिश्चित उत्तर-पश्चिमी प्रदेश के निवासियों को इन्धियों के आक्रमणों में कष्ट पहुँचा

था और उनका विचित्र था कि उन आक्रमणों के पीछे कनाडा-स्थित ब्रिटिश एजेंटों का हाथ है। १८१२ में ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया गया।

घेन्ट की संधि द्वारा युद्ध का अंत

परन्तु अमरीका इस समय अत्यन्त गम्भीर आन्तरिक मतभेदों में पीड़ित था। दक्षिण ओर पश्चिम तो युद्ध के पक्षपाती थे परन्तु न्यूयार्क और न्यू इंग्लैण्ड उनके विरुद्ध थे। जब युद्ध घोषित किया गया तब मेना को नैवारी संस्था अग्रणी थी। नियमित सैनिक गान हत्या से कम थे और वे भी समुद्र के किनारे, कनाडा की सीमा पर और मुर-मध्यवर्ती प्रदेश में दूर-दूर बिखरे पड़े थे। इनकी महापता कई स्टेटों की अधिभूत तथा अनुशासनहीन नाविक सेना को करनी थी।

युद्ध का आरम्भ कनाडा पर तीन स्थानों पर आक्रमण की नैवारी के साथ हुआ। यदि वह ठीक समय पर और ठीक प्रकार किया जाता तो मॉन्ट्रियल के विरुद्ध सम्मिलित कार्रवाई हो सकती थी। परन्तु सब काम बड़ी अश्वयस्था में हुआ और उसका फल डेट्रोइट पर ब्रिटिश अधिकार के रूप में सामने आया। परन्तु जहा स्वकीय कार्रवाई में अयकलता हुई वहाँ समुद्र में अमरीका की साथ अग्रतः पुनः प्रयत्न गये। अमरीकी फ्लिगट 'कॉन्स्टिट्यूशन' ने कैप्टेन आदरक हल के संवालय में १९ अग्रस्त को वास्तव के दक्षिण पूर्व में ब्रिटिश जहाज 'गेरिजर' का गामना किया और तीन मिनट की लड़ाई के पश्चात् हल ने मनु के जहाज को पकड़ कर संस्था लूट कर दिया। दो महीने बाद अमरीकी स्मूथ 'वास्प' ने ब्रिटिश स्मूथ 'फॉरिक्' में टक्कर ली और उसे पूर्णतया लूट कर दिया। अमरीकी जहाजों के इस प्रभावशाली कार्य में महार जितना हुआ गया। इसके अनिश्चित अमरीकी प्राइवेटियरों ने एटलांटिक में फैल कर १८१२-१३ की पारद और जीन-ज्युन में ५०० दिवस जहाजों को पकड़ लिया।

१८१३ का युद्ध न्यूयार्क स्टेट में डेरी झील के आसपास केन्द्रित रहा। अन्तल ब्रिटिशम हैनरी डेरिंगन ने नागरिकों, सैनिकों, स्वयंसेवकों और नियमित सैनिकों को एक मेला लेकर डेट्रोइट को पुनः जीतने के लिए कॅन्डो की चेष्टा की। १२ मिनट्वर को वह अभी आंध्रियों के ऊपरी प्रदेश में ही था कि उसे महाभार मिला कि कनाडा पर अतिरिक्त पैरी ने डेरी झील पर मनु के जहाजों को लूट कर दिया है। पैरी केवल दो दिन पूर्व ब्रिटिश जहाजों के समीप पहुँचा था और केवल डार्क चण्डों को बोरनापूर्ण कार्रवाई के पश्चात् उनमें अपने इस गन्देप द्वारा देश में जनमनी फैला दी कि 'हमें वे मनु का गामना किया और वह हमारा

हो चुका है।' इसके पश्चात् यह झील अमरीकी अधिकार में ही रही। अब डेरिंगन आक्रमण कर रहा था और एक मास में भी कम समय में उत्तरी कनाडा अमरीकी अधिकार में आ गया। परन्तु वर्ष के अन्त में ऑक्टोबर्गों झील ब्रिटिश अधिकार में ही थी। आगामी डेढ़ वर्ष में जो अनेक स्थल और जल युद्ध हुए उनके बाद भी गामनिक स्थिति प्रायः यथापूर्व रही।

युद्ध की समाप्ति घेन्ट की संधि में हुई। अमरीका ने फरवरी १८१५ में इसे स्वीकार कर लिया। सन्धि शर्तों के प्रथम में दिन-प्रतिदिन इंग्लैण्ड और अमरीका अपने-आपने भागों की अधिकाधिक छोड़ने चले गए जिसका निश्चित परिणाम यह हुआ कि अन्तिम सन्धि में दोनों में से किसी ने भी न कुछ खोया और न कुछ पाया। इसमें केवल युद्ध बन्द करने, विजित प्रदेशों को वापस कर देने और सीमा निर्धारित कर देने के लिए एक कमीशन नियत कर देने की बात कही गयी थी। नाविकों की जबरन भर्ती और गटस्थना के अधिकारों के विषय में जिनके कारण कि यह महंगा युद्ध हुआ था, एक शर्त भी नहीं कही गयी थी। न्यू ऑरियन्स में प्रबल योद्धा एडवुक ब्रैस्मन के नेतृत्व में सीमावर्ती लोगों की अश्वयस्थित परन्तु विद्यालय मेना में बलवान विजय मेना पर जो नाटकीय विजय प्राप्त की उनके कारण अमरीका का प्रथम होने का एक वास्तविक कारण मिला गया था। विजित बान यह थी कि यह विजय ८ जनवरी, १८१५ को हुई जबकि आन्तिम संधि पर हस्ताक्षर हो चुके थे, परन्तु अमरीकी जनता को उसका ज्ञान नहीं था।

यह युद्धों की भांति इस युद्ध में भी बहुत हास्यानी हुई, विघ्नोपः एक युवा और बच्चे हुए देश के लिए २१,००० नाविकों और ३०,००० सिपाहियों को मरने अथवा पायल होने की हानि बहुत बड़ी थी। इसके अनिश्चित १४०० जहाज लूट हो गए थे और असाधारण आर्थिक हानि हुई थी। परन्तु इन विषय में दस्तावेजकारों का एकमत है कि १८१२ के युद्ध का एक महत्वपूर्ण परिणाम राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति का दृढीकरण हुआ। इस युद्ध में विभिन्न राज्यों के जवान कर्ष-ने-कन्धा मिलाकर लड़े और अविद्या-निकासी बिस्फीट स्टॉट का उत्तरी मेनाओं का पंचमल मेतापति होने के कारण राष्ट्रीय एकता की भावना और भी दृढ़ हो गयी। पश्चिमी मेनाएँ पूर्वी समुद्र-तट के अपने मह-देशभक्तों के साथ मिलकर लड़ी और तभी में राष्ट्रीय भावनापूर्ण पश्चिम का महत्व अमरीकी जीवन में और भी बढ़ गया।

एलबर्ट मेलाटिन १८०१ में १८१३ तक अयंमन्त्री रहा था। उसका कथन

था कि इस युद्ध में पूर्ण अमरीकी लोग अव्यधिक स्वाधी और स्वाधीय हितों की अव्यधिक चिन्ता करने वाले होने जा रहे थे। उमने कहा था "कान्ति ने जो राष्ट्रीय भावना और चरित्र प्रदान किए थे उनका दिन-प्रतिदिन ज्हाम होना जा रहा था। उन्हे इस युद्ध में पुनर्जीवन और दृढ़ कर दिया। अब लोगों की

प्रवृत्ति ऐसे सार्वजनिक उद्देश्यों की ओर होती जा रही है जिनका उद्देश्य अभिमान है और जिनके माथ उनके सार्वजनिक विचारों का सम्बन्ध है। वे अब अधिक अमरीकी बन गए हैं, वे अब एक राष्ट्र की भांति अधिक मानते और काम करने लगे हैं, और मुझे आशा है कि इस प्रकार अब यूजियन की स्थिरता अधिक सुरक्षित हो गयी है।"

१८१२ में 'कान्स्टिट्यूशन' नामक अमरीकी जहाज ने एक घमासान युद्ध में प्रथु के जहाज को नष्ट कर दिया। इस नाटकीय जीत के बाद यह जहाज 'ओल्ड आयरन साइड्स' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।



पश्चिम दिशा में विस्तार और प्रादेशिक मतभेद

“युवक, पश्चिम की ओर जाओ और देश के साथ-साथ अपना भी विकास करो।”

—हॉरिस ग्रीली, १९५०

१९१३ का युद्ध एक प्रकार में दूसरा स्वाधीनता संग्राम था क्योंकि तब तक अमरीका को राष्ट्रों के युद्धम्ब में समानता प्राप्त नहीं हुई थी। युद्ध को समाप्त करने वाली सन्धि के बाद किसी राष्ट्र ने भी अमरीका के साथ वैसा व्यवहार करने में इत्कार नहीं किया जैसा कि एक स्वतन्त्र राष्ट्र में किया जाता है। क्रांति के समय में अब तक दम नवजान गणतन्त्र का जो कठिनाइयाँ सहनी पड़ी थी वे सब अन्तर्धान हो गयीं। राष्ट्रीय एकता स्थापित हो चुकी थी, स्वाधीनता और व्यवस्था में समतुल्य बन चुका था, राष्ट्र पर नाममात्र का ऋण था, महाद्वीप की पवित्र धरती हल की प्रतीक्षा में थी और शान्ति, समृद्धि तथा सामाजिक उन्नति का आनन्द विकसित हो रहा था।

राजनीतिक दृष्टि में, महाकालीन लोगों की शब्दावली में “सद्भावना का युग” था और शान्ति के बाद होने वाले पुनर्निर्माण कार्यों में व्यापक एकता की भावना स्पष्ट थी। वाणिज्य अमरीकी जनता को एक राष्ट्रीय इकाई के रूप में संगठित कर रहा था। युद्ध काल के अभावों ने यह जता दिया था कि उत्पादकों को तब तक संरक्षण प्राप्त होना जरूरी है तब तक वे विदेशों की होड़ के सामने अपने पैरों आप खड़े होने योग्य न हो जाए। यह भी कहा गया कि आर्थिक स्वाधीनता उनकी ही आवश्यक है जिनकी राजनीतिक स्वतन्त्रता, आर्थिक आत्म-निर्भरता के बिना राजनीतिक स्वाधीनता अर्थहीन थी और चूँकि वह क्रांतिकारी लड़ाई पहले उद्देश्य के लिए लड़ी गयी थी इसलिए अब दूसरे को पाने का संकल्प किया गया। अमरीकी कांग्रेस के दो तत्कालीन नेता हैनरी क्ले और जान मी कैलहान ‘संरक्षण’ अर्थात् एक ऐसी कर-व्यवस्था जो अमरीकी उद्योग के विकास का मार्ग प्रशस्त करे, के समर्थक थे।

आयन-निर्वाण कर बढ़ाते का यह एक समुचित अवसर था। वगमाष्ट और ओहायो का भेदभावक समुदाय देश में बहुतायत में आने वाली अंधेरी ऊन के विरुद्ध संरक्षण चाहता था; केंद्रकी में स्थानीय पत्तन के बोरे बनाने के लिए उद्योग को स्तारलेवज के बोरो के उद्योग में भय था; मिट्टिसर्बों, जो लोहे की इन्टी

का केंद्र बन चुका था, अकेले ही उस समूहों में भाग को पुनित करना चाहता था जो ब्रिटेन और स्वीडन के लोहे में पूरी होती थी। और, इसीलिए १८१६ में स्वीडन आयात-कर द्वारा चुंगी को दर दबनी बड़ा दी गयी कि उद्योगपतियों को संरक्षण का साम्त्विक स्वाद मिल सके। साथ-साथ कुछ ऐसे लोग, जिनका विश्वास था कि यातायात के उनमें माध्यम पूर्व और पश्चिम को अधिक दृढ़ता में बांध सकेंगे, मरकों और नहरों की एक राष्ट्रव्यापी व्यवस्था की बकालत कर रहे थे।

यूरोप कोर्ट की तत्कालीन घोषणाओं में संघ सरकार को बहुत बल मिला। ब्रिजिनिया के एक पक्के संघवादी जान मार्शल, १८०१ में मुख्य न्यायाधीश बनाए गए और आजीवन सारी सन् १८३५ तक उसी पद पर रहे। जो न्यायाध्यक्ष उनके पहले प्रभावहीन था उसे, उन्होंने, कांग्रेस और राष्ट्रपति जैसे महत्त्वपूर्ण पद के समान प्रभावशाली बना दिया। अपने सारे ऐतिहासिक निर्णयों में मार्शल इस मौलिक सिद्धान्त—संघ शासन की सर्वोपरिता—में कभी भी विचलित न हुए।

मार्शल केवल एक महान् न्यायाधीश ही नहीं बरन् एक विधानसाम्प्रो राजनयज्ञ भी थे। अपने लम्बे सेवा-काल में उन्होंने लगभग पचास ऐसे मुकदमों के निर्णय दिए जिनमें महत्त्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न सम्बद्ध थे। इसके उपरान्त सारे देश में न्यायालयों ने जिस संविधान का प्रयोग किया वह वही था जिसकी व्याख्या मार्शल ने की थी। उनके मुद्रमित्त फैसलों में सबसे मुख्य है उनकी यह सम्मति जो उन्होंने सन् १८०३ में मार्बरी बनाम मैडिसन के मुकदमे में दी थी। उसमें उन्होंने इस निश्चय की प्रतिष्ठा की थी कि कांग्रेस अथवा किसी भी राज्य की सरकार द्वारा स्वीकृत किसी भी कानून की समीक्षा करने का अधिकार यूरोप कोर्ट का है। १८१९ में, मैशुलर बनाम मैगोलेन्ड के मामले में उन्होंने संविधान में निहित सरकार के अधिकारों में सम्बन्धित घुसने प्रदत्त पर विचार किया। वहाँ उन्होंने हैमिल्टन के इस सिद्धान्त का स्पष्ट समर्थन किया कि संविधान जो अधिकार स्पष्टतः सरकार को देता है उनके साथ ही कुछ अतिरिक्त प्रामाणिक अधिकार

स्वभावतः उसे प्रान्त हो जाते हैं। अपने इन फैसलों के जगिण मार्शल ने अमरीका की केन्द्रीय सरकार को गरीब और विकासमान दक्षिण बंगाल में बिना भी नेता के कम काम नहीं किया।

साहित्य और सीमांत

एक संघर्ष भिन्न क्षेत्र में, राष्ट्रीय जागृति के स्पष्ट प्रमाण मिले, क्योंकि इसी काल में मन्त्रे ने अमरीकी साहित्य का सृजन हुआ। हम नयी अमरीकी धारा के प्रमुख लेखक से वाशिंगटन एविंग और जेम्स फीनोकर कूपर। १८०९ में एविंग लिखित 'शिड्टी आव ग्लोबल' काई दोहड़ निकारबांकर' नामक हास्यपूर्ण इतिहास प्रकाशित हुआ। उसकी प्रेरणा उसे स्थानीय अमरीकी गतिविधियों में मिली थी। एविंग की 'रिप बैंक विन्किल' की कथा जैसी कई उनमें रचनाओं की एटमूमि ग्लोबल की इष्टतम घाटी है। हममें, अमरीका का योग्याशाओं और मार्शमिक कृतानियों की भूमि के रूप में चित्रित किया गया है। उसी प्रकार कूपर की प्रतिभा भी स्वदेशी सामग्री द्वारा अभिव्यक्त हुई। परम्परागत अश्वी गैरी का एक उपलब्ध लिखने के पश्चात् उसमें 'दि स्पार्ड' नामक अमरीकी क्रांति की कथा प्रकाशित की जा नुरंत ही बड़ी लोकप्रिय बन गयी। इसके बाद 'दि पायर्समिन्' प्रकाशित हुई जो सीमांतवर्ती अमरीकी जीवन का एक गद्यांश है।

१८०२ से १८०१ तक कूपर ने 'किंगस्टॉकमा टेम्प' नामक गिरीक के द्वारा अथवा 'नेटीवमार्' तथा दबे पांव चलनेवाले इण्डियन मरदार अकास जैसे शिब साहित्य के अमर पात्र पेश किये। कूपर ने समुद्री कृतानियां भी लिखी जिनमें अमरीकी प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। १८१५ में 'दि नार्थ अमेरिकन रिज्यू' की स्थापना साहित्य जगत की एक और महत्वपूर्ण घटना थी। अपने योग्य सम्पादक हेरेड ग्लोबल के नेतृत्व में हमने साहित्य का एक ऊँचा स्तर स्थापित किया। न्यू इंग्लैण्ड के अनेक प्रतिभाशाली लेखक दुःख अपने लेख दिया करने थे जिनके द्वारा हमने शोध ही राष्ट्र की उदयमान मस्कति में अमिट स्थान प्राप्त कर लिया।

अमरीकी जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना थी 'जिन्की आकर्षण घणित ने अद्वितीय योग दिया वह था सीमान्त। मगरन एटलॉरिक तट की गतिविधियों ने लोगों को नए प्रदेशों में जा बसने के लिए आकर्षित किया। न्यू इंग्लैण्ड की पहली भूमि, मन्त्री और उर्वर पट्टिबमी परगनी की बराबरी नहीं कर सकती थी। कलत्र: स्वीडिश का प्रवाह भीतर लोगों को मगद परगनी का लाभ उठाने के उद्देश्य में उपर की बढ़ चला। दक्षिण की भिन्नियों ने भी आप्रवासन को

प्रोत्साहन दिया। कैरोलाइना और वर्जिनिया की भीतर की भूमियों के लोग तटवर्ती बाजारों तक पहुँचने के लिए मड़कों और महलों की कमी अनुभव करते थे। वे मगद तट के बागान मालिकों की राजनीतिक दक्षिण के कारण भी दुःख थे। अन्तु, वे भी पौर-पौर एटलॉरिक तट में राकीज की आर बढ़ने लगे। इस आप्रवासन का अमरीकी चरित्र पर बड़ा प्रभाव पड़ा। हमने व्यक्तिगत मूख-दूध को प्रोत्साहन मिला, राजनीतिक और आर्थिक जनतन्त्र का विकास हुआ, शिष्टाचार पर अमर पडा, मगानती विचारधाराएँ टूटी और स्थानीय स्वायत्त-मरूप तथा राष्ट्रीय मता के प्रति आदर भावना का जन्म हुआ।

पश्चिम की आर बढ़ने वाली धारा बरांफटोर बहनी हुई पहले सीमान्त के पार एटलॉरिक तट की पट्टी तक पहुँच गयी, किन्तु की नदियों के उद्गमों में भी आर, अप्रैडियन के ऊपर तक। न्यू १८०० के लगभग मिमिगिरी तथा ओलायो पारिया भारी सीमान्त क्षेत्र बन रही थी। "हायो, अबे बी गो, फ्लॉरिड डउन दि रिबर आन द ओहायो" (हायो, हम जा रहे हैं, ओलायो नदी की लहरों पर निरने हुए) यह गाना हज़ारों आप्रवासियों की ज्वान पर था। मालहकी गलाब्दी के आरम्भ में आबादी के इस भारी प्रवाह के कारण पुराने प्रदेशों का विभाजन और नयी सीमाओं का निर्धारण आवश्यकता घोषणा में हो गया। नए राज्यो के प्रवेश के साथ ही मिमिगिरी के पूर्व की भूमि का राजनीतिक मानचित्र भी स्थिर हो गया। छः वर्षों में छः नए राज्य बने: इण्डियाना १८१६ में, मिमिगिरी १८१७ में, इलीनोय १८१८ में, अलाबामा १८१९ में, मेन १८२० में और मिसूरी १८२१ में। पहला सीमान्त, यूरोप के साथ रहा और दूसरा तटवर्ती भूमियों के साथ। पर मिमिगिरी घाटी स्वतन्त्र रही। इसके निवासियों की दृष्टि पूर्व की अपेक्षा पश्चिम की आर रही थी। सीमान्त प्रदेशों के निवासी विविध प्रकार के थे। आप्रवासियों के आगे-आगे शिकारी और बनेले पशुओं की पकड़ने वाले लोग चलते थे। एक अश्वी यात्री फोर्डहम ने उनके विषय में लिखा है, "यह लोग माहली और परिश्रमी हैं जो छोटे-छोटे खालों में रहते हैं...ये शिष्टाचार नहीं जानते किन्तु अतिथि का यत्नार जानते हैं, ये अप्रचिन्ता के प्रति दयालु, ईमानदार और विश्वास योग्य हैं। ये देशी मधवा और बहदू की घांटी बहुत खरी करते हैं। निवासी निवासी के पास एक टा गार्ड भी होनी है...पर इनके निर्वाह का प्रमुख माध्यम है गार्डफेल" यह लाल कुल्लाही, फन्दे और मड़की पकड़न घांटी बनी के प्रेषण में मितुण्य थे। रहने के लिए लक्ष्मी के खाले सर्वप्रथम रहते ही बनाए। ये दण्डियों की दूर रखने में भी समर्थ थे।



१८२३ में जेम्स मलरो ने बिस्वैय नीति की घोषणा की जो आगे चलकर 'मलरो इतिहास' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

सीमान्त की मांग थी—स्वावलम्बन

जगत् में प्रवेश करने के बाद तत् निवासी किसान और शिकारी बन जाते थे। छोटे-छोटे गाँवों की बजाय अब ये लोग शहरीयों के बड़े-बड़े मकान बनाते लगे। भरतों की छोड़कर वे कुर्गे भाँदने लगे। पुरुषार्थी तो वे ही, वे जमल साफ करके उसकी लकड़ी को पोटास के लिए जला देते थे और दूँडों को खीजने के लिए खोड़ देते थे। वे अपने लिए अन्न, सब्जियाँ और फल स्वयं उगाते थे, हिरन के मांस, टिकियाँ और गहदर के लिए जगलों को खान डालते थे और आम-पड़ोस की जलपाराओं में मछलियाँ पकड़ते थे। जो बहुत अधीर थे वे मस्ती धरणी के बड़े-बड़े टुकड़े मोल लेकर अब उनका मूल्य बढ़ जाता तो उन्हें बेच कर पश्चिम की ओर बढ़ जाते थे।

धीरे ही किसानों के अतिरिक्त डाक्टर, वकील, टुकानदार, सम्पादक, उपदेशक, मॅकेनिक और राजनीतिज्ञ आदि भी आने लगे। इनमें किसान सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। वे जहा बम जाते थे वही आजीवन रहना चाहते थे और आशा करते थे कि उनकी मनातों भी वही रहें। वे अपने पहले आनेवालों की तुलना में बड़ी बड़ी स्त्रियाँ और दूँटों अबवा लकड़ी के ढाँचों के दूड़ मकान बनाते थे, वे पत्नों की अच्छी नकलें लाते थे, धरती की कुल्लटा में त्रौनते थे और अधिक उपज के लिए उत्तम बीज बोने में; आटा पीसने और लकड़ी चीरने की कलें और आमचनलागाए भी खड़ी कर लेते थे। वे अच्छी सब्जियाँ, मिर्जापूर और स्कूल बनाते थे। पश्चिम की तरफकी इनमें वेग में हुई कि वहाँ कुछ ही वर्षों में कायाकल्प हो गया। उदाहरण के लिए, निवासी जिसमें मछलियाँ एक दुर्ग था पर जो एक निरा व्यापारी गाव था, अपने अनेक आदिवासियों के जीवनकाल में ही राष्ट्र के महाजन्य और सम्पन्नतम् नगरों में गिना जाने लगा था। तत् पश्चिम में विभिन्न नगरों के लोगों का रक्त मिल-बूल गया। दक्षिण के ऊँची धरती वाले प्रदेश के किसान इनमें प्रमुख थे और इन्हीं कुटुम्ब की सन्तान थे। अबाइम निकन जिनका जन्म कण्टूकी के एक लड़कों के गाँव में हुआ था, इन्हीं धरान के थे। स्काच-आदिवासियों, पैगिलवानिया के जर्मनों, न्यू इंग्लैण्ड निवासियों तथा अन्य उद्गमों के लोगों ने भी योगदान दिया। १८२० तक, अमरीका के आर्थ में अधिक निवासी एक ऐसी जलशाप में पल चुके थे जिसमें पुरानी रीतियाँ और कब्रियाँ या तो थी ही नहीं या बहुत दुर्बल हो चुकी थी। पश्चिम में लोगों का मृत्याकन विरामत में मिनो वैत्रिक सम्पत्ति अथवा ऊँची शिक्षा के अधार पर नहीं किया जाता था बल्कि इतना कि वे नया थे और क्या कर

सकते थे। फार्मों के मूल्य ऐसे थे कि उन्हें कोई भी मिनव्ययी ध्वंसित मुगमना से खरीद सकता था; सरकारी धरती सन् १८२० के बाद सवा डालर प्रति एकड़ के भाव मिल जाती थी और सन् १८६२ के बाद सन्ने वार्कों की बिना मूल्य के ही प्राप्त हो जाती थी। भूमि के संचारने के औजार भी मुगमना में उपलब्ध थे। यह वह समय था जब पक्कार हरिस पीची के दास्यों में, "यूक लोस पचिम जा मकने थं ओर देस के साथ स्वय भी मरक्की नर मरने थे।" अधिक अवसर की समाप्ता में, सामाजिक और राजनीतिक समाप्ता की भावना का प्रादुर्भाव हुआ और स्वाभाविक नेताओं को नुरून ही मामने आ जाने का अवसर प्रदान किया। एक मफल पथदर्शक के लिए, पहल करने का विवेक, साहस, व्यक्तिगत प्रभाव तथा मुद्दबुद्धि अनिवार्य थे।

जैसे-जैसे न्यू इंग्लैण्ड के लोस पचिम जा कर बसने गए वे अपने अनेक आदर्श और अपने प्रदेश की समस्याओं को भी ले आये। दक्षिण के लोगों ने भी ऐसा ही किया और एक तरह से, पचिम को बसाने का कार्य इन दोनों प्रभावों की एक हीड़ के रूप में हुआ। दामता की प्रथा ने, जिसकी ओर जनता का अभी तक ध्यान नहीं गया था, गहटा असाधारण महत्त्व प्राप्त कर लिया; ब्रैफर्सन के दास्यों में उसने "रात के गमय आग-मुक्क बेताबनी घण्टी" जैसा काम किया। मणतन के प्रारम्भिक वर्षों में जब इनकी राज्य दामता के तात्कालिक अथवा क्रमिक उन्मूलन की व्यवस्थाएँ कर रहे थे तो अनेक नेताओं को आगा हो गयी थी कि सभी जगह दामता का अन्त हो जाएगा। १७८६ में वेदियतन ने लिखा "मे धर्म से चाहता हूँ कि कोई योजना अपनायी जाय जिससे कि दामता, पीगे-पीगे, विद्वित रूप से पूँ समाप्त हो जाय कि पना भी न चले।" और ब्रैफर्सन, मेडीसन, मुनरो तथा अन्य दक्षिणी राजनीतिज्ञों ने ऐसी ही घोषणाएँ की। और जब सन् १८०८ में दाम-व्यवस्था समाप्त कर दिया गया तो बहुत से दक्षिणी लोगों को लगा कि दामता अब कुछ ही दिनों की महतान रह गयी थी।

कपास के कारण दासता को प्रोत्साहन

पर अगली पीढ़ी में दक्षिण एक ऐसे वर्ग में परिणत हो गया जो लगभग सम्पूर्ण रूपसे दामता को कायम रखने के मासले पर एकमत था। यह परिवर्तन अनेक कारणों से हुआ। कानिन के समय दार्शनिक उदारता की जो भावना प्रखलित हो उठी थी, वह उनरौतर दुर्बल हो चकी और कटुपन्की न्यू इंग्लैण्ड तथा दासता-समर्थक दक्षिण का परस्पर विरोध स्पष्ट रूप में सामने आने लगा।

उत्तमो और साहसिक जपणो जत पूर्बो गांवों को आबाधियाँ छोडकर मध्यपचिम के उपजाऊ और अनबसे पैरो-प्रदेशों में रहने-बसने के लिए बंकी हुई गाइयों में आगे बढ़ने गए।



इस समय बड़ कर, वार यह कि कुछ नदी अधिक बातां ने, दागता को उम्मे भी अधिक लाभदायक बना दिया जिनको कि वह १७९० ने पहले थी।

इस आर्थिक परिवर्तन का एक आधार या दक्षिण में एक महान कपास उत्पादन उद्योग का आधिपत्य। इस परिवर्तन के अनेक कारण थे। अच्छे रेशे वाली उत्रन किस्मों की कपास पैदा होने लगी थी। सन् १७९३ में एजी ह्यूटने के काम अंतर्गत बाले सुगन्धरकाली 'सिन' नामक यंत्र के आविष्कार ने उत्पादन को अत्यधिक बढ़ा दिया। साथ-ही-साथ उद्योगकृति ने सूती कपड़ा बनाने के काम को एक व्यापक कारोबार बनाकर कपास की मांग को अत्यधिक बढ़ा दिया। पश्चिम में १८१० के बाद जो नयी जमीनें हल के नीचे लायी गईं उनको बजह में कपास को खेती का अर्धधिक विस्तार हो गया।

कपास की खेती बेम में मद्रासप्रान्तकी राज्यों के आगे पश्चिम की ओर बढ़ी और निचले दक्षिण में फ्लोरिडा हुई मिर्मासिपो नदी तथा अन्त में टेक्सस तक पहुँच गयी। दागता का आधार प्रदान करनेवाली दूसरी चीज थी गन्ने की खेती। अठारहवीं शती के उत्तरार्ध में दक्षिण पूर्वी लुइसियाना की धरती गन्ने की खेती के लिए आदर्श भूमि मिट्टी हुई और १८३० तक यह राज्य देश भर के लिए आवश्यक चीनी का लगभग आपूर्ति देने लगा था। इनके लिए दाय जाहिए थे। वे पूर्वीतन में लागू गए। अन्त में तम्बाकू की खेती भी दागता को अपने साथ लेकर पश्चिम की ओर बढ़ी। फलतः ऊपरी दक्षिण के दाय, निचले दक्षिण और पश्चिम की ओर लागू गए।

उत्तर का स्वतन्त्र समाज और दक्षिण का दास सम्प्रदाय ज्यों-ज्यों पश्चिम की ओर फैलता गया त्यों-त्यों ऐसा प्रचलित हुआ कि नए राज्यों में साधारण रूप में समाजता की स्थापना अधिक शिघ्रकर होती। सन् १८१८ में जब इन्डिपीन्ड नामक राज्य संघ-संघकार में सम्मिलित हुआ तब दस राज्यों में दागता की आजादी और ध्यारह ने उसका निर्बंध कर दिया था। जब अलाबामा एक दास पंथक राज्य के रूप में शामिल हुआ तो समुद्रतल पुनः स्थापित हो गया। बहुत से उत्तरी लोग तुरंत एक हो कर मिस्सूरी मध में मिस्सूरी के प्रवेश का विरोध करने के लिए तैयार हो गए जब तक कि वह राज्य दागता सम्बन्धी अपनी नीति न बदल दे। देश में विरोध की एक आवाज आ गयी। कुछ समय के लिए कांग्रेस में गतिरोध आ गया। आविष्कार हैनरी केल के एन्टिस्लेव नेत्रुत्व में एक सम्मेलित हुआ। मिस्सूरी दागता पंथक राज्य के रूप में शामिल किया गया पर उन्ही समय में ने एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में संघ में प्रवेश किया। कांग्रेस ने घोषणा

की कि मिस्सूरी की दक्षिण सीमा के उत्तर में लुइसियाना-क्रम से जो धरती प्राप्त की गयी थी उसमें ने दागता की प्रथा सर्वत्र के लिए अन्वय कर दी जाय। यह एक अस्थायी समाधान मिट्ट हुआ। जैफर्सन ने कहा कि रात में लगने वाली आग की नेतावनी घण्टी बूध तो कर दी गयी किन्तु कुछ ही देर के लिए। उन्होंने लिखा 'यह तो केवल स्थिति करना हुआ। अन्तिम निर्णय नहीं। एक भौतिक देखा जो एक नैतिक तथा राजनीतिक मिडान्त के अनुकूल हो, और जो एक बार खीच कर लौंगो के अन्धेन के सामने रख दी जाय वह कभी धुंधली नहीं हो सकती। वह हर भूमिदाहट के साथ और भी गहरी होती जायगी।

अमरीका की सीमा के बाहर टेक्सस में होनेवाले आप्रवासन का छोड़कर, कृषि प्रधान सीमान्त प्रदेश का पश्चिमोत्तरीय विस्तार मिस्सूरी के आगे १८४० तक नहीं हुआ। इसी समय मुरर पश्चिम के व्यापार का एक बड़ा केन्द्र बन गया जिसका ऐतिहासिक महत्त्व स्वार्थों के एकत्रीकरण ने कही बढ़कर होने वाला था। जैसा कि निर्माणिक घाटी की फ्रांसीसी-खोज के प्रारम्भिक दिनों में हुआ था और हा, जैसा कि एटलान्टिक तट में अर्धवर्ग और दबों के द्वारा पश्चिम दिशा में उठाये गये में हुआ, बसने वाली का पथप्रदर्शन व्यापारियों ने ही किया। फ्रांसीसी तथा स्पान-आरिजि 'ट्रेण्टो' (विपारियों) ने बड़ी-बड़ी नदियों और उनकी सहायक सत्रिप्रांशों की तथा रॉकी और मियरा पर्वतों के सारे दर्राँ की खोज की। पश्चिमो प्रदेशों के भूगोल का जो ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया उसके आधार पर व्यापारियों द्वारा १८४० से १८४९ तक का आप्रवासन तथा बाद में सीनरी प्रदेशों पर कब्जा सम्भव हो सका। पश्चिम की ओर बढ़ने के अलावा १८१९ में अमरीका ने स्पेन के फ्लोरिडा और दूर पश्चिम के ओरेगोन प्रदेश पर स्वामित्व प्राप्त कर लिया। यह इत्साक अमरीका के स्पेन पर अमरीकी नागरिकों के पचास लाख डालर के दावों के बदले में लिया था।

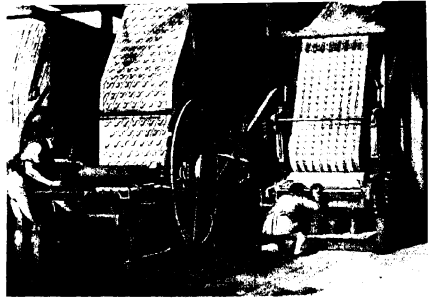
लैटिन अमरीकी स्वाधीनता

सन् १८१७ में, गान्दुयनि जेम्स मेडीसन के बाद जेम्स मन्रो गान्दुयनि चुने गए। इनमें दो असाधारण गुण थे—नीच व्यवहारकुशलता तथा दृढ़ इच्छा-शक्ति। जैसा कि उनके उत्तराधिकारी जॉन जिकमी एडेम्स ने कहा था, वह 'एक ऐसे कुशल मन्सिक का व्यक्ति था जो सर्वत्र डाँक निर्णय करना था और किंग हुग निर्णयों पर अटल रहता था।' उनकी शासन अवधि की जिस घटना ने उनका नाम अमर बना दिया वह था त्प्राकृतिक 'मनरो-निदान्त'।

इस नीति के तीनों मूलतत्त्व अलग-अलग प्रतीति माने अमरीकी विद्वान्त थे। प्रथम, जैसा कि वॉशिंगटन, जैकसन और मेडीसन ने कहा भी था, यह कि किसी भी स्थायी अवस्था "उलझाने वाली स्थिति" में न फसा जाय। दूसरे जब स्पेन ने युद्धविधाना की किसी अन्य राष्ट्र के हाथ बेचना चाहा तो मैकमैन ने उनका विरोध किया और घोषणा की कि सम्बद्ध प्रतीति के साथ समूक्त राज्य अमरीका के सर्वोच्च हित निहित है। तीसरा मूलतत्त्व था, आत्मनिर्णय का विद्वान्त जितने अमरीका की जनता ने स्पेनिश-अमरीकी उपनिवेशों के स्वाधीनता-सम्पन्न-नया-मियों के साथ सहानुभूति के रूप में व्यक्त किया था।

जब में अंग्रेजी उपनिवेश स्थापित हुए तब से नैटिन अमरीका के लोगों में भी स्वाधीनता की ऐसी ही आवाज उभर उठी थी। सन् १८०१ के पूर्व अर्जेंटा-इना और चिली अपनी स्वाधीनता पुष्ट कर चुके थे और १८०२ में जोस डी सैन मार्टिन तथा साइमन बोलीवर के नेतृत्व में अन्य कई दक्षिण अमरीकी राज्य स्वाधीनता पा चुके थे। १८२० में केवल वेस्ट इण्डीज में और दक्षिण अमरीका के उत्तरी तट पर कई यूरोपीय राष्ट्रों के छोटे-छोटे उपनिवेश बच रहे थे। ये और इनके साथ एक दो बर्नोनिया के अधीन प्रदेश ही अमरीका में यूरोपीय उपनिवेश रह गए थे। अमरीका के लोगों को, उभय स्वाभाविक और गहरी हृत्ति महसूस हुई बर्नोनियास उन्हें सकल यूरोपीय सरकारों से नाता नातने के अपने अनुभव की पुनरावृत्ति-नी प्रतीत हुई। १८२२ में राष्ट्रपति मूनरो ने भारी भावजनिक दबाव के बाद कुछ देशों को मान्यता देने के अधिकार प्राप्त किए। इनमें कोलंबिया, चिली, पेरिसको, ब्राजील भी थे। इनके साथ पुनः उनसे प्रतिष्ठित वयु-राज्यों के रूप में स्वाधीन अमरीका के अंग मान लिए गए।

लगभग इसी समय मध्य यूरोपीय राष्ट्रों का एक समूह था, जिसे माध्याह्नतः 'दोनों एन्वायर्स' (पश्चिम में भी) कहा जाता था, यूरोप के न्याय संगत शासकों के हितों का कानून में बचाने के लिए संगठित किया गया। इस आवाज से कि यह कानून उनके अपने अधिकृत क्षेत्रों तक न फीट पाएँ इस मंगलन ने उन देशों में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया जहाँ सार्वजनिक आन्दोलन राष्ट्रीय विद्रोहों को आमन्त्रित कर रहे थे। यह नीति आत्मनिर्णय के अमरीकी विद्वान्त से विष्कुल विपरीत थी। दक्षिण अमरीका की नयी सरकारों के स्वाधिक्य में अमरीकी



उत्तरी इलाके की एक मिल में कपड़े की कपड़ों की कपड़ा बनाने की प्रयोगशाला की बदौलत अमरीका विदेशी आयात को आवेष्टकता से मुक्त हो गया। १८६० तक अमरीका में मुन्नी कपड़ों की १२०० फ़ैक्टरीया खल चुकी थी।

३६३ मील लम्बी इन्ही तहर पुरी हो जाने पर एक शासकत्व उभर मनाया गया जिसमें न्यूयार्क राज्य के गवर्नर ड बिट क्लिफ्टन ने इन्ही भील के पानी से अरे एक कुपे की अट्साटिक महामापर में उदला।



भगंमों की भागी बनना तब लगा जब इस संगठन ने स्पेन तथा नवी दुनिया में उनके उपनिवेशों की ओर भी ध्यान दिया। अमरीका की दृष्टि में इसका आशय यह हुआ कि कई यूरोपीय शक्तियाँ घूम कर उन क्षेत्रों पर आपसपर जमाना साटोरी थीं जो अपने आपको स्पेन के पत्रों में सूक्त कर चुके थे। वर्षों तक अमरीकी सरकार ने उस एकाकी नीति का अनुसरण किया जो वाशिंगटन, हैमिल्टन, जेफर्सन, जॉन एडम्स आदि पहले के राजनीतियों ने बनायी थी। इसका तात्पर्य यह था कि यूरोपीय राजनीतिक पृष्ठभूमियों में अमरीका का कोई भाग न था। वह यूरोपीय युद्धों में तटस्थ था और वह एक अमरीकी राष्ट्र के रूप में विकसित करने की नीति का अनुसरण ही करेगा। इस नीति में उस पूरक सिद्धान्त की अपनाना स्पष्ट था कि यूरोपीय शक्तियों को अमरीका के मामले में दखल नहीं देना चाहिए।

अमरीका द्वारा यूरोप की घमकियों का विरोध

१८०३ में, ऐसा प्रतीत होने लगा कि एक ऐसी कार्रवाई का समय आ गया था जिसमें लैटिन अमरीका पर स्पेन की बजाय उसकी ओर से किसी नीमरे पक्ष के आक्रमण की आशंका समाप्त हो जाय। दो दिसम्बर की राष्ट्रपति मुनरो ने कांग्रेस के समक्ष अपना वार्षिक संदेश पढ़ा जिसके कुछ वाक्य मिल कर मूल 'मुनरो सिद्धान्त' बन जाते हैं। इस घोषणा के प्रमुख वाक्य मुनरो के अपने शब्दों में इस प्रकार हैं:— (१) "अमरीकी महादीप के देशों को जिन्होंने अपनी स्वाधीन और स्वतंत्र स्थिति बना ली है और उनका पोषण भी कर रहे हैं, आगे किसी भी यूरोपीय शक्ति द्वारा पुनः उपनिवेश बनाये जाने के विषय नहीं माना जायगा।

(२) "सम्मिश्रित शक्तियों की राजनीतिक पद्धति निश्चय ही...हमारी अमरीकी प्रजाती में भिन्न है...हमको चाहिए कि अपनी रीतियों को इस गोलाई के किसी भाग में फैलाने के उनके प्रयास का हम अपनी गान्ति और सुरक्षा के लिए एक आतंक समर्थक।" (३) "किसी भी यूरोपीय शक्ति के वर्तमान उपनिवेशों अथवा अधीन भूमियों में हमने कोई हस्तक्षेप नहीं किया है और न आगे ही करेंगे।" (४) "यूरोपीय शक्तियों की उन लड़ाइयों में जो उनके पारम्परिक मामलों के कारण हुईं, हमने कोई भाग नहीं लिया और न ऐसा करना हमारी नीति के अनुकूल है।"

जब कि मुनरो सिद्धान्त विद्वय के मामलों में अपनी नीति स्पष्ट कर रहा था तो देश की जनता का ध्यान राष्ट्रपति के आगाभी बूनाब पर केन्द्रित हो रहा

था। पांच उम्मीदवारों में कड़ा मुकाबला हुआ जिनमें न्यू ऑर्लिअन्स युद्ध के विजेता एंड्रयू जैक्सन भी थे। विद्वान, अनुभवी और राजनीतिकुशल पर डीप और हठी जॉन किन्सी एडम्स विजयी हुए। वह असाधारण प्रतिभावान, चरित्रवान, और उच्च जनभावना के व्यक्ति थे। पर उनमें बर्क जैसी क्लाइवत-गारी, व्यावहारिक क्लवापन तथा उच्च पक्षपात जैसी दुर्बलताएँ भी थीं। उनके शासन-काल में नए देशों की कल्पनाएँ नहीं। एडम्स के अनुयायियों ने 'नेशनल रिपब्लिकन' नाम अपनाया जो बाद में बदलकर "डिम्क्रेट हुआ और जैक्सन के अनुयायियों ने 'डेमोक्रेटिक पार्टी' को नया चरित्र प्रदान किया। एडम्स ने ईमानदारी और कुशलता के साथ शासन किया। फिर भी उन्होंने सड़कों और नहरों की एक राष्ट्रीय-व्यवस्था का निष्पन्न अनुमान किया। उनकी प्रशासन नीति अगले बूनाब के लिए कम्बा आन्दोलन रही, पर अपने अभ्येदनशील बौद्धिक स्वभाव के कारण वे बहुत ने मित्र भी न बना सके और १८२८ का बूनाब भूचाल सिद्ध हुआ जिसमें जैक्सन की शक्तियों ने एडम्स तथा उसके समर्थकों को बुरी तरह पराजित किया।

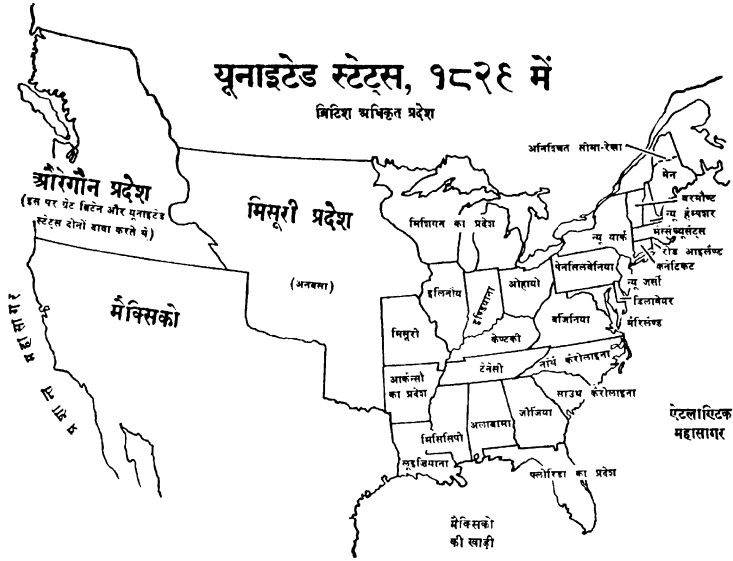
ऐनीमैनी के पश्चिम के राष्ट्रपतियों की रचना करने वाले स्वातन्त्र्यी बन-वातियों ने अपने सविधानों में सीमान्त के लोकतन्त्रीय विचार लिख दिए थे। १८२८ तक उनके विचारों के प्रभाव में अधिकतर पुराने राज्यों में जनता की मनाधिकार प्राप्त हो चुका था। १८१२ के युद्ध ने संघ का गन्तुल पश्चिम के हाथों में रहा। अब आबारी के केन्द्र की भांति राजनीतिक प्रभाव का आश्चर्य-विन्दु भी पश्चिम के युवा लोकतन्त्र को स्थानान्तरित हुआ। पूर्व के समर्थकों की सहायता में उनमें सीमान्त-भावना के अवतार जैक्सन को सर्वोच्च प्रशासक के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

जैक्सन एक सबल राष्ट्रपति

जैक्सन के पदासीन होने के समय वाशिंगटन की जनता का उत्साह उनके इस विश्वास का द्योतक था कि सरकार उनके हाथों में आ गयी है। देश के कोने-कोने में दस हजार दर्शक इस समारोह को देखने के लिए एकत्रित हुए। उन दिन जैक्सन, जो लम्बे छरहरे बदन के व्यक्ति थे और जिनके घने सफेद और आकर्षक बालों के नीचे बाज जैसा मलक प्रतीत होने वाला बेहरा था, काली पोषक में अवार जनमल्लदाय की भीड़ के बीच पैम्सिलवानिया एंजेन्स की कीचड़ भरी सड़क में पैदल गुजरे। उनके साथ कुछ गिने-बुने मित्रों की छोड़कर

यूनाइटेड स्टेट्स, १८२६ में

ब्रिटिश अधिकृत प्रदेश



ओरिगोन प्रदेश
(इस पर ग्रेट ब्रिटेन और यूनाइटेड स्टेट्स दोनों दावा करते थे)

मिसूरी प्रदेश
(अनक्षमा)

मैक्सिको

पैसिफिक महासागर

पैसिफिक महासागर

मैक्सिको की खाड़ी

कोई अवरक्षक न थे। 'कैपीटाल' भवन के पूर्वी पोटिको के विशाल पर्यर की मोड़ियां बाले मार्ग की चोटी पर खड़े होकर उन्होंने अपने पैर की लपख ली और उद्घाटन भाषण पढ़ा। बड़ी मुश्किल से वह उस शोर मचानी हुई भीड़ में से निकल सके, जिसमें हर व्यक्ति उनमें हाथ मिलाता चाहता था। थोड़े पर सवार होकर वह शहरी पोडोपाइयो, बत्ती में काम आसानी वाली गाड़ियों और हर आयु एवं हर वर्ग के लोगों के एक अतीवार्थिक जुलूस के आगे चलते हुए ह्लाइट हाउस गये।

जैसमन, मन और आत्मा में पूर्णतया माधारण जनता के साथ थे। भीषण गरीबी में उनका जन्म हुआ था और उनके पिता उनके जन्म से पहले ही मर चुके थे। विपत्तियों के बीच चल कर उन्होंने प्रवर, महूरयता तथा दुखियों के प्रति चिरन्तन संवेदनशीलता पायी थी। वे बालक ही थे जब उन्होंने उस काल में मरिचक भाग लिया जिसमें उनके दो भाई मारे गए। चौदह वर्ष की अवस्था में वह दुनिया में अकेले थे। सीमाना के वकील, किसान और दुकानदार के रूप में उन पूर्वी जिन मर्यादों के प्रति उनके मन में गहन अविश्वास पैदा हुआ जिनका परिचय के अधिकार वाणिज्य पर व्यापक प्रभाव था। इसके अलावा वे साधारण मनुष्य की असाधारण कार्य करने की क्षमता में विश्वास करते थे। सब मिला कर उनका पंच मरल और व्यापक था। जनता जनार्दन और राजनीतिक मान्यता, सबकी मान्यता आर्थिक अवसर देने में उनका अटल विश्वास था। एकाधिकारी तथा विदेशी स्वयंसेवकों में उन्हें बड़ी घृणा थी।

पर सम्भालने के बाद जैसमन ने वेरा के साथ अपने विचारों को अमली रूप दिया। १८८८ में उन्होंने मंत्राण-कर के प्रश्न पर माउथ कैरोलाइना के साथ सन्धी बरनी। दक्षिण के विज्ञान ना बड़े हुए भाषों का बोझा उटाने से, और मंत्राण के गारे लाभ उत्तर के कारखानेदारों का होने से। कांसम द्वारा बनाए गए निर्दमों ने बेंने-बेंने चुगी के नियम बढ़ने गये बेंने-बेंने साग देस धनवान होना गया किन्तु माउथ कैरोलाइना की समृद्धि गिरनी गयी। माउथ कैरोलाइना के लोगों को आशा थी कि वे जिस चुगी का विरोध लगायत करते आए थे उसे बदलने में जैसमन अपने पैर की शक्ति का उपयोग करेंगे। पर यह आशा व्यर्थ गयी क्योंकि यह मंत्राण की अर्थशास्त्रिक मानने वाली दक्षिणी विचारधारा में महत्त्व नहीं थी। १८३० में जब कांसम ने एक तथा चुगी कानून बनाया तो जैसमन ने उस पर निम्नलिखित टिप्पणियाँ कर दिए। माउथ कैरोलाइना के लोगों ने एक 'स्टेट्स राइट्स पार्टी' (राज्यों के अधिकार सम्बन्धी दल) संगठित की। यह

पार्टी उन लोगों की अग्रुआ थी जो निषेधात्मक सिद्धान्त में विश्वास रखते थे— कि किसी भी राज्य में उनके प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन यदि यह निर्णय कर दे कि कांसम द्वारा निर्मित अमक कानून विधान को दूष्टि में अनावश्यक है तो उनके इस निर्णय के बाद उस राज्य में वह कानून समाप्त हो जाये। राज्य की नयी समद का निर्वाचन इसी विचारधारा के आधार पर हुआ और निर्वाचित समद ने भारी बहुमत में 'नॉलिकेसन ऑफिन्स' पास किया जिसके द्वारा मत् १८८० और १८३० के चुगी कानून उस राज्य में अर्थ और अर्थमिश्रित धारित कर दिए गए तथा राज्य के प्रत्येक अधिकारी को आदेश हुआ कि वह इस ऑफिन्स को आज्ञा का पालन करने को शाप्य उठाये। यह भी धमकी दी गयी कि यदि कांसम, इस राज्य के विरुद्ध बल प्रयोग करने के लिए कोई कानून पास करेगी तो यह राज्य, मध में अलग हो जायगा।

नवम्बर १८३० में जैसमन ने मान छोटे जलघोष और एक युद्धपोत इस आदेश के साथ काल्पेटन भेजे कि वे किसी भी सामयिक कार्रवाई के लिए तैयार रहें। इस दिग्दर्शक को उन्होंने हर विरोधियों के लिए एक धारणा भी की। उन्होंने कहा, "माउथ कैरोलाइना, विप्लव और देशद्रोह के खिलाफ खड़ा है।" उन्होंने राज्य के लोगों में अपील की कि जिसके लिए उनके पूर्वजों ने मधर्ष किया था वे उस मध के प्रति अपनी निष्ठा फिर से मंगटिन व मजबूत करें। रेनियल वेमस्टर की तरह उन्होंने भी इसकी पुष्टि की कि मधुकराज्य अमरीका "मानाधारी राज्यों का एक गठबन्धन" नहीं है वरन् "एक ऐसी सरकार है जिसमें सभी राज्यों के लोगों का सामूहिक प्रतिनिधित्व है।"

संघ सिद्धान्त की जोत

इसी बीच तटकर कानून का प्रश्न फिर ने कांसम के मामले आया। धीरे धीरे यह ज्ञान हो गया कि एक ही व्यक्ति ऐसा था जो कांसम ने ऐसी फार्रवाई पास करा सकता था जिसे सम्भालने का कदम कहा जाय। यह व्यक्ति था मेनेटर हैनरी केल जो मंत्राण का बड़ा समर्थक था और जिसका सम्भालने वाला चुगी-कानून १८३३ में आसानी ने पास हो गया। इसके अन्तर्गत जाने वाले माल के मूल्य ने बीच प्रतिशत में अधिक की चुगी को कमवा। इतना घटाना था कि वह मत् १८४० तक उस सामान्य स्तर पर आ जाय जो १८१६ में लागू था।

'नॉलिकेसन' पार्टी नेताओं को आशा थी कि दक्षिण के अन्य राज्य उनका समर्थन करेंगे पर इन सबने माउथ कैरोलाइना की कार्रवाई को विवेकहीन और



अमरीका के सातवें राष्ट्रपति एब्रहम लिंकन नए और लोकतन्त्रीय परिचयों के समर्थक थे। वे लोकतन्त्र की स्फूर्ति और शक्ति के प्रतीक थे।

अवैध ठहराया। 'नॉल्सिकेवान आर्डिनेन्स' पर कब्रती ने कार्य किया जाना था पर जनवरी में होनेवाली 'राज्य अधिकार नेताओं' की मार्चजनिक सभा ने उसे कांग्रेस की कार्यवाही होने तक स्थगित कर दिया। मार्च में 'माउथ कोरालाइना कन्वेंशन' में वह आर्डिनेन्स वापस ले लिया गया।

इस विवादस्थल से दोनों पक्ष अपनी-आपनी विजय का दावा करने हुए लौटे। प्रशासन ने सशरीय सरकार की सभ की सर्वोच्चमता के इस विद्वान्त का पूरी तरह अंश दिया था कि सभ ही सर्वोच्चमान है। पर दूसरी ओर माउथ कोरालाइना ने विरोध प्रदर्शन की सहायता से अपनी बहुत-सी मार्ग स्वीकार कराके यह विद्व कर दिया था कि एक अकेला राज्य अपनी राय कांग्रेस के ऊपर थोप सकता है। 'नॉल्सिकेवान' घटना का राज्यो के अधिकार सम्बन्धी कल्पना के विकास पर आम बल कर बड़ा प्रभाव पड़ा। दक्षिण के नेताओं ने देख लिया कि 'नॉल्सिकेवान' व्यावहारिक नहीं है। अस्तु अगले तीन वर्षों में उन्होंने अधिकतम बल इस बात पर दिया कि फीडिन राज्य को एनियन में अलग हो जाने का अधिकार ही।

'नॉल्सिकेवान' विवाद अभी नए भी नहीं हो पाया था कि 'बैंक आव यूनाइटेड स्टेट्स' के पट्टे का दुहराने के सम्बन्ध में भीषण सभर्ष छिड़ गया जो जैक्सन के नेतृत्व की लड़ाई परीक्षा थी। डेमोक्रेटिक निर्देशन में अमरीका का प्रथम बैंक १७९१ में स्थापित हुआ और उसे बीस वर्ष का पट्टा दिया गया। यद्यपि इसकी कुछ पूर्वी सरकारों की थी पर यह बैंक सरकारी नहीं था। यह एक सर्व-सरकारी नियम था जिसका लाभ सार्वभारो में बंट जाना था। हालांकि इसका उद्देश्य देश की मुद्रा को स्थिर करना तथा वाणिज्य को प्रोत्साहित करना था पर कुछ ऐसे लोगों ने इसका विरोध किया जो यह समर्थ थे कि सरकार कुछ सन्निभायी लोगों को विशेष मुविधार दे रही है। अब इस बैंक का पट्टा सन् १८११ में पूरा हुआ तो कांग्रेस ने उसका नवकरण नहीं किया। अगले कुछ वर्षों तक बैंक व्यवसाय राज्यों के पट्टेदार बैंकों के हाथ में रहा जो इसकी मुद्रा बना कर देने थे जिसका मुन्ब वे अंश नहीं कर सकते थे और इस प्रकार भारी गड़बड़ी की स्थिति पैदा कर देने थे। यह स्पष्ट हो गया कि राज्यों के बैंक समूचे देश में सम्भव न मुद्रा नकार करने में असमर्थ हैं और १८१८ में दूसरा 'बैंक आव यूनाइटेड स्टेट्स' जो पहले बैंक पैदा ही था, बीस साल के पट्टे पर खोल दिया गया।

बीस पट्टे के समय में ही यह दूसरा बैंक विघोष कर देश के तूफानों में और अव्यवन्न अन्त में सर्वत्र अविद्य विद्व हुआ। यह माना गया कि देश की

पूजो तथा मुद्रा नीति पर बैंक का पूर्ण अधिकार है और व्यवहार में वह विनयेन धनाढ्यता का प्रतिनिधित्व करता है। सब मिला कर बैंक मुम्बई का और देश को अत्यन्त सेवा कर रहा था पर जैक्सन को इसके जनविरोध के नेता के रूप में चुना गया था और उसके पट्टे के नवीनीकरण प्रस्ताव को उसने पूरे बल से अस्वीकार कर दिया। उसने इसकी वैधानिकता तथा वांछनीयता दोनों पर सन्देश प्रकट किया। यदि जैक्सन ने अपनी दम अस्वीकृति में बैंक-व्यवस्था तथा अर्थशास्त्र के अमान का परिचय दिया तो उसने 'किमानों, मित्रियों और मजदूरों' के सामने यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह अटल रूप में ऐसे कानून बनाने का विरोधी है जिनमें "बड़े लोग और भी शक्तिशाली" हो जाएं। इस अस्वीकृति से भारी खलबली मच गयी। समाचार-पत्र "वाणिज्यतन्त्रालय" ने घोषणा की कि इसने देश को धनवानों के एकाधिकार में बसा लिया है परन्तु अन्य राजनीतिक तथा माहूकरीयों ने इस घटना-प्रवाह का व्यापक विरोध किया। कांग्रेस अथवा राष्ट्रपति ने जनता की इच्छा को ठीक मापा था या नहीं इसका निर्णय राष्ट्रपति के आगामी चुनाव में होना था।

जो चुनाव आन्दोलन हुआ उसमें जो प्रदन करने ऊपर था वह बैंक का था जिन पर एक और व्यापारी, उत्पादक तथा माहूकरीय वर्ग और दूसरी ओर मजदूरों और किसानों में—अर्थात् उनमें, जो नए लोकतन्त्रीय चिन्तन में आशक्त थे और उनमें जो जैक्सन को हार्दिक समर्थन देना चाहते थे, आधारभूत मतभेद था। परिणाम हुआ जैक्सनवाद का उन्माहपूर्ण अन्तर्गतन।

जैक्सन ने अपने पुनर्निर्वाचन का अर्थ यह माना कि जनता ने, उस बैंक का नाम निदान मिटा देने को उसे आज्ञा दी है। सामने ही था वह हथियार— बैंक के ठंके को एक वर्ष जिसके द्वारा जनता का धन हटा लिया जा सकता था। सितम्बर, १८३३ में आज्ञा हुई कि सम्बन्धराज्य बैंक में सरकारी धन जमा न किया जाय और जो पहले से जमा था वह धीरे-धीरे सरकारी व्यय के कामों को बनाने के लिए निकाल लिया जाय। इसके स्थान पर राज्यों के समूह बैंकों को खोलने को गयी और उन पर कठोर नियन्त्रण लगा दिए गए।

जिम बुन्नी की स्फूर्ति में जैक्सन ने आन्तरिक मामले निपटारे उसनी ही घोषणा में उसने वैदेशिक मामले भी सम्भाले। जब, फ्रांस ने अमेरीका के प्रति अपने उन्मत्तगियों को अदागामी रोक दी तो उसने कंग्रेसीमी जायदाद को जन्म करने को आज्ञा दी और उन पर कठोर नियन्त्रण कर दिया। जब वेनीसीयों के विरुद्ध विद्रोह किया और अमेरीका ने वृत्तियन में सम्मिलित कर लेने का अरुोध किया

तो उसने दूरदजिना से प्रतीक्षा का मार्ग अपनाया। अपने दूसरे कार्यकाल की अवधि के अन्त तक उनको लोकप्रियता कम नहीं हुई।

जैक्सन विरोधी राजनीतिक मुठों का तब तक संकलना की कोई आशा नहीं थी जब तक वे असंगठित बने रहें और परस्पर विरोधी काम करने रहें। परिणामस्वरूप समस्त अत्यन्तुत्तव्यों को 'ड्विग' नामक एक माधारण दल के अन्तर्गत एक साथ लाने का प्रयोग किया गया। यद्यपि उन्होंने अपना संगठन १८३२ के चुनाव-आन्दोलन के बाद ही किया फिर भी उन्हें अपने विभिन्न मतों का मिलाने और एक मंच की घोषणा करने में दम वर्ष से अधिक लग गए। ड्विगों के पास हैनरी क्ले और डेनियल वेबस्टर नाम के दो सुयोग्य और प्रतिभाशाली राजनीतिक थे और अधिकतर उनके व्यक्तिगत के आकर्षण के सहारे ही इस दल का डोग मदय्यवर्ग बनाया जा सका। माधारणतः काम और स्थानिक के श्रेय 'ड्विगों' के साथ थे। १८३६ के चुनाव में ड्विग अब भी परस्पर बहुत अलग-अलग थे और उनमें एक आदर्शों को नेता मानने तथा एक सम्बन्धित कार्यक्रम बना लेने की क्षमता नहीं थी। मार्टिन वान व्यूरेन जिसका जैक्सन का समर्थन प्राप्त था, चुनाव जीत गया पर उस अतिच मित्रावट ने जो उसके पर सम्भालने के साथ-साथ आयी तथा उसमें पहले के राष्ट्रपति के श्रेयस्वी व्यक्तित्व ने उसको घोषणाओं को धुंधला कर दिया। वान व्यूरेन के सांख्यिकीय कार्यों में— जैसे कि सरकारी कर्मचारियों के लिए दम घटने का दिन—किन्ती ने कोई हचि नहीं ली क्योंकि उसमें उसमाने वाले ने गुण और वह नाटकीय प्रेरणा नहीं थी जिसका परिचय जैक्सन अपने हर कदम पर दिया करता था। १८४० के चुनाव के वक्त देण के सामने कठिन समस्याएँ थीं। महान्तरे के दिन थे और मजदूरी कम थी। हेमोकेट अपनी रक्षा की बिना न थे।

राष्ट्रपति पद के लिए ड्विग उम्मीदवार, आंहायो का विलियम हैनरी हैरीसन अपने आपको बेक्सन वैंसा लोकतन्त्रीय परिचय का प्रतिनिधि समझता था। १८१२ को टिपेकनोड की लड़ाई के विजेता के रूप में उसे जनता का आदर भी प्राप्त था। जॉन टाइलर जिसके राज्यों के अधिकांशों तथा हल्की चुंगी सम्बन्धी विचार दक्षिण में लोकप्रिय थे, उपराष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार था। ड्विगों का प्रचार-कार्य ह्वातितरेक और धमाकौड़ो बैसा था। सर्वत्र भारी सभायें और मेले ही रहे थे और सड़कों पर मगालों के जूलूम निकाले जा रहे थे। गरिबों भी उनको ही अधिक्ये यों जितने कि पुरुष। उसमें सगोत बनी जा रही थी और 'ओल्ड टिपेकनोड' हर एक को जबाब पर था। परिणाम हुआ ड्विगों

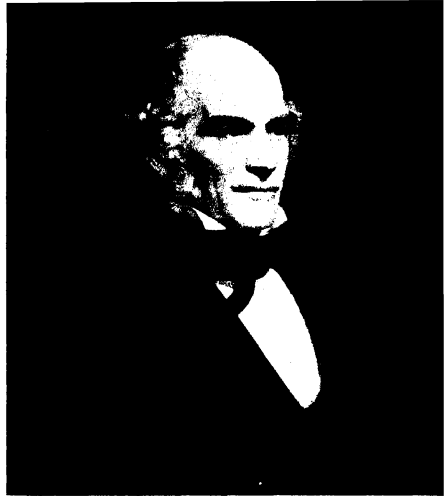
की सर्वश्रेष्ठ विजय। परन्तु ज्ञेय यद्यपि अपने उम्मीदवारों के लिए एकमत थे, लेकिन अपनी लोकनीति के विषय में नहीं थे। जिस राष्ट्रियहीन अवसरवादिता का उपयोग उन्होंने अपने प्रचार में किया था उसके लिए उन्हें स्वामियात्रा भ्रमना पड़ा। उद्घाटन उत्सव के एक मास के भीतर अड़सठ वर्षीय हेरीसन का स्वर्ग-वास हो गया और राष्ट्रियता पर आया टाइलर जिसके विश्वास उन बने और ब्रैम्स्टेड में भिन्न थे जो अब तक देश के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति थे। यह मनभेद टाइलर की अवधि में ही खूबी फूट का रूप लेने वाले थे और जिस दल ने राष्ट्रियता की चूना था उसीने उसका परिचय कर दिया।

सम्पूर्ण समाज में राजनीतिक जागरूकता

१८२५ में जब ग्रेट् ब्रैकमन राष्ट्रियता बने तो समस्त पश्चिमी जगत् में असन्तोष और विद्रोह की धारा बह रही थी। मुधार भावना को जब अमरीका में समर्पण मिल रहा था तो वह तत्कालीन विद्रव के प्रवाह के भी अनुकूल थी। राजनीति का वह लोकतन्त्रीय किलब जो उस आन्दोलन में परिणाम हुआ था जिसके द्वारा ब्रैकमन राष्ट्रियता चूना गया था, बड़े अधिकारों और अवसरों की दिशा में जनसाधारण के प्रस्थान का केवल एक आकार था। इस शताब्दी की नीमरी और बोधी दशाब्दी के वर्षों की विशेषता थी मानवजाति की पूर्णता की प्राप्ति में उत्साहपूर्ण आस्था और इसका परिणाम हुआ जनता जनार्दन के बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा भौतिक जीवन का उद्वार।

उदार राजनीतिक आन्दोलन के साध-साध मजदूरों के संगठन भी आरम्भ हो रहे थे। १८२६ तक संगठनों की सदस्य संख्या कोई तीन लाख हो चुकी थी जो अनेक स्थानों पर मजदूरों की दशा में सुधार करना उने में सफल हो चुकी थी। १८३५ में क्लाराडेन्सिया के मजदूर अपने सर्वाधिक आकांक्षित सुधार को स्थापित करने में सफल हो चुके थे। यह था मुबह के अन्धेरे में रात के अन्धेरे तक के कार्यदिग्ध के स्थान पर दिन में दस घण्टे का कार्यकाल। यह तो केवल श्री गणेश था अन्यान्य स्थानों में इसी प्रकार के सुधारों का उने म्यू हैमिन्गवर, दूरोड आइनेड, ओहायो और कैलीफोर्निया जो मत् १८५० में मूनिगन में शामिल हुआ था।

मजदूरों की कार्यशीलता तथा मानवीय सुधारों के प्रति उनका उत्साह ये दोनों उस काल के प्रगतिशील आन्दोलनों के अनिवार्य अंग थे। शिक्षा के माध्मे में उसकी लोकतन्त्रीय भावना के लिए संघर्ष विशेष कर महत्वपूर्ण था। बावनि



श्रीमत् वर्षों की आयु में ही विलियम कुलेन ब्रायेंट को अमरीका का प्रमुख कवि माना जाने लगा। उन्होंने ४६ वर्ष तक 'न्यूयार्क ईशियन पोस्ट' नामक पत्र का सम्पादन किया। वे तत्कालीन अमरीकी पत्रकारिता के क्षेत्र में एक विशिष्ट व्यक्ति माने जाते थे।



बाल केविल फिलेक द्वारा चित्रित किलारेडिफिका के नगर चुनाव (१८१६) का दृश्य। दाहिनी ओर की रैफ्लि में कई मतदाता भीतर बैठे वक्ताओं को अपने मत-पत्र दे रहे हैं।

मताधिकार के प्रसार ने शिक्षा की कल्पना को एक नयी दिशा प्रदान की क्योंकि स्पष्ट दृष्टा राजनीतिज्ञों ने समझ लिया कि अधिकांश और सार्वजनिक मताधिकार मिलकर कभी आपत्त उत्पन्न कर सकते हैं। म्यूथार्क के डी विट बिलकटन, दक्षिणीय के अब्राहम लिन्कन, मेसाचुसेट्स के होरेम मान, जैसे स्थानियों के प्रयत्नों को नगरो में संगठित किए जाने वाले अविरोध मजदूर प्रदर्शनों और आन्दोलनों से बड़ा बल मिला। मजदूर नेताओं ने मांग की कि बिना किसी शानसिलना की भावना के ऐसे कार-समर्थित और निवृत्त स्कूल स्थापित किए जाए जिनमें हर बच्चे का निम्नकोष प्रवेश हो सके। १८३० में फिलाडेल्फिया के कामगारों ने कहा, "...सच्चे ज्ञान के व्यापक प्रसारण के बिना वास्तविक स्वाधीनता नहीं हो सकती... जब तक सर्वसाधारण के लिए समान शिक्षा तथा समान साधन उपलब्ध नहीं हो जाते तब तक सर्वसाधारण एक अर्धहीन शब्द है और समानता एक शोषणी छाया।" धीरे-धीरे एक राज्य के बाद दूसरे में वैधानिक कार्रवाई के द्वारा निवृत्त शिक्षा संयोजित की गयी। १८४०-५० के बीच उत्तर में पब्लिक स्कूलों की पद्धति सर्वसाधारण हो चुकी थी और अन्य क्षेत्रों में उसकी प्रगति के लिए संघर्ष होता रहा जब तक कि उनकी जीत नहीं हो गयी।

उम आदर्शवाद ने, जिसने पुरुषों को प्राचीन बंधियों से मुक्त कराया, नारियों को समाज में अपनी अग्रगण्य स्थिति को सम्झने के लिए बाध्य किया। उपनिवेशकाल में अधिकांशतः स्त्रियों का लगभग उनसे ही कानूनी अधिकार में मिलने पुरुष को। पर रिवाज के अनुसार वीर्य ही विवाह कर लेना इच्छी माना जाता था जिसके बाद कानून की दृष्टि में उसका अपना व्यक्तिगत मुद्राप्रवाह हो जाता था। स्त्री शिक्षा अधिकतर पढ़ने-लिखने, गाने-नाचने और सीने-काढ़ने तक ही सीमित थी। और हा, स्त्रियों को मतदान का अधिकार भी नहीं था। एक उग्रत विचारों वाली स्काटिश महिला फ्रांसिस राइट के अमेरिका आगमन के बाद बड़ा नारियों में जागृति आरम्भ हुई। बड़ी-बड़ी भीड़ों के बीच उसके जाने तथा धर्मशास्त्र और स्थियों के अधिकारों पर व्याख्यान देने से जलता को बहुत आश्चर्य हुआ। फिर भी उसको देवादेवी फिलाडेल्फिया की क्वेकेंस लुअ्रेटिया मोट, मुसन बी. मेन्सोन और एंजीब्राबेव केडी स्टैटन जैसे बड़ी विभूतियों को सक्रिय होने की प्रेरणा दी। उन्होंने पुरुषों तथा बहुत-सी स्त्रियों की बुद्धा को फलते हुए दामना-उत्पन्न, नारी अधिकार तथा मजदूर-कल्याण के क्षेत्रों में अपनी गति लगाई। १८४८ में संसार के इतिहास का सर्वप्रथम नारी अधिकार सम्मेलन मेनेका फाल्क, (म्यूथार्क) में हुआ। प्रतिनिधियों ने घोषणा-पत्र तैयार किया

जिसमें यह मांग की गयी कि कानून की दृष्टि में, शिक्षा, आर्थिक अवनती तथा सत्ताधिकार के मामलों में स्त्रियों पुरुषों के बराबर समझी जाएं। नारी अधिकार आन्दोलन के नेताओं को मित्रों का अभाव नहीं था। रैल्फ़ वार्डकी इमर्सन, लिंकन तथा हारमर कीन्ही जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों ने उनके लिए काम तथा प्रचार किया। यद्यपि यह समय सिद्धि का नहीं, मध्यम का था। फिर भी निश्चित सुधार हुए। १८३९ में मिसिसिप्पी ने अपने राज्य की स्त्रियों को अपनी ज़ायदाद के निवन्तन का अधिकार दिया और अगले दस वर्षों में अन्य मात्र राज्यों की सरकारों ने भी ऐसे कानून बनाए। १८२० में एंसा बिलार्ड ने एक कन्या शिक्षालय खोला; १८३० में कालेज के स्तर की एक महिला संस्था 'माउण्ट होलियोथ' स्थापित हुई। इसमें भी अधिक साहसिक बान हुई कॉएंग्रुकेसन (सहायन) जिसमें अंदाजों के तीन कालेजों ने पहले कदम उठाया—१८३२ में आरबलिन ने, १८५० में अर्बोना ने और १८५२ में एंफ्रिओक ने।

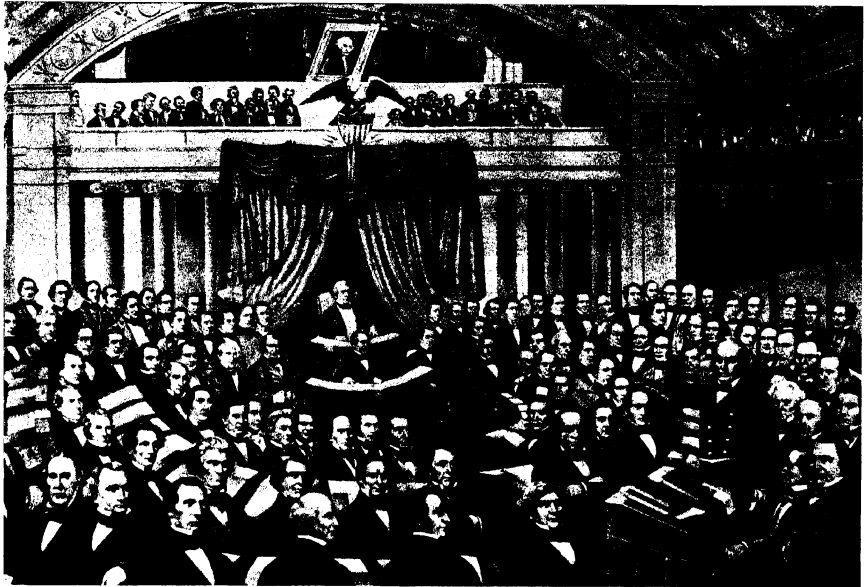
संस्कृति तथा उद्योग द्वारा नई शक्ति का प्रदर्शन

ऐसी कि आग की ज़ा सकती थी राष्ट्रीय आत्मविश्वास की भावना उस समय के प्रकाशित साहित्य में व्यक्त की जा रही थी। १८३० के बाद के दस वर्षों में लेखकों तथा साहित्यिकों की भारी संख्या सामने आयी। हैनरी वेडमवर्थ, लार्गफेलो, जान योनवीक ड्विडियर, जॉर्जियर बेण्टेल हॉमस और जेम्स रमेल लविल ने अपने-अपने कवि जीवन का प्रारम्भ इसी काल में किया। अमर कन्दो तथा गद्य में इमर्सन ने व्यक्ति की मौलिकता तथा महानता के सिद्धान्तों का उपदेश दिया। नैतिकतक शाउथोर्न तथा एंस्टर एर्लोन पां ने मनुष्य के विश्वासपूर्ण तथा दिव्य अनुभवों को अपने साहित्य द्वारा व्यक्त करके अमरीकी विचारधारा की सर्वोत्तम प्रतिभा का प्रमाणित किया।

यद्यपि ऐसे अधिकतर लोगों ने अपनी रचनाओं में चिरंजन स्थानि पायी पर उनमें से बहुतों ने अपने युग के मानवतावादी तथा राजनीतिक मसलों में गंभीर भाग लिया। ड्विडियर दारुणा विरोधी संघाम का प्रतिनिधि कवि था; लार्गफेलो ने अपनी 'दामता मन्मथी करिनायें' १८४० में प्रकाशित की; लविल ने "पैन्सिल-वानियन फीबेंन" का संपादन कार्य किया; जार्ज बेन्गटल एक उपासी बंक-विरोधी था; और शाउट ने अपनी ब्राउन्सकी काव्य प्रतिभा के साथ ही साथ १८२९ से १८३८ तक "न्यूयार्क डेवियन पोस्ट" का सफलता के साथ संपादन भी किया।



१९ वीं शताब्दी के मध्य में सहित्य आन्दोलन की कार्यकर्त्री सुजेन एन्थोनी ने महिलाओं को राजनीतिक सभासता की मांग को काफी बल प्रदान किया।



एक भागिसतापुर्ण बाब-बिबाद में तेनेटर डेनिअल वेवसटर निषेधात्मक कार्रवाई के समयमें में पेश की गयी तथा तेनेटर हेल द्वारा समर्पित बलीकों का अग्रभन कर रहे हं ।

समय के कक्ष ने गणना के इतिहास में एक नयी कृषि पैदा की और ऐतिहासिक मनन का श्रो गणेश किया। १८३० के बाद के वर्षों में ब्रैग्रेट स्पार्कम ने ज़िम्मे वर्षों पहले "नाथे अमरीकन रिब्यू" आरम्भ किया था, ऐतिहासिक लेखों का संपादन आरम्भ किया और उन्हें प्रकाशित किया। इनमें उल्लेखनीय है काशिपटन तथा फोकलिन के लेखों तथा क्रानिकारीय राजनीतिक पत्र-व्यवहार के संकलन। १८३४ में जार्ज बेंक्रोफ्ट ने संयुक्तराज्य अमरीका के प्राथमिक आकिपकारों से लेकर मक्खियात बनने तक के इतिहास का प्रथम खण्ड प्रकाशित किया। यह अमरीका का प्रथम विस्तृत इतिहास था जो उपलब्ध पुस्तक सूचों के आधार पर लिखा गया था। इस दशक के पूरे होने में पहले बेंक्रोफ्ट और विलियम प्रेसकाट ने इतिहास को माहिषिक विद्योपता के साथ लिखने की अमरीकी योग्यता को सिद्ध कर दिया था।

१८२५ से १८५० तक के वर्षों में जनता के दैनिक जीवन की कुशलता स्पष्ट रूप में बढ़ती जा रही थी। १८२५ के पश्चात् कृते की मशीन और उसके तुरन् बाद माँवर और रोपर आदि काटने की मशीनों का आधिकार हुआ। वेग में होते हुए भौगोलिक विस्तार के समय राष्ट्र का एक रखने की कठिनाई को व्योमों की यान्त्रिक सूक्ष्मक ने बहुत कुछ सरल बना दिया। १८३० में पांडों द्वारा खींचे जाने वाले लोकवाहन के पश्चात् रेलों का विस्तार निरन्तर बढ़ता गया।

१८५० में कोई भी मन में 'नाथे कैरोलाइना' तक, एरलाटिक समुद्र तट से ईरी झील के किनारे बर्फों तक तथा उम झील के पश्चिमी किरे में शिकामा और मिन्सिनाटो तक रेल में यात्रा कर सकता था।

विद्युत् टेलीग्राफ जिनका आविष्कार एस. एफ. बी. मोर्स ने १८३५ में किया था, का प्रथम उपयोग १८४४ में हुआ। १८४० में रिचर्ड ही द्वारा निर्मित रोटरी छापामाना काम में लाया गया। दगने प्रकाशन पद्धतियों में एक क्रान्ति ला दी और समाचारपत्रों को अमरीकी जीवन में प्रभुत्ववादी स्थान दिलाने में बड़ा काम किया।

देश की जनसंख्या भी जो १८१५ में १८५२ तक ३२,५०,००० में बढ़कर लगभग २,३०,००,००० हो गयी थी, राष्ट्र के विकास की चालक थी। इसी बीच बगने योग्य उपलब्ध भूमि भी १० लाख वर्ग मील में बढ़कर यूरोप के बराबर यानी लगभग ३० लाख वर्गमील हो गयी थी। सरल कृषि के प्रतिरिक्त विविध प्रकार के उद्योग पूर्वी समुद्र तट पर ही नहीं बल्कि पश्चिम के नगरों में भी तीव्रगति से विकसित कर रहे थे। राष्ट्र को पायेदारी और उनकी अव्यवस्था एवं सम्पत्तों की जीवनीशक्ति सब-हूँ थी। फिर भी, विभिन्न गुटों के आपसी मत-भेदों पर आधारित मौलिक गुणों जो अब तक नहीं गुलक पाये थे, आगामी दस वर्षों में गृहयुद्ध की आग को भड़काने वाले थे।

प्रादेशिक संघर्ष

“जित घर में फूट हो वह टिक नहीं सकता, वेरा बिश्वास है कि यह शासन आधे (लोणों को) दास और आधे (लोणों को) स्वतन्त्र रख कर स्थायी नहीं रह सकता।”

—अब्राहम लिंकन

रिचर्ड फील्ड, इलीनोय, १७ जून, १९५८

उत्तरीसवी शताब्दी के मध्य में, संसार का कोई भी देश हमारे देशों की दृष्टि में इतना आकर्षक नहीं था जितना मध्यम राज्य अमरीका था। इस बीच अमरीका आने वाले लोगों को मध्या भी हमारे देशों की तुलना में अधिक रही। फार्मोसो राजनैतिक लेखक अल्विस्मियो डी टोकविल कृत 'डेमोक्रेसी इन अमेरिका' (अमरीका में लोकतन्त्र) नामक पुस्तक यूरोपीय महाद्वीप भर में लोकप्रिय हुई और उस नए देश के सम्बन्ध में अभिमान उत्तरोत्तर अनुकूल होता गया। बास्टन की खाड़ी और उमी नाम के रमणिक नगर को देखने के लिए, वन प्रदेश को मुक्ति, मिनासोटा एवं आबर्न जैसे उपनिवेशीय नगरों में परिचलित हुआ देखकर आश्चर्य चकित होने के लिए, तथा विरोधवादी जगह कृषि, व्यापार, और बड़े-बड़े सार्वजनिक निर्माण कार्यों में होने वाली तीव्र प्रगति एवं समृद्धि के अविशिष्ट प्रमाणों में अवगत होने के लिए देश-देश के यात्री आए। उन्होंने, बंगक, इस राष्ट्र का निरन्तर समृद्धि का उपभोग करत पाया। विदेशी यात्री, चाहे वह न्यूयार्क में उनका हो या फिलाडेल्फिया अथवा बास्टन में, लोगों की हलचल, उनका उद्यम और उनका उन्माद देखकर विस्मित रह जाता था। न्यूयार्क अपनी ऊँची अटॉलिकाओं और दुकानों की चमकमानी हुई प्रदर्शन-सज्जाओं सहित अपनी समृद्धिक प्रभा के कारण विशिष्टता प्राप्त कर चुका था और फिलाडेल्फिया प्रायः लुब्धकृत वासीयों, चौटो भाषेदार सड़कों तथा झाल डूबों के मकानों जिनके द्वारों पर लम्बे पत्थरों को पेंडिया बनी होती थी, के लिए प्रसिद्ध हो रहा था।

राष्ट्रीय राज्य-क्षेत्र महाद्वीप भर में फैला हुआ था, उद्यम में वन, मैदान और पर्वत सभी शामिल थे। इन दूर-दूर तक फैली सीमाओं के भीतर ३१ राज्यों का एक मय था जिसमें कुल मिलाकर लगभग ८ करोड़ ३० लाख लोग आबाद थे। आशुसामनों को यह भूमि कभी भी इतने प्रत्यक्ष रूप से निष्पादनों की भूमि नहीं प्रतीत हुई थी। पूर्व में उद्योग की प्रत्येक शाखा कदवनी हो रही थी। मध्य-पश्चिम और दक्षिण में खेती लाभकर थी। रेखा ने देश के बड़े हुए भागों

को पहले की अपेक्षा घने तौर में परस्पर विरोध दिया था। कैलिफोर्निया की खाने व्यापार के सभी माध्यमों में स्वर्णिम पारा प्रवाहित कर रही थी।

फिर भी, सभी यात्री शीघ्र ही इस बात में परिचिन हो जाते थे कि अमरीका वस्तुतः दो है—एक उत्तरी और दूसरा दक्षिणी। प्रादेशिक सामंजस्य कायम रखने में बाधक अदृष्ट खतरे स्वयं प्रगति की गति में ही निहित थे। न्यू इंग्लैण्ड और मध्य-अटलांटिक राज्य वस्तु-निर्माण, वित्त और व्यापार केन्द्र थे। इस इलाके के प्रमुख उत्पादन थे, आटा और दलिया, जूते, सूती कपड़ा, लकड़ी का सामान, पोंजाकों, मशीनों, चमड़ा और ऊनी वस्तुएँ। जहाजगर्मी की समृद्धि अपने पूर्ण यौवन पर थी। अमरीकी पनामा कहराने हुए अमरीकी जहाज यानों समुद्रों में घूम-घूम कर सभी राष्ट्रों में माल का आदान-प्रदान कर रहे थे।

अर्थ-व्यवस्था में दास-प्रथा की जड़ें मजबूत हुईं

दक्षिण में खेती की उन्नति हुई। हालांकि सागर तट के इलाकों में पान की, लुइसियाना में गन्ने की, सीमावर्ती राज्यों में तम्बाकू और दूसरी सामान्य चीजों की खेती होती थी और अहा-नहा वस्तु-निर्माण का काम भी होता था फिर भी इस सम्पूर्ण क्षेत्र में शैलन कमाने का सर्व-प्रमुख मूल कणाम की खेती ही थी। खाड़ी प्रदेश के उर्वर कान्ती मिट्टी वाले मैदानों के पूर्ण विकास में शताब्दी के पांचवें दशक में कणाम का उत्पादन अत्यन्त दूना ही गया और उसकी बड़ी-बड़ी गाँवों का गाँवियों, स्ट्रीमों और रेवों में लार कर उत्तर और दक्षिण के बाजारों में ले जाया जाने लगा। राष्ट्र का आधे से अधिक निर्यात कणाम पर आपारित था। उत्तर की कपड़ा मिलों की मांग भी उमी से दूरी की जाती थी।

मध्य-पश्चिम का इलाका जहा दूर-दूर तक पंरी-प्रदेश फैले हुए थे और जहा की आबादी उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी, समृद्धि को, इस काल में अपना पूरा योगदान कर रहा था। वहाँ पैदा होने वाले वेहें और गोबर की चीजों की

मांग यूरोप में भी थी और अमरीका की पुरानी आबादियों में भी थी। इसी उमाते में धम की बचाने वाले उपकरणों का नेजो वे विकास हुआ और उन्हें दृत्तपति में अपनाया गया जिसमें उत्पादन में अनुकूलिय वृद्धि हुई। नए उपकरणों में मैकमिकल द्वारा ईंधन की हुई कटनी मशीनों में भी थी। १८४८ की फमल के मणय कोर्ड ५०० तथा १८६० में एक लाख से ऊपर कटनी मशीनों काम में लायी गयी थी। राम्टु में गेहूँ का उत्पादन १८५० के १० करोड़ ब्राल में १८६० में १७ करोड़ ३० लाख ब्राल तक बढ़ गया। इस माथा का आधा भाग मध्य-पश्चिम के इलाकों में पैदा होता था। परिश्रम की मुक्तिवाओं में होने वाले महान मुधारों में पश्चिमी समृद्धि का महत्त्वपूर्ण उद्घोष प्राप्त हुआ। १८५० से १८५३ तक रेल्स की ५ टुक लाइनें एन्लायिनेन पर्वत के आर-पार बिछायी जा चुकी थी। उत्तर और पश्चिम को मिलाने वाले इन लीह-पथों ने दो पक्षों के परस्पर लाभ-दायक आचार को प्रबधिन किया। माथ ही, दोनों प्रदेशों की परस्पर अधीनता पर जोर देने हुए, उन्होंने दोनों क्षेत्रों के राजनीतिक दृष्टिकोणों में सामंजस्य पैदा करने में महायत्न की। रेल्स का बिचार दक्षिण में कम हुआ। सताब्दी के छठे दशक के अन्तिम वर्षों में जाकर एक गुंभी रेल् की लाइन बिछायी जा सकी जिसने मिनिगिटी नदी के नीचे के इलाके को एन्लायिक समृद्ध तट से मिलाया।

अंग्रेजों वषं वीजने गए, उत्तर और दक्षिण के स्वायं उत्तरोत्तर उभरने गए। कपास की उपज के विधान के फलस्वरूप उत्तरी व्यापारियों के बड़े मूनफों से श्रध्व होकर दक्षिण के लोग अपने प्रदेश की अधिकमल अस्वथा का माया दोग उत्तर वालों के अम्बुदय के माथे मड़ने लगे। दूसरी और उत्तर वालों ने यह घोषित किया कि दाम प्रथा की अजीबोगरीब मय्या' ही जिने दक्षिण वाले अपनी अर्थ-व्यवस्था के लिए अनिवार्य बनाते हैं, उम प्रदेश के अपेक्षाकृत पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार थी।

१८३० से ही दाम प्रथा के प्रदल पर प्रादेशिक मतभेद तीव्र हो रहे थे। उत्तरी राज्यों में दासता उन्मूलन की भावना पहले से बड़ी अधिक उग्र हो गयी थी। माथ ही माथ, 'स्वतंत्र-भूमि आन्दोलन' का विकास भी हुआ। इस आन्दोलन का अभिप्राय यह था कि जो प्रदेश अभी राज्यों के रूप में संगठित नहीं हुए थे उन्हें दाम-प्रथा का निस्कार न होने दिया जाय। १८५० के दक्षिण वाशियों को यह प्रचार विरासत में मिली थी। इसलिये वे उनके लिए उनम्दायी नहीं थे। मागर तबतक कुछ प्रदेशों में तो दाम-प्रथा १८५० में ही ३०० वर्ष पुरानी हो चुकी थी और वहा की मय्यता का अविच्छिन्न अंग बन चुकी थी। पांच-छः

पीडियों से अमरीकी भूमि पर रहने वाले कुल नीधों एवेन ममाज को न केवल माया बल्कि उनकी दक्षता, पूर्ववाराणाओं, पारमिक तथा सामाजिक विधवाओं को अपना चुके थे। १५ दक्षिणी तथा मीमान्त राज्यों में नीधोजनों की मय्या अवेनों की तुलना में लगभग आधी थी, जब कि उत्तर के राज्यों में बहुत ही कम थी।

१८वीं सताब्दी के ५वें दशक के आधियों ५ वर्षों में दाम प्रथा का प्रदल अमरीकी राजनीति पर लाया हुआ था। एन्लायिक में मिनिगिटी नदी तक उग्र उनके आंग का इलाका भी एक अपेक्षाकृत मर्यादित राजनीतिक इलाक़ था जहा कपास की खेती और दाम-प्रथा का प्रभाविन करने वाली बुनियादी नीतियों के बारे में गुंभी लोग लगभग एक मत रहने थे। मच ता यह है कि दक्षिण के ज्यादातर बागान-मालिक दाम-प्रथा को अपनी अर्थ-व्यवस्था का बुनियादी तत्व मानने लगे थे। कपास की खेती के लिए दामों का उपयोग अनिवार्य था हो गया था। वह अभी पुराने परम्परागत उपकरणों से ही होने की और माय में ५ महीनों का रोजगार प्रदान करती थी। माथ ही, दम काम में अंग्रेजों व बन्तों का भी इन्तेसाल किया जा सकता था।

दाम-प्रथा सम्बन्धी विवाद में वृद्धि

दक्षिण के राजनीतिक नेता, व्यावसायिक लोग और अधिकतर पादरी लोग उत्तर के लोगों के दामना-पिरोधों दबाकर वे उभने-उभने अब उम स्थिति का प्रदान हो चुके थे कि उनके मन में दाम-प्रथा के लिए रचमात्र अफमोग न था। वे इसके लिए इत्तर कबालत करने को तयार थे। उनका कलना था कि दाम-प्रथा नीधों लोगों पर समृद्धि की वर्षा करने वाली मय्या है। दक्षिण के प्रचार माध्यम द्वारा इस बात का जमकर प्रचार होता था कि दाम-प्रथा के अन्तर्गत मालिक कपस मजदूरों के सम्बन्ध उत्तर की वेनत प्रथाओं की तुलना में अधिक माननीय है। १८३० के पहले, बागान-प्रशासन में पुरानी पितृमतात्मक प्रथाओं ही वा-उ थी जिसमें स्वयं मालिकों द्वारा गुलामों की विगमनी होती थी। १८३० के बाद, एक निश्चित परिचयन दिखायी देने लगा। दक्षिण के नीध के इलाकों में कपस की खेती के लिए बड़े पैमाने को प्रयातियों मूक होने ही मालिकों द्वारा अपने गुलामों पर निजो और कठारी नियमनों कम होने लगी थी। वे उनके उपर गेसेवर आकरमियर रखने लगे जिसकी संरचना और प्रगिटि उगी बात पर निभंघ करती थी कि वे गुलामों में अधिकाधिक किन्ता काम ले सकने थे।

जहाँ बहुत से बागान-मालिक अपने नीधों गुलामों के माय उदात्तता से पेश

आने से वही हृदयहीनता एवं निर्दयता को मिलाते भी मीठ द्यो। यह प्रथा आरम्भिक रूप में पारिवारिक रिश्तों को आए दिन छिन्न-भिन्न करने वाली प्रथा थी। दाम प्रथा के विरुद्ध सबसे तीव्र शिकायत निरीक्षणों के अपमाननीय व्यवहार की नहीं, बल्कि यह थी कि उसमें प्रत्येक मनुष्य के स्वतन्त्र रहने के मौलिक अधिकार का उल्लंघन होता है और दामता की सब प्रथाओं में पत्नी और कुरता के व्यवहार को सम्भावनाएं बनी रहती हैं। एक एक ऑस्ट्रेड के अनुसार दामता "महदूर में अपनी योग्यता और कुशलता बढ़ाने का उन्माह नष्ट कर देती है, आम-सम्मान को भावना को दबा देती है, उसकी महत्वाकांक्षाओं को पथ-भ्रष्ट कर देती है और जो भावनाएं मनुष्यों को अपने देश के लिए और संसार के लिए अपन-आपको अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए प्रेरित करती हैं उन्हें समाप्त कर देती हैं।"

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, कपास की खेती और उसकी उपज सम्बन्धी व्यवस्था पर पूजा का विनिर्वास बढ़ता गया। उपेक्षणीय परिमाण में आरम्भ होकर, कई का उत्पादन बढ़ते-बढ़ते १८०० में लगभग ३ करोड़ ५० लाख पौंड, १८२० में १६ करोड़ पौण्ड और १८४० में ६३ करोड़ पौण्ड से भी ज्यादा होने लगा। १८५० में तो संसार की सम्पन्न कपास का ७/८ भाग दक्षिणी मूल्यवत् राज्य में उत्पन्न होने लगा। दामता भी इसी परिमाण में बढ़ी। इन सब कारणों से राष्ट्र की राजनीति में दक्षिणराजियों का प्रधान लक्ष्य कपास की खेती में सम्बद्ध दाम-प्रथा की रक्षा और उसका विस्तार बन गया। इस प्रकार उनका एक प्रधान प्रयत्न कपास की खेती के क्षेत्र को उसकी वर्तमान सीमाओं से आगे बढ़ाना ही गया। कपास को एक ही फसल होने की प्रथा के कारण भूमि की उर्वरता शीघ्र हो कम हो जाती थी और नवी उपजाऊ भूमि की आवश्यकता महसूस होने लगती थी। अपने राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने के लिए भी दक्षिण राज्यों को नए-नए प्रदेश को आवश्यकता रहती थी, जिनमें कि वे नए स्वतन्त्र राज्यों के प्रवेश का मसुला करने के लिए गुलाबी सम्पर्क नए राज्य सामने ला सकें। दामता-विरोधी उत्तर वाले राष्ट्रीय राजनीति में उनकी इस चाल को जड़ों ही प्राण गए। वे इसे दामता को कायम रखने का पथ-धन सम्भले लगे।

१८३० से १८३९ तक उत्तर के दासता-विरोधी आन्दोलन ने उच्च रूप धारण कर लिया। पहले वाला दासता-विरोधी आन्दोलन अमरीकी कान्ति की ही एक शाखा थी। उसकी अन्तिम विषय १८०८ में हुई थी जब कि कांग्रेस ने अफ्रीकी-दासों के व्यापार को निषिद्ध कर दिया था। उसके पश्चात् दासता का विरोध

सबेकरो तक ही सीमित रह गया। वे नवजातपूर्वक दमका अवफल विरोध करने रहे। परन्तु कॉटन-जिन के आविष्कार के कारण दासों की मांग निरन्तर बढ़ने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में आन्दोलन का एक नया रूप सामने आया, जिसका प्रधान कारण उस समय के कान्कनतीय आदर्शों की तीव्रता और सब वर्गों के लिए सामाजिक समताता को भावना थी।

दामता-उन्मूलन आन्दोलन अमरीका में जन्मा की ही हो जाता था, वहां बह दाम-प्रथा की रक्षा की लिए दौड़ दौड़ सब धंधाधिक और कानूनी गारण्टियों को उपेक्षा करके लड़ते-मरते तक की सीमा पर पहुँच जाता था और उसे उठाने वाले लोग दासों का नुरतन स्वतन्त्र कर देने की मांग करने लगते थे। इस समय इस आन्दोलन का नेता विलियम लीवड गैरिगन नामक मेसाचुसेट्स का एक नवयुवक था, जिनमें एक गरीब को-मो उद्योगी और एक गणक गिराहकाज के समान आन्दोलन करने के गुण विद्यमान थे। उसके सभाकार-पत्र 'लिबरेटर' का प्रथम अंक १ जनवरी १८३१ को प्रकाशित हुआ और उसमें घोषणा की गयी: "मेरे अपने देश के दास-जनों की नुरतन महाधिकार दिवाने के लिए दृढ़तापूर्वक लड़ना... में इस विषय पर सोचते, बोलते और लिखते हुए नरभी का प्रयोग नहीं करना चाहता... मेरे सवाई पर हूँ... में गोलमाल बाचें नहीं कर्ना... में भांग नहीं कर्ना... में एक दूध भी पीले नहीं हट्टा... और लोग मेरी बात सुनें।" बहून से उत्तर वाले इस प्रथा को पुरानो जसो हूँ और आरिखवनीय मानने लगे थे। उन्हें गैरिगन के मतवतो भरे तरीकों ने इस प्रथा की बुराइयों के प्रति पुनः मजबूत कर दिया। उसकी नीति यह थी कि लोगों दासों के साथ बीवी हुई अवयल घृणा-स्पृहक और अमाधियण घटनाओं को जनता की दृष्टि के सामने लाया जाय और दासों के स्वाभिमान को मानव-जीवन का उपवीडन और व्यापार करने वाली के रूप में पेश किया जाय। बह मालिकों के किसी अधिकार को नहीं मानता था, उनमें कोई सम्भौता नहीं करता था और विलम्ब को नहीं महता था। जो उत्तर वाले इतने उद्य नहीं थे वे उसकी कानून को उपेक्षा करने वाली बातों का माह देने को नैवार नहीं थे। उनका कहना था कि सुधार विधि-सम्मत और शान्तिमय तरीकों में कराया जाय।

दामता-विरोधी आन्दोलन का एक रूप यह भी था कि जो दास मालिकों से बच कर भागें उनको रातोंरात उत्तर में सुरक्षित स्थानों पर अथवा सीमा के पार कनाडा में पहुँचा दिया जाय। शताब्दी के चतुर्थ दशक में, उत्तर के सब भागों में इस प्रकार के भागने वाले दासों के लिए गुप्त मार्गों का एक जाल

बिछ चुका था और इस व्यवस्था को 'अण्डरराउण्ड रेल-रोड' के नाम से पुकारा जाता था। उत्तर-पश्चिमी प्रदेश में ये कार्रवाईयां बहुत सफलता से ही रही थीं। १८३० से १८६० तक अकेले ओंढापो में ४० हजार में ज्यादा दामांओं को इस प्रकार स्वतन्त्र होने में सहायता दी गयी। स्थानीय दामना-विरोधी सम्भाओं की संख्या में भी वृद्धि होती गयी, यहां तक कि १८४० में लगभग २,००० ऐसी संस्थाएं ही गयी थीं और उनके सदस्यों की संख्या कदाचित् २ लाख थी।

यद्यपि सक्रिय उन्मुक्तवादियों का एकमात्र लक्ष्य यह था कि दामना को प्रत्येक पुरुष और स्त्री के लिए नैतिक प्रश्न बना दिया जाय, परन्तु सब मिलाकर, उत्तर के लोग दामना-विरोधी आन्दोलन में भाग नहीं ले रहे थे। उनका ख्याल था कि दामना का सम्बन्ध केवल दक्षिणवाणियों में है और उन्हें इस समस्या को राजकीय विधान द्वारा हल करना चाहिए। उन्हें भय था कि जोशीलि उन्मुक्त-वादियों का बेलगाम आन्दोलन कहीं यूनिवर्स को एकता की भ्रम न कर दे। परन्तु, १८४५ में म्यून्करराज्य में टैक्सस के मिल जाने और मैक्सिकन युद्ध के पश्चात् दक्षिण-पश्चिमी प्रदेश जोत लिए जाने के कारण दामना का नैतिक प्रश्न एक ज्वलन् राजनीतिक समस्या में परिणत हो गया। अब तक सम्भावना यही थी कि दामना केवल उस प्रदेश तक सीमित रहेगी जहां अभी तक यह रही है। १८२० में मिगुरी के समझौते द्वारा इसकी नीमा बाध दी गयी थी और अब तक उसके उन्मुक्त का कोई अयसर नहीं आया था। किन्तु अब नए प्रदेश के विषय में यह कल्पना को जाने लगी कि उसकी अर्ध-व्यवस्था भी दामना से सम्बद्ध है, और इस 'विचित्र प्रथा' का पुनर्विस्तार एक सच्ची सम्भावना प्रतीत होने लगा।

बहुत से उत्तर वालों का विश्वास था कि यदि इसे प्रदेश विधायक तक ही सीमित रखा जाय तो यह प्रथा अन्ततः अपने आप ही नष्ट हो जायगी। दाम-प्रथा सम्बंधक नए राज्यों को बढ़ाने के विरोध में उन्होंने वाशिंगटन और जेफरसन के वक्ताओं और १७८७ के अध्यादेश को अपने समर्थन में पेश करने हुए कहा कि उनका निर्णय सब पर अनिवार्य रूप में लागू है। टैक्सस में दाम-प्रथा पहलू में ही थी, इसलिए यूनिवर्स में उसका प्रवेश दाम-राज्य के रूप में हुआ। परन्तु कैलिफोर्निया, न्यू मैक्सिको और यूटा में दाम-प्रथा नहीं थी। जब १८४६ में म्यून्कर राज्य इन प्रदेशों को अपने साथ मिलाते लया तब तब मध्य राज्यों द्वारा परम्पर-विरोधी मुद्दा उपस्थित किए गए। अनिवादी दक्षिणी राज्यों ने कहा कि मैक्सिको के लिए हुए सब प्रदेश दाम रखने वालों के लिए मूले छोड़ जाएं।



कैलिफोर्निया का 'गोल्डरश'। १८४९ में, याने, सक्सासेटो बॅंसी में सोना पाए जाने के एक वर्ष पश्चात् सोना पाने के लिए स्थापित ८०,००० से भी अधिक लोग पस-वालकों के शान्तिप्रिय समाज को उत्तेजनपूर्ण गतिविधियों के क्षेत्र में बहलने आ गए।

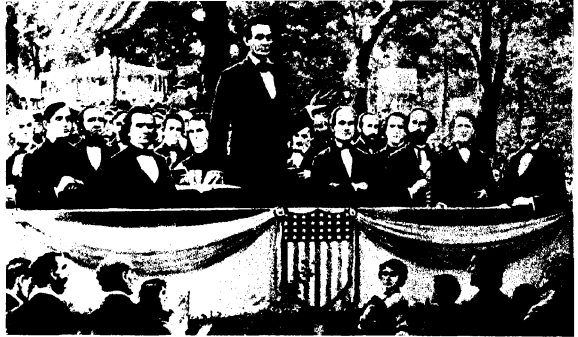
दासता-विरোধी जोशोंसे उत्तर वालों ने कहा कि सभी नए प्रदेशों का द्वार दाम-प्रथा के लिए बन्द कर दिया जाय। नरम विचारों के एक दल ने कहा कि मिगूरी समझौते को देखा प्रशान्त महाभाग पर तब बड़ा ही जाय, और इसके उत्तर के राज्यों को स्वतन्त्र तथा दक्षिण के राज्यों को दाम माना जाय। एक अन्य नरम दल ने यह सुझाव रखा कि जो नए प्रदेश में जाकर बसें उन्हें दाम रखने या न रखने की स्वतन्त्रता दी जाय और जब नए प्रदेश को राज्यों के रूप में संगठित किया जाय तब वहां के निवासी इस प्रश्न का निर्णय स्वयं कर लें। दक्षिण वालों का मत अधिकाधिक इस विचार की ओर झुकता गया कि सभी प्रदेशों में दासता को बनाए रखने का अधिकार दिया जाय। उत्तर वालों का विचार अधिकाधिक यह होता गया कि दासता कहीं भी न रहने दी जाय। १८४८ के चुनाव में लगभग ३ लाख मतदाताओं ने 'फ्री स्मॉल्ल पार्टी' (स्वतन्त्र भूमि दल) के उम्मीदवारों को मत दिया जिसकी घोषणा थी कि 'सर्वोत्कृष्ट नीति यह है कि "दासता को मौजिन, स्थानबद्ध और निरन्तराहित किया जाय।"

जनवरी, १८४८ में कैलिफोर्निया में सोने का पता लगने पर संसार के सब भागों में लोग सोने की तलाश में आब मोच कर उभर ही भागे और उनकी संख्या अकेले १८४९ में ८० हजार से ऊपर पहुँच गयी। कैलिफोर्निया का प्रश्न एक कमीटी बन गया, क्योंकि वहाँ संगठित शासन स्थापित होने में पूर्व कांग्रेस के लिए उसकी स्थिति का निश्चय कर देना आवश्यक था। राष्ट्र की आशाएँ सेनेटर हैनरी क्ले पर केन्द्रित थीं, क्योंकि वह दो बार संघर्ष के अवसरों पर समझौते का मार्ग निकाल चुका था। उसने एक बार पुनः भयंकर प्रादेशिक विद्रोह को एक सुसंगत योजना द्वारा रोक दिया। उसके समझौते में अन्य बातों के अतिरिक्त ये बातें थीं कि कैलिफोर्निया को एक स्वतन्त्र भूमि वाले (दासता-निषेधक) संविधान के साथ एक राज्य के रूप में सम्मिलित किया जाय और संघ नयी भूमि को न्यू मैक्सिको और यूटा के दो प्रदेशों में बाँटकर उनके विषय में दासता का कोई जिक्र न किया जाय; न्यू मैक्सिको के कुछ भाग पर टेक्सास का दावा उसे एक करोड़ डालर देकर शान्त कर दिया जाय; भागें हुए दामों को पकड़ने के लिए, और उन्हें पकड़ कर उनके मालिकों के सुगुरे करने के लिए अधिक प्रभावशाली व्यवस्था की जाय, और कोलम्बिया के इन्डियन्स में दाम-स्वागार (न कि दासता) समाप्त कर दिया जाय। ये उपाय—जो कि अमरीकी इतिहास में '१८५० का समझौता' के नाम से प्रसिद्ध है—स्वीकृत हो गए और देश ने सन्तुष्टि की साँस ली।



टाम काफ़ा की कुटिया' नामक उपन्यास की लेखिका हैरियट बोचर स्टो। इस उपन्यास ने उत्तरी क्षेत्रों के जनमत को अत्यधिक प्रभावित किया। दास-प्रथा में अनिवार्यतः निहित अन्याय और अत्याचार का जो स्पष्ट चित्रण इस उपन्यास में किया गया उसने बसियों लाख लोगों के हृदयों को विचलित कर दिया।

सिनेट के एक पक्ष के चुनाव के अवसर पर अपने प्रतिद्वंद्वी स्टोकेन ब्रग्लस (लिकन के बाईं ओर) के साथ हुई एक बाव-बिबाव माला में हिस्सा लेते हुए अल्ब्राहम लिंकन (बाईं हुए)। इस माला के अलग-अलग दोनों उम्मीदवारों को 'बास-प्रथा' सम्बन्धी अपने-अपने बिचार पेश करने का अवसर मिला।



१९ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में दक्षिण के एक भीतरी इलाके का दृश्य। इस तरह के कपास के बागानों का सारा काम नीचो लोग करते थे। हालांकि तम्बाकू, बीनी और चावल का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता था फिर भी दक्षिणों अर्थव्यवस्था की मूलधार कपास की खेती ही थी।



नीत वषं तक नो ऐसा लग्ग कि समझीने ने प्रायः सब मतभेद समाप्त कर दिए हैं, परन्तु अन्दर-अन्दर तनाव जारी रहा और बढ़ता गया। नए भगोड़े-दास-कानून ने बहुत-से उलर वाले अव्यक्त मुद्दे थे। उन्होंने दासों को पकड़ने में सहायता देने से इन्कार कर दिया। इसके विपरीत वे भगोड़ों की भागने में सहायता करने लगे। 'अग्घर-प्राउडर नेल्-रोड' अधिक चुस्त और निस्संकोच हो गयी और उनमें सहायता पाने वालों की संख्या बढ गयी।

नागरिक संघर्ष निकट आने लगा

दूसी समय, अकस्मात ही ग्राहियिक प्रेरणा ने अमरीका के घरेलू मतभेद की पुनः भड़का दिया। मूष के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करने वाली दामला की उमने मानवता की दृष्टि में अपराधी ठहराया और उसके विशद लोगों की भावनाओं को उमारा। जो लोग समझते थे कि दामला के प्रहन का आराम से टाला जा सकता है उनको दृष्टि केवल राजनीतिको और सम्पादको तक पहुँची थी। उन्होंने यह कल्पना भी नहीं की थी कि अकेला एक उपन्यास तमाम विधान सभाओं के सदस्यों और दैनिक समाचारपत्रों में बढ कर प्रभावशाली सिद्ध होगा। ह्विटियर, लोवेल, ब्राएण्ट, परमन और लीपकोन्जे जैसे कवियों ने दामला के विशद पृष्ठा के भाव पहले भी प्रभावशाली रूप में प्रकट किए थे, परन्तु १८५१ में पूर्ण बहुन कम लोगों ने यह कल्पना की थी कि इस विषय पर एक लोकप्रिय उपन्यास को लिखा जा सकता है। उस साल एक लोकप्रिय पत्र 'नेशनल इंग' में 'अकिल टाम्म' नामक एक दास की मृत्यु का कल्पित वर्णन प्रकाशित हुआ। यह दतना लोकप्रिय हुआ कि लेखिका हेरियर बीचर स्टो ने धारावाहिक रूप में 'टाम काका की दुःखिया' (अकिल टाम्म केविन) की कथा लिखना आरम्भ की।

कई दृष्टियों में इस पुस्तक ने प्रायः जाड़ना कर दियाया। प्रसिद्ध पादरी लाइमन बीचर की पुत्री 'हेरो' बीचर में ग्राहियिक प्रतिभा भी है, यह बात केवल उसके पति को ही ज्ञात थी। जब उसने 'अकिल टाम्म केविन' लिखना आरम्भ किया तब यह लेखन कार्य में प्रायः सर्वथा अनयत्न थी, परन्तु अपने काम के लिए उसको नैतिक नैपारी बहुत थी और भगोड़े दामों में सम्बद्ध विषयक पाम होने ने अस्वभाविकतः के लिए उसको भारी प्रेरणा मिली। इस पुस्तक की कथानी ग्राहियिक के इतिहास में अत्यन्त आश्चर्यजनक घटनाओं में से है। यह १८५२ में प्रकाशित हुई और वर्षों की समाप्ति में पूर्व ही इसकी ३ लाख प्रतियां बिक गयीं और 'पावर' में बन्दे वाले ८ पंनों को इसकी पागू गरी करने के लिए दिन और रात काम

करना पड़ा। 'अकिल टाम्म केविन' में बहुत-से उदार और मानवतापूर्ण दास-स्वाभियों के साथ पूरा न्याय किया गया था; एक क्रूर दाम-व्यापारी साइमन लैडी उलर का निवासी था। मिनेसू स्टो ने दिखलाया कि किस प्रकार निर्दयता को दामला से पृथक् नहीं किया जा सकता और किस प्रकार स्वतन्त्र और दास समाजों में मूलतः समझौता नहीं हो सकता।

इस उपन्यास ने उत्तर के मतदाताओं की नयी पीढ़ी को हिला दिया। पुस्तक ने केवल अमरीका में ही नहीं, ब्रिटेन, फ्रांस और अन्य देशों में भी अपने उद्देश्य को पूर्ण कर दिया। संसार की आधी से अधिक मुख्य भाषाओं में उतका अनुवाद हुआ। इमने दामला-विरोध के लिए सर्वत्र प्रबल उत्साह जाग्रत कर दिया।

इस समय के बाद दामला का प्रहन दबाया न जा सका। १८५० के समझौते ने उबलने हुए लावा को जिन पतली पपड़ी में ढक दिया था वह निरन्तर चट-कने लगी और १८५४ में दामला का प्रहन प्रदेशों में—इस समय नेब्रास्का के बिस्कुन प्रदेश में—पुनः उठ लडा हुआ। विवाद निश्चय हो गया। दक्षिण के उद्योगियों मिन्सोरी समझौते की मिटाने पर तुले हुए पृथिवीय सम्पूर्ण उत्तरी मिन्सोरी घाटी के द्वार दाम-प्रवा के लिए बन्द हो गए थे। परन्तु ज्यों ही उन्होंने इसके लिए करम उठाए त्यों ही मारा उत्तर भड़क गया। जो प्रदेश आज के उपजाऊ कॅन्सास और नेब्रास्का राज्यों में मिल कर बनता है वह बगने को इच्छा रखने-वालों को पहले से ही अपनी आं आहूट कर रहा था। वहा स्वामी शासन की स्थापना ही ज्ञान पर दून विकास की सम्भावना और भी बढ गयी। उत्तर वालों की विधवा था कि यदि यह प्रदेश मंगरित हो गया तो बमने वाले इधर को उमड़ पड़ेंगे और दममें होकर शिकारियों में प्रशासन महासागर तक लेके लाइन बन सकेगी।

मिन्सोरी समझौते के अनुसार यह साग प्रदेश दामला के लिए बन्द था। परन्तु मिन्सोरी के प्रभावशाली दाम-स्वामियों ने इसके पश्चिमवर्ती कॅन्सास प्रदेश के स्वतन्त्र होने देने का विरोध किया, क्योंकि वेना ही ज्ञान पर मिन्सोरी नीत स्वतन्त्र पड़ामियों से घिर जाता और पहले से ही प्रबल एक आन्दोलन के सामने भूक ज्ञाने का परिणाम यह होता कि मिन्सोरी भी स्वयं स्वतन्त्र राज्य बनने के लिए विवश हो जाता। कुछ समय तक, मिन्सोरी वाले कांग्रेस में दक्षिण के लोगों की सहायता में इस प्रदेश को मंगरित करने के प्रयत्नों की विकास करने रहे।

साई चोड़ी होती गयी

तब इलिनॉय के बरिण्ट मनेटर स्टोफेन ए. डगलस ने १८५४ में एक बिल पेश करके विरोधियों को काटने का प्रयास किया। इस बिल ने स्वतन्त्र भूमि के सभी पक्षानों को हट्टा दिया। डगलस की दलील यह थी कि चूकि १८५० के समयभौने ने पूरा और न्यू मैक्सिको को दासता का निर्णय स्वयं करने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया है इस कारण मिस्त्री का समयभोना उसी क्षण में स्वयं समाप्त हो गया है। उसकी बीजना कंसामत और नैब्रास्का के दलों प्रदेसा का समठन करने के वामियों को दलों को अपने साथ ले जाने की अनुमति देती थी। निवासियों को यह निश्चय स्वयं करना था कि वे एनियन में स्वतन्त्र-राज्यों के रूप में गठिर्मिन होंगे या दास-राज्यों के रूप में। उत्तर वालों ने डगलस पर आपक्ष किया कि उनमें यह बिल १८५६ में राष्ट्रपति के चुनाव में दक्षिण वालों के मत प्राप्त करने के लिए पेश किया है। निस्सन्देह उसकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाएँ बहुत प्रबल थीं। परन्तु यदि उनका यह यकीन रहा हो कि उत्तरी भावना उसकी योजना चुनबाप सहन कर लेगी तो उसका यह भ्रम तुरन्त ही दूर हो गया। लाखों आदिमियों को ऐसा लगा कि पश्चिम के समृद्ध मंदानों को दासता के लिए खोल देना असम्भव अपराध है। बिल पर अनेक आवेशपूर्ण बहसें हुईं। स्वतन्त्र-भूमि-पक्षायानी समाचार-पत्रों ने इसकी जोरदार निन्दा की। उत्तर के पारदर्शियों ने इसका विरोध किया। जो व्यापारी अभी तक दक्षिण के विनय में उनको एकदम मुह मोड़ लिया, तो भी मई मास के एक प्रातःकाल यह बिल मनेटर में पाम हो गया। दक्षिण के उसलही लोगों ने इस प्रसन्नता में तोष के घोड़े छोड़े। परन्तु उसी समय दासता-विरोधी नेता सैलमोन पी वेस ने यह प्रविव्यवाणी की: "वे इस समय तो जीत मना रहे हैं परन्तु इसकी पूँज तब तक मान नही होगी जब तक कि स्वयं दासता का अन्त न हो जायगा।" बाद में जब डगलस अपने पक्ष में भाषण करने के लिए सिकागो पहुँचा तब बन्दर-गाह पर सड़ जहाजों ने अपने झण्डे लीचे गिरा दिए, गिरजाघरों के घण्टे घण्टा-भर बजने रहे और दस हजार लोगों की भीड़ ने दूतना शोरगुल किया कि वह अपनी बात कियो को न मुना सका।

डगलस के दुर्भाग्यपूर्ण कानून के परिणाम तुरन्त ही सामने आए। द्विग पाठों जो कि अब तक दासता-विस्तार के प्रत्येक को टालती रही थी, सबैसा मृत हो गये और उसके स्थान पर एक नए बलवान समठन रिपब्लिक दल का जन्म हुआ। उसको प्रथम पाम यह हो दासता का सभी प्रदेशों से अन्त कर

दिया जाय। १८५६ में इस दल ने राष्ट्रपति-पद के लिए साहमी जान फेसोष्ट को नामजद किया। यद्यपि वह दल चुनाव में हार गया परन्तु उत्तर के बहुत बड़े भाग में उनका विस्तार हो गया। वेस और ब्रिडलिस नेवर्ड सरीखे स्वतन्त्र-भूमि-आन्दोलन के नेताओं का प्रभाव पहले से कहीं अधिक बढ़ गया और उनके साथ ही इलिनोय का एक उंचा, दुबला-पगला अकील अब्राहम लिंकन सामने आया जिसने नयी समस्याओं पर विचार करने में आसर्वजनक तर्कों का प्रदर्शन किया। कंसामत में दक्षिण के दासता समर्थक और उत्तर के दासता-विरोधी मनुष्यों के प्रवेग ने तीव्र विरोध उत्पन्न कर दिया था, और परस्पर की मसझ टक्करों ने वह प्रदेश 'लहू-लुहान कंसामत' कहलाने लगा।

मिनेज स्टो ने लिखा था; "जो राष्ट्र अपने हृदय में किमी बड़े और अप्रतिहत अन्याय को लिए रहता है उसमें सदा भयकर उथल-पुथल का भय बना रहता है।" समय बीतता गया और घटनाएँ राष्ट्र की अनिवायं सपर्यं के समीप पहुँचानी गयीं। १८५७ में सर्वोच्च न्यायालय ने डूड स्कॉट के विषय में अपना प्रसिद्ध निर्णय मुनाया। स्कॉट मिस्त्री का एक दास था जिसे बीन एवं पूर्व उसका स्वामी इलिनोय और विस्कॉन्सिन प्रदेशों में रहने के लिए ले गया था। वहा दासता निषिद्ध थी। मिस्त्री में लौट कर वह अपनी दामावस्था में असन्तुष्ट हुआ और उसने इस आधार पर मुकदमा दायर किया कि चूकि में स्वतन्त्र भूमि में रह चुका हूँ इसलिए मुझे मुक्त किया जाय। दक्षिण-प्रभावित न्यायालय ने निर्णय दिया कि स्कॉट दास-राज्य में स्वेच्छापूर्वक लौटा है, इसलिए उनको स्वतन्त्रता के जो कुछ अधिकार थे भी, वे नष्ट हो गए और साथ ही यह व्यवस्था भी थी कि कांग्रेस तब प्रदेशों में दासता के निषेध के लिए जो कोई प्रयत्न करेगी वह अर्थश होगा।

इस निर्णय से उत्तर में सर्वत्र एक प्रयानक जोश फैल गया। इससे पूर्व न्याय-विभाग को दूतनी निन्दा कभी नही हुई थी। दूसरी ओर इस निर्णय में दक्षिणी डेमोक्रेटों की बहुत बड़ी जीत भी थी। इससे दक्षिणी प्रदेशों में दासता को जारी रखने के उनके विचार को न्यायालय की अनुमति प्राप्त हो गयी। अब्राहम लिंकन अभी तक मध्य-पश्चिम के अन्य वकील राजनीतियों में प्रायः भिन्न नही थे। वह दासता को विरक्त ने एक बुराई मानते थे। १८५४ में पियोरिया (इलिनोय) में एक भाषण देते हुए उन्होंने बलपूर्वक कहा था कि सभी राष्ट्रीय कानून लोकतन्त्र के जनकों के इस सिद्धांत के आधार पर बने चाहिए कि दासता एक ऐसी प्रथा है जिसको थोरे-थोरे कम करते हुए अन्ततः

समाप्त कर देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि जनता की प्रभुता का सिद्धान्त मिथ्या है, क्योंकि पश्चिमी प्रदेशों की सामना का प्रश्न केवल स्थानीय निकायियों द्वारा नहीं, अपितु समस्त संयुक्तराज्य संघ द्वारा विचारणीय है। इस भाषण से वे बड़ते हुए पश्चिम में प्रसिद्धि पाते लगे। नार वन बाद दक्षिण में सेनेट के चुनाव में वह स्टीवन ए. डगलस के प्रतिस्पर्धी उम्मीदवार के रूप में खड़े हुए। १७ जून, १८५८ को उन्होंने अपने चुनाव जाहाननाम का जो प्रथम भाषण दिया था उसमें उन्होंने आगामी मान-सम के अमरीकी इतिहास की मुख्य घटना को सूचित कर दिया था।

लिंकन द्वारा दास-प्रथा की मर्त्सना

“जिस घर में फुट नहीं वह टिक नहीं सकता। मेरा विश्वास है कि यह शासन आर्थे (तांगी को) दाग और आप (तांगी को) स्वरूप रखकर स्थायी नहीं रह सकता। मैं नहीं कहता कि संघ विघटित हो जायेगा, मैं नहीं कहता कि सदन डह जायेगा—परन्तु मुझे यह आशा अवश्य है कि इसमें फुट नहीं रहने पायेगी।”

लिंकन और डगलस के बीच १८५८ की शीम और शब्द क्लृप्तों में गान्त वाद-विवाद हुए। लहलहाते हुए सत्रों के बीच बने हुए दक्षिणों के मूल व घर्म छोटे कसबों में कमीशों की बाहें ऊपर चढ़ाए हुए, किसान और उनके परिवार गादियों में बैठे और जमीन पर खड़े हुए इन विवादों का सुनने की प्रतीक्षा में रहते थे। सेनेटर डगलस स्थानीय दमोक्रटिक क्लब के सिवां में चिराग हुआ एक सुन्नी पाठी में आना और संघ पर बह जाना। उनका शरीर स्वस्थ और पांच फुट ऊंचा था। उन्कूट वस्त्रा के रूप में उनको दूर-दूर तक ख्याति थी और यह ‘छोटे दैर्घ्य’ के नाम से प्रसिद्ध था। उसके, प्रत्येक अव में आत्मनिश्चय और अधिकार प्रकट होता था। एच् लिंकन बहुधा पंडित आते थे। उनका भ्रमियों से डका चेहरा और लम्बी गरदन भीड़ में दूर में ही दिखलाई देती थी। वह जब शीमाओं के सामने आते तो उनका चेहरा उदास रहता था। उस पर आक्रमण का संभव रहता था। वह न केवल डगलस के सेनेट में रहने के अधिकार को न्योती देते थे, बल्कि नयी पाठी के प्रवक्ता भी थे। ये दोनों सनात्रा दमोक्रटि पैदा करने थे उनसे बह कर चतुर, चमत्कारी और प्रबल व्यक्तिता प्रदर्शनी भाषा में सायद ही कमी कही दो गयी हो। यद्यपि डगलस एक बार पुनः सेनेटर चुना गया तथापि लिंकन को राष्ट्रध्यापी ख्याति प्राप्त हुई।



एस्टीटस के निर्णायक युद्ध के तुरंत बाद लिंकन से युद्ध की प्रगति पर विचार करने के लिए यूजियस के जनरल मक्कलेलन से उनके युद्ध विधिर में भेंट की।

बीछ ही प्रादेशिक संघर्ष पुनः तीव्र हो गया। जाने ब्राउन ने आवश्यकता में अधिक लोग में आकर तीन वर्ष पूर्व कैन्सास में दाम्पता पर एक सूनी प्रहार किया था; वह अह भी उस की बुराईया सोचने में लीन रहता था। अब उसने न्यू टर्मेन्ट के कुछ उम्मेदनवादी लोगों की सहायता में एक माहगिक कदम उठाया। १८ अनुसार्थियों का एक विरोध इकट्ठा करके, जिनमें पांच तीनों भी थे, उसने १८ अक्तूबर, १८५९ की रात को हार्लेमें फेरी (वर्जिनिया) के संघीय सत्रागार पर अधिकार कर लिया। प्रातःकाल, हार्लेमें फेरी कब्रों के नागरिक विधिवत शस्त्रों में सज्जित होकर गांव में उमड़ पड़े और नागरिक मेना की कुछ सम्पत्तियों की सहायता में उन्होंने प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिया। ब्राउन और उसके बच्चे हुए साथी कैंद हो गए। राष्ट्र-भर में सनसली फैल गयी। ब्राउन की कार्रवाई ने बहुत ने दक्षिण वालों की बुरो-ने-बुरी आसकाओं को मध्य मिद्ध कर दिया। दूसरी ओर, दाम्पता विरोधों उग्र जनों ने ब्राउन को एक प्रसन्ननीय उद्देश्य की पुनि पर स्वीकार हो जाने वाला 'महान् योद्धा' कह कर पुकारा। परन्तु अधिकतर उत्तर वालों ने इन दुस्माहस्य का विरोध किया। उन्हें दसमें दक्षिण पर आक्रमण नहीं, अपितु लोकतन्त्रीय प्रणालियों पर आक्रमण हीना दिखलाई दिया। ब्राउन पर पड़भ्रम, विद्रोह और कत्ल का मुकदमा चला और २ दिसम्बर, १८५९ की उसे फाँसी पर लटका दिया गया। उसका अपने जिनम श्रेण तक यहाँ विचाराग रहा कि वह एक देवी कार्य का निमित्त-मात्र था।

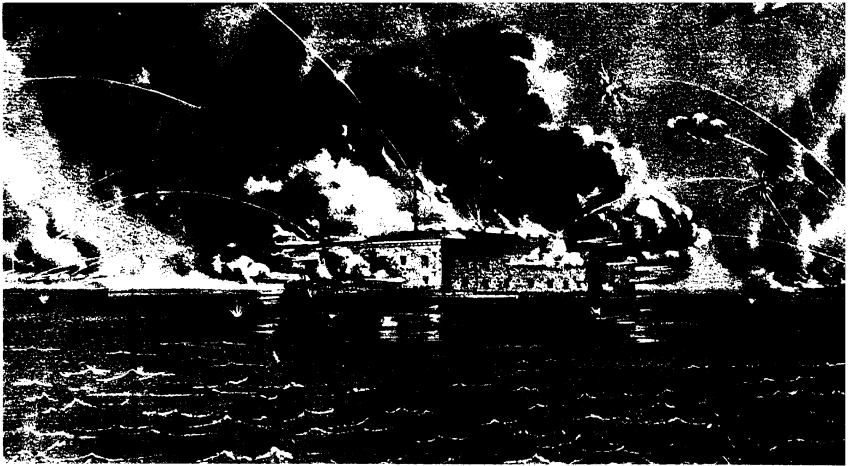
देग के प्रारम्भिक काल में उत्तर और दक्षिण में जो भेद चले आ रहे थे इन चटना में और भी गहरे होकर वे उदीयमान राष्ट्र की संरचना में जुड़ गए। दक्षिण का लगभग पूरा प्रदेश श्रापीण था। उत्तर का बहुजनता भाग शहरी हो चुका था। उत्तर के लोग चाहते थे कि विकासमान उद्योग की रक्षा के लिए नैवार माल पर नट-कर लगाया जाना चाहिए। कृषि-प्रधान दक्षिण उसमें घृणा करता था। उत्तर मार्सजैतिक भूमि की शीघ्रनिगिरीय छोटे स्थानियों में बाँट देने का पक्षपाती था। सभी वाणिज्यों के लिए मूल्य कृषि-भूमि की मांग प्रबलतर होती जा रही थी। 'बैंग पाने के लिए बॉट दों' का नारा लोकप्रिय होना जा रहा था। दक्षिण चाहता था कि राष्ट्रीय भूमि को ऊँचा मूल्य पाने के लिए रोका और बेचा जाय। उत्तर राष्ट्र के लिए कुशल वैज्ञानिक पद्धति का पक्षपाती था। दक्षिण केंद्रीय बैंक व्यवस्था का विरोधी था। उत्तर में एक बलवान मध्यम श्रेणी विकसित हो चुकी थी, दनी कारण वह दक्षिण की अपेक्षा अधिक लोकतन्त्रीय था।

गृह-युद्ध का सूत्रपात

१८६० के राष्ट्रपति के चुनाव के समय उत्तर और दक्षिण के इन आपसी भेदों का प्रकाशन राजनीतिक रूप में हुआ। रिपब्लिकन पार्टी इन आन्दोलन में सर्वथा एक होकर सामने आई। दिकानों में एक उन्माहपूर्ण अधिवेशन करके उन्होंने मध्य-पश्चिम के सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्ति अब्राहम लिंकन को अपना उम्मीदवार नामजद किया। लक्ष्यों मतदान इन दृढ़ निश्चय द्वारा प्रगिन थे कि वे दाम्पता को और नहीं बढ़ने-पीड़ने देंगे। पार्टी ने उद्योगों के संरक्षण के लिए नट-कर लगाने की भी प्रतिज्ञा की और भूमि के भूख उत्तर वालों ने अपील करने हुए प्रतिज्ञा की कि वे सब धारियों को मुक्त करि भूमि देने का कानून पास कराएंगे। दूसरी ओर विरोधी दल विषया हुआ था दमर्लिय चुनाव के दिन लिंकन और रिपब्लिकनों की जीत हुई।

यह पहले में ही निश्चिन था कि यदि लिंकन जीत तो साउथ कैरोलाइना यूनियन में अलग हो जायगा। यह राज्य एक लम्बे अरसे में एक अलग की प्रतीक्षा में था जिनमें सारा दक्षिण एक नवी कॉन्फेडरेसी में संगठित किया जा सके। ज्यों ही चुनाव के परिणामों का निश्चय हो गया ज्यों ही साउथ कैरोलाइना की ओर में एक विद्रोह अधिवेशन में यह घोषणा कर दी गयी कि 'संयुक्त राज्य अमरीका' के नाम के अन्तर्गत साउथ कैरोलाइना व अन्य राज्यों के बीच जो संघ सम्बन्ध चले आ रहे थे उन्हें खत्म किया जाना है। दक्षिण के अन्य राज्यों ने भी तुरन्त इसका अनुकरण किया और ८ फरवरी १८६१ को उन्होंने 'फास-फेडरेट स्टेट्स ऑव अमेरिका' का संगठन किया।

इसके एक महीने में भी कम समय पश्चात् ४ मार्च, १८६१ को अब्राहम लिंकन संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने दक्षिण की पृथक्ता को स्वीकार करने में इनकार कर दिया और उसे "अर्बष" कह कर पुकारा। उन्होंने अपने भाषण के अन्त में प्रेम के पुराने बन्धनों को फिर बँटने की हृदयस्पर्शी व भावुकतापूर्ण अपील की, परन्तु दक्षिण ने उन अपील को नहीं सुना और २० अप्रैल, की वाश्टेन (साउथ कैरोलाइना) बन्दरगाह के फोर्ट समुटर पर तोपों ने आग उगलनी शुरू कर दी। अब उत्तर-वालों के मन में किसी भी प्रकार संकोच नहीं रहा। प्रत्येक गांव और नगर में होल बजने लग और सर्वत्र नोजवान शस्त्रों में सुसज्जित हो गए। इसी समय अलग होने वाले सात राज्यों की अमता में भी उनके राष्ट्रपति जैकसन डेविन की



१२ अप्रैल, १८६१ को सुबह, एक भयानक विस्फोट से चार्ल्सटन बन्दरगाह की शान्ति भंग हुई। 'कांफेडरेटों' ने सुमटर के किले पर (चित्र में) गोलाबारी करके गृह-युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

अपीठ की प्रतिक्रिया हुई। बहुत कम लोगों ने आगामी मण्डपों की भयकरता और गणभोरा की कल्पना की थी। युद्ध समाप्त होने तक दक्षिण की ओर से लगभग ८ लाख व्यक्ति लड़े थे और उत्तर की ओर से हममें दुगुने या त्रिगुने। उत्तर की सेनाओं में ५० हजारों से अधिक गाँवों और १ लाख से अधिक नौबों अथवा झोंपे वाले राक्षसों ने आकर अपनी हत्या थ।

दोनों किस्मों के चिन्तापूर्वक उत्तर दाम-राज्यों की कारवाइयों की प्रतीक्षा कर रहे थे जो कि अब तक कार्यान्वित रहे थे। वॉशिंग्टन ने १० अप्रैल को आग्रह-निर्णायक कदम उठाया और आर्कन्सास तथा मायें क्रोलाइडा ने नुम्न ही उनका अनुमोदन किया। कोई भी राज्य यूनिवर्सल ने इनकी अतिच्छा-पूर्वक पृथक नहीं हुआ जितना वॉशिंग्टन। उनके राजनीतिज्ञ न केवल स्वतन्त्रता-प्राप्ति और संविधान-निर्माण के लिए अतिवादी रहे थे, बल्कि उनमें राष्ट्र की पाँच राष्ट्रपति भी दिए थे। वॉशिंग्टन के साथ ही कर्नल रिचर्ड ई. ली भी चला गया। उनमें अपने राज्य के प्रति निष्ठा के कारण यूनिवर्सल की नेता का मोताबित्व ग्रहण करने में इनका र कर दिया। विन्स्टार्लिन कनिफेडरेसी और उत्तर के स्वतन्त्र-भूमि-पक्षपाती इलाक़ों के बीच में वे सीमावर्ती राज्य थे, जिन्होंने अग्र-स्थापित रूप में अपने को राष्ट्रीयतावादी सिद्ध किया और यूनिवर्सल के ही साथ अपना सम्बन्ध बनाए रखना पसन्द किया।

पूर्व और पश्चिम में सुनी लड़ाइयाँ

दोनों पक्षों के लोग सीधे ही विजय-प्राप्ति की प्रबल आशा में युद्ध में सम्मिलित हुए, परन्तु प्राकृतिक साधन-सम्पत्तय में उत्तर की स्थिति निर्विवाद रूप में अक्षी थी। २ करोड़ ५० लाख आबादी वाले २३ उत्तरी राज्य १० लाख आबादी के ११ दक्षिणी राज्यों के विपक्ष लड़े थे। उत्तर की औद्योगिक शक्तिता उनकी आबादी की अधिकता में भी बढ़ कर थी। वासील दक्षिण की तुलना में उत्तर के पास शस्त्रास्त्र, मोला-बास्त्र, वस्त्र और अन्य सामान के निर्माण की सुविधाएँ अधिक थी। उत्तर की रेलवे लाइनों के जीवाधानीय विन्स्टार्लिन ने भी मधोय सामरिक सफलता में महायता दी। दूसरी ओर कनिफेडरेसी एक मठा दूसा और जनीय सुविधाओं वाला प्रदेश था। बुकि युद्ध उसकी अपनी ही भूमि पर ही रथा था, अतः वह अपने सामरिक मामलों की रक्षा उत्तर की तुलना में कम खरा और कम खर्च में कर सकना था।

युद्ध के तीन मुख्य क्षेत्र थे—मसूद, मिगिसिपी घाटी और पूर्वी मसूद-तट के

राज्य। युद्ध के आरम्भ में प्रायः सारी जल सेना यूनिवर्सल के हाथ में थी परन्तु वह बिखरी हुई और निरबल थी। जल-सेना के योग्य मंत्री मिडियन बेन्ज ने इसे नुम्न पुनर्गठित करके बलवान बना दिया। निकलने दक्षिणी तट की पंख-बंदी धोपित की। यद्यपि आरम्भ में इनका प्रभाव उपक्षणीय रहा, परन्तु १८६३ में इस नुम्न को हटा कर निली और वहा में बास्त्र, वस्त्र और औद्योगिक आदि जिन वस्तुओं की दक्षिण को अत्यन्त आवश्यकता थी उनका आयात, पूर्णतया रोक दिया। इसी समय एक प्रतिभाशाली जल सेनापति डेविड फोर्सेथ मेंधान में आया। उनमें दो उल्लेखनीय कारवाइया की। वह यूनिवर्सल के बेंच को मिगिसिपी के मुहाने पर ले गया और दक्षिण के सबसे बड़े नगर न्यू ऑरलियन्स को आत्मसमर्पण करने के लिए विवश कर दिया। उसका दूसरा काम यह था कि वह मोबाइल वाड़ी के दुर्ग-बन्द द्वार को पार करके आगे बढ़ गया और कान-फेडरेसी के एक सम्भ-सज्जित पोत पर कब्जा करके उनमें इन बन्दरगाह पर घेरा डाल दिया। सब विचारकर दक्षिण को पराजित करने में जल सेना ने यूनिवर्सल की प्रथमनीय सेवा की।

मिगिसिपी घाटी में यूनिवर्सल की सेनाओं की प्रायः लगातार अनेक जीतें हुईं। युद्ध के आरम्भ में ही उन्होंने टेनेसी में कनिफेडरेसी की लम्बी पकितबद्ध मार्च-बन्दी का भंग कर दिया और इस प्रकार राज्य के प्रायः सम्पूर्ण पश्चिमी भाग पर मसूदपूर्वक अधिकार कर लिया। मिगिसिपी के महत्वपूर्ण बन्दरगाह मेम्फिस को लेने के पश्चात् यूनिवर्सल की सेनाएँ कनिफेडरेसी के भीतरी इलाकों में दा मो मोल तक चली गयी। उनका सेनापति यूनिवीर एग. श्राफ्ट था जो दूद और हठी था और उसे मसूद-कला के मुख्य सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान था। टेनेसी नदी की ऊँची घाटियों में गाइडो नामक स्थान पर जब आक्रमण किया गया तो वह अपने स्थान पर तब तक इटा रहा जब तक कि तथी मरद पाकर वह जम्प को पीछे हटके देने में समर्थ नहीं हो गया। इसके पश्चात् उसकी सेनाएँ पीरे-पीरे परन्तु दृढ़ता में दक्षिण की ओर बढ़ने लगी। उनका लक्ष्य मिगिसिपी पर नियन्त्रण कर लेना था। उनके निचले भाग तो फोर्सेथ द्वारा न्यू ऑरलियन्स पर अधिकार कर लेने के पश्चात् कनिफेडरेसी में पहले ही साफ हो चुके थे। कुछ समय तक श्राफ्ट को विचमबर्ग में रुक जाना पड़ा। वहाँ के टोनों पर कनिफेडरेसी दृढ़ता में जम गए थे। उन पर जल सेना आक्रमण नहीं कर सकी थी। परन्तु १८६३ में श्राफ्ट ने एक आश्चर्यजनक काम किया। वह विचमबर्ग को घेर कर नीचे की ओर आगे बढ़ गया और छः सप्ताह तक

उपने कॉन्फेडरेटों को अपने धेरे में रखा। ४ जुलाई को उपने नगर पर और परिषद में कॉन्फेडरेटों की सैन्यिक दलित्वासी मेना पर अधिकार कर लिया। अब समस्त नदी यूनिन के अधिकार में थी। कॉन्फेडरेंसी दो हिस्सों में बाँड दो गयी थी और आर्कन्सास और टेक्सास के सम्पन्न प्रदेशों में नदी को पार करने पूर्व में गामयी का पहुँचाना प्रायः असम्भव हो गया था।

दूसरी ओर वर्जिनिया में यूनिन की मेनाओं को एक के बाद दूसरी पराजय का सामना करना पड़ रहा था। वहाँ बार-बार सूखी-पूड़ हुए जिनमें यूनिन की मेनाओं ने कॉन्फेडरेटों को राजधानी रिचमण्ड (वर्जिनिया) पर अधिकार करने और कॉन्फेडरेट मेनाओं को नष्ट करने का बार-बार प्रयत्न किया परन्तु वे बार-बार पीछे हटके लो गये। रिचमण्ड और वाशिंगटन में दूरी केवल १०० मील की है। परन्तु बीच के प्रदेश में अनेक जल-धाराएँ हैं जिनके कारण दक्षिण के लोगों को रक्षा-व्यवस्था मजबूत थी। कॉन्फेडरेटों के दो मेनापति थे—राबर्ट ई. ली और टामस जे. (स्टोनवाल) जेकसन। वे दोनों ही यूनिन के आरम्भिक मेनापतियों को तुलना में कहीं बतुर नेता थे। यूनिन के मेनापति मैकडेलन न रिचमण्ड पर अधिकार करने का जो नोड प्रयत्न किया। एक बार तो उसके सिपाहियों को कॉन्फेडरेट गिरजाघरों में बजने हुए घण्टे तक सुनायी दे गए। लेकिन २५ जून २ जुलाई तक के सात दिनों के युद्ध में यूनिन की मेनाएँ पीछे हटके ली गयीं और दोनों पक्षों का भयकर हानि उठानी पड़ी।

ज्वार उठा और शांत हो गया

१८६२ का अभियान उत्तर के लिए अन्धा मिट्ट नहीं हुआ। परन्तु उसी वर्ष की प्रथम जनवरी को एक उल्लेखनीय घटना पड़ी। उस दिन राष्ट्रपति लिन्कन ने अपनी मुद्रादि 'मुक्ति-संग्राम' (इम्पेम्पेशन प्रोक्लमेशन), जिसके अनुसार सब दाम स्वतन्त्र कर दिए गए और उन्हें राष्ट्रीय मेनाओं में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित किया गया। अब तक युद्ध का प्रत्यक्ष कारण राष्ट्र की एकता करना रहा था। अब उसके साथ देश की सीमाओं में दाम्ना की गदा के लिए समाप्त करना भी जुड़ गया। स्वतन्त्रता के रिचमण्ड की ओर का बढ़ाव अब तक रुका हुआ था। चान्सलरविल में एक सूखी युद्ध हुआ जिसमें उपर वालों की भारी हार हुई। परन्तु कॉन्फेडरेटों को युद्ध जीत बड़हन प्रशंसा पड़ी, क्योंकि इसमें स्टोनवाल जेकसन मारा गया, जो लो के बाद दक्षिण का योग्यतम मेनापति था।

कॉन्फेडरेटों की इन जीतों में से एक भी निर्णायक नहीं थी। जुलाई १८६२

में युद्ध का पामा पलट गया। ली ने सम्भवा कि चान्सलरविल की पराजय ने यूनिन को कमर तोड़ दी है। उपने उत्तर की ओर बढ़ कर पम्पिलवोनिया पर आक्रमण किया। उसकी मेना प्रायः राज्य की राजधानी तक पहुँच गयी परन्तु यूनिन की एक दलित्वासी मेना ने उसकी गति को घटित करने पर रोक दिया। यहाँ तीन दिन के युद्ध में कॉन्फेडरेटों ने यूनिन की पत्थिन को तोड़ने का बीरतापूर्ण प्रयत्न किया परन्तु वे अफसत रहे जो जब ली के अन्धकारी सिपाही भारी हानि के कारण स्वार्थी रूप में दलित्वासी हाकर पांशोमेक की ओर पीछे हटते तब यह स्पष्ट हो चुका था कि "मैसिमवर्ग का उत्तर" कॉन्फेडरेटों की गम्भी आशाओं की पराकाष्ठा थी। बाण्ट की मेना उस समय मिशिगिपी नदी पर बिस्मबर्ग पर अधिकार करने जा रही थी। दक्षिणी समुद्रतट की पराजयी लोहे की दीवार बन चुकी थी। कॉन्फेडरेटों के गाम्भन सम्मान हो रहे थे। दूसरी ओर उत्तरी राज्यों को मिडल और कार्पाने पुरी क्षमता के साथ चल रहे थे। उनके खेत परोप को माल भेज रहे थे और उनका जन-बल नए आयुधियों के कारण निरन्तर बढ़ता जा रहा था।

रिचमण्ड की ओर बाण्ट की मद परन्तु मजबूत प्रति में १८६४ में युद्ध का अन्त स्पष्ट दोषने लगा। सब दिशाओं में उत्तरी मेनाएँ घेरा बनाकर आगे बढ़ रही थीं। १ फरवरी १८६५ का जनरल ग्रैसन की पत्थिनकी मेना ने जाजिया में उत्तर की ओर अभियान आरम्भ कर दिया। निराश शत्रु ने प्रत्यक्ष स्थान पर उनकी प्रति की रोकने का यत्न किया। १० फरवरी को कॉन्फेडरेटों ने साउथ कैरोलाइना की राजधानी कोलम्बिया को लाम्बी कर दिया, चान्सलर विला युद्ध के हो यूनिन के बड़े के हाथ लगा, क्योंकि ओत्तरी प्रदेश के साथ उसके रेल-सम्बन्ध कट चुके थे। पोटोमक और रिचमण्ड में कॉन्फेडरेटों की स्थिति अत्यन्त ही बुरी थी और २ अप्रैल को ली ने उन्हें लाम्बी कर दिया। एक लम्बाई बार वह एण्डामाटोस (वर्जिनिया) में शत्रु द्वारा घेर गया और उसके सामने आत्मसमर्पण के अतिरिक्त कोई नारा नहीं रहा।

आत्मसमर्पण की शर्त सम्मानपूर्ण थी। बाण्ट ने सम्भेदित में लौट कर अपने सिपाहियों का को-शर-सुपूर्ण प्रदर्शन यह सम्भवाकर मान कर लिया कि "विद्रोही फिर हमारे देनवासी बन गए हैं।" दक्षिण की स्वतन्त्रता की भांग की हार हो चुकी थी।

परन्तु इस पराजित युद्ध का तात्क निर्विवाद रूप में राबर्ट ई. ली वा। अपनी समुद्रन-शक्ति, लोटीने-लोटीनी बाता के बारे में भी अपनी महती दिल्चस्पी,

अपने आरम्भियों के मुश्किल की चिन्ता और अपने साहस तथा सुन्दर व्यक्तित्व के कारण उमने अपने सिपाहियों की भक्ति और विश्वास को जीता था। उसके प्रतिभाशाली नेतृत्व, समस्त युद्ध में उसके मानवतावादी दृष्टिकोण और पराजय में भी उनकी शान की सर्वत्र प्रशंसा हुई। आज वासिगटन के समान, वह शान्ति और युद्ध दोनों में महान रहा। युद्ध के बाद वह ५ वर्ष तक जीवित रहा। यह सारा समय उमने दक्षिण की आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उन्नति करने में बिताया। जनता को यह प्रेरणा देता रहा कि वह अपने जन्तुवर्षों की निष्ठावान साक्षीदार बनी रहे।

उत्तर में, युद्ध ने इससे भी बड़े नायक अब्राहम लिंकन को पेश किया। आरम्भ के महीनों में बहुत कम लोगों ने इस अनुन्दर पश्चिमी ककीली की साम्प्रदायिक अँचाई का अन्दाजा लगाया था, परन्तु धीरे-धीरे राष्ट्र उनकी गम्भीर बुद्धिमत्ता को समझने लगा जो सतर्क अध्ययन और गम्भीर चिन्तन पर आधारित थी। वह सत्य के उपायक तथा अनन्य धीरता और असीम उदारता के गुणों से युक्त थे। यदि वह कभी-कभी क्रिष्कलते और डगमगाते भी प्रतीत हुए तो यह भी सही है कि वह यह जानते थे कि राष्ट्रीय लाभ के लिए प्रतीक्षा कैसे करने की चाहिए और दुइता के साथ कुशलता का सामंजस्य किस प्रकार करना चाहिए। उन्हें देश की जोर-जबरदस्ती के आधार पर नहीं बल्कि प्रेम और उदारता के आधार पर मिलाकर एक कर देने की चिन्ता थी। उनकी विदेशी-नीति में दुइता, सत्यता और आत्मसम्मान के गुण थे। वह हृदय से लोक-नन्दीय स्वयामन में विश्वास रखते थे। जनता का उन्हें पूर्ण विश्वास प्राप्त था और इसलिए वह १८६४ में पुनः राष्ट्रपति चुने गए।

‘किसी से भी द्वेष नहीं’

लिंकन ने द्वितीय बार पद ग्रहण करते हुए अपना उद्घाटन भाषण इन शब्दों के साथ समाप्त किया : “...किसी से भी द्वेष न रखते हुए”, सब के प्रति उदार रहकर, समय पर दुइ रहकर जैसी कि उसे देखने की ईश्वर ने हमें दक्षिण दी है, हमें उस कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिए, जो हमने हाथ में लिया है। राष्ट्र के धारकों को भरने के लिए, उसकी सेवा करने के लिए, युद्ध का बोझ निभाने अपने मिर पर उठाया उसके, उसकी विधवा और उसके अनाथों की सेवा के लिए, और वह सब कुछ करने के लिए हमें यत्नवान रहना चाहिए, जिसमें हम सबको, और सब राष्ट्यों को स्थायी शान्ति प्राप्त हो और जिससे हम

उसकी रक्षा कर सकें।” तीन सप्ताह पश्चात् लिंकन ने अपना अन्तिम सार्वजनिक भाषण किया, जिसमें उन्होंने अपनी पुनर्निर्माण की नीति प्रकट की—उसकी शर्तें ऐसी उदार थीं कि शायद ही किसी विजेता ने अपने असहाय पराजित के सामने वैसी शर्तें पेश की होंगी। लिंकन अपने आपको विजेता नहीं समझते थे। वह १८६१ में अमरीका के राष्ट्रपति थे। वह कहते थे कि विद्रोह को भूलकर प्रत्येक दक्षिणी राज्य को उसके पूर्ण अधिकारों के साथ यूनियन में मिला लेना चाहिए। १३ अप्रैल, एचकार को वासिगटन में ली के आत्मसमर्पण के उत्सव की दीवाली मनायी गयी और प्रगल्भ जनता ने गलियों में जूलूस निकाले। १४ को राष्ट्रपति ने अपने मन्त्रि-परिषद की अन्तिम बैठक की जिसमें बेराबन्दी उठा लेने का निश्चय किया गया। उमने अपने मन्त्रियों को अपना ध्यान रक्तपात और उन्नीहन से हटाकर शान्ति की ओर लगा देने की प्रेरणा दी। उसी रात को जब वह थियेटर में एक बावग में बैठे हुए थे तब किसी विरगिरे ने उनका खून कर दिया।

तब कवि जेम्स र्गमेल लोकेल ने लिखा था : “अप्रैल के उम स्वस्थ करने वाले प्रातःकाल से पूर्व, इतनी बहुसंख्यक जनता ने किसी ऐसे व्यक्ति को मृत्यु पर, जिसे उमने कभी देखा तक नहीं था, इतने ओंमू नहीं बहाए थे; ऐसा लगता कि उनकी मृत्यु से उनके जीवन में से एक मित्र का लोप हो गया और वह निर्वीज और अन्धकार-निम्न हो गयी थी। उस दिन परस्पर अपरिचित लोगों ने एकत्र होकर अपनी महानुभूतिपूर्ण दृष्टियों के विनिमय द्वारा मृत महापुरुष के प्रति प्रशंसा के भावों की वैसी मूक अभिव्यक्ति की वैसी इससे पहले कभी न की गयी होगी। मानव-विरार अपना एक प्रिय जन को बँटा था।”

अब राष्ट्र को पुनर्ब्यवस्था और पुनर्निर्माण की कठिन समस्या का सामना एष्ट्रू, जाम्सन मरीच्ये एक नए, अपरिचित और अपवांश रूप से साधन-सज्जित व्यक्ति के नेतृत्व में करना पड़ा। युद्ध की विरासत में देश को भलाई और बुराई दोनों ही मिली थी। उमने यूनियन की रक्षा तो कर दी थी और उसे अमर कीर्ति भी प्रदान की थी परन्तु देश युद्धान्ति में से निपचय ही बिना झुलसे हुए नहीं निकल सका था।

विजेता उत्तर के सामने सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न उन राज्यों की स्थिति के निरचय का था जो संघ से पृथक हो गए थे। इस सम्बन्ध में गड़बड़ी थी कि इस प्रश्न का निर्णय करने का अधिकार कांग्रेस को है या राष्ट्रपति को। लिंकन का विचार था कि दक्षिणी राज्य कानूनन कभी पृथक नहीं हुए, बरन

उनकी रचना को कुछ अभिमान नागरिकों ने गुमराह कर दिया था। लिंकन के अनुसार यूर कुछ व्यक्तियों का काम था। मधीय शासन को उन व्यक्तियों ने भ्रष्टताना था, राज्यों में नहीं। लिंकन का विश्वास था कि स्थल और जल-मेना के प्रधान मेनापति और यानु को धमका करने का अधिकारी होने के जाने राष्ट्रपति को स्थिति सम्बन्धी पूर्ण अधिकार प्राप्त है। इसी विचार पर चलते हुए उन्होंने १८६३ में दस भाग्य को घोषणा की थी कि यदि किसी राज्य में १८६० के दस प्रतिशत लोग ऐसे भाग्य का संगठन कर लेंगे जो संविधान के प्रति निष्ठावान हो और कांग्रेस के कानूनों और राष्ट्रपति को आज्ञाओं का पालन करने की प्रतिज्ञा करें तो मैं उस शासन को राज्य का कानूनसम्मत शासन मान लूंगा। कांग्रेस ने इस योजना को अस्वीकार कर दिया और बिना उसके मन्दाह के इस समस्या को हल करने के अधिकार को बुनौरी दो और उन पर यह आरोप लगाया कि उन्होंने कानून-निर्माण के अधिकार को अवैधानिक रूप में हड़प लिया है। दूसरी ओर, कांग्रेस ने १८६४ में इसमें भी अधिक कठोर विजय पाव किया। लिंकन ने उन पर हस्ताक्षर करने में इनकार कर दिया।

वस्तुतः यूर को स्थापित ने पूर्ण हो बर्जिनिया, टेनेसी, आर्केंसाम और लुइसियाना में लिंकन नए शासन स्थापित कर चुके थे। कांग्रेस के कई सदस्यों ने उनकी इस कार्रवाई को नापसन्द किया और सब कान्फेडरेट राज्यों को कटार दर्श देना चाहता। इनमें से एक कांग्रेस-सदस्य, प्रतिनिधि मन्त्रालय में रिपब्लिकन पार्टी के नेता, रैडिक्लम स्ट्रीकम का मत तो यह था कि दक्षिण के बागान भाजिकों को कुछ समय तक मैथिक शासन में रखना चाहिए। अन्य लोग नीधो-लोगों को वरुलन ही मन-दान का अधिकार देने के लिए हल-संकल्प थे। वस्तुतः इस समय कांग्रेस की विन्ता का मुख्य विषय, दक्षिणी राज्यों का सुनियन में पुनः प्रविष्ट करने को ओंशा, पुनःस्थापित नीधो-लोगों की स्थिति बन गया था। मार्च १८६५ में उमने एक 'कीरहेमन ब्यूरो' (इन्टरन-लोगों का ब्यूरो) स्थापित किया, जिसे नीधो-लोगों का संरक्षक बनाकर उन्हें स्वायत्तकी बनाने का काम मीपा गया। साथ ही, कांग्रेस ने संविधान में तेरहवा संशोधन प्रस्तुत करने कीधो-लोगों की स्वतन्त्रता पर कानूनी छाप लगा दी। संशोधन की मुष्टि दिसम्बर, १८६५ में हुई।

पुनर्निर्माण के विषय में विरोध

पुनर्निर्माण की नीति पर, कार्यपालिका और विधानसभा के बीच प्राची संघर्ष का भाव लिंकन को पहले ही हो गया था। परन्तु इस समस्या को मुलभाने का

काम उनके उल्लेखिकारी एड्डू, जामन के मिर पड़ा। उनका मौखिक जीवन का अनुभव पुराना, माहम बुद्धिमत्त और लक्ष्य अटिग था, परन्तु दुर्भाग्यवश, उममें मामने उपस्थित समस्या को मुलभाने के लिए पर्व और वतुराई के जिन मूषों की आवश्यकता थी वे नहीं थे।

१८६५ की मीमिया-पर जामन कायम में मन्दाह लिए बिना (क्योंकि उस समय उनका अधिकेशन नहीं चल रहा था), कुछ बातों का अंश कर, लिंकन की ही पुनर्निर्माण योजना का संगठन रखा। राष्ट्रपति की मैथ्यन में उमने दक्षिण के कई राज्यों में गवर्नर नियुक्त कर दिए और धमका करने के अपने विरोधाधिकार का प्रयोग करके उनमें कान्फेडरेटों की बहुत बड़ी मन्त्रा का राजनीतिक अधिकार पुनः प्रदान कर दिए। दक्षिणी राज्यों में अधिवेशन बुलाए गए, जिनमें पृथक् होने के अत्यादेश रद्द कर दिए गए, यूर-कृष्ण का अस्वीकार किया गया और नए संविधानों की रचना की गयी। समय आते पर प्रत्येक राज्य की रचना ने एक-एक गवर्नर और राज्य को विधान-सभा का भी निर्वाचन किया। जब किसी राज्य को विधान सभा संविधान के तन्त्रहो मंगलन को स्वीकार कर लेती थी तब जामन उस राज्य में नागरिक शासन की पुनः स्थापित हुआ मान लेता था और उस राज्य के सुनियन में पुनः मिश्र जाने की घोषणा कर देता था। १८६५ के दिसम्बर में जब कांग्रेस का सब आरम्भ हुआ तब यह क्रम कुल्ले का छोड़कर सब दक्षिणी राज्यों में पूरा हो चुका था। परन्तु दक्षिणी राज्यों को सुनियन में अपना अधिकारपूर्ण स्थान पुनः प्राप्त नहीं हुआ था क्योंकि कांग्रेस ने जब तक उनके मेनटरो और प्रतिनिधियों को, जो उस समय तक कान्फेडरेट आ चुके थे, असुरीता के विधि निर्माण में पुनः भाग लेने की अनुमति प्रदान नहीं की थी।

लिंकन और जामन दोनों मानते थे कि दक्षिणी प्रतिनिधियों को कांग्रेस में आमन रहलन करने की अनुमति न देने का संविधान को उस धारा के अनुसार कांग्रेस को अधिकार है जिसमें कहा गया है कि, "अपने सदस्यों...की वांछना की निर्णायक प्रत्येक सभा स्वयं होगी।" (आधिकार १, मेन्शन ५)। जो लोग दक्षिण का दण्डित करना चाहते थे उन्होंने पेरामलतानिता के रैडिक्लम स्ट्रीकम के नेतृत्व में दक्षिणी प्रतिनिधियों को बैठन की अनुमति नहीं दी और आगामी महीनों में उन्होंने कांग्रेस के पुनर्गठन की ऐसी योजना बनायी आरम्भ कर दी जो लिंकन द्वारा आरम्भ की गयी और जामन द्वारा पूर्ण की गई योजना में सर्वथा भिन्न थी।

कांग्रेस ने ज्ञानम की योजना को अनेक मिथित कारणों में अस्वीकार कर दिया। युद्ध काल में परिस्थितियों के कारण राष्ट्रपति के अधिकार और प्रभाव प्रायः बढ़ जाते हैं परन्तु युद्ध के पश्चात् कांग्रेस अपने अधिकार को पुनः स्थापित करने का उत्तर करती है। १८६५ में यह अनुभव किया जाने लगा कि कांग्रेस अब तक तो प्रशासकों के अधिकार-प्रयोग को महान करती बली आयी है किन्तु अब इसे सीमित करने का समय आ गया है। उत्तर में यह भावना भी फैली हुई थी कि दक्षिण को कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। इस भावना को कांग्रेस के उपपन्थियों ने प्रोत्साहित दिया। उन्होंने इस बात का लाभ उठाया कि दक्षिण-राज्यों में से जो लोग अब पद ग्रहण करना चाहते थे उनमें से बहुत से केवल दस सप्ताह पूर्व यूनिफन के विनाशक युद्ध में भाग ले रहे थे। उदाहरणार्थ, कॉन्फे-डरेसी का वाइस-प्रेसिडेंट जॉर्जिया का गेनेटर्ल निर्वाचित होकर आया था।

इसके अतिरिक्त, यह दावा भी किया जा रहा था कि नीग्रो लोगों को रक्षण की आवश्यकता है। भीरे-भीरे वह विचार अधिकाधिक व्यापक होता गया कि नीग्रो लोगों को मन-प्रदान और पद-ग्रहण का अधिकार दिया जाना चाहिए और सामाजिक और राजनीतिक मामलों में उनके साथ गांठे नागरिकों के समान ही व्यवहार होना चाहिए। दूसरी ओर वे लोग थे—और उसमें ठीकत ही सम्मिलित थे—जो कि मताधिकार का विस्तार मन्द गति से करने के पक्षपाती थे। परन्तु ज्ञानम-योजना के अनुसार दक्षिण में जो विधान-सभाओं निर्वाचित हुई थीं उन्होंने अनेक ऐसे कानून पास कर दिए जो कि नवीन स्वतन्त्र हुए लोगों की सुविधाओं और अधिकारों को नियमित करने थे। दक्षिण के लोगों के सामने उन ३५ लाख नीग्रो जनों की समस्या थी जो हाल में ही दासता में मुक्त हुए थे। उन्हें यह आवश्यक ज्ञान पड़ा कि राज्य उनकी हलचलों की गूढता में नियन्त्रित करें और उन्होंने अनेक नियन्त्रक "काले कानून" बना डाले। उत्तर में बहूतों को ऐसा लगा मानों युद्ध के लक्ष्यों को समाप्त किया जा रहा है। उत्तर के उप-पन्थियों ने इन कानूनों के आपनित्रक भागों का हवाला देकर यह मिथ्य करना चाहा कि दक्षिण दासता को पुनः स्थापित करना चाहता है।

युद्ध के कुपरिणाम

भीरे-भीरे उत्तर में बहुत से लोग ऐसा अनुभव करने लगे कि राष्ट्रपति का वर्तक बहुत नरम रहा है। उनकी महानुभूति कांग्रेस के उप-पन्थियों के साथ

बढ़ने लगी। इन लोगों ने मिलकर ज्ञानम के 'पीटो' की परवाह न करने हुए एक 'मिजिल राइट्स बिल' अप्रैल, १८६६ में और दूसरा 'फीडमेन्स ब्यूरो बिल' जुलाई, १८६६ में पास किया। इन दोनों का प्रयोजन यह था कि दक्षिण का विधानन किसी प्रकार के भेद-भावों को कानूनी शकल न दे सके। अन्त में कांग्रेस ने संविधान में चौदहवां संशोधन प्रस्तुत किया जिसमें कहा गया था : "संयुक्त राज्य में उत्पन्न अथवा नागरिक बने हुए और उसके शासनाधिकार के अधीन सभी लोग संयुक्त राज्य के और उसके अन्तर्गत उप राज्य के नागरिक होंगे जिसमें वे रहते हैं।" निस्सन्देह इसके अन्तर्गत नीग्रो लोगों को तुरन्त ही नागरिकता के अधिकार प्रदान कर देने की थी।

दूसरी को छोड़ कर सभी दक्षिणी राज्यों की विधान-सभाओं ने इस संशोधन को स्वीकार करने में इन्कार कर दिया। कुछ राज्यों ने तो इनको सर्वसम्मति में अस्वीकार कर दिया। इन कार्रवाई को उत्तर के कई वर्गों ने अपने इस विचार का पोषक समझा कि कठोर दण्ड दिया जाना अनिवार्य है और उत्तर को स्वतन्त्र हुए मनुष्यों के अधिकारों की रक्षा के लिए, हमसंशय करना चाहिए। कांग्रेस के उपपन्थी दक्षिण पर अपनी योजना बलपूर्वक लादने के लिए आगे बढ़ गए और उन्होंने मार्च, १८६७ में एक 'रिकॉन्स्ट्रक्शन ऐक्ट' पास किया जिससे दक्षिण में स्थापित नागरिक प्रशासनों की उपाशा की गयी। इस ऐक्ट के अनुसार दक्षिण को पांच जिलों में विभक्त करके उन्हें सैनिक प्रशासन में रखा गया। इसमें स्थायी सैनिक प्रशासन में बचने की राह भी सुझाई गयी, जिसके अनुसार स्थायी सैनिक शासन में वही कॉन्फेडरेट राज्य बच सकता था जिसकी जनता यूनिफन के प्रति निष्ठा की शपथ ले, जो चौदहवें संशोधन को स्वीकार करे और नीग्रो लोगों की मताधिकार दे। ऐसे राज्य अपने यहाँ नागरिक शासन स्थापित करके यूनिफन में पुनः प्रवेश कर सकते थे। जुलाई १८६८ में चौदहवां संशोधन स्वीकृत हो गया और अगले वर्ष कांग्रेस ने संविधान में पन्द्रहवां संशोधन पास किया जिसका उद्देश्य यह था कि किसी भावी कांग्रेस को भी दक्षिण के नीग्रो लोगों में मताधिकार कायम लेने का अधिकार न रहे। इस संशोधन का राज्यों की विधानसभाओं द्वारा १८७० में समर्थन किया गया। इसमें व्यवस्था की गयी कि "संयुक्त राज्य के नागरिकों के मतदान के अधिकार को, जाति, रंग या पूर्ववर्ती दासानुबन्ध के आधार पर, संयुक्त राज्य या उसके किसी राज्य द्वारा अपहृत या न्यून नहीं किया जा सकता।"



उत्तर और दक्षिण के बीच चलने वाली ४ वर्ष पुरानी लड़ाई को समाप्त करते हुए 'काफ्रे-इरेसी' के जनरल राबर्ट ई. ली ने एथीमाटोक्स कार्टे हाउस (वर्जिनिया) में ९ अप्रैल १८६५ को यूनिवर्सल सेनाओं के जनरल यूलियस ग्रांट के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।



अब्राहम लिंकन के व्यक्तित्व में जो आकर्षण था, मानवता के प्रति उनमें जो लगाव था और साथ ही नीति-निष्ठा के जो दुर्लभ गुण उनमें विद्यमान थे, उन सबसे प्रेरित होकर क्राइनिंग, नाटक, जीवन-परिचय आदि अनन्यतः साहित्यिक हस्तियों को रचना हुई। चित्र: अपने पुत्र टाड के साथ अब्राहम लिंकन।

कांग्रेस ने 'रिफॉर्मेशन ऐक्ट' को पास करने में जिन कारणों से असफल परिश्रम किया उनमें एक यह भी था कि इसने राष्ट्रपति जायन्त पराजित और अपमानित होगा था। तन्मूल: कांग्रेस जायन्त के इतने विरुद्ध थी कि अमेरिकी इतिहास में आज तक केवल उसी को प्रधान शासक के पद से हटाने की कार्रवाई आरम्भ की गयी थी। उसका एकमात्र अपराध यह था कि वह कांग्रेस की नीतियों का विरोधी था और उनकी कठोर भाषा में आलोचना करता था। उनके मन्त्र गुण पर यह सम्भीरन आक्षेप लगा सकते थे कि 'टैल्योर आब आफिस ऐक्ट' (कार्य-काल-विधायक कानून) के बावजूद उनमें अपने मन्त्रिमण्डल से कांग्रेस के एक दूध समर्थक को पृथक कर दिया था। परन्तु जब सेनेट ने महाभियोग-रोपण का मुकदमा आरम्भ किया तब यह सिद्ध हो गया कि युद्ध मन्त्री को अपने पद से हटाने में राष्ट्रपति ने अपने अधिकारों की सीमा का उल्लंघन नहीं किया था और हमने भी बहकर महत्कृत्यें बाल यह हुई कि यह बात प्रभावोत्पादक ढंग में बतायी गयी कि यदि कांग्रेस ने राष्ट्रपति को केवल इस कारण पद से हटा दिया कि उसका कांग्रेस के प्रबल बहुमत से मतभेद था तो एक भयंकर परम्परा का सूत्रपात हो जायगा। यह प्रयत्न असफल रहा और जायन्त अपने कार्यकाल के अन्त तक अपने पद पर प्रतिष्ठित रहा।

१८६८ की गणियों तक कांग्रेस राष्ट्रपति के विरोध के बावजूद 'रिफॉर्मेशन ऐक्ट' के अन्वयेन, आरेंग्याय, नोर्थ कैरोलाइना, साउथ कैरोलाइना, लुईजियाना जार्जिया, अल्बामा और फ्लोरिडा राज्यों को युनियन में पुनः सम्मिलित कर चुकी थी। उन सार्वी राज्यों का तत्प: शासन में किन्ता प्रतिनिधित्व था इसका अन्दाजा हमसे लयाया जा सकता है कि निर्वाचित मन्त्रों, कांग्रेस सदस्यों और सेनेटर्स में बहुसंख्या गुण उनकी व्यक्तिगतों की जो दो दो युद्ध के पश्चात् अपने राजनीतिक भाष्य को परीक्षा के लिए दक्षिण में लाये थे। लुईजियाना, साउथ कैरोलाइना और मिनिस्सो की विधान-सभाओं पर पूर्ण अधिकार नीधों लोगों का था। अन्य बड़े राज्यों में यद्यपि विधानसभाओं में उनका अल्पमत था तथापि मतदाताओं में उनकी प्रचलता थी। दक्षिणी विधानसभाओं में गौरे सदस्य संख्या में कम और विस्तर हुए थे, हमसंख्य ने सखीन सभाधिकार-प्राप्त नीधों लोगों और उत्तर-जालों का सङ्ग्र-धन निर्वाचन करने में असमर्थ थे। यद्यपि उन्होंने मङ्को और पुनों के निर्माण और विस्थापन तथा धर्मार्थ कार्यों के सम्बन्ध में अन्त कानून बनाने का काम हाथ में लिया तथापि नव मिनकर वे अवैध रहे और सार्वजनिक धन का आन्वय करने वाले सिद्ध हुए।

नियम होकर दक्षिणी गांधी ने समझ लिया कि उनकी पुरानी सभ्यता संकट में है और वे नए शासन को कानून द्वारा नहीं रोक सकते; अतः उन्होंने मेर-कानूनी उपायों का अवलम्बन आरम्भ कर दिया। समस्त बीतने के साथ-साथ बल का प्रयोग अधिक व्यापक होता गया और ज्यादाती और गडबडी को बड़का देखकर १८३० में कांग्रेस ने एक 'पुनर्घोषणापत्र ऐक्ट' पास किया जिसके अनुसार उन लोगों को कठोर दण्ड दिया जा सकता था जो किसी भी प्रकार से नीचो लोगों को उनके नागरिक अधिकारों में बाँट कराने का प्रयत्न करने थे।

ठोस कार्य का प्रारंभ

एक प्रकार के कानूनों की बढती हुई कठोरता और प्रत्येक राज्य के पुंजिम अधिकारों पर कांग्रेस के बढ़ते हुए हस्तक्षेप ने उनर के साथ दक्षिण का दिग्द मिलने की उम प्रक्रिया में बाधा डाल दी जो देश के प्रति सर्वसाधारण का प्रेम पुनः जाग्रत करने के लिए आवश्यक थी। दक्षिण के गाँव सामूहिक रूप में रिपब्लिकन पार्टी के बिरुद्ध हो गए। वे उन्गे नीचो लोगों को पार्टी कहने लगे और इसके फलस्वरूप दक्षिण में रेपब्लिकन पार्टी का जोर बढ गया। समय बीतने के साथ-साथ यह प्रयत्न होता गया कि कठोर कानूनों द्वारा और भूतपूर्व कॉन्फेडरेटों के प्रति अनवरत घृणा और ड्रप से दक्षिण की समस्या को मुदभाने में सफलता नहीं मिल रही है। इसलिए मई, १८३२ में कांग्रेस ने एक 'अनैस्टी ऐक्ट' पास किया जिसमें लगभग ५०० कॉन्फेडरेटों को छोड़कर सबको पूर्ण राजनीतिक अधिकार प्रदान कर दिए गए। केवल इन पांच मो को पदग्रहण और

मतदान के अधिकार में बाँट रखा गया। क्रमशः एक के बाद दूसरे राज्य ने रेपब्लिकन पार्टी वालों को पदों पर निर्वाचित कर दिया। १८३६ तक केवल तीन दक्षिणी राज्यों में रिपब्लिकन गठबन्ध रह गए। उम वषों का चुनाव अमेरिकी इतिहास में सबसे अधिक मुक्तवादे का और अत्यन्त गडबडी का था। उन्हीं स्पष्ट हो गया कि जब तक मेताप नहीं हटायी जायगी तब तक दक्षिण में शांति नहीं होगी। इसलिए अगले वर्ष राष्ट्रपति स्वरुपाई वी. हेड्र ने मेताप हटा ली और उन्हींवर्षों की पुनर्निर्माण नीति की अस्थापना स्वीकार कर ली। इस नीति को मुख्यतः इस कारण अपनाया गया था कि पार्टी के ब्रादरोंवादी जो नीचो लोगों की रक्षा करना चाहते थे और भौतिकवादी लोग दक्षिण पर चोटो, पदा और दक्षिण के लिए अधिकार रखना चाहते थे।

दक्षिण पर उन्हीं शासन का अन्त हो गया परन्तु दक्षिण अब तक युद्ध के विनाश में पीड़ित, कुपशासन द्वारा तिरा गए कर्षणों से दबा हुआ और वषों के ज़ानीय युद्ध के कारण नीति अन्त हुआ पाठा था। १८६५ में १८३० तक के 'मिथ्या' पुनर्निर्माण के ३० वर्षों के पश्चात् दक्षिण में निर्माण के सामूहिक प्रयत्न का आरम्भ हुआ। युद्धोत्तर अव्यवस्था के कारण हुई शानि की पुनि करना हृदयविदारक बर्तिकाई का कार्य था। मुदयुद्ध और बाद की कटुताएं अमेरिकी इतिहास की भारी दुःखान्त घटनाओं में से था। सब तो यह है कि युद्ध, उसके कारणों और युद्धोत्तर घटनाओं का अध्ययन करने में ही अमेरिकीय के उम महान् प्रयोग अर्थात् दक्षिणी मुक्तवादीय की व समस्याएँ भलीभाँति समझ में आ सकती है जा कि आज भी बिदभान है।

विस्तार और सुधार का युग

हम ऐसी प्रत्येक वस्तु की समाप्त कर देना चाहिए जो विशेषाधिकार जैसी जान पड़ती है।

—बुडरो विल्सन

कांग्रेस के नाम सन्देश, ८ अप्रैल, १९१३

दो

महायुद्धों—महायुद्ध तथा प्रथम विश्वयुद्ध—के बीच संयुक्त राज्य अमरीका बालिका हो गया। पन्द्रह साल के कम आयु में ही यह एक शायीण गणतन्त्र में एक महती राश्ट्र में बदल गया। सीमाना लुप्त हो गए। बड़े कारखाने और इस्पात की मिलें, महाद्वीप के आरपार रेल की लाइनें, समृद्ध नगर और विलुप्त खेत देश भर में फैले हुए थे। साथ-साथ इनके अनुजर्गी दोष भी आ गए थे: एकाधिकार पैदा होने लगा था, कारखानों में काम करने वालों की दशा दीन थी, नगर इतनी शीघ्रता से बनते थे कि वे अपनी बेग से बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए न तो समुचित आवास व्यवस्था कर पाते थे और न उन्हें व्यवस्थापित ही कर पाते थे।

कारखानों का उत्पादन कभी-कभी वास्तविक रूपतः अधिक हो जाता था। इन बुराइयों के विरुद्ध अमरीका की जनता में तथा क्लोबेल्ड, ब्रायन, थियोडोर रुजवेल्ट, विल्सन जैसे उसके नेताओं में प्रतिशक्ति हुई। जिन सुधारों का उन्होंने स्पष्ट रूप में प्रचार किया वे दार्शनिक दृष्टि से आदर्श भी थे और व्यावहारिक भी। वे यह सिद्धान्त मानकर चलते थे कि "जहाँ से दुराई आरम्भ होती है वहीं से कानून का भी शुरु होना चाहिए।" मज न तो यह है कि मुगल काल की सफलताओं ने विस्तार काज में पैदा हुए लोगों को रोकेने में बड़ी सहायता की। एक लेखक ने लिखा "गृह युद्ध ने देश के इतिहास पर एक महदा सकंदेश निधान डाला है; पिछले बीस या तीस वर्षों में जो परिवर्तन हमें म्यं थे उन्हें हमने एक हाथ में ही नाजनीय रूप में प्रदर्शित किया।" युद्ध की आवश्यकताओं ने उत्पादन को व्यापक प्रोत्साहन दिया और एक तेजी आर्थिक प्रक्रिया को गति प्रदान की जिसके आधारभूत स्वर थे, जोड़ा, भाग और बिजली का विदोहन तथा विज्ञान और आधिकार की प्रवृत्ति।

१८६० में पहले जो ३६,००० पेटेंट स्वीकार किए जा चुके थे। वे आधिकारों की भावी बाढ़ के अग्रदूत मात्र थे। १८६० से १८९० तक ४,४०,००० पेटेंट

जाते किए गए और बीवली शानी की पहली तिमाही में उसकी संख्या दस लाख तक पहुँच गयी। इस्पातको के सिद्धान्त ने जो बहुत पहले १८३१ में बनाया जा चुका था, १८८० के बाद अमरीकी जीवन में क्रांति ला दी जब कि टामस एडीसन तथा अन्य लोगों ने उसे व्यावहारिक रूप दिया। १८४३ में जब एक बी. मोंग ने बिजली को टेलीग्राफी को पूर्णतः उपयोगी बना दिया तो महाद्वीप के दूर-दूर के प्रदेश स्वर्णों और तारों द्वारा परस्पर सम्बद्ध हो गए। १८७६ में एलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने टेलीफोन स्वरूपा का प्रदर्शन किया और पचास वर्षों के भीतर १,६०,००,००० टेलीफोन राश्ट्र के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन को गतिशील बनाते लगे। १८६७ में टाइपराइटर, १८८८ में ग्राइम मशीन और १८९७ में कैश रजिस्टर के आविष्कारों ने व्यापार की गति को और भी तीव्र कर दिया। १८८६ में लाइनों टाइप कम्पोजिंग (टाइप जमाने की मशीन) मशीन, रोटीरी प्रेस तथा कागज मोड़ने वाले यन्त्रों द्वारा एक घण्टे में आठ पृष्ठ वाले समाचार-पत्र की २,४०,००० प्रतियाँ छापना सम्भव हुआ। १८८० के बाद एडिसन द्वारा आविष्कृत उद्योग दीप के लालों पर टूटने अड्डे, सुरक्षित और सस्ते प्रकार के जगमगा उड्डे, जैसा कभी देखा तक नहीं गया। बोल्डने की मशीन को भी एडिसन ने ही पुरा किया और उसने जार्ज ईस्टमैन के साथ मिलकर चलचित्र का विकास किया। इन सब और विज्ञान तथा मुक्त-बुद्धि के अन्य प्रयोगों के फलस्वरूप प्रायः सभी क्षेत्रों में उत्पादितता को एक नया स्तर प्राप्त हुआ।

साथ-साथ, राश्ट्र का आधारभूत उद्योग—जोड़ा और इस्पात—भारी लटक की संरक्षणता में बेग से विकास करता जा रहा था। पहले यह उद्योग पूर्वी राज्यों तक ही सीमित था क्योंकि वहाँ की भूमि में कच्चे लोहे का भण्डार था किन्तु, जैसे-जैसे भूगर्भशास्त्रियों ने यहाँ कच्चे लोहे के नए भण्डार खोज निकाले यह उद्योग पश्चिम की ओर विस्तार पाता गया। विनाय रूप से उल्लेखनीय है सुपीरियर झील की निकटस्थी मैसावी पर्वत-शृंखला जो थोड़े समय में ही विश्व

के विद्यालयम कच्चे लोहे के शंभों में से एक मिट्ट हूँ। वहाँ कच्चा लोहा धरती की तरह के ऊपर ही उपलब्ध था। उसकी खुदाई मुगम और मन्नी थी। उसमें असाधारण रासायनिक मिश्रण भी इनकी काम थी कि पहले उत्तम किस्म के एक टन इस्पात के उत्पादन पर तीन सौ टायर की लागत आनी थी किन्तु अब पैंनीय डालर आने लगी।

उद्योग का उत्तरोत्तर विकास

इस्पात उत्पादन में जो भी तरक्किया की गयीं उनका अधिकतर श्रेय एण्ड, कार्नेगी को है। वे उद्योग के इतिहास की एक महान् हस्ती बन गये वे १५ वर्ष की आयु में स्कॉटलैण्ड से अमेरिका आए थे और एक काइ के कारखाने में 'बाबिन-बाय' के काम के बाद उन्होंने टेलिग्राफ कार्यालय तथा पेंसिलवैनिया रेलवे लाइन के दफ्तर में बागी-बागी के काम किया। तीन वर्ष की आयु में पहुँचने के पहले ही उन्होंने अपना संचित धन बतुगई और दूरवाणिता के साथ व्यापार में लगा दिया, जो १८६५ तक मारा का मारा लोहा-उद्योग में केन्द्रित हो गया था। कुछ वर्षों में ही उन्होंने ऐसी कम्पनिया संगठित कर ली या उनमें हिस्सेदारी कर ली जो लोहे के पुल, रेल और टंकिन बनाने का काम करती थी। दस वर्ष बाद उन्होंने पेंसिलवैनिया में मोनाटागरीटा नदी के तट पर एक इस्पात मिल खड़ी की। यह उस समय देग की सबसे बड़ी इस्पात मिल मिट्ट हूँ। कार्नेगी का व्यापार उत्तरोत्तर बढ़ता गया। केवल नयी मिलों में ही नहीं, बल्कि काँक और कोयले की ज़ायदशतों, मुर्गीरियर भौल के कच्चे लोहे, घट लेक्स के गाम के एक स्टीमर-बोट, ऐरी भील के एक बन्दरगाह और उन्हें मिलाये वाली एक रेलवे लाइन का अधिकृत निरन्धण भी उनके हाथ में आ गया। उनका व्यवसाय एक दर्जन अन्य व्यवसायों में सम्बद्ध था। रेलों तथा जहाजी कम्पनियों में वे अनुकूल जहाँ पर ही निवेशन कर सकते थे, व्यवसाय के विस्तार के लिये उनके पास पर्याप्त पूंजी थी। मजदूर भी बहुतायत में उपलब्ध थे। अमेरिका में पहले ऐसा काम भी नहीं देखा गया जिसकी तुलना उस औद्योगिक विस्तार में की जा सके।

अनेक दुष्टियों में कार्नेगी की कथा अमरीका के बड़े व्यापार की कहानी है। उद्योग में हाताकि उत्पाद प्रथम बहूत समय तक रहा पर प्राकृतिक साधनों, परिवहन तथा इस्पात उत्पादन सम्बन्धी औद्योगिक साधनोंआ भी पर सम्पूर्ण तकथिकार करने में वह कभी सफल नहीं हुआ। १८५०-९० में कुछ नयी कम्पनिया बनी जिन्होंने

उनकी पूर्वं प्रभुता को चुनौती दी। होइ की बंद या कर पहले तो कार्नेगी ने नयी खानें खरीदने और ओषाकृत अधिक धनिकतायी व्यापार संगठित करने की धमकी दी किन्तु बुद्धावस्था एक बकित होने के कारण वह अन्ततः एक ऐसे प्रस्ताव पर विचार करने को राजी हो गए जिसके अनुसार उन्हें अपने लोहा की एक ऐसे संगठन में मिला देने को कहा गया था जिसमें लोहा और इस्पात के दुर्गम क्षेत्र भी शामिल थे।

'संयुक्तराज्य इस्पात कार्पोरेशन' ने जो इस सम्बन्ध के परिणामरूपण १९०१ में संगठित हुआ, एक ऐसी प्रक्रिया प्रस्तुत की जो तीन वर्ष में चली जा रही थी। यह की स्वतन्त्र उद्यमों का संघीय अथवा केन्द्रीय कम्पनियों में मगन। मृत्युद के समय आरम्भ होने वाला यह सब १८७० के बाद बड़े वेग से चला। व्यापारियों ने अनुभव किया कि यदि वे प्रतिस्पर्धी कर्मों का एक संगठित संस्था में ला सकें तो उत्पादन तथा बाजार दोनों पर उनका नियन्धण हो सकता है। इन व्यापक उद्यमों की पुति के लिए जो कार्पोरेशन और ट्रस्ट बनाए गए थे अनेक दुष्टियों में बड़ पमाने के व्यापारियों की संगठित करने के तर्कसंगत मंगलन थे। क्योंकि 'कार्पोरेशन' बनाकर बहुत अधिक पूंजी एकत्र की जा सकती थी। ऐसा लगाने वाले इस बात की जरूरत में उभरते और आकषित हुए कि वे उस व्यवस्था में शंकर और बाण खरीद कर मुनाफे कमा सकते थे। यदि व्यापार असफल भी हो जाय तो भी उनका लुकधान केवल लुगयी हुई शक तक ही सीमित रहेगा। उनके अतिरिक्त वे कार्पोरेशन, व्यापारिक उद्यमों को सम्पूर्ण जीवन तथा अगाधार नियन्धण की शकता प्रदान करने थे। ट्रस्ट (संघन) प्रस्तुत: कार्पोरेशन का एक ऐसा मंगल था जिसके द्वारा कार्पोरेशनों के यामोदार अपनी मोहर-पुत्री उन व्यामधारियों (दुष्टियों) के हाथ में गीर देने थे जो उन सभी कार्पोरेशनों के व्यापारों का प्रकप करने थे। दुष्टों के होने में विस्तृत मंगलन, केन्द्रीय नियन्धण और प्रदायन तथा पैटन्टा का एकत्रीकरण सम्भव हो सका। पूंजी के साधनों की बजह में उनके पास व्यापार प्रसार हो, विदेशी कम्पनियों में होइ लेने की और सबदुर्गों के साथ किलाने अब तक प्रयासवाण रूप में संगठित होना सम्भव कर दिया था, मन्त खरी करने की शकताएँ अधिक सामर्थ्य थी। वे रेलों में अनुकूल शर्तों की माग कर सकते थे और राजनीति पर भी अपना प्रभाव डाल सकते थे।

'स्टैण्डर्ड ड्रायल कार्पाटी' सबसे बहूत बने जाये अधिकतमो कार्पोरेशनों में से एक है। उनके पास विदेशी तेल, मीना, चीनी, लकडा और रबर के धान-

मार्गों में अनेक टुकड़ों और संगठनों की स्थापनाएं हुईं। बीठ व्यापारी, अपने निजी हितों के लिए उद्योग क्षेत्रों को हथियाने लगे। मांस के चार चोक व्यापारियों ने —जिनमें फिलिप आर्बर और गस्टेडस स्विफ्ट प्रमुख थे, एक बीफ-ट्रस्ट स्थापित किया। मेकॉमिक्स फसल काटने के यंत्रों के व्यापार में अग्रणी हो गया। इन प्रवृत्तियों की भलक १९०४ के एक सर्वेक्षण में स्पष्ट परिलक्षित हुई जिसने यह दिखा दिया कि पिछली पांच हजार स्वतंत्र कृषिनिर्माता आपस में मिल कर कोई तीन नौ औद्योगिक न्यायों में बचल गये।

अधुना क्षेत्रों में भी मुख्यतः संचार और परिवहन में सशुभ्रण की प्रवृत्ति देखने योग्य थी। बड़े संगठनों में सबसे पहली "वेस्टर्न यूनियन" थी। उसके बाद "बैल टेलीफोन सिस्टम" और अन्त में अमरीकी टेलीफोन एंड टेलीग्राफ कम्पनी बनी। कार्नीलियस वेण्डरबिल्ट ने पहले ही समझ लिया था कि रेल सेवा को कुशलता के लिए विभिन्न लाइनों का एकीकरण आवश्यक था। १८६०-६९ में उसने परस्पर तीन सौ मील दूर न्यूयार्क और बफैलो को जोड़ने वाली विभिन्न रेलवे लाइनों को मिलाकर एक अकेली लाइन बनायी और अगले दशक में उसने सिकागो और डेट्रायट के बीच लाइनें बिछाईं और "न्यूयार्क सेण्ट्रल-सिस्टम" का जन्म हुआ। संगठन के अनेक कार्य हो रहे थे और सीधे ही राष्ट्र के प्रमुख रेलमार्ग ऐसी "ट्रंक लाइनों" और "सिस्टमों" में संगठित हो गए जिसका निर्देशन मिर्क आर्थे दर्बेन व्यक्ति करते थे।

नगरों और समस्याओं में वृद्धि

गहर, दम नयी उद्योग-व्यवस्था के जेता-केन्द्र थे। इनकी प्राचीनों के अन्तर्गत अवाह प्लो-मचव, व्यापारिक तथा आर्थिक संस्थाएं, उत्तरोत्तर विस्तृत होते हुए रेलवेमार्ग, आभार कारखाने, मछुदरों और बाबूजों को कोइं आदि अनेक गतिशील आर्थिक शक्तिया उभर रही थी। देहातों तथा समुद्रपार से आने वाली जन-संख्या के साथ गांव कस्बों में और कस्बे नगरों में देखते-देखते बदलते गए। १८३० में पन्द्रह शक्तियों में से एक व्यक्ति ८००० या उससे ऊपर की संख्या वाले समुद्रायां में रहता था। १८६० में लगभग छः पीछे एक और १८९० में लगभग दस पीछे तीन। १८६० में किसी भी एक नगर की जनसंख्या १० लाख नहीं थी पर तीस वर्ष बाद न्यूयार्क की पन्द्रह लाख और सिकागो और फिलाडेल्फिया को दस-दस लाख से ऊपर थी। इन तीस वर्षों में फिलाडेल्फिया तथा बाल्टीमोर की जनसंख्याएं दुगनी हो गयीं, कैसास और डेट्रायट की चौगुनी,

क्लीवलैण्ड की छःगुनी और सिकागो की दस गुनी। मिनीपोलिस और ओमाहा जैसी अनेक बस्तियों को, जो गृहयुद्ध के आरम्भ में पुराने माण थीं, आबादी पचास गुनी या उससे अधिक बढ़ गयी।

यें विकास बड़े महत्वपूर्ण थे किन्तु उनके विषय में यह अनुमान अलीभांति नहीं लगाया जा सका कि राजनीतिक जीवन पर भी उनका इतना भारी प्रभाव पड़ेगा। यद्यपि अमरीकी जनता के सामने अगणित प्रश्न थे तो भी ईसा कि एक बमरीकी इतिहासकार ने लिखा है, "१८६५ से १८९७ तक संघीय कानून की पुस्तकों में ऐसे दो या तीन कानून ही जोड़े गए जो सम्बन्धित नागरिक का ध्यान राजनीतिक शक्ति के उन परिणामों की ओर आकर्षित करते थे जो मानवीय सम्बन्धों में आवश्यक पुनर्मगठन को अनिवार्य बना देते हैं।

१८८४ में, डेमोक्रेट, घोवर क्लीवलैण्ड राष्ट्रपति के पद पर चुने गए। युद्ध के बाद निर्बाचित होने वालों में वही एक ऐसे राष्ट्रपति थे जो उन परिवर्तनों का महत्व और एक समझने के जो देश का रूप बदलते जा रहे थे। उन्होंने उत्पन्न समस्याओं को मुलभूतता का प्रत्यक्ष किया। उदाहरण के लिए, रेलमार्गों में अनेक सुधारों की आवश्यकता थी। सबसे ज्यादा हानिकार था वह भेदभाव जो छोटे व्यापारियों के साथ करता जाता था याने बड़े-बड़े व्यापारियों को माल के किरायों में रियायत दी जाती थी। इसके अलावा कुछ रेलमार्गों पर, हूरी का स्थाल किए बिना मनमाने ढंग में किन्हीं व्यापारियों से कस और किन्हीं से ज्यादा भाड़ा वसूला जाता था। जिन नगरों के बीच कई रेलमार्ग होते थे उनमें किराए की दरें प्रतिस्पर्धा के कारण कम होती थीं पर जिन स्थानों के बीच एक ही लाइन होती थी उनके बीच भाड़े की दरें बहुत बढ़ जाती थीं। परिणामस्वरूप सिकागो से ८०० मील दूर न्यूयार्क को माल भेजने में, सिकागो के १०० मील पूर्व की ओर भेजने की तुलना में, कहीं कम भाड़ा लगता था। रेलों में भी हीअ ये बचने के लिए सम्मिलित योजनाएं अपनायी जा रही थीं। इसी प्रकार की योजना एक साथ मिलकर काम करने की थी जिसमें प्रतिस्पर्धी कम्पनियां पूरी बचत को एक करके पूर्ण स्वीकृत योजना के अनुसार आपस में बांट लेनी थीं। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, रेल व्यापार की इन कारंवाइयों के विरुद्ध जनता का जोश बढ़ता गया और राज्यों ने उनके नियमन के प्रयास किए। यद्यपि इनका कुछ हितकर परिणाम भी हुआ फिर भी यह समस्या देश भर की थी और इसीलिए कांग्रेस द्वारा कारंवाई आवश्यक थी। अन्तु, "एक्टरेस्टेड काममें एक्ट" (अन्तर्राज्य व्यापार कानून) बनाया गया जिस पर राष्ट्रपति क्लीव-

लैण्ड ने १८८७ में हस्ताक्षर किए। इसके द्वारा अत्यधिक दरों, पूल (एकषण), भारों में रियायतों और दरों में भेदभाव का निषेध हुआ और कानून के उल्लंघन की देख-रेख तथा रेलमार्गों की दरों और उसकी कारंवाइयों के नियन्त्रण के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय कामर्स कमीशन बनाया गया।

कलीवर्लेण्ड, चुंगी में सुधार करने के प्रबल समर्थक थे। चुंगी की ऊंची दरें आरम्भ में युद्ध की सफ़रकारीन आवश्यकता के रूप में निर्धारित की गयी थीं। किन्तु उन्होंने राष्ट्र की स्वामी नीति का रूप ले लिया था। कलीवर्लेण्ड उन्हें अनुचित मानते थे। उनके अनुसार बहुत कुछ उन्हीं की बजह में रहन-सहन के स्तर पर ब्रीक बढ़ने के साथ ही न्यायों की संख्या बढ़ी थी। वषों तक चुंगी को राजनीतिक समस्या के रूप में नहीं लिया गया। तो भी १८८० में डेमोक्रेटों ने "केवल राजस्व के लिए चुंगी" की मांग की थी। शीघ्र ही सुधार के लिए भी मांग होना जरूरी हो गया। कलीवर्लेण्ड ने, बाबरूद इस नेतावनी के कि इस क्रिफोटक विषय से बचा जाय, १८८७ में अपने वार्षिक संदेश में अमरीकी उद्योग की विदेशी प्रतिযোগिता से रक्षा के सिद्धान्त को जिस संशुद्धार हद तक महत्व दिया जाता था उसकी निन्दा करके राष्ट्र को अन्धधुंध में डाल दिया।

यही प्रथम आगामी राष्ट्रपति के चुनाव आन्दोलन का अगली मुद्रा बन गया और रिपब्लिकन उन्मीदवार बेंजामिन हैरियम दनी संरक्षण की धरणा के समर्थक होने के नाते विजयी हुए। उनके प्रधानमन्त्री उनके चुनावकार्यक्रम प्रतिज्ञाएँ पूरी करने के लिए नए कानून बनाने आरम्भ किए और "मैकिलले चुंगी बिल" १८९० में पास हुआ। इस कानून का उद्देश्य केवल जंगे हुए उद्योगों की रक्षा करना ही नहीं बरन् शिशु-उद्योगों को प्रोत्साहित करना और निषेधात्मक चुंगी लगाकर नए उद्योगों की मुक्ति करना भी था। आमजोर ने लगावों गयी चुंगी की ऊंची नयी दरें शीघ्र ही फुटकर बिक्री के वकन की ऊंची कीमतों के रूप में प्रकट हुईं जिनसे तुरन्त ही व्यापक असन्तोष फैल गया।

इस अवधि में जनता को दरदों की अधिकाधिक चिन्ता थी। १८८०-१८८९ में हैररी जार्ज और ऐडवर्ड बेल्गाम जेम्स मुषारकों की तीव्र आलोचनाओं के सहते-सहते अब बड़े-बड़े कार्पोरेशन केवल विरोध के लक्ष्य ही नहीं बल्कि राजनीतिक मसलें भी बन चुके थे। १८९० में, दोस्मन-गण्टी-ट्रस्ट-ऐक्ट पास हो गया। इसका प्रथम उद्देश्य था एकाधिकारों को तोड़ना। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को रोकने वाले समस्त गडबधनों का निषेध हुआ और दूने लागू करने के लिए अनेक प्रणालियाँ अपनायी गयीं, जिनमें नियमोन्लघन के लिए कई दण्डों की आवश्यकता

थी थी। पास होने के तुरन्त बाद ही इस कानून का कोई विधांष फल नहीं हुआ क्योंकि वह माधारण और अनिश्चिन घोषों में लिखा हुआ था। किन्तु दस वर्ष बाद पियोडोर रूजवेल्ट के शासन ने इसका सफल प्रयोग करके राष्ट्रपति को 'न्यास-ध्वंसक' होने की ख्याति दिलायी।

इन प्रमुख प्रवृत्तियों के बावजूद गृहयुद्ध के अन्त से लेकर नयी शताब्दी के प्रारम्भ तक राजनीतिक स्थिति प्रायः नकारात्मक रही रही। इन वर्षों में अमरीकी जनता की शक्ति क्षीण हुई और लगी रही; जिसके प्रभाव कदाचित् पश्चिम के इतिहास में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुए। १८६५ में, मीमान्त रेखा आमतौर से मिशिगिपी नदी के तटवर्ती राज्यों की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ मानी जाती थी और केवल कनासा तथा नेब्रास्का के पूर्वी भागों को शामिल करने के लिए बाहर की ओर फैलकर पुरः मुड़ आती थी। इन अग्रणी किसानों के क्रूर प्रदेशों के पतले किनारे के पीछे अब भी बहुत-नी अनबगी जमीन पड़ी थी जिनके आगे बहुत-से खुले और बिना बाड़ के धाम के मैदान व जंगल बलकर उन 'मेजबूब' मैदानों में मिल जाते थे जो "गोकोर" नामक पर्वत-शृंखलाओं की शिरा-पीठ तक पहुँचते थे। जहाँ से लगभग एक हजार मील तक उन पर्वतमालाओं का विस्तार था जिनमें से बहुतों में चांदी, मोना और अन्य बहुमूल्य धातुओं का भण्डार था। प्रधान महासागर की ओर जंगलों से आच्छादित किनारे की पहाड़ियों और समुद्र तट तक नए मैदान और मरुस्थल फैले हुए थे। कॅलीफोर्निया के बसे हुए जिलों और कुछ विचरो हुई बस्तियों को छोड़कर इस विस्तृत प्रदेश में केवल आदिवासी (इण्डियन) ही आबाद थे।

पश्चिम में अवसरों की उपलब्धि

फिर भी, कोई पश्चिमी वर्षों के बाद वस्तुतः गारा देग राज्यों और राज्य क्षेत्रों में अँकित हो गया था। दरुं आबाद करने के कार्य को १८६२ के "होमस्टेट ऐक्ट" से गति मिली। इस कानून के अनुसार जो नागरिक किसी धरती पर बस कर उसे सुधारने का वकन देता था उसे १६० एकड़ भूमि निःशुल्क दी जाती थी। अतः १८८० तक लगभग पांच करोड़ ६० लाख एकड़ भूमि व्यक्तियों की निजी संपत्ति बन गयी। आदिवासीयों (इण्डियनों) के साथ भलाइ बन्द हो गए थे। स्विक लोग स्थान-स्थान पर सुरंग बनाते हुए समस्त पहाड़ी प्रदेश घास चूरे थे। उन्होंने वेवाडा, मोंटाणा और कॅलोरोडों में छोटी-छोटी बस्तियाँ बसा ली थी। पशु-पालकों ने विस्तृत नरागाहों से लाभ

उत्तारक टैंकमम से लेकर मिथूरी नदी के उत्तर के लम्बे-चोड़े प्रदेश पर अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया था। भेड़ पालने वाले भी घाटियों और पहाड़ी ढालों तक फँस गए थे। किसानों के दल मैदानों और घाटियों में छा गए जिससे पूर्वी और पश्चिम के बीच की दरार भर गयी। १८१० तक, मोमान् लयाब हो गया और बीच-बीच में पहले जहाँ जंगली भेड़ें घूमने-फिरने के वहाँ पचास-साठ लाख नर-नारी खेती करने लगे।

बर्मिन्गहम बसाने के कार्य में रेलें महायुक्त मिश्र हो रही थी। १८६२ में कार्पेस ने युनियन पेंसिल्वेनिया रेलवेज को एक अधिकार-पत्र दिया जिसके अनुसार कम्पनी ने काउन्सिल ब्ल्याम् (आइओवा) के पश्चिम में रेल की पटरियाँ बिछायी। इसी समय मेन्ट्रुप पेंसिल्वेनिया रेलवे कम्पनी ने मैसाचुसेट्स (कैलीफोर्निया) में पूर्वी एक अतिरिक्त संगम की दिशा में पटरियाँ बिछाना आरम्भ किया। ये दोनों लाइनें एक-दूसरे की ओर मजबूती से बढ़ती गयीं और अंत में १० मई, १८६९ को 'यूटाह' में पार्सेटरी पौष्टक पर जा मिलीं। सारे देस में हलचल बड़ गयी। एट्लान्टिक और पेंसिल्वेनिया महासागरी के बीच की एक गहरी की कटिन यात्रा अब केवल उस अवधि का एक श्रेय मान रह गई। महाद्वीप में रेलों का जाल दुबना से फैलता गया। १८८४ में तार बड़ी लाइनों ने केंद्रीय-मिग्निसियोपाटो प्रदेश को प्रधान महासागर से मिला दिया।

यूट्र पश्चिम में आबादी के लिए पहाड़ बहा दौर पहाड़ी प्रदेशों में हुआ। मोना सुबसे पहले १८४८ में कैलीफोर्निया में पाया गया, इसके दस साल बाद, कोन्टाराटो में, १८६०-६६ में मोन्टाना और कार्पासिया में और १८७०-७६ में इकोटा प्रदेश की अर्कहिल्ल में पाया गया। इन सभी जेबों के विकास में खनिजों ने ही पहल की। उन्होंने बस्निया बरगो और ओन्डोपुन अथवा स्थायी बस्निया की नीचे डायी। ये लोग जब पहाड़ों में लुहारी कर रहे थे तब कुछ निवासियों का ध्यान इस प्रदेश में खनी और पशुपालन की सम्भावनाओं की ओर गया। कुछ समुदाय पूरी तरह खनन कार्य में ही मूट रहे। लेकिन मोन्टाना, कोन्टाराटो, कार्पासिया और आइडाहो की सन्धी समुदाय कैलीफोर्निया की भाँति बहा की पास और परती में ही निहिन मिश्र हुई।

पशुपालन, टैंकमम का एक महत्वपूर्ण उद्योग रहा था। यूट्र के पश्चात वहाँ के उद्योगी लोग अपने लम्बे मैदानों वाले पशुओं को हासिले हुए बिना बाड़े के प्रदेशों के शर उत्तर की ओर बल दिए। राह में पड़ने वाले मैदानों में बरने हुए ये पशु वाता के आरम्भ के समय की अपेक्षा कहीं अधिक तगड़े और मोटे हो

गए थे। यह 'लम्बी हाक' के नाम से प्रसिद्ध हुई और सीध ही एक नियमित घटना बन गयी। उत्तर की ओर जाने वाले पशुसमूह के खुरों से सँकड़ों मोल तक का मार्ग अंकित हो गया। पशुपालन का व्यापार सीध ही मिथूरी पार के प्रदेशों में फैल गया और कोन्टाराटो, कार्पासिया, कैन्सास, नैब्रास्का और इकोटा के प्रदेशों में बहुत बड़े-बड़े बाड़े (पशुशालाएँ) बन गए। पश्चिम के नगर धाम के व्यापार-केन्द्रों के रूप में फलने-फूलने लगे।

इन बाड़ों के जीवन में रहन-सहन का एक नया स्वकाम सामने आया जिसका प्रमुख प्रतीक 'काउट बोय' व उसका गृहस्थिक जीवन है। अमरीका के पश्चीम में राउपुति चियोडॉर क्लरेन्ट ने इकोटा के अपने निजी अनुभवों के सम्मरणों में लिखा है, "...घोड़े और राक्षक के साथ हम स्वच्छन्द और परिश्रमी जीवन बिताते थे। मध्य शीत में जब मैदान क्लिबलानी हुईं धूप में नपने और भूलसते होते थे तब हम काम करते थे; और गर्दकाल में जब बर्फ देस में गिरती तब हम रात को घोड़ों पर सवार होकर अपने दोंगों की चौकमी करते हुए खून जमा देने वाली टण्डकी यानताओं का अनुभव करते थे।... फिर भी, हम अपनी रंगों में परिश्रमी और कठोर जीवन की धक्कनों का अनुभव करते थे। अपने काम पर हमें गौरव था और वही हमारे जीवन का सुख था।"

१८६६ और १८८८ के बीच टैंकमम से लगभग साठ लाख पशु कोन्टाराटो, कार्पासिया और मोन्टाना के जँबे मैदानों की ओर हाक कर ले जाए गए। वस्तुतः १८८५ में पशुपालन का व्यापार अपने सर्वोच्च निखर पर पहुँचा। इस समय तक यह श्रेय इतना पारसूरीकृत हो चुका था कि बड़े पैमाने पर पशुओं के चराने के स्थल लगभग नहीं के बराबर रह गए थे। इमने अलावा रेलों का जाल भी यहीं विस्तार पाता जा रहा था। धाम के मैदानों को खेतों में बदलने वाले किसानों की 'बू चर-परर करती हुई गाड़ियाँ (स्कूमर) भी पशुपालकों में अधिक पीछे न थी। वे अपने साथ महिलाओं व बच्चों के अलावा घोड़े, गायें और मुजर भी लाए।

होम्स्टेड ऐक्ट के अनुसार उन्होंने कटौती तारों में जमीनों घेर कर उन पर अपना कच्चा जमा लिया और उन पशुपालकों को बाहर निकाल दिया जो गैरकानूनी तरीके से उन जमीनों पर बाड़े बनाए हुए थे। १८८६ और १८८७ की अर्थकर सर्दी ने खुले मैदानों में रहने वाले पशुओं को नष्ट कर दिया। और इस तरह पश्चिम के रोमानी जंगली लघां में स्थायी बस्नियाँ और गेहूँ, मक्का व जई की खेती के लिए मार्ग खल गया।

१९ वीं शताब्दी के आठवें दशक में, राफ़ी पर्वतों में खानों की खोज में आकृष्ट हो हजारों अफ़ग़ानों ने पश्चिम की ओर यात्रा की। चित्र : लेडबिल (कोलोराडो) नामक खानों के नगर की ओर जाता हुआ अफ़ग़ानों का एक कार्गिल लट्टों से बनी एक खतरनाक सड़क को पार कर रहा है।



विज्ञान और मशीनों द्वारा किसानों की सहायता

सारे देश की भाति पश्चिम में भी खेती ही बुनियादी उद्योग था। हालाँकि दूसरे उद्योगों के लिए भी वड़े प्रयत्न किए जा रहे थे फिर भी ज्यादातर लोग किसानों ही करते थे। लड़ाई के बाद के दस वर्षों में ज़िम प्रकार क्लु-निगमना उद्योग ने बिजान किया था उसी प्रकार कृषि में भी क्रांति हो रही थी। इसके फलस्वरूप हाथ की खेती, यन्त्रों की खेती में और भाग्य व्यवस्था वाले अनाजों की खेती व्यापारिक यन्त्रों की खेती में बदल गयी। १८६० में १९१० तक के पचास वर्षों में अमरीका में फार्मों की संख्या निम्नो हो गयी गाने २० लाख से बढ़कर ६० लाख हो गयी; उनका क्षेत्रफल भी दुगुने से अधिक गाने ८० करोड़ की जगह ८८ करोड़ एकड़ हो गया। गेहूँ की उपज १३ करोड़ ३० लाख बुशल (१ बुशल...६० पीण्ड) से बढ़कर ६३ करोड़ ५० लाख बुशल हो गयी। मक्का का उत्पादन ८३ करोड़ ८० लाख बुशल से बढ़ कर २८८ करोड़ ६० लाख बुशल और रूई का ३८ लाख ४१ हजार गाटों से बढ़कर १ करोड़ १६ लाख ९ हजार गाट हो गया। १८६० के बाद के तीस वर्षों में जिनकी भूमि खेती योग्य बनायी गयी उसकी अमरीका के इतिहास में कभी भी नहीं बतायी गयी। इसी काल में राष्ट्र की जनसंख्या दुगुनी से अधिक हो गयी। अधिकतर वृद्धि नगरों में हुई परन्तु अमरीकी किसान भी इतनी पर्याप्त मात्रा में अनाज, रूई, ऊत, मांस आदि का उत्पादन करने लगा था कि अमरीकी लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होने के साथ ही उनका निर्यात भी किया जाने लगा।

पश्चिम की ओर आबादी का विस्तार इस असाधारण सफलता पर बहुत कुछ प्रकाश डालता है। दूसरा तथ्य था खेती के फार्मों में यन्त्रों और विज्ञान का प्रयोग। सन् १८०० में किसान हँसिए से एक दिन में आधा एकड़ गेहूँ काटने की आशा कर सकता था। तीस साल बाद 'कैंडिल' की सहायता से वह दिन भर में दो एकड़ काट सकता था। पर १८४० में साधारण मैकामिक ने पाँच या छे एकड़ की कटाई करने वाली चमत्कारी मशीन ईजाद की, वह दस मशीन के विकास पर दस वर्षों से काम कर रहा था। दूरदर्शी यह था ही, इसलिए पश्चिम की ओर बड़ा और शिकागो पहुँच कर उसने एक 'रीपर' (कटाई की मशीन) बनाने का कारखाना खोला। १८६० तक उसने डेढ़ लाख 'रीपर' बेच लिए।

एक के बाद दूसरी कृषि मशीनें ईजाद होनी गयी जिनमें बुआई से लेकर कटाई और सम्भाल करने वाले तरह-तह के यन्त्र शामिल थे। ये मशीनें खेती के हर काम में किसान का हाथ बंटाने लगीं। अनाज बोने, काटने, दाने

को भूसे से अलग करने, छिलका उतारने, दूध से क्रीम निकालने, खाद फैलाने, आलू बोने, घास सुखाने, अण्डे सेने और सँकड़ों अन्य काम करने वाली मशीनों के आधिकारों ने किसान की मेहनत हलकी करने के साथ ही उनकी धमता बढ़ा दी। इन मशीनों का अधिकतर उपयोग पश्चिम में ही हुआ। पूरब में खेत छोटे थे और उनकी खेती इतनी विविध प्रकार की थी इसलिए उनमें इतनी महंगी मशीनों का लभया जाना उपयोगी नहीं था। दक्षिणी प्रदेशों में होने वाली कपास और तम्बाकू की खेती भी अपने को इतनी जल्दी दस मशीनों के उपयोग के अनुकूल नहीं बना सकी।

इस कृषि-क्रांति में विज्ञान का महत्व भी यन्त्रों की तुलना में कम न था। १८६२ में मौरिल लैण्ड-घाण्ट कॉलेज गेकट पाम होने के पश्चात कांसभ ने प्रत्येक राज्य की खेती और उद्योग के विद्यालयों की स्थापना के लिए भूमि अनुदान में दी गयी। ये विद्यालय कृषि सम्बन्धी प्रशिक्षण केन्द्र के अनुरिकत कृषि अनुसन्धान केन्द्र भी थे। इसके बाद कांसभ ने देश भर में कृषि-प्रशिक्षण-केन्द्र खोलने तथा अन्य प्रकार के अनुसन्धानों के लिए कृषि-विभाग को बहूना-धन दिया। नयी यन्त्राव्यो के आरम्भ में देश भर में वैज्ञानिक लोग कृषि अनुसन्धान कार्य में जुट हुए थे।

कृषि विभाग की ओर से मार्क कार्वेण्ट नामक एक वैज्ञानिक रूप गया। वहाँ उसने गेहूँ के पीधे की वह किस्म पायी जिस पर 'रतुअ' रोग व मूख का कोई अरर न होता था और जो जाड़े से नँवार होता था। वह उत गेहूँ के बीज अमरीका लाया। आज आधे से अधिक अमरीका में उसी किस्म के गेहूँ की खेती होती है। अन्य तत्कालीन कृषि-वैज्ञानिक भी किसी से पीछे नहीं रहे। मरियन डारसेट ने सुअरों में फैलने वाले भीषण कालरा रोग का इलाज खोज निकाला। जार्ज विले ने मूख और सुँरों के मक्कम रोग का निदान वृद्ध निकाला। एक अन्वेषक उत्तरी अफ्रीका से 'कैंफिर' नामक मक्कम की पीध लाया। एक दूसरे ने तुर्किस्तान से पीले फूलों वाली एल्फा-एल्फा का आयात किया। लूबर बरबेक ने कैलीफोर्निया में बीमों तप फल और सन्जिया उगायी। विस्कामिन में म्पिफन बैबकाक ने एक ऐसा यन्त्र बनाया जिससे दूध में निहित मक्कम के अनुपात का पता लगाया जा सकता था, अलबामा के टस्केजी इन्स्टीट्यूट में महान नीयो वैज्ञानिक जार्ज वासिगटन कार्वर ने मूणफली, शकरकंद और सोयाबीन के सँकड़ों तप उपयोग निकाले।

इन सब प्रगतिधों के बावजूद अमरीकी किसानों ने १९वीं शताब्दी में लगातार दुल्हू कठिनाइयों का सामना किया। व्यापक कृषि प्रसार की इस शताब्दी के

अन्त में किसान की बुनियादी कारण उसकी एक बड़ी समस्या बन गयी। इसके अनेक और बुनियादी कारण थे: भूमि की उर्वरता का ह्रास, ऋतु की अविषयमानीयता, प्रमुख फसलों (कपास, जूट आदि) का अत्यधिक उत्पादन, आत्मनिर्भरता की कमी और कानून द्वारा पधोन संरक्षण तथा सहायता का अभाव। दक्षिण की भूमि को लगातार तम्बाकू और कपास की खेती ने अनुर्वंग कर डाला था, और पश्चिम और मॉन्टाना में भी, जमीन को कटाव, तूफानों तथा कीड़ों ने हानि पहुँच रही थी।

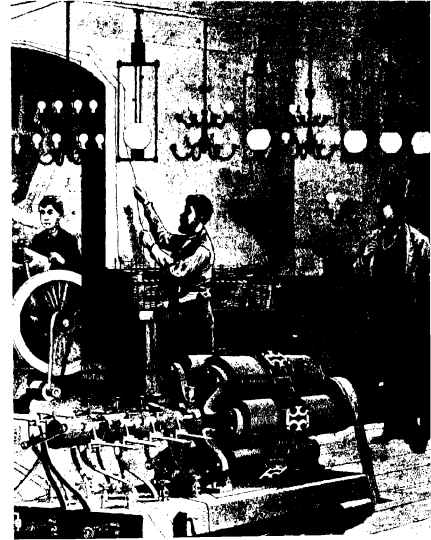
किसानों द्वारा दिक्कतों का सामना

मिसिसिपी नदी के पश्चिम में खेती का द्रुत मशीनीकरण केवल लाभदायक ही मिट नहीं हुआ, इससे प्रोत्साहित होकर बहुत से किसानों ने अपनी खेती का बिना समझ-बूझ के विस्तार भी किया, इससे प्रमुख फसलों (जूट व कपास आदि) पर विशेष रूप से ध्यान देने की प्रवृत्ति को आशवासन मिला, इससे बड़े किसानों को छोटे किसानों की तुलना में बहुत लाभ हुआ, खेत काश्तकारों को किराए पर दिए जाने लगे। बड़े पैमाने पर खेती की जाने लगी। यह सारी समस्याएँ तब तक उलझी ही बनी रहीं जब तक कि भूमि-संरक्षण की आधुनिक तरकीबें नहीं अपना ली गयीं।

इसमें भी जटिल किन्तु मुश्किल से मुक्त करने वाली समस्या कीमतों की थी। किसान को अपनी उपज होड़ से अंतर्देशीय विश्व-बाजारों में बेचनी पड़नी थी जबकि उसे आवश्यकता की वस्तुएँ, उपकरण और परेस चीजें सर्रास बाजार में खरीदनी पड़नी थी। उसे अपने गूँठे, कई अभाव मांस आदि का जो मूल्य प्राप्त होता था उसका विषेय विदेशों में होता था परन्तु वह अपने यांत्रिक हथौड़े, खाद या कटोले तारों का जो मूल्य देता था उसका निरपेय उन दरदरों द्वारा होता था जो चीनी कानूनों के संरक्षण में बँट रहे थे। १८७०-९० के बीच बहुत-सी कृषि वस्तुओं की कीमतें अतिर्यामित रूप में गिरनी चली गयीं और अमरीका के कृषि-उत्पादन का मूल्य केवल पचास करोड़ डॉलर तक ही बढ़ा। किन्तु इस अवधि में वस्तुओं का उत्पादन ६ अरब डॉलर तक बढ़ गया।

इस आर्थिक असन्तुलन के फलस्वरूप समाज दिक्कतों पर विचार करने और उनका समाधान करने के लिए किसानों के संगठन बने। ये संगठन अधिकतर १८६७ में स्थापित 'ग्रैंज' (चीफाल) के नमूने के थे। कुछ ही वर्षों में प्रायः हर राज्य में ग्रैंज बन चुके थे और उनकी मदद समस्या गाड़े गाल लाभ से अधिक हो गयी थी। पहले-पहल ये संगठन मुख्यतः सामाजिक थे और किसानों

१९ वीं शताब्दी के नवें दशक का एक विद्युत-प्रकाश संयंत्र। एडिसन के नवविद्युतित उत्पाद-दीप से अमरीकी रहन-सहन का स्वरूप बदल रहा था क्योंकि बिजली का उपयोग घरों, सड़कों और सार्वजनिक भवनों की प्रकाश-व्यवस्था में किया जाने लगा था।



का एकाकीपन दूर करने के लिए बनाए गए थे। जैसा कि स्वाभाविक ही है, उसके सदस्य आगे चलकर व्यापार और राजनीति पर भी विचार विनिमय करने लगे। बाजनिन के बाद काम की बारी आयी और शीघ्र ही इन 'पेंजों' ने सहकारी हाट-आवरथा, सहकारी दुकानें और सहकारी कारखाने स्थापित किए। मध्य पश्चिम के कई राज्यों में उन्होंने विधान सभा के सदस्य चुने और रेलों और गंगादीनों के नियन्त्रण-सम्बन्धी कानून पास कराए। 'यंग-सदस्यों' के अनेक व्यापारिक प्रयत्न सफल रहे। फिर भी उसी जमाने में सन् १८७० के दशक के अन्तिम वर्षों में फार्म पुनः समृद्ध हुए। फलतः 'पेंजों' का महत्व घट गया। पर जो आन्दोलन इन्होंने आरम्भ किया था वह दाताब्दी के आठवें दशक के अन्त और नवें दशक के प्रारम्भ में किसान संगठनों के रूप में विकसित हुआ। एक बार फिर कठिन समय आया। मंदानों में सूखा पड़ गया और गेहूँ तथा चने के भाव गिर गए। इनसे पुनर्जीवित होकर किसान-संगठन-आन्दोलन ने द्रुत गति से जोर पकड़ा और १८९० तक इसके लगभग २० लाख सदस्य हो गए। व्यापक वैश्वीयक कार्यक्रम के अतिरिक्त राजनीतिक मुद्दों की माँगों पैदा की गयीं। शीघ्र ही ये किसान-संगठन माहुरी राजनीतिक दल में परिवर्तित हो गए जो 'पापुलिस्ट्स' के नाम से प्रसिद्ध हुए। 'पापुलिस्ट' लोगों ने पुराने रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक दलों का सबल विरोध किया।

“पापुलिस्टों” ने सुगम द्रव्य की पैरवी की

अमरीकी राजनीति में पापुलिस्ट आन्दोलन जैसा अन्य कोई आन्दोलन कभी नहीं हुआ। यह मंदानों और कनास के क्षेत्रों में फैल गया। दिन भर क्षेत्रों में पैरवीना बहा कर काम को अपनी शक्तियों जोड़कर किसान अपने बाल-बच्चों के साथ मॉर्टिग-हाउसों में जाते और ताकिया बजाकर अपने नेताओं के जोशीले भाषणों का अनुमोदन करते। १८९० के चुनाव में यह नयी पार्टी दक्षिण और पश्चिम के बारह राज्यों में बहुमत से जीती और इसने कोई भी व्यक्ति सेनेट और प्रतिनिधि सभा में भेजे। इस सफलता से प्रेरणाहित होकर 'पापुलिस्टों' ने व्यापक मुद्दों की मांग की जिनमें आय-कर, किसानों के लिए तकावी, ऋण की राष्ट्रीय व्यवस्था, रेलों पर सरकारी अधिकार, श्रमिकों के लिए सिर्फ आठ घण्टे का कार्य दिवस और यथेष्ट मात्रा में चांदी के सिक्के इत्यादि कर मुद्रा संचार में वृद्धि की माँगें शामिल थीं।

१८९० के चुनाव में 'पापुलिस्टों' ने दक्षिण तथा पश्चिम में अपना अच्छा

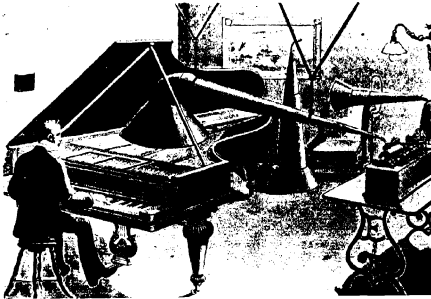
प्रभाव प्रदर्शित किया। राष्ट्रपति पद के लिए इनके उम्मीदवार को दस लाख से अधिक वोट प्राप्त हुए पर जीत डेमोक्रेटिक उम्मीदवार घोवर क्लीवलैण्ड की हुई। चार वर्ष बाद शक्तिशाली 'पापुलिस्ट' प्रायः सर्वत्र डेमोक्रेटिक दल के साथ मिल गए। 'पापुलिस्टों' के दबाव में आकर नए डेमोक्रेटिक नेता मुद्रा के प्रश्न को प्रधान राजनीतिक प्रश्न बनाने की तैयारी करने लगे।

संयुक्त राज्य अमरीका में उसकी स्थापना काल से ही मुद्रा केवल दो धातुओं की बनायी जाती थी अर्थात् स्वर्ण और चांदी की सोना-चांदी आया सरकार उसको डालरो में डालने को तैयार रहती थी। १८७३ में कांग्रेस ने अपनी मुद्रा प्रणाली का पुनर्गठन किया और अन्य धातुओं के साथ उसने चांदी के डालरो को अधिकृत घरेलू सिक्कों में से निकाल दिया। चांदी उन मध्य मुलुक्त न थी इसलिए इस कानून की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। सब तो यह है, पिछले बार्थीस वर्षों से चांदी का कोई सिक्का चल ही नहीं रहा था। स्थिति ने पलटा लिया। पश्चिम के पहाड़ी राज्यों में चांदी की मांग मिल गयी। साथ ही, कई यूरोपीय देशों ने चांदी के सिक्कों का चलन भी बन्द कर दिया। सहसा भारी मात्रा में चांदी उपलब्ध होने लगी।

देश अनेक सकटों में गुजर रहा था। दक्षिण और पश्चिम के कृषक नेताओं ने चालू मुद्रा की कमी को अपनी कठिनाइयों का आधार मानकर पूर्वी उद्योग केन्द्रों के श्रमिक समूहों की सहायता से मांग की कि चांदी के सिक्के पूर्ववत् असीमित मात्रा में डाले जाय। यह तर्क भी पेश किया गया कि इस प्रकार ऋणी अपना ऋण आसानी से चुका सकेंगे। दूररी और कन्जर्वेटिव (सनातनी) लोगों का विचार यह था कि ऐसी वित्तीय नीति विनाशकारी सिद्ध होगी। मुद्रास्फीति का दौर यदि शुरू हो गया तो रोकना न जा सकेगा। सरकार विवाश्या हो जाएगी। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सिक्के सोने के ही बनाए जाएं, स्थायित्व उसी में है।

१८९६ में, चांदी-समर्थकों—डेमोक्रेटों और 'पापुलिस्टों' को—राष्ट्रपति के पद के चुनाव के लिए अपना उम्मीदवार मिल गया। वह था नेब्रास्का का एक नेता विलियम जेनिंस ब्रायन। दार्शनिक व्यक्तित्व और सम्मोहनी डाल देने वाला कुबाल बक्ता होने के कारण वह मुरन्त ही लाखों को अपना भक्त बना लेता था। परन्तु उसके दल में फूट थी और उसके विरोधी शक्तिशाली थे, केवल एक ही बात में डेमोक्रेट लाभ में थे और वह थी स्वयं ब्रायन का उनके साथ होना। लेकिन इतना ही काफी न था। चुनाव में विलियम मैकिनले की पांच लाख से

इंग्लैण्ड में आविष्कृत इस्पात बनाने की बेसेमर विधि को अमरीका में श्यापक रूप से अपनाया गया। यह विधि उत कच्चे-लोह के लिए विशेष रूप से उपयुक्त थी जो लेक नुपोरियर के पास मैसाचु के पहाड़ी इलाके में बहुतयत्न से पाया जाता था।



प्यानी-संगीत के फीनोड्राफ रिकार्ड भरने का यह उपकरण १८९० के आसपास इस्तेमाल में लाया जाता था। यह एक ऐसे यन्त्र से विकसित किया गया था जिसमें त्राप से घूमनेवाला टोन की पत्ती का एक सिलिण्डर था। इसका आविष्कार इस वर्ष पहले एंड्रसन ने किया था।

थ्यादा बोटीं से जीत हुई। फिर भी, ब्राउन का आन्दोलन एक कहानी के रूप में जीवित रहा। उसकी मुद्रा-सम्बन्धी नीति को छोड़कर पापुलिस्टों और प्राणीय डेमोक्रेटों के सभी मुभाव बाढ़ में कानून बन गए।

इस आन्दोलन से इस बात का आश्चर्यजनक प्रमाण मिला कि राज्यों में म्यूचुअल के पञ्चमू संधि चिन्ता मजबूत हुआ था। यद्यपि फिनान्तों की शिकायतें गुलाम रखने वाली की शिकायतों से किसी प्रकार कम नहीं थीं तो भी निषेध अथवा संधि से अलग होने की बात किसी ने भी नहीं की। यह राष्ट्रीय एकाता १८९८ में देहा पर आ पड़ने वाली स्पेन से लड़ाई के दौरान में स्पष्टतः उद्भूतमिल हुई। शताब्दी के आरम्भ में पश्चिमी गोलार्ध स्थित स्पेन के बड़े उपनिवेशों ने जो विद्रोह किया था उससे स्पेन ने कुछ भी सबक नहीं लिया था। उसने अपना तानाशाही शासन ब्यूबा द्वीप पर बनाए रखा जिसका समुक्त राज्य अमरीका के साथ व्यापार बढ़ रहा था। १८९५ में ब्यूबा निवासियों की मुलमती हुई कोषार्थिन स्वाधीनता संग्राम के रूप में प्रज्वलित हुई उठी। अमरीका में इस विद्रोह की प्रगति बड़ी चिन्ता के साथ परखी गयी क्योंकि नैटिज अमरीकी देशों के स्वाधीनता संग्रामों में अमरीका की रधि परम्परागत थी। राष्ट्रपति क्लीवर्लेण्ड ने तटस्थता की बचाव रखने का अग्रक प्रयत्न किया। परन्तु तीन वर्ष बाद मैक्सिको के शासनकाल में अमरीका का 'मैन' नामक युद्धपति जो हवाना बन्दरगाह में शान्तिपूर्णक उतरा हुआ था, नष्ट कर दिया गया और उसके २६० व्यक्ति मार डाले गए। कलन्त्रकप, देशभक्ति की भावनाएं उबल उठीं। फिर भी, मैक्सिको ने कुछ समय तक शान्ति बनाए रखने का प्रयास किया पर शीघ्र ही यह समझ कर कि अधिक विलम्ब निरर्थक है, उन्हें मैक्सिको हस्तक्षेप की विफारिस करनी पड़ी।

स्पेन ने युद्ध हारा और उपनिवेश सोये

वास्तविक मैक्सिको कार्रवाई बेग से हुई और निर्णायक मिष्ट हुई। वह केवल चार मास चली। अमरीकियों की कहीं भी एक छोटी-सी पराजय तक नहीं हुई। युद्ध की घोषणा के एक सप्ताह बाद कमांडोर जार्ज ईबी जो उस समय हागकाग में था, अपना छः जहाजों का बंडा लेकर फिलिपीन की ओर चल पड़ा। उसको आज्ञा थी कि वह उस स्पेनिश बंदरे को जो बहा पड़ा हुआ था, अमरीकी समुद्र में कार्रवाई करने में रोकें। सबसे से पहले ही उसने मनीला खाड़ी वाले तोपखाने पर आक्रमण कर दिया और दोपहर तक उसने समस्त स्पेनिश बंदे जो नष्ट-भष्ट कर डाला। इस मारी कार्रवाई में एक भी अमरीकी हताहत नहीं हुआ।

उपर ब्यूबा में एक मैक्सिको टुकड़ी स्पेनियों को पास उतारी गयी जिसने लगातार कई लड़ाइयां जीतकर बन्दरगाह पर गोलाबारी आरम्भ की। चार सप्ताह स्पेनिश कूजर स्पेनियों की खाड़ी से निकल कर भागे पर कुछ ही घण्टों में टूट-फूट कर डेर हो गए। जुलाई के जिन गमं दिन यह सन्देश मिला कि स्पेनियों को पर विजय हुई तो ब्रांस्टेन ने लेकर मानवात्मिकों तक मीरिया बजायी गयी और भूखे लहराए गए। ममाचार-पत्रों ने अपने संवाददाता ब्यूबा और फिलिपीन भेजे, और इन कलम के सभी जगों ने राष्ट्र के नए वीरों की ख्याति की गहनाइयां बजाईं। इतमें से प्रमुख यं मनीला ख्याति के जार्ज ईबी और 'रिफराइडमं' नामक स्वयंसेवक घुड़मवारों के दमते के नेता थियाडोर खब्लेन्ड जिन्होंने इन स्वयंसेवक घुड़मवारों की भर्ती ब्यूबा में की थी। स्पेन ने शीघ्र ही सुनह-वाप्ति की प्रार्थना की। १० दिसम्बर १८९८ को एक गन्धि पत्र पर हस्ताक्षर किए गए जिसके अनुसार स्पेन ने ब्यूबा को तब तक के तिरा समुक्त राज्य अमरीका को सौंप दिया जब तक कि वहां स्वतन्त्र शासन स्थापित न हो जाय। उसने अमरीका को पोर्टोरीको और गुआम द्वीप युद्ध के हरजाने के रूप में दिए तथा २ करोड़ डालर का मूल्य लेकर फिलिपीन भी अमरीका के हाथ बेच दिया।

फिलिपीन में जम जाने से अमरीका को यह आशा हो गयी कि चीन के साथ उसका अच्छा व्यापार हो सकेगा। परन्तु १८९४-९५ में जापान के द्वारा चीन की पराजय के पश्चात कई यूरोपीय राष्ट्रों ने चीन में समुद्री अड्डे, डेकेदारों के क्षेत्र इत्यादि लेकर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। उन्होंने न केवल व्यापार के एकाधिकार प्राप्त किए बल्कि स्पेन-निर्माण में अपना लगाने तथा आमागत के प्रवेशों में अपने लिए खनिज उद्योग के विकास के हक भी प्राप्त कर लिए थे। पूर्व के साथ अपने राजनीतिक सम्बन्धों में अमरीकी सरकार सम्बन्ध राष्ट्रों के लिए समान व्यापारिक अधिकारों पर पहले से ही जोर देती आयी थी। सितम्बर १८९९ में सेक्रेटरी आफ स्टेट जॉन हे ने सभी सम्बन्धित शक्तियों के नाम एक गवनी नोट भेजा। उस सबने चीन में सब राष्ट्रों के लिए 'मुले डार' का सिद्धान्त स्वीकार कर लिया—अर्थात् जिन प्रदेशों पर उनका अधिकार था उनमें सबको समान चुगी, समान तट-कर और रेल-भाडे की समान दर आदि की एक जैसी सुविधाएं दी गयी।

परन्तु १९०० में चीनियों ने विदेशियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। जून में विद्रोहियों ने पीरिंग पर अधिकार करके वहां के विदेशी हुतावामों को घेर लिया। हे ने तुलुन ही समस्त शक्तियों को सूचित किया कि समुक्त राज्य

अमरीका, चीन के प्रादेशिक अथवा प्रशासनिक अधिकारी अथवा 'ब्लू टायर' के विद्वान्त के उल्लंघन का विरोध करेगा। विद्रोह पालन होने, अमरीकी कार्यक्रम को आगे बढ़ाने और भारी हथकाने के निपटारे के भार में चीन को रक्षा करने के लिए हे को अपना समस्त वृद्धि कोशल लगाता पढ़ा। अक्टूबर में घिरेन ओर जर्मनी ने 'ब्लू टायर' की नीति, ओर चीनी स्वतंत्रता की रक्षा का पुनः समर्थन किया और अन्य राष्ट्रों ने उनका अक्षुण्ण किया।

दूसी बीच, १९०० के राष्ट्रपति के चुनाव ने अमरीकी जनता को मैकिन्ले पागत और विरोधकर उमकी विदेश-नीति पर अपना मत व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया। फिलाडेल्फिया में एकत्रित होकर रिपब्लिकनों ने ओर के साथ वृद्ध की सफल समिति, समृद्धि की पुनः स्थापना और 'ब्लू टायर' की नीति द्वारा नए बाजारों की प्राप्ति के प्रयासों पर हथें प्रकट किया। चुनाव में मैकिन्ले का राष्ट्रपति के पद पर और उनके माफी थियोडोर रूजवेल्ट का चुनाव पूर्वनिश्चित था। परन्तु राष्ट्रपति अपनी जीत का आनन्द भोगने के लिए अधिक समय जीवित न रह सके। नितम्बर १९०१ में न्यूयार्क के बफेलो में एक व्याख्यान सुनते समय किमी हत्याने ने उन्हें गोली मार दी। मैकिन्ले की मृत्यु ने थियोडोर रूजवेल्ट को राष्ट्रपति की कुर्सी पर बिठा दिया।

सामाजिक समालोचना का युग

आन्तरिक तथा बंदेशिक दोनों प्रकार के मामलों में रूजवेल्ट की पदोन्नति ने अमरीकी राजनीतिक जीवन में एक नए युग का समारम्भ हुआ। पचासवीं के मोड़ पर अमरीका अपनी तीन पीढ़ियों के विकास का गिहाबरोकल कर सकता था। सम्पूर्ण महाद्वीप आबाद हो चुका था, सीमान्त लुप्त हो चुके थे। राष्ट्र अब एक छोटे से संघर्षयुक्त गणतन्त्र में विघ्नवर्धित हो श्रेणी में आ चुका था। इसकी राजनीतिक नीतें गृहयुद्ध तथा विदेश युद्ध के उत्पन्न-चढ़ाव और समृद्धि एवं अभाव के उबार-भाटे भंग चुकी थीं। ऊषि तथा उद्योग में बड़ी-बड़ी मजिने पुरी की जा चुकी थी। निःशुल्क सार्वजनिक शिक्षा का आदर्श पुरा हो चुका था। प्रेम की स्वाधीनता का आदर्श कायम रखा गया था। धार्मिक स्वतंत्रता का आदर्श भी माना जाता था। इनने पर भी विधायकी अमरीकी लोग अपनी सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक स्थिति में गन्तु नही थे क्योंकि इस समय बड़े-बड़े व्यापारी पूर्वकाल की अपेक्षा बहुत ही शक्तिशाली हो रहे थे। स्थानीय और म्यूनिसिपल शासन व्यवस्था की बागडोर प्रायः भ्रष्टाचारी राज-

'लाइनोटाइप' नामक टाइप कम्पोजिंग यन्त्र के आविष्कारता पर्सेन्थलर द्वारा न्यूयार्क टिम्बुन के सम्पादक रीड के सामने उसका प्रदर्शन। यह प्रतीन संवत्सरम (१८८६) न्यूयार्क टिम्बुन के प्रेस में इस्तेमाल की गयी।



नीतिज्ञों के हाथों में आ जानी थी। समाज के प्रत्येक अंग में भौतिकवादी भावना व्याप्त हो रही थी।

इन दलों के विरुद्ध पूरी आवाज उठी जिसने मई १८९० में लेकर प्रथम विश्व युद्ध तक अमरीकी राजनीति और विचारों को एक विकलक्षण चरित्र प्रदान किया। औद्योगिक क्रांति के आदिमाल में ही किसान, नगरीय और बढ़ते हुए उद्योगपतियों के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे। १८५०-९० में ही मुखार्क, प्रचलित परंपरा-संरक्षण की नीति की तीव्र निन्दा कर रहे थे जिसके द्वारा सर्वज्ञ राजनीतिक नेता, सरकारी पद अपने समर्थकों में विस्तारित कर दिया करते थे। तीस वर्ष के संघर्ष के बाद मुखार्क को १८८३ में "पेंसिलवैन मिजिक सर्विसेज बिल" पाम करवा लिया जिसके अनुसार सरकारी पदों के निमित्त योग्यता के सिद्धान्त की स्थापना के द्वारा राजनीतिक मुखार्को का श्रौण्णण हुआ। कारखानों के मजदूर भी अन्यायों के विरुद्ध शिक्षायंत्र कर रहे थे। पहले इन्होंने अपनी रक्षा के लिए "नाइट्स आफ लेबर" का संगठन किया। १८९९ में आरम्भ होकर उनकी सदस्य संख्या बढ़ते-बढ़ते १८९५ में मान लायक तक पहुँच गयी। यह संगठन तो शिक्षित हो गया पर इसके स्थान पर इसमें भी अधिक प्रभावशाली संगठन "अमेरिकन फंडेशन ऑफ लेबर" (ए. एफ. एल.) बना जो, शिल्प और उद्योग सुविधियों का एक शक्तिशाली संमिलन था। १९०० तक थमिक संगठन अमरीका में एक ऐसी शक्ति बन चुका था जिसकी कोई भी राजनीतिज्ञ उपेक्षा नहीं कर सकता था।

इस काल में प्रारंभ हुए प्रसिद्ध व्यक्ति ने चाहे वह राजनीति में हो या दर्शन-शास्त्र में, अध्ययन में अथवा साहित्य में, अपनी स्वाति अनुपानुतिक रूप में मुखार्क आन्दोलन के जरीए ही प्राप्त की। इस समय के समस्त नेता मुखार्क में जो तत्कालीन आवश्यकताओं का प्रचार करते थे। यह इसलिए कि एक अट्टारहवीं शताब्दी के प्रामाणिक गणतन्त्र से उभारा लिए हुए सिद्धान्त और प्रथाएँ बीसवीं शताब्दी के नागरिक राष्ट्र के लिए अनुपयुक्त सिद्ध हो चुकी थी। उद्योग-युग में अमरीकी के समस्त अर्थव्यवस्था की जो समस्याएँ आयीं उनके मुख्य कारण थे, समाज की अट्टिलता और परम्परावलम्बन तथा बढ़े-बढ़े कार्पोरेशनों की स्थापना के कारण व्यक्तिगत उत्तरदायित्वों का बिभार जाना। इस स्थिति को सुद्ध करने के लिए कुछ लेखकों ने अपनी प्रतिभा को इस ओर लगाया। इस काम में सबसे आगे थे समाचारपत्र और लोकप्रिय पत्रिकाएँ। उपन्यासकारों ने भी इस प्रसंग को अपनाया और इस तत्कालीन महत्वाकांक्षी राजनीति-मुखार्कों ने जिनमें

अमरीका के नये राष्ट्रपति भी शामिल थे आन्दोलन को व्यावहारिक रूप दिया। अधिकतम मुखार्क कार्रवाइयों १९०२ में लेकर १९०८ तक के समय में हुईं। बरसों पहले १८०३ में मार्कट्वेन ने अपने चिन्तनशील अध्ययन "दि गिल्ब्रेट एज" में अमरीकी समाज का दिग्दर्शन करवाया था। अब "मैक्योर्स", "ग्रेवरीबडीज" और "कृषिसे" नामक पत्रिकाओं में, दुर्घट, वित्त व्यवस्था, अशुद्ध भोजन और देशों के विषय में उग्र आलोचनाएँ प्रकाशित हुईं। कथा-कल्पना के सहारे अप्ठन सिल्वेस्टर ने एक उपन्यास "दि जंगल" प्रकाशित किया जिसमें शिकारों स्थित पैकिंग-हाउसों की अस्वास्थ्यकर दशाओं का चित्रण था और यह दर्शाया गया था कि किन प्रकार समस्त देश का मान-सम्भरण-अव्यवस्था एक दुर्घट की मृट्टी में था, पिथोडोर ड्राइजर के "फाइनेशियर" और "टाइटन" नामक पत्रों ने व्यापारियों की बालबालियों का और भी सरलता में उद्घाटन किया। फ्रेंक तोरिम के "दि पिट" ने भूमि सम्बन्धी विस्वायनों का स्पष्टीकरण किया। लिंकन स्टीफेंस के "दि शेम आफ दि मिटोज" ने अष्टावहार का पर्दाफास किया। यह सब 'जनाधारण साहित्य' लोगों को सक्रिय होने के लिए जाग्रत करने में बड़ा ही प्रभावपूर्ण सिद्ध हुआ।

सुधारों से सर्वसाधारण को लाभ

समझौते से इनकार करने वाले लेखकों और जाग्रत जनता के अनर्गल प्रहारों ने राजनीतिक नेताओं को व्यावहारिक पथ उठाते के लिए बाध्य किया। कई राज्य ऐसे कानून बनाने लगे जिनका प्रयोजन लोगों के दैनिक जीवन और काम की स्थिति सम्बन्धित थे था। बीसवीं शताब्दी के पहले १५ वर्षों में जिनने सामाजिक कानून पाम हुए उनमें अमरीकी के पिछले इतिहास में कभी नहीं बने थे। बालश्रम-कानून अधिक युद्ध बना दिए गए और कई नए कानूनों की महायात्रा से बालकों के काम करने की कम से कम आयु बढ़ायी गयी, काम के घण्टे कम कर दिए गए, रात में काम का निषेध कर दिया गया और रकूकों में उपस्थिति अनिवार्य बना दी गयी। इस समय तक आधे से अधिक राज्यों और अधिकतर बड़े नगरों में मार्बेजतिक कामों में आठ घण्टे के कार्य-दिवस की स्थापना हो चुकी थी। जोलियम के कामों में भी काम का समय कानून द्वारा नियन्त्रित कर दिया गया। भूमिकों की क्षमिपुनिक के कानून भी कम महत्वपूर्ण नहीं थे। उनके द्वारा मजदूरों को शारीरिक हानि उठाते पर उनके हजरतों का उत्तरदायी मानिको को बना दिया गया। सरकारी आय के विषय में भी नए कानून बनाए गए जिनके द्वारा उत्तरदायिकार, आय और कार्पोरेशन के जायदादों और आयदनी

पर कर लगाया गया। इन करों के जरिए शासन का बोझ उन कर्मियों पर डालने का प्रयास किया गया जो देने में समर्थ थे।

ये भी कदम प्रशासकों के योग्य थे फिर भी यह स्पष्ट था कि मुधारक जिन समस्याओं के लिए प्रचार कर रहे थे उनमें अधिकतर तब तक नहीं सुलझ सकती थी जब तक उन पर राष्ट्रव्यापी कदम न उठाए जाएं। राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट ने, जो स्वयं भी मुधारकों में उस्ताह से वधि लेते थे, यह बात स्पष्ट समझ की थी। रूजवेल्ट एक राजनीतिक यथावेवारी, उस्ताही-राष्ट्रवादी और एक विश्वसनीय रिपब्लिकन थे। टामस जेफरसन के बाद के राष्ट्रपतियों में वह सबसे अधिक विवेकशील थे। वह रेंचर और एक राज्य के गवर्नर भी रह चुके थे। उन्होंने बड़े जानवरों का शिकार किया था, मुल्लेकें लिली थी, न्यूयार्क राज्य की समझ की सदस्यता की थी, न्यूयार्क की नगर, पुरीस में एक अधिकारी के पद पर काम किया था, नौसेना का निर्येजन किया था और क्यूबा में युद्ध किया था। वह सब कुछ पढ़ते थे और हर विषय में उनका अपना मत था। ऐंप्यू, जेक्सन के समान उनमें जनता का विश्वास जीतने और अपने संपर्कों को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करने की प्रतिभा थी। एक वर्ष के भीतर उन्होंने यह दिखला दिया था कि वे अमरीका में हो रहे महान परिवर्तनों को समझते थे और उनका संरक्षण था कि वे जनता के साथ पूरा न्याय करेंगे।

दुष्ट-विरोधी कानूनों को लागू बनाने में रूजवेल्ट ने अधिकधिक सरकारी देख-रेख की नीति पर आचरण किया। सरकारी निरीक्षणों का रेलमार्गों पर लागू हो जाना उनके शासन की एक विशेष सफलता थी। उन्होंने रेल सम्बन्धी विधायन को 'रहुल ही बड़ा मसला' माना। दो कानून भी पास किए गए। १९०३ के ऐंक्तिन्स ट्रांस्ट ड्राग रेल-व्यवस्था संचालकों के लिए भाड़े की प्रकाशन दरो पर रेलों का चलाना अनिवार्य कर दिया गया और इन दरो पर छूट लेने-देने के लिए रेलवे अधिकारी तथा माल भेजने वाले दोनों ही अपराधी ठहराए गए। इसकी सहायता में सरकार ने अपराधी कम्पनियों पर सफलतापूर्वक मुकदमे चलाए। बाद में कांग्रेस ने व्यापार और श्रेय का एक नया विभाग बोलकर मंत्रिमण्डल में उसका एक सदस्य भी बड़ा लिया। इस विभाग के एक ब्यूरो को, बड़ी-बड़ी व्यापारी कम्पनियों की जांच करने का अधिकार दिया गया। उदाहरणार्थ १९०३ में यह ज्ञात हुआ कि 'एक अमरीकी बीनी वॉथक कम्पनी' ने सरकार को धोखा देकर आयात-कर की बड़ी राशि हड़प ली थी। कानूनी कार्रवाई द्वारा उससे चालीस लाख डालर से ऊपर वसूल किए गए और कम्पनी के अनेक

अधिकारियों को सजाएँ हुईं। इसी वर्ष इण्डियाना की स्टैन्बर्ड आयल कम्पनी को शिकागो-आस्टन रेलमार्ग से माल भेजने पर मुल्ल-रीति से छूट लेने के लिए अपराधी ठहराया गया। समय की भावना का परिचय इस बात से मिलता है कि १९०२ मुकदमों में २ करोड़ ९२ लाख ४० हजार डालर जुर्माना किया गया।

१९०४ में, थियोडोर रूजवेल्ट रिपब्लिकनों के 'आदर्श पुरुष' बन चुके थे। उनका आकर्षक व्यक्तित्व और उनके "दुष्ट ध्वंसक" कार्यों ने जनसाधारण की भक्ति जीत ली थी। प्रारंभिकल हुनकरेंड भी अपने उम्मीदवार की अपेक्षा उनकी ओर अधिक आकृष्ट थे। देश की अतिनाय समृद्धि भी एक प्रभाव डाल रही थी जिसने १९०४ के चुनावों में रिपब्लिकनों को विजयी कराया। अपनी जबर्दस्त विजय से उस्ताहित होकर राष्ट्रपति, मुधारक के हेतु को और भी अग्रसर करने के नए प्रण के साथ अपने पद पर पुनः आगिरी हुए। अपने प्रथम वार्षिक संदेश में उन्होंने रेल व्यवस्था के लिए और भी अनेक नियमों को लागू करने की मांग की। जून-१९०६ में "रेलवेबने एक्ट" पास हुआ। इसके द्वारा, अन्तर्राज्य 'कामर्स कपीगन' को दरो में सम्बन्धित नियम बनाने के वास्तविक अधिकार मिले, उसके प्रभाव-क्षेत्र में वृद्धि हुई और रेल-कम्पनियों ने जहाजी-लाइनों तथा कोयला कम्पनियों पर जो स्वत्व जमा रखे थे उन्हें छोड़ना पड़ा। रूजवेल्ट को शासन-अवधि पूरी होते-होते, भाड़े के लेन-देन में छूट की प्रथा प्रायः समाप्त हो चुकी थी और रेलों का सार्वजनिक नियमन एक सर्वव्यापी सिद्धान्त बन चुका था।

कांस्रम के अन्य कानूनों द्वारा मंथीय नियन्त्रण के सिद्धान्त को और भी बढावा मिला। मुधारकों के आन्दोलन के उत्तर में १९०६ में पास होने वाले 'प्योर कूड ला' के अन्तर्गत बनी बनायी औद्योगिक अथवा साधारणदार्थों के रूप में किसी भी हानिकारक, सामायनिक अथवा परिशुद्ध द्रव्य का उपयोग निषिद्ध कर दिया गया। इस कानून को तुरत ही एक दूसरे कानून द्वारा और भी पक्का कर दिया गया जिसके अनुसार उन मार्गों संस्थाओं के केन्द्रीय निरीक्षण का आवश्यक माना गया जो अन्तर्राज्य-व्यापार के अन्तर्गत मान बेचनी थी।

साधनों की रक्षा के लिये रूजवेल्ट के कार्य

इस बारे में कोई दो रायें नहीं हो सकती कि रूजवेल्ट के शासन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सफलता थी राष्ट्र के प्राकृतिक साधनों की सुरक्षा। कच्चे माल का बड़ा उपयोग और उसकी बरबादी को रोकना आवश्यक था। बड़े-बड़े भूमाल जो बेकार समझे जाते थे उन्हें सच्चे अर्थों में उपयोगी बनाने के लिए उचित



अस कुटनेके लिए किसानों ने भाप के इंजनों का इस्तेमाल १८९० के पहले से ही शुरू कर दिया था। यशोनों के इस्तेमाल से अनेक बड़े-बड़े पंरी-प्रदेशों के विकास की रफ्तार तेज हुई जो पहले बेकार व अनुपजाऊ से पड़े थे। इकोटा का यह क्षेत्र भी उन्हीं में से एक है।

ध्यान देने की अपेक्षा थी। १९०१ में कांग्रेस के लिए अपने प्रथम मनोदेश में रूजवेल्ट ने 'वन और जल' को "अमरीका की लगभग सबसे अनिवार्य आन्तरिक समस्या" कहकर पुकारा था। उन्होंने भूमरक्षण, भूमि-सुधार, और सिंचाई के लिए एक दृष्टगामी और सम्भावित कार्य-क्रमों की आवश्यकता पर बल दिया। उनके पूर्वाधिकारियों ने जो ४,३०,००,००० एकर भूमि वन मरक्षण के लिए सुरक्षित कर दी थी उन्होंने उसे बढ़ाकर १६,८०,००,००० एकर कर दिया और बर्बादी ने जंगलों की रक्षा करने तथा वृक्षहीन भागों में वृक्षारोपण के क्रमिक प्रयत्न किए। १९०३ में उन्होंने एक "इन्टरनेट वाटरवेज कमीशन" नियुक्त करके उसे तद्विधो, भूमि और जंगलों के परस्पर सम्बन्धों, पतञ्जिबी के विकास और जलीय सानायात के प्रश्नों पर पूर्ण चिन्तन और मनन का काम सौंपा। इसी कमीशन की सिफारिशों के फलस्वरूप 'राष्ट्रीय संरक्षण सम्मेलन' की योजना बनी और उसी वर्ष रूजवेल्ट ने सभी राज्यपालों, मन्त्रिमण्डलीय सदस्यों और राजनीति, विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्रों के सम्भाव्य व्यक्तियों को इस सम्मेलन में आमंत्रित किया। इस सम्मेलन में संरक्षण की समस्या पर राष्ट्र का ध्यान केन्द्रित किया। मिडान्तो का एक घोषणापत्र निकाला गया जिसमें न केवल जंगलों के बल्कि पानी और खनिज-पदार्थों के संरक्षण और भूमि के कटाव तथा सिंचाई पर ध्यान देने पर भी बल दिया गया। इसकी सिफारिशों में निजी भूमि में पेड़ों की कटाई के नियम, सतानायात योग्य जलधाराओं का सुधार और नदी तट के प्रदेशों का भूमि-संरक्षण शामिल था। इसके फलस्वरूप अनेक राज्यों ने 'कंजर्वेशन एसासियेशन' बनाए और १९०९ में एक 'राष्ट्रीय कंजर्वेशन एसासियेशन' की स्थापना हुई जिसका काम था इन विषयों में जनता को प्रसिद्धित करना। १९०२ में एक 'रिक्लेमेशन ऐक्ट' बनाया गया जिसमें सन्धार को बड़े-बड़े बांध और जलाशय बनाने का अधिकार मिला। शीघ्र ही बड़े-बड़े अनुप्रजाऊ भूभाग हरे-भरे और लोथी के योग्य बन गए।

१९०८ के चुनाव-आन्दोलन के ठीक पहले, रूजवेल्ट लोकप्रियता के दिग्गज पर धीं। फिर भी वह उस प्रथा को चुनौती देने में भिन्नके जिनके अनुसारा दो कार्यकालों से ज्यादा कोई भी राष्ट्रपति एक पद पर नहीं रहा था। उन्होंने विलियम हार्वर्ड टैट का समर्थन किया जो अगले राष्ट्रपति हुए। रूजवेल्ट के कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की इच्छा ने उन्होंने कुछ कदम उठाए। उन्होंने ट्रस्टों के विरुद्ध कार्रवाई जारी रखी, अन्तर्ज्य-सामर्थ-कमीशन को दूर बनाया, डाकघरों में सेविंग-बैंक खोले, डाक द्वारा पामल-भोजन की व्यवस्था की, मित्रिक नविस का

विस्तार किया और केंद्रीय-सुविधान में दो संशोधन प्रस्तावित किए। १७वां संशोधन १९१३ में स्वीकृत हुआ जिसके अनुसार सेनेटरो के सिधे चुनाव की व्यवस्था की गयी और १६वें संशोधन द्वारा केंद्रीय सरकार को आय-कर लगाने का अधिकार प्राप्त हुआ। उनको इन सभी सफलताओं को बराबर कर देने वाले काम थे रक्षित कर्मों के तटकर की स्वीकृति जिससे उदार मतानुयायी बहुत दृढ़ हुए, ग्रेगोरियो राज्य के उदार मन्विधान के कारण युनियन में उसके प्रवेश पर आपत्ति नहीं अपनी पार्टी के अत्यधिक प्रतिवादिओं पर उम्का उच्चरत से ज्यादा भरोसा।

१९१० में, टैट के दल में फूट पड़ गयी और एक भारी बहुमत ने कांग्रेस का नियन्त्रण फिर डेमोक्रेटों के हाथों में आ गया। दो साल बाद राष्ट्रपति-पद के चुनाव के लिए न्यूजर्सी के राज्यपाल वुड्रो विल्सन, रिपब्लिकन-उम्मीदवार टैट के विरुद्ध खड़े हुए। रूजवेल्ट ने, जिन्हें रिपब्लिकन सम्मेलन ने अपना उम्मीदवार बनाया अस्वीकार कर दिया था, एक तीसरा दल 'प्रोग्रेसिव' नाम से संगठित किया और उसके टिकट पर राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ा। विल्सन ने अपने दोनों प्रतिद्वन्द्वियों को उटकर हराया। विल्सन का चुनाव विचारों की विजय थी क्योंकि उनकी दूर आकांक्षा थी कि वह डेमोक्रेटों को सुधारों के लिए सक्रियित करे। उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने कानून निर्माण के एक ऐसे कार्यक्रम का अपनाया जो अपनी व्यापकता और महत्व में अमरीकी इतिहास में सबसे अधिक उल्लेखनीय है। कार्यक्रम का पहला कदम था, तटकर का पुनर्निर्माण। विल्सन ने कहा, "तटकर या चुंगी की दरें अवश्य बढनी जायें। हमें ऐसी प्रत्येक वस्तु को समाप्त कर देना चाहिए जो विनायाधिकार जैसी जान पड़ती है।" 'अष्टरवुड चुंगी-कानून' पर ३ अक्टूबर १९१३ को हस्ताक्षर हुए। इसके अनुसार व्याघ्रासो, कपाम और ऊनी सामान, लोहा और इस्पात जैसे कच्चे माल तथा अनेक दूसरी वस्तुओं पर कर की दर घटा दी गयी और लगभग नौ में अधिक वस्तुओं पर से चुंगी उठा दी गयी। यद्यपि इस कानून में संरक्षण के अनेक लक्षण अब भी मौजूद थे फिर भी रूजवेल्ट का व्यय घटाने की दिशा में यह एक वास्तविक प्रयत्न का सूचक था।

विल्सन द्वारा वैक प्रणाली का कार्याकृत्य

डेमोक्रेटिक कार्यक्रम का दूसरा अंग था वेंको तथा मुद्रा-प्रणाली का पुनर्गठन। राष्ट्र एक अरसे में ऋण तथा मुद्रा की अश्लेषशीलता की कठिनारण्य भेलता



१९६७ में संगठित 'कार्मसे घग्नेज' नामक किसान-संगठन को शीघ्र ही एक विविध राजनीतिक रूप प्राप्त हो गया। वे अपने उम्मीदवारों का चुनाव करने लगे और संगठन के सदस्यों को सहकारी ढंग में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने लगे।

कैरो कंपनीन सैट के प्रयास से महिलाओं को मताधिकार दिलाने का आन्दोलन १८६० में प्रारम्भ हुआ। उसके फलस्वरूप १९२० में संविधान में एक ऐसा संशोधन किया गया जिससे अमरीकी महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हुआ।





१८९३ में अपने पत्र की शपथ लेते हुए अमरीका के २२वें राष्ट्रपति घोषर क्लोवर्लेण्ड । उनका कार्यकाल अतिशय तेजाओं, रेल-व्यवस्था की कुप्रथाओं और तटकरों की अंधी बरों में किए गए सुधारों के लिए प्रसिद्ध है ।

संयुक्त राज्य अमरीका के २५ वें राष्ट्रपति थियोडोर कज़वेट्ट जिनकी गणना राष्ट्र के सर्वाधिक आकर्षक और गतिशील प्रयातों में की जाती है, इनके कार्यकाल में बड़े व्यापारों, रेल-व्यवस्था और सरकार के क्षेत्र में अनेक सुधार किए गये ।



आ रहा था। समय-समय पर कानून बना कर राष्ट्रपति बेंकों को गवर्नरशिप सिम्बे चलाते की आज्ञा दे दी जाती थी पर बेबिच प्रणाली के तयाकल्प की आवश्यकता बहुत पहले से अनुभव की जा रही थी। विन्मन का कहना था, "नियन्त्रण आँकियों का नहीं, जनता का होना चाहिए। उसे सरकार के अपने हाथों में रहना चाहिए जिससे बैंक व्यापार, आँकितगत प्रयास तथा क्रियाशील भावना के सहायक बने, न कि उनके मालिक।" २३ दिसम्बर १९१२ के "क्रेडिटल-रिजर्व ऐक्ट" ने ये आवश्यकताएँ पूरी कर दी। वर्तमान बेंकों पर उभने एक नयी व्यवस्था लागू की। देश को बाहरी ढिलों में विभक्त करके हर ढिले में एक केन्द्रीय रिजर्व बैंक की स्थापना की गयी। ये बैंक उन सब बेंकों की पूँजी जमा रखने के लिए थे जो इस प्रणाली के अन्तर्गत काम करना स्वीकार करते थे। इनका प्रथम कार्य था बेंकों-के-बैंक की भाँति आचरण करना। इस प्रणाली से किसी भी अस्थायी कठिनाई के समय इस प्रकार जमा लिए हुए धन से स्थानीय बेंकों की सहायता की व्यवस्था सम्भव बनायी जा सकी। दूसरा उद्देश्य था मुद्रा की पूर्ति में लोचबिल्ला लाना। इसके लिए केन्द्रीय रिजर्व बैंक द्वारा बाजार की मांग पूरी करने के लिए नोट जारी करने की व्यवस्था की गयी। इस योजना का निरीक्षण एक सभिय रिजर्व बोर्ड के हाथ में रखा गया।

अगला महत्वपूर्ण काम था न्यायो का नियमन। अनुभव के आधार पर यह सोचा गया कि इसे लेने के 'अन्तर्गत्य कामयं कमीयत' के ढग पर होना चाहिए। इसलिए कार्पोरेशन की बुराइयों को जांच करने का काम एक केन्द्रीय 'ट्रस्ट कमीशन' का सीया गया जिसे यह अधिकार दिया गया कि वह गण्यों के वास्तविक व्यापार में होइ के अनुचित मामलों के उपायों को रोकें। एक अन्य कानून 'क्रेडिट गवर्नरी-ऐक्ट' द्वारा कार्पोरेशनों की वे अनेक कार्रवाइया बन्द की गयी जो अब तक किसी प्रकार भ्रम्यता में बच गयी थी जैसे कि डाइरेक्टरों का आपस में मिल-जुलकर बहुत-सी कम्पनियों का आपस में ही बाँट लेना, खरीदारों के साथ नृत्यों के बारे में किये जाने वाले भेदभाव और एक ही कार्पोरेशन द्वारा उसी प्रकार के अन्य कार्पोरेशनों के गण्यों का स्वामित्व।

मजदूरों और किसानों को भी भुलाया नहीं गया। सभिय काम-लेन-पैट

द्वारा किसानों को नम दर के व्याज पर ऋण देने की व्यवस्था की गयी। करेज ऐक्ट की एक धारा यह थी कि मजदूरों के भण्डों में अग्रजनों में उन्नयन न लिए जाएं। १९१५ का 'सिभिय ऐक्ट' समूची जहाजों और भौंडों और नौवियों पर नौवियों में काम करने वालों के रजत गहन और काम की स्थिति सुधारने के लिए पास किया गया। १९१६ में 'क्रिडिटल-रिजर्व-कॉमिशन-ऐक्ट' पास करके काम करने हुए अमेरिकी सेबाओं के कार्यकारियों की स्थायी प्रायोगिक शक्ति हो जाने पर उन्हें भना देने की व्यवस्था की गयी। उसी वर्ष 'प्रोडम-ऐक्ट' पास करके रेल-मजदूरों के लिए श्रांट ऐक्ट का कार्य-रिजवा नियत किया गया।

सुधारों के इस आलेख में उन लोगों का स्वभाव परिचयित होना है जिन्हें राष्ट्रपति विन्मन के तन्त्र्य व वाणी प्राप्त हुई थी। अमेरिका के राष्ट्रपतियों के इतिहास में एक उल्लेखनीय व्यक्तिव होने हुए भी विन्मन में उन ज्ञान का अभाव था जो प्रतिस्पर्धा की राजनीति में सफलता प्राप्त करने के लिए जरूरी होती है। विन्मन बुनियादी रूप में विचारशील और राजनीति के दार्शनिक थे। राजनीति-शास्त्र पर लिखे उनके लेखोंद अमेरिका में इस विषय के अत्यन्त श्रेष्ठ के लिए उनके बहुमूल्य योगदान के परिचायक हैं।

विन्मन ने निरन्तर भाव से समार का सर्वेक्षण किया। घटनाओं को एक क्रिज्ञाम विचारों की ऐसी दृष्टि से गहराई के साथ देखा। हालाँकि उनके सभी प्रियजन उन्हें साहज और प्रग करने थे फिर भी उनकी लोकप्रियता बहुत कुछ उनकी निर्लिप्त और क्रिज्ञाम प्रकृति पर आधारित थी। फिर भी, इतिहास में उनका मृत्युकद उनको निहता या सुधारों के प्रति उनकी अत्य भक्ति की बिना पर नहीं चलें। उन आदर्शव्यंजनक योगदान के आधार पर किया गया है किन्तु उनसे एक बुद्धिमान राष्ट्रपति तथा बुद्धिगमन वर्गों में गानिक के निर्माता की भूमिका असा कराई। विन्मन के दूसरे कार्यकाल के दौरान में जो सक्तियां मुक्त होकर सामने आयी उनके भाष्य में भी उन्ही की भाँति अमेरिका की राष्ट्र में कुछ परिवर्तन लाना निव्या था नवोक्ति पहली बार उन्हें उन सभो विम्वमदार्शियों और सुधारों का सामना करना था जो विश्व की एक महान शक्ति के सामने दान हैं।

विदेश में संघर्ष और स्वदेश में सामाजिक परिवर्तन

"हमें लोकतन्त्र का महान कोषागार बनना चाहिए।"

— फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट
कांग्रेस को सन्देश, जनवरी ६, १९४१

१९१४ की अमरीकी जनता को युद्ध छिड़ने में बड़ा धक्का लगा। पहले तो यह मस्यं दूर भाग्य पड़ना था परन्तु अधिक समय नहीं होने पाया था कि अमरीकी नेताओं और जनता ने राक्षसी और आधिपत्य जीवन पर उसके बढ़ते हुए प्रभाव महसूस किए। १९१५ तक अमरीकी उद्योग, जिनमें पॉली सन्दी आदि हुई थी, पश्चिमी मित्त राष्ट्रों से युद्ध सामग्री के आर्द्र पाकर फिर से मगुद्ध होने लगे। दोनो पक्षां के प्रचार के कारण जनता के भावोंमें युद्ध हुई और अमरीकी जहाजगानी के खिलाफ जर्मनी और इंग्लैण्ड दोनो की ही कारवाइयों पर विन्यत सरकार ने तीव्र विरोध प्रकट किया। परन्तु जेने-जेने समय बीतता गया, जर्मन और अमरीकी नेताओं के बीच विवाद और भी स्पष्ट होना गया।

फरवरी, १९१५ में, जर्मन युद्ध नेताओं ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश द्वीपों के आसपास सब व्यापारी जहाजों का विनाश कर देंगे। राष्ट्रपति विन्यत ने नेतावनी दी कि सामुद्रिक व्यापार का अपना परम्परागत अधिकार अमरीका नहीं छोड़ना और घोषणा की कि अमरीकी जहाजों या जीवन की किसी भी क्षति के लिए राष्ट्र जर्मनी को पूर्ण तौर से जिम्मेदार मानेगा। जर्मन सरकार ने उत्तर में कहा कि मित्र राष्ट्रों द्वारा जर्मनी को नाकेबन्दी, लडाई करने का पनडुब्बियों के अबाध इस्तेमाल से भी अधिक क्रूर तरीका है, क्योंकि उनसे, अर्न्तक जनता के बहुत बड़े भाग को भूखों मरना पड़ता है, जब कि पनडुब्बी-युद्ध का अन्तर उन्हीं लोगों पर पड़ता है जो स्वेच्छा से पार्ल्याटिक महासम्मेलन पर अपना जीवन खतरे में डालने हैं। तथापि, पनडुब्बी युद्ध अधिक कौतुकपूर्ण था जब कि नाकेबन्दी पीसी और खामोश थी। १९१५ के वसन्त में अंधेरी जहाज 'लुनी टानिया' को, लगभग १,००० व्यक्तियों के साथ डूबाए जाने पर, जिनमें १०८ अमरीकी भी थे, अमरीकी जनमत रोप की सीमा पर पहुँच गया।

युद्धकारीन आवेश के दबाव के कारण राष्ट्रपति विन्यत निरंतर एक जैसी नीति पर चलने में असमर्थ थे। जेफर्सन के समय से अब तक कोई अन्य अमरीकी राष्ट्रपतिशान्ति

रथा के लिए उनसे अधिक तत्पर नहीं रहा था। परन्तु उन्हें यह भी विश्वास था कि जर्मनी की विजय का अर्थ होगा यूरोप में मैग्साद की विजय, जिनमें न केवल अमरीकी सुरक्षा वरन् विश्व-शान्ति का स्वयं उनका स्थान भी खतरे में पड़ जायगा। पनडुब्बी युद्ध की कुरता में यह डर और भी पक्का हो गया। परन्तु ४ मई, १९१६ को जब जर्मन सरकार ने वचन दिया कि आगे से पनडुब्बी युद्ध अमरीकी मांसों के अनुसार सीमित रहेगा तो ऐसा प्रतीत हुआ कि पनडुब्बी सम्स्या का समाधान हो गया। इसी वर्ष विन्यत अपने पुनर्निर्वाचन आन्दोलन में मफल हुए और इसमें उनके दल के उस नारे का कि "उन्होंने हमें लडाई से बचाया" काफी बड़ा हाथ था। जनवरी, १९१७ में विन्ट के समस्त भाषण देने हुए उन्होंने "विजय के बिना शान्ति" की मांग की और यह घोषणा की कि केवल इसी प्रकार की शान्ति अधिक समय तक कायम रह सकती है।

प्रथम महायुद्ध में अमरीका का प्रवेश

नौ दिन बाद, जर्मन सरकार ने नॉटिय प्राण हुआ कि युद्ध में पनडुब्बियों का अबाध प्रयोग फिर से चालू किया जायगा। इस घोषणा में अमरीका में साधारणतः यही प्रतिक्रिया हुई कि अब युद्ध अनिवार्य है। २ अप्रैल, १९१७ को, जब पांच अमरीकी जहाज डूब चुके थे, विन्यत ने कांग्रेस में युद्ध की घोषणा की अर्न्ततः मांगी। तुरन्त ही अमरीकी सरकार अपने मैन्कि, औद्योगिक, श्रमिक और कृषि माधन एकत्रित करने में जुट गयी। शीघ्र ही, एक के बाद दूसरा, वृहद् रथक जहाजों बँडा अमरीकी बन्दरगाहों से खाना होने लगा। अक्टूबर १९१८ तक पास में १,०५,००,००० से अधिक अमरीकी मैन्कि को सेना पहुँच गई।

अमरीकी सेना में से सर्वप्रथम जल सेना में प्रधानता प्राप्त की जिनमें अर्थों को पनडुब्बी संरोध स्थलन करने में सहायता देकर एक नाजूक कार्य किया। फिर १९१८ के प्रथम में बहुत अरमें से प्रतीतिन एक जर्मन हमले के दौरान में नये

अमरीकी स्वल्प सेना ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। तबम्बर में दस लाख से भी अधिक गैरिनको वाली एक अमरीकी सेना ने किलाल स्म-आर्मान हबले में महत्वपूर्ण भाग लिया। उसने हिंडनबर्ग सेना को नष्ट कर दिया।

युद्धकालीन सेना के नाते बिल्सन स्वयं ही बड़े प्रभावशाली थे। मित्रराष्ट्रों के युद्ध-उद्देश्यों की जो प्रभावशाली परिभाषा उन्होंने की वह शीघ्र युद्ध समाप्ति के लिए उनके द्वारा किया गए महत्वपूर्ण कार्यों में सबसे अधिक परिणामकारी सिद्ध हुई। शुरू से ही उन्होंने इंग्लैंड पर जोर दिया कि यह संधि जर्मन जनता के विरुद्ध नहीं था बल्कि उनकी निरंकुश सरकार के विरुद्ध था। जनवरी, १९१८ में उन्होंने मेनेट के सामने निपक्ष शान्ति के आधार के लिए अपनी बिस्मार्क चौदह सूत्री योजना रखी। उन्होंने गुप्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्झौतों को तोड़ने, सामूहिक स्वतन्त्रता की गारण्टी, राष्ट्रों के बीच आधिक अवरोधों को हटाने जान, राष्ट्रीय सैन्य शक्ति में कमी, प्रभावित निवासियों के कल्याण को ध्यान में रखने हुए औपनिवेशिक दावों का समन्वय करने की मांग की। दूसरे विशिष्ट लक्ष्यों वाले युवों का अभिप्राय यूरोपीय शक्तियों को स्वयंशासन और अवांछित आधिक विकास का विरुद्ध था। अपने चौदहवें सूत्र में बिल्सन ने अपने शान्ति प्रस्ताव के प्रधान सिद्धान्त का वर्णन किया—'राष्ट्रों को एक संधा की स्थापना जो बड़े और छोटे राष्ट्रों को समान दैयिक सुरक्षा और 'राजनीतिक स्वतन्त्रता का गारण्टिक आश्वासन दे।'

शान्ति के बाद अलगाववाद

१९१८ के शीघ्र काल में, जब कि जर्मन सेनाएँ पीछे हट रही थी, तो जर्मन सरकार ने बिल्सन से उनकी चौदह सूत्री योजना के आधार पर सम्झौता करने की अपील की। यह पता लगाने के बाद कि यह प्रस्थान सैनिक युद्ध की न होकर जनता के प्रतिनिधियों की ओर से की गई है राष्ट्रपति ने मित्रराष्ट्रों में सन्देश की जिज्ञासे जर्मन प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इस आधार पर ११ तबम्बर को युद्ध-विराम सन्धि की गयी।

विस्मय की आशा थी कि अन्तिम सन्धि का रूप सम्झौतापुर्ण शान्ति का होगा, परन्तु उन्हें डर था कि युद्धजनित आवेग के कारण मित्रराष्ट्रों की मांगें बहुत बड़ी-बड़ी होंगी। यह उन्होंने ठीक ही सोचा था। यह समझ लेने के उपरान्त कि समार में शान्ति के लिए उनकी सबसे बड़ी आशा अर्थात् राष्ट्रसंघ की स्थापना कभी भी सफल नहीं होगी जब तक कि

वे मित्र राष्ट्रों की मांगों के प्रति रियायत नहीं करेंगे, वे पेरिस को शान्ति सम्झौता बनाने में एक के बाद दूसरे सूत्र पर छुट देते गए। उन्हें कुछ तत्परसम्भक विषयों में सफलता भी मिली, उन्होंने इच्छा को पथम नहीं मिलने दिया, सम्मन राईन लैंड को जर्मनी में अलग करने की कमीयतना को मांग का प्रतिरोध किया, काम को सार बेमित छोड़ने में रोकना और अर्धनी पर युद्ध का सम्मन व्यय टाटने के एक प्रस्ताव को पूरा न होने दिया। अन्त में, उनके उदारतापुर्ण और स्थायी शान्ति के लिए सकारणसम्भक प्रस्तावों में वे राष्ट्रसंघ के अतिरिक्त बहुत कम बाकी बचा; और बिल्सन का अन्त में यह दिन भी देखना पड़ा कि स्वयं उनके देश ने ही राष्ट्रसंघ की संस्थापना का इकसा दिया। नासक सम्भय में स्वयं उनके राजनीतिक विवेक ने उनका साथ नहीं दिया। उन्होंने एक बड़ी राजनीतिक भूल यह की कि वे पेरिस को शान्ति बनाने में अलग साथ मित्रराष्ट्रों विपक्षितक दल के किसी प्रभावशाली सदस्य को नहीं ले गए और लोडने पर, जब उन्होंने राष्ट्रसंघ के प्रति अमरीकी सद्भावना की अपील की तब भी मेनेट विराम विपक्षितकन बहुमत था, की सञ्चयी प्राप्त करने के लिए आवश्यक मामूली छुट देने में उन्होंने इन्कार किया। वाशिंगटन में अपनी पेशकश के बाद उन्होंने जनता तक अपनी बात पहुंचाने के लिए देस भर का दौरा किया और त्रारदार प्रश्नों में इस विषय को पुँच्यी की।

शान्ति प्रकानों और युद्धकालीन राष्ट्रपति के पर के दबावों के कारण पारोरीक रूप में अगस्त दो जन पर २५ तबम्बर, १९१९ को पेरिस (कोन्फरेंस) में उन पर फालक पेशाफान हुआ क्रिमो वे फिर अन्दे नही रके। मार्च, १९२० में मेनेट ने अपनी अन्तिम बात में वर्मिरीक सन्धि व राष्ट्रसंघ प्रतिज्ञापत्र बनाने की ही अस्वीकृत कर दिया। इसके बाद अमरीका अतिराधिक रूप में अलगाव की नीति अपनाता गया। बिल्सन के साथ ही आसन्वाद की वृत्ति सम्मान हो गयी और उदारसीतना का युग आरम्भ हुआ।

१९२० के राष्ट्रपति चुनाव में स्वयं बिल्सन के दल ने अराधियों के राज्यपाल जेम्स एम. काक्स का सहा किया जो कभी भी बिल्सन प्रभावित ने अधिक सम्भन्धित नहीं रहे थे। रिपब्लिकन उम्मीदवार जार्जन वी. होडिंग को प्रबन्ध सफलता में बिल्सनवाद का मार्गदर्शनक रूप में सफल हो गया। सर्वप्रथम चुनाव प्रचार में होडिंग ने राष्ट्रसंघ के विषय पर कोई प्रत्यक्ष विचार अपना नहीं किया थे तथापि उनकी और उनके रिपब्लिकन उम्मीदवारियों की विदेश नीति सामान्यतः अलगाववाद का ही समर्थन करती रही।

यह फलदा करता था जिसमें सम्पूर्ण राष्ट्र की श्रमियों में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों के लिए मतदान किया। युद्धकाल में विजयों की मन्तव्य के अधिकार देने के लिए एक संवैधानिक संशोधन का नेतृत्व किया था। युद्ध प्रयत्नों में अमरीकी श्रमियों के आघातों ने उनकी नागरिक आमतौर और मनदानक अधिकारों की सीमाएँ का स्पष्ट कर दिया। जून, १९१९ में कांग्रेस ने राष्ट्रीय के सम्पूर्ण उद्योगों का संशोधन प्रस्ताव किया और वह समय में स्वीकृत हो गया। फलतः प्राथमिकी एवं श्रमियों का मनदान के अधिकार मिल गए।

रूढ़िवादी नीतियाँ व्यापक हुईं

सामान्य समृद्धि जो कम-से-कम नगरीय क्षेत्रों में व्यापक थी के कारण तीसरे दशक के वर्षों में अमरीकी सरकार की नीति प्रभावान्त रूढ़िवादी रही। यह उभ विद्वानों पर आघातित थी कि अगर सरकार वैयक्तिक आघातों की बजाय का हर मध्य प्रकृत करना है तो समृद्धि का फल जनता के सब वर्गों को मिलेगा।

नन्दन्याय, रिग्लिब्लेकन सरकार की नीतियों का आघात अमरीकी उद्योग के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करना था। १९२० और १९२० के दशक के दौरान द्वारा आयात शुल्क को दर्रा का उन्मा उन्मा कर दिया गया कि अमरीकी उत्पादकों को एक के बाद दूसरे क्षेत्रों में देशीय बाजार का एकाधिकार मिलना गया। इनमें से दूसरे दशक, १९२० के स्पष्ट-हावले कानून में इनने उन्मा शुल्क की व्यवस्था थी कि एक दशक में अधिक अमरीकी अर्थ-शास्त्रियों ने राष्ट्रपति हुवर में आरोपित की कि वे उन्मा विरुद्ध अपने निष्पा-धिकार का प्रयोग करें। बाद की घटनाओं में उनकी यह अभियोग्यता मध्य भी प्रभावित हुई कि इन कानून के कारण दूसरे राष्ट्र उन्मापूर्ण बरतना उन्मा उन्मा करंगे। केंद्रीय सरकार ने उन्मा घटाने का एक कार्यक्रम भी चला किया। काँग-मन्त्री एन्ड्रू मैलन का यह विद्वान था कि अधिक आयकर के कारण धनी पुरुष औद्योगिक संस्थाओं में पूँजी नहीं लगायेंगे। उन्होंने प्रस्ताव किए कि युद्धकाल के आयकर, अतिरिक्त लाभ कर और निम्न कर एकदम निरस्त कर दिए जाने चाहिए या उन्मा भारी करी होनी चाहिए और १९०१ व १९०९ के बीच कांग्रेस द्वारा पारित कानूनों में इनका सम्मर्थन किया गया।

तीसरे दशक में वैयक्तिक व्यवसाय को काफी प्रोत्साहन दिया गया। राष्ट्रीय रेल व्यवस्था को युद्धकाल में दुर्घटनकारी नियन्त्रण में थी, १९२० के वातावरण कानूनों द्वारा निजी प्रकृत में लौटा दी गयी। व्यापारिक जहाजों को १९१३

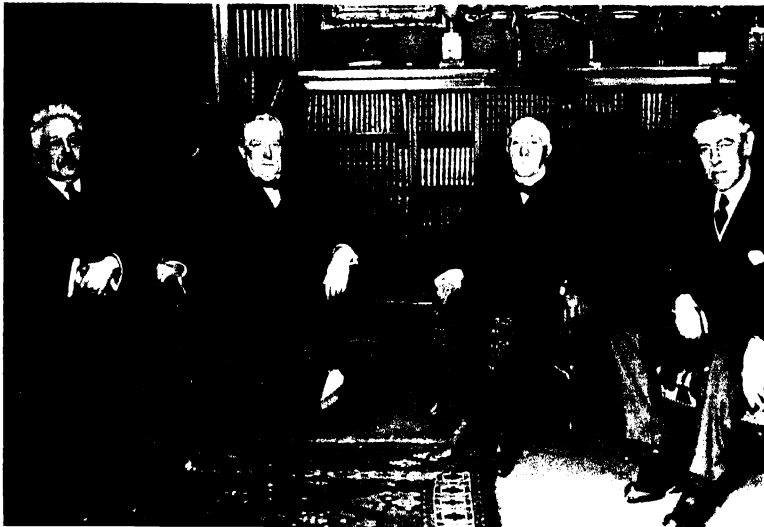
और १९२० के बीच काफी मात्रा में सरकार के घे और सरकार द्वारा ही चलाए जाने थे, निजी परिवहनकों के हाथ बेच दिए गए। निर्माण कृष, डाक व्यवस्था के लाभकारी अनुकृत और अन्य अनुकृत अनुपूर्तियाँ भी दी गयीं। शायद निजी व्यवसाय को सबसे बड़ा मदद बिजली उत्पादन क्षेत्र में दी गयी। युद्धकाल में सरकार ने टेनेसी नदी की मसल शाल नामक २० मीटर लम्बी तीर धारा के उत्पादन पर ताइडर उत्पादन के दो कारखाने स्थापित किए थे और बिजली उत्पादन के लिए नदी पर कई बांध भी बनाए गए थे। १९२८ में कांग्रेस के दोनो सद्यों ने बिजली के सार्वजनिक उत्पादन और विक्रय के लिए एक अधिनियम भी पारित कर दिया था। परन्तु राष्ट्रपति हुवर ने अपने अधिकार में उनका निषेध कर दिया। बाद में फोर्कलैंड की क्यूबेन्स के राष्ट्रपति होने पर टीनी मसल शाल परिवोजना ने टेनेसी घाटी अधिकरण का रूप लिया।

दूसरी बीच रिग्लिब्लेकन प्रशासन की नीतियों को कुपि क्षेत्र में महत् विरोध का माधना करना पड़ा क्योंकि १९२० के बाद की समृद्धि में किसानों को ही सबसे कम हिस्सा मिला था। १९०० में १९२० तक का काल खेती के लिए सामान्य समृद्धि का था और कुपि पदार्थों के मूल्य बढ़ते रहे थे। युद्धकाल में कुपि पदार्थों की अपूर्व मात्रा के कारण उत्पादन को बहुत प्रोत्साहन मिला था। किसानों ने कमी न होने गए या बहुत समय में खाली पड़े कम उपजाऊ खेतों में भी काम शुरू कर दिया था। अमरीकी खेतों का मूल्य बढ़कर दुगना-तिसुना हो गया और किसानों ने ऐसा सामान और ऐसी मशीनें खरीदना शुरू किया जो पहले उनकी माधम्य में बाहर थी। परन्तु १९२० के अन्त में जब युद्धकालीन माँग एकाएक समाप्त हो गयी तो व्यापारिक फलनों की खेती लाभदायक न रही। जब १९२० में सार्वजनिक मन्दी आगयी तो स्थिति जो पहले में ही निम्नान्वतक थी और भी खराब हो गयी।

१९२० से १९२९ के बीच का अमरीका

अमरीकी कुपि में मन्दी के कई कारण थे। परन्तु उनमें विदेशी माधियों का हाथ में निकल जाना प्रमुख था। अमरीकी किसान उन क्षेत्रों में आगनी से विक्रय नहीं कर सकते थे जहाँ से अपने आयात शुल्कों के कारण अमरीका कोई सामान नहीं खरीदता था। अमरीकी निर्यात का स्थान अर्जेंटाइना और आस्ट्रेलिया के पशु-धन सम्बन्धी उत्पादन, कनाडा और पोलैण्ड के वन, अर्जेंटाइना, आस्ट्रेलिया कनाडा, रूस और मधुविया के साक्षात् और भारतीय चीनी, रूस और जाजील

१९१९ के वेरिस शान्ति सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने सन्धि करने का अधिकार
जिन ४ व्यक्तियों को सौंपा वे थे (बायें से दायें) इटली के आरलेण्डो, फ्रेड
ब्रिटेन के ल्वायर्ड जार्ज, फ्रांस के क्लोडेमो और संयुक्त राज्य अमरीका के विल्सन।



की कपाम ने ले लिया। उसके लिए धीरे-धीरे विप्लव-परिचयों के सभी द्वार बन्द होने लगे।

आप्रवासन पर प्रतिबन्ध—अमरीकी नीति में १९२० के बाद का एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था। वीसवीं शताब्दी के प्रथम पन्द्रह वर्षों में १,३०,००,००० से अधिक व्यक्ति अमरीका में आए। कुछ समय से इस असीमित आप्रवासन के विरुद्ध प्रवृत्तता का रोग बढ़ रहा था। अमरीका अब अपने आपको यह नहीं समझता था कि उसके पास बसाने योग्य विनाश आन्तरिक लेख है और वह नया आप्रवासन स्वीकार नहीं करना चाहता था। बहुत से अधिनियमों द्वारा जिनका चरमबिन्दु १९२४ का 'आप्रवासन कठोर कानून' था, आप्रवासियों की वार्षिक संख्या १,५०,००० तक सीमित कर दी गयी। इसका विप्लव विभिन्न देशों के व्यक्तियों में उसी अनुपात के अनुसार किया जाता था जिस संख्या में उस देश के निवासियों १९२० में अमरीका में पहले से ही मौजूद थे। इस उपाय से आप्रवासन वरणात्मक बन गया; अधिकतर व्यक्ति अब उत्तरी और पश्चिमी के बजाय दक्षिणी और पूर्वी यूरोप से आते थे। संख्या को तीक्ष्णता से सीमित करने के विरुद्ध इतिहास के सबसे बड़े और तीन शताब्दी पुराने जनसंख्या के स्थानान्तरण को समाप्त कर दिया गया। १८२० से लेकर १९२९ तक यूरोप से अमरीका में ३,५०,००,००० से अधिक व्यक्ति आए, यहाँ नया घर बसाया, नया जीवन आरम्भ किया और देश की सम्पत्ति को बहुत अधिक अशुद्ध बना दिया।

अब आप्रवासियों की धारा धीमी होने-होने बहुत कम हो गयी तो धोड़ी परन्तु महत्वपूर्ण संख्या में अमरीकी लोग यूरोप जाने लगे। ये आप्रवासियों के बड़े बड़े बच्चे थे, उनका बाहर जाने का आग्रह युद्ध प्रथम आन्दोलन में भाग लेना नहीं था बल्कि राष्ट्रीय भृतियों की आलोचना करना था। अमरीका में कला और विचारों की कमी अनुभव करके वे लोग मुख्यतः पश्चिम गए। उनका आग्रह था कि अमरीकी सम्पत्ति अत्यधिक भौतिकवादी है और तकनीकी सम्पत्ति से इसकी घुट्टि होती थी। इस आग्रह से भी अधिक महत्वपूर्ण आग्रह था मुद्रास्वास्थ्य के बारे में। इस मुद्रास्वास्थ्य का प्रतीक था धारण के उत्पादन व बिचौली पर रोक जो लगभग एक शताब्दी के आन्दोलन के बाद १९१९ में, विप्लव में १८ वें संसोधन द्वारा लागू कर दी गयी। धारणबन्दी के समर्थकों का आग्रह था अमरीका में धारण खानों और मुरागाण का खिलौना। परन्तु इससे हज़ारों मैन-कानूनी धारणबन्तों बच गए और चीनी से धारण बनाने वालों के लिए अब किन्तु लाभप्रद व्यवसाय पैदा हो गया। इसके अतिरिक्त

ऐसे कानून का जिसका इतना अधिक उल्लेख होता हो, अस्तित्व मात्र भी वैश्विक रूप से मिथ्याचार था। बहुत से अमरीकी धारणबन्दी के परिणामों की तुलना हाइंग युग के व्यापक ऋणकार से करते थे। अमरीकी साहित्य में भी इसकी बड़ी आलोचना एक मुख्य विषय बन गया। पत्रकार और समाजिक एच. एल. मेन्केन ने अमरीकी जीवन व चरित्र की बलू कर निन्दा की। वह बहुत ही लोकप्रिय हो गए। मिक्लेवर लुई ने अधिक धारण ही किसी सम्भीर उपन्यासकार की पाठक संख्या रही हो जिनके "मिन नूट्रिट" और "बैंकट" नामक उपन्यासों में अमरीकी मध्यवर्ग के जीवन पर उपहास राष्ट्रीय चेतना के महत्वपूर्ण चिह्न बन गए। दुर्भाग्य से अमरीका की अमरीकियों द्वारा यह आलोचना राष्ट्र के सर्वाधिक सम्पत्ति-काल में हुई; मन्दी और उसके बाद विदेश में वैश्विकवाद व फासिज्म के हर में अमरीकी बुद्धिजीवी अपने देश लौट आए और देश को मानवीय व लोकतन्त्रीय परम्पराओं और भौतिक साधनों के प्रति उनमें स्नेह व आस्था का नये सिरे से विकास हुआ।

बीसवीं शती में यह प्रतीत होता था कि सम्पत्ति गंदे वनी रहूँगी; यद्यपि १९२९ के तमन में शेयर बाजार टूट चुका था फिर भी उच्च मुद्रा में आशाजनक पूर्व अनुमान मिलते रहे। परन्तु मन्दी घीघ्रता से और लगातार बढ़ती गयी, देश की आर्थिक स्थिति बहुत अधिक नीचे गिर गयी, लाखों घन लगाने वालों की उम्र भर की बचत टूट गयी, व्यापारिक मर्यादा और कारखाने बन्द हो गए, बैंक टूट गए और लाखों बेरोज़गार लोग काम की खोज में सड़कों पर चक्कर लगाने लगे। अमरीकी इतिहास में १८०० की बहुत पहले भूनी हुई मन्दी की छाँटकर इस प्रकार का दूसरा कोई अनुभव नहीं है।

रुज़वेल्ट मन्दी से जूझे

जैसे-जैसे लोग पहले धक्के में सम्भले और उन्होंने अपनी कठिनाइयों के मूल कारणों की पहचान शुरू की तो उनको कई हानिकारक प्रवृत्तियों का पता चला जो कि १९२० की सम्पत्ति के आवरण के नीचे छिपी हुई थी। गड़बड़ का मुख्य कारण था अमरीकी उद्योग की उत्पादन शक्ति और अमरीकी जनता की उपभोग क्षमता में पड़ान् अन्तर। युद्ध काल में और उसके बाद उत्पादन के तरीकों में बड़ी नवीन प्रक्रियाएँ की जा चुकी थी जिनके फलस्वरूप अमरीकी उद्योग का उत्पादन अमरीकी श्रमिकों के लोगो की बचत इतनी अधिक बढ़ गयी

कि उनके ठोस निवेश की सम्भावना नहीं रही और यह धन बेधर बाजार या जायदाद के मुद्दे में लगाया जाने लगा। बेधर बाजार का दुबना गो उन बहुत से भ्रमाकों में से केवल पहला या जितनीसे मुद्दे की कमजोर इमारत को डूना दिया।

१९३० के राष्ट्रपति-चुनाव-प्रचार ने बड़ी हुई मन्दी के कारण और उपचारों के उपर ब्याजविवाद का रूप ले लिया। हरबर्त हूवर ने जो दुर्भाग्य में बेधर बाजार के दुबने में केवल आठ महीने पहले ही राष्ट्रपति हुए थे, उद्योग-चक्र फिर से चलाने का अथक प्रयत्न किया था। परन्तु यह उन्होंने सही सरकार की भूमिका की परम्परागत धारणा की सीमा के अन्दर रहने हुए ही किया था, और इंग्लिश वह कोई उस कार्रवाई नहीं कर सके। उनके लोकन्यायवादी प्रतिद्वन्दी फेलॉवन डी. रूजवेल्ट जो बड़ने हुए संकट के समय में पहले से ही न्यायांक राज्य के गवर्नर होने में लोकप्रिय थे, ने यह तर्क पेश किया कि अमरीकी अव्यवस्था के दोषों, जिनमें नीमरी दशाव्दी की रिपब्लिकन नीतियों में वृद्धि हुई है, के कारण ही मन्दी आई है। राष्ट्रपति हूवर ने उत्तर दिया कि अमरीकी अर्थ-व्यवस्था मूल रूप में ठीक है परन्तु विश्व-युद्ध के फलस्वरूप संसार भर में मन्दी आने के कारण ही उसमें गड़बड़ी आई है। इस तर्क के पीछे एक स्पष्ट आशय था: हूवर पुनर्जीव के प्राकृतिक तरीकों पर ही निर्भर रहना पसन्द करते थे जब कि रूजवेल्ट माहसुसपूर्ण प्रयोगात्मक उपचार के लिए सश्रीय सरकार के अधिकार का प्रयोग करने को तैयार थे। चुनाव का परिणाम हुआ रूजवेल्ट की गारदार विजय, उन्हें हूवर के १,५०,०००,००० वोटों के मुकाबले २,२८,००,००० वोट प्राप्त हुए। उपाधिन समस्याओं का सामना तब राष्ट्रपति ने उष्कूल्य विधानसभुक्त किया जिसमें वह पीछे ही लोकप्रिय हो गए। उनके पदावीन होने के कुछ ही समय में मुधारों की वह जटिल पद्धति जो 'न्यू डील' के नाम से जानी जाती है, शुरू हो गयी। वास्तव में कुछ मुधारों की, जो कि पिछले चुनाव वर्षों में बढ रहे थे, गति अब बहुत तेज कर दी गयी थी। दूसरे धारदों में यह कहा जा सकता है कि 'न्यू डील' ने अमरीका में केवल उन मुधारों का महाप्रेम किया जो इम्प्लेज, जर्मनी और स्कैंडिनेविया में एक पीढ़ी में अधिक गहले थे जारी थे। इसके अतिरिक्त इनसे तटस्थ सिद्धान्त को छोड़ने की प्रवृत्ति, जो कि १८८०-८९ में एक परिवर्तन विनिमय और विन्यत-धियोधोर रूजवेल्ट युग के अनेक शशीय व राज्तीय मुधारों में लनी आ रही थी, उष्कन्तम निम्बर पर पहुँच गयी। इसकी अत्यन्त अनोखी बात थी वह गति जिससे वह कार्य पूरा हुआ, जिस करने में अन्य स्थानों में पूरी पीधियां गुजर गयी थी। 'न्यू डील' के अनमोन बहुत से मुधारों की रूपरेखा

फेलॉवन डेलिनो रूजवेल्ट, १९३२ में, राष्ट्रपति पद के लिए अपने चुनाव आन्दोलन के दौरान में मध्य पश्चिमी राज्य, केंसास, के किमानों की 'न्यू डील' का आदवाहन कर रहे हैं। अपने आकषक व्यक्तित्व और उदार बल के कारण वे चुनाव भी जीते।



जल्दी में बनायी गयी थी और उन्हें दृढ़तापूर्वक लागू नहीं किया गया, कुछ तो बान्स्न में परम्परा विरोधात्मक थे। परन्तु जब इनकी कठिन समस्या का समाधान इनकी जल्दी में किया जा रहा था तो थोड़ी-सी गड़बड़ी स्वाभाविक ही थी। 'न्यू डील' के समस्त काल में, फंमला करने और उन्हें लागू करने की गति के इतने तेज होते हुए भी, सार्वजनिक समालोचना और चर्चा के व्यक्तित्वात्मक तरीके को कभी भी रोका या बन्द नहीं किया गया। साम्प्रत में 'न्यू डील' के कारण नागरिक व्यक्तिगत रूप में अपनी सरकार में अधिक रुचि लेने लगे।

जब कङ्ग्रेस ने राष्ट्रपति पद की मांग प्रहण की, देश की वैयक्तिक और कृष प्रणाली अंग अरुस्था में थी। आर्थप्रयोजनक गति में कुछ अच्छे बैंक फिर से व्यवसाय के लिए खोल दिए गए। मामूली-सी मद्रा स्फीति की नीति अपनायी गयी जिससे बीजों के मूल्य बढ़ने लगे और कर्जदार लोगों को भी कुछ राहत मिली। सरकार ने नए अधिकरण द्वारा कृषि और उद्योग दोनों को ही कृष की उदारतापूर्ण मुचिधार्ण प्रदान की गयी। बचत बैंकों में ५,००० डॉलर तक के जमावतानों का बीमा कर दिया गया। स्टॉक एक्सचेंज में ऋण-पत्रों की विची पर कड़े प्रतिबन्ध लगाए गए।

कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार मुष् किए गए। कावेय द्वारा १९३३ में पारित कृषि समंजन कानून को जब तीन वर्ष बाद सर्वोच्च न्यायालय ने अर्धेधानिक मानकर रद्द कर दिया तो कावेय ने खेती को महायन्त्र के लिए अधिक प्रभावी कानून बनाया। इस कानून द्वारा इस प्रकार की व्यवस्था की गयी कि सरकार उन किसानों को धन का मुदान करेगी जो कि अपनी जमीन के कुछ भाग में भूमि सरक्षण फसलें लगायें या कार्यक्रम के दीर्घकालीन कृषि सम्बन्धी उद्देश्यों में सहयोग देंगे। १९६० तक करीब ६० लाख अर्पक इस कार्यक्रम में भाग ले रहे थे और उन्हें केन्द्रीय आर्थिक महायन्त्रा मिलनी थी। इस नाम कानून द्वारा अतिरिक्त फसलों पर कृष, गेहूँ की फसल का बीमा, राष्ट्र और कृषकों के लिए आर्थिक गंदासों को प्रणाली, द्वारा 'अन्नय अन्न भण्डार' की मुनिश्चिन्ता की व्यवस्था भी थी। इन उपायों का परिणाम यह हुआ कि कृषि सम्बन्धी सामर्थ्य में मूल्य बढ़ गए और कृषकों के लिए आर्थिक स्थिरता की सम्भावना दिखायी देने लगी।

‘न्यू डील’ द्वारा सामाजिक सुधार

फार्म के कानूनकारों की स्वतन्त्रता के लिए भी प्रयास किए गए। केन्द्रीय सरकार ने कानूनकारों को मरल पत्रों पर फार्म खरीदने में आर्थिक महायन्त्रा दी।

सरकार ने फार्म-ऋणों के लिए पुनः आर्थिक व्यवस्था की और इसमें फार्म बन्धक कर्ताओं को राहत मिली। नव निर्मित 'कमाडिटी कंट्रिट कारपोरेशन' द्वारा सीधे ही कृषकों को उधार दिया जाने लगा। उसके साथ ही साथ विदेश मन्त्री कार्डेल हल की देख-रेख में यह भी प्रयास किया गया कि कुछ विदेशी बाजारों को पारम्परिक समझौतों द्वारा पुनः प्राप्त कर लिया जाय जिसमें आर्थिक आत्म-निर्भरता की वह प्रवृत्ति जिसकी आर अमरीका 'उच्च आयान् दायक' के काल में भुक्ता हुआ था, भंग हो जाय। जून १९३४ के व्यापारिक समझौता कानून के आधार पर विदेश मन्त्री हल ने कनाडा, ब्रुसा, फ्रांस, रूस और अन्य बीम देशों के साथ अनरहित अत्यधिक अनुकूल पारम्परिक व्यापार सन्धिया की। एक वर्ष में ही अमरीकी व्यापार में प्रचुर सुधार हुआ और १९३९ तक कृषि आय, मान वर्ष पहले की तुलना में, दुगुनी से भी अधिक हो गयी।

कङ्ग्रेस प्रशासन के प्रारम्भिक काल में 'न्यू डील' का उद्योग सम्बन्धी कार्यक्रम प्राथमिक अवस्था में था। १९३३ में एक राष्ट्रीय पुनर्लाभ प्रशासन की स्थापना प्रशासन, इस विचार के आधार पर की गयी कि उत्पादन पर नियन्त्रण और उत्पन्न मूल्य निर्धारण में संकट की स्थिति का समाधान हो जायगा। किन्तु सर्वोच्च न्यायालय द्वारा एन. आर. ए. को अर्धेधानिक घोषित करने से पूर्व ही इसकी अमकलता की चर्चा सब तरफ थी। इस समय तक पूर्व स्थिति पर पहुँचने के लिए अन्य प्रशासन नीतियों के प्रामादन में कुछ श्रमभ्रान्त भी हो गये थी। प्रशासन ने गौरव ही अपने में परिवर्तन किया और इस आधार पर कार्य आरम्भ किया कि व्यापार के कुछ क्षेत्रों में प्रदानित मूल्य राष्ट्रीय अर्धे-व्यवस्था के लिए घाटा पहुँचाने वाली चीज के समान है और पूर्व स्थिति पर पहुँचने में बाधक है।

यद्यपि, इस बीच मासाल स्थिति पर पहुँचने के लिए बहुत उद्योग हो चुकी थी। गरीब सरकार ने बेरोजगारों को महायन्त्रा, सार्वजनिक निर्माण और राष्ट्रीय माधनों के संरक्षण कायों में कराराई टालर खर्च किए। इन सुसुहीयन व्यय द्वारा देश में अमरीकी उद्योग के लिए नयी मांग पैदा की गई। 'न्यू डील' योजना काल में मार्गदिन धर्मकों ने अमरीकी दुनिहाय के किसी भी पहलू में समर्थ की तुलना में अधिक लाभ प्राप्त किया। एन. आर. ए. के अनुभाग ७ (अ) में धर्मकों को सामूहिक मोदिकारी के अधिकार को राष्ट्रपती की गयी थी। रद्द किए गए एन. आर. ए. के धर्मक उपकरण को रवान-लेबर के लिए कावेय ने जुलाई १९३५ में राष्ट्रीय धर्म सम्बन्ध कानून (नेशनल लैबर रिलेशन ऐक्ट) पारित किया जिसके अनुसार सामूहिक मोदिकारी प्रक्रिया को देखभाल के लिए एक धर्मक बोर्ड की

स्थापना की गयी। यह श्रमिक बॉर्डर बनावों का प्रयासन करता था। श्रमिकों की मालिकों में भागचीन करने में अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए संगठन बनने के अधिकार दिए गए थे। अमरीकी श्रमिक संघ (ए. एफ. एल.) जो दस्तकार संघवाद के मिद्धान्त में विश्वास करता था, असंगठित श्रमिकों को संगठित करने में सक्षम न था। जब कुछ बड़ी युनियन इस अवस्था में असंतुष्ट हुईं तो उन्होंने नाना संघकार एक अन्य केंद्रीय संघ, कांसेस आफ इण्डस्ट्रियल आरगनाइजेशन (सी. आई. ओ.) की स्थापना की और आसचयंत्रक सफलतापूर्वक संगठन-आन्दोलन जारी किया—विशेषतः मोटरगाडी और इस्पात उत्पादन जैसे बुनियादी उद्योगों में। सी. आई. ओ. की प्रतिस्थापिता के कारण ए. एफ. एल. में भी उदरति की। संगठित श्रमिकों की संख्या १९२५ में ४०,००,००० से लेकर १९३५ में १,१०,००,००० और १९४८ में १,६०,००,००० हो गयी। श्रमिकों की दार्किन केवल उद्योग में ही नहीं बल्कि राजनीतिक क्षेत्र में भी वही श्रमिक संगठन ने राजनीतिक रुचि उत्पन्न हुई। तथापि, उन्होंने इस शक्ति का उपयोग मुख्यतः द्वितीय राजनीतिक दलों तक ही सीमित रखा। ऐमोकेरिक दल को रिपब्लिकन दल के मुकाबले युनियनों में अधिक समर्थन प्राप्त हुआ फिर भी अन्ततः में कोई श्रमिक दल नहीं बनाया गया।

बृद्धावस्था में बेरोजगारी और पराजन्तत्व के खतरों की रोकथाम के लिए जो बहुत समय से सामंजसिक चर्चा का विषय रहा है, १९३५ में सामाजिक सुरक्षा कानून के अन्तर्गत बहुत प्रकार के श्रमिकों के लिए पेंशन एवं की आय के उपरांत धोड़े-से निवृत्ति भत्ते की व्यवस्था की गयी। इस प्रयोजन के लिए श्रमिकों और मालिकों के अनुदान से एक बीमा निधि बनायी गयी। सब आय के सक्षम श्रमिकों के लिए बेरोजगारी भत्ते का प्रयासन राज्यों द्वारा किया जाता था और इसके लिए एक मधुमय अनिवार्य वेतन-कर द्वारा प्राप्त की जानी थी। १९३८ तक प्रत्येक राज्य में किसी न किसी रूप में बेरोजगारी बीमा व्यवस्था हो गयी थी।

१९३०-३५ में लगातार अनावृष्टि के कारण 'ओमनीविस फलट कण्ट्रोल बिल' पास हुआ जिसके अनुसार बहुत-से बड़े जहाजय और दार्किन उत्पादन के लिए बांध न बनें हज़ार छोटे बांध बनाने की व्यवस्था हुई। अपने विपुल माधनों के कारण अमरीकी लोग अपने प्राकृतिक धन के प्रति अत्यन्त लापरवाह रहे थे। बहुत से इलाकों में मिट्टी के कटाव के कारण धरती पर जगह-जगह बड़े-बड़े हिस्से खाली छोड़े जाने लगे थे। इनका रोकने के लिए, विशेषतः मध्यपश्चिम के मैदानों में, भूमि मरक्षण



फोर्ट लाउडन बांध का निर्माण। यह बांध 'डेनेसी बेसी एथारिटी' (डेनेसी घाटी अधिकरण) का ही एक अंग है। घाटी के ४५ लाख निवासियों के हितार्थ वेगवन्तों डेनेसी नदी को बांधना इस योजना का लक्ष्य था।

का मुहूर्त कार्यक्रम नेजी में वापु किया गया जिसके अनुसार वृक्षों की एक विद्याल रक्षा पट्टी लगायी गयी। अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में जलधाराओं की मन्दी होने से रोकना; मत्स्य, वनस्पि पक्षियों के आरक्षित स्थानों की स्थापना; कोयला, पेट्रोलियम शील, गैस, मोडियम और हीलियम के भूमिगत भण्डारों का सर्वक्षण; कुछ वरमाहों का खेती के लिए बन्द करना और राष्ट्रीय वनों में वृद्धि करना शामिल था।

'टी० वी० ए०' एक आदर्श बना

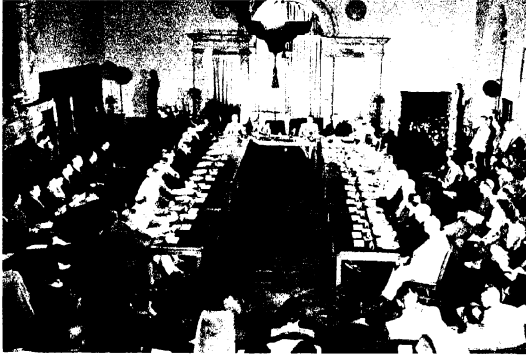
इन सब उपायों में ये कदाचित् सबसे अधिक भावी महत्व का काम था। टेनेसी पाटी अधिकरण (टी. वी. ए.) की स्थापना जिसने इन परियोजना का प्रोत्साही सामाजिक और आर्थिक परीक्षणों के लिए एक व्यापक प्रयोगशाला का रूप दे दिया। मगल शील, अलाबामा में, मुख्य बांधों के अनिर्दिष्ट मोरिस, त्रिकोणिक चिकनासगो और अन्य कई छोटे सहायक बांध बनाए गए। इन बांधों का उपयोग नौपरिवहन में सुधार, बाढ़ नियन्त्रण और नाइट्रेट उत्पादन के अनिर्दिष्ट बिजली उत्पादन के लिए भी हुआ। सरकार ने लगभग पांच हजार मील लम्बी बिजली की लाइनें लगायी और आसपास के जनसमाजों को बहुत सस्ते दरों पर बिजली बेची जिससे उसकी बहुत अधिक सफल हो सके। 'टी. वी. ए.' में सम्भव एक कम्पनी ने देहलाँ में बिजली-प्रसार के लिए विनीय महापता दी। 'टी. वी. ए.' ने कम उपजाऊ भूमि को खेती से बाहर कर दिया, उसके किमानों को नवी जमीन लेने में सहायता दी, कृषि परीक्षण किए, विशेषतः फास्फेट पूरक खादों के प्रयोग में और जन-स्वास्थ्य व मनोरंजन की सुविधाओं की व्यवस्था की।

न्यू डील के लगभग समस्त कार्यों की आलोचना में केवल रिपब्लिकन दल ही लगातार करता रहा बल्कि कभी-कभी स्वयं डेमोक्रेटिक दल के सदस्यों ने भी की। १९३६ के चुनाव में राष्ट्रपति रूजवेल्ट के प्रतिद्वन्दी रॉसॉस के गवर्नर एल्बेर्ट एम. लश्डन द्वारा न्यू डील की कटु आलोचना के उपरान्त भी रूजवेल्ट की १९३२ से भी अधिक जोरदार विजय हुई। (बाद के राष्ट्रपति चुनावों के रिपब्लिकन उम्मीदवार, १९६० में वेण्डेल विल्की और १९६४ व १९६८ में फामस ई. डीवी ने स्पष्ट रूप में कहा कि न्यू डील की बहुत ही उपलब्धियाँ हैं जिन्हें वे स्वीकार करते हैं)।

१९३२ में लेकर १९३८ तक जनमत के प्रत्येक मुकाम में न्यू डील की नीतियों का राष्ट्रीय, आर्थिक व राजनीतिक जीवन पर प्रभाव के बारे में नाद-बिनाद होता रहा। जैसे-जैसे समय बीतता गया यह स्पष्ट हो गया कि सरकार सम्बन्धी अमरीकी

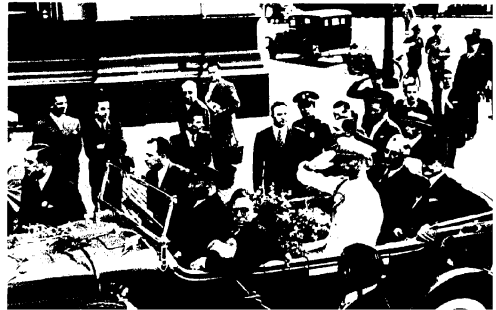


साहित्य के लिए नोबल पुरस्कार पाने वाले प्रथम अमरीकी उपन्यासकार लिस्लेयर बेबिस। उन्होंने अमरीका के मध्यमवर्ग पर अनेक जीवित एवं बिबाहास्य उपन्यास लिखे। २०वीं शताब्दी के तीसरे दशक में वे देश के एक प्रतिष्ठित व प्रभावशाली साहित्यिक थे।



बार्सिलोन डी. सी. के निकट इम्बार्टेन ओपन में आयोजित, ब्रिजिया और सोवियन संघ के प्रतिनिधियों की मभा। युद्ध के बाद की समस्याओं पर कई सप्ताह के विचार-विनिमय के फलस्वरूप एक अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा संगठन बनाने की योजना साधने आयी।

१९३६ में, फ्रांसि को हायम रक्ने के उद्देश्य से बनने एयम में आयोजित अन्तर-असरोकी सम्मेलन के लिए जाने हुए 'उत्तम पद्मोम' नीति के जन्मवाता वाष्टुपति रुकबेस्ट।



संकल्पना बदल रही है। जनता के कल्याण की अधिकतर जिम्मेदारी सरकार पर है इसकी लोग अधिक मानने लगे हैं। न्यू डील के कुछ आलोचकों का कहना था कि इस पैमाने पर सरकारी कार्रवाइयों के विस्तार का परिणाम यही होगा कि लोगों की स्वतन्त्रता कम हो जायेगी। राष्ट्रपति रूजवेल्ट और उनके अनेक अनुयायियों ने आशावाचक यही उत्तर दिया कि आर्थिक कल्याण के उपायों से स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र को बल मिलेगा। १९३८ में एक रेडियो भाषण में उन्होंने अमेरिकियों से कहा "उत्तम वरं राष्ट्रों में लोकतन्त्र तुल्य होना है, इसलिए नहीं कि लोग लोकतन्त्र को नापसन्द करने से परन्तु इसलिए कि वे बेरोजगारी और अस्थिर स्थिति से तंग आ गए थे, वे देखते थे कि उनके बच्चे भूखे हैं और वे कुछ नहीं कर सकते जब कि समुचित नेतृत्व के अभाव में सरकार कमजोरी और गड़बड़ी में पड़ी हुई थी। अन्त में नेतृत्व की अवस्था में उन्होंने कुछ खासा मिलने की आशा से स्वतन्त्रता का बलिदान कर दिया। हम अमेरीकी लोग जानते हैं कि हमारा लोकतन्त्र कायम रह सकता है और उससे काम लिया जा सकता है। परन्तु उसे कायम रखने के लिए हमें यह साबित कर देना होगा कि लोकतन्त्रीय शासन की व्यावहारिक क्रिया द्वारा लोगों की सुरक्षा का संरक्षण हो सकता है।...अमेरीकी लोग अपनी स्वतन्त्रता को रक्षा किसी भी मूल्य पर करने पर सहमत हैं और बचाव का पहला मांग आर्थिक सुरक्षा का संरक्षण है।"

यद्यपि रूजवेल्ट का घरेलू कार्यक्रम किन्तन के १० वर्षों से अधिक पहले के कार्यक्रम के समान ही प्रभावी था परन्तु उनको दूसरी अवधि के शुरू ही में वैदेशिक मामलों के शोर ने उसे डंक-ना लिया। समुद्र पार, सामान्य अमेरीकी की नजर से पत्रे, शान्ति, नियम और अन्ततः अमेरीकी सुरक्षा के लिए एक नया खतरा पैदा हो गया था—जापान, इटली और जर्मनी का समग्रवाद। १९३० की दशकाल के शुरू में इनमें से एक राष्ट्र ने हमला कर दिया। १९३१ में जापान ने मंचूरिया पर चढ़ाई कर दी, चीनियों को कुचल दिया और एक वर्ष बाद मंचूकुओ के कठपुतली राज्य की स्थापना की। इटली ने फासिस्टवाद के हाथों पश्चिम यूरोप में अपने सीमान्त का विस्तार किया और १९३५-३६ में दक्षिणपंथा को अधीन कर लिया। जर्मनी ने, जहाँ एडलर हिटलर ने राष्ट्रीय समाजवादी दल संगठित किया था और शासन को बागडोर हाथिया ली थी, फिर से राइन्-लैंड पर कब्जा कर लिया और बड़े पैमाने पर फौजी तैयारी शुरू की।

रूसी समग्रवाद का अन्वेषी स्पष्ट हो गया और जूरी जर्मनी, इटली और जापान ने एक के बाद दूसरे छोटे राष्ट्रों पर हमला जारी रखा, अमेरीकी

आवाका क्रोध में बदल गयी। १९३८ में जब हिटलर ने आस्ट्रिया को राइख में मिला लेने के बाद चेकोस्लोवाकिया के सुडेटनलैंड पर भी दावा किया तो किसी भी क्षण लड़ाई छिड़ने की सम्भाना होती लगी। अमेरीकी लोग प्रथम महायुद्ध में लोकतन्त्र के लिए धर्मयुद्ध की असफलता देख चुके थे और अब भ्रम से मुक्त होकर उन्होंने यह घोषणा की कि किन्हीं भी परिस्थितियों में युद्धकारी को सहायता नहीं दी जाएगी। तटस्थता विधान में, जो १९३५ से १९३९ तक घोषा-घोषा करने बनाया गया, किसी भी युद्धकारी राष्ट्र से व्यापार करना या उसे उधार देना निषिद्ध कर दिया गया था। इसका उद्देश्य किसी भी मूल्य पर अमेरीका को गैर अमेरीकी युद्ध में प्रसन्न होने से रोकना था।

तानाशाहियों ने दूसरा विश्वयुद्ध छेड़ दिया

राष्ट्रपति रूजवेल्ट और विदेश मन्त्री हूल—दोनों ने इस विधान का शुरू से ही विरोध किया। राष्ट्रपति ने अब अमेरिकियों को इन शक्तियों द्वारा किए गए विनाश से अग्रतन कराने और अमेरीका को नैतिक व भौतिक रूप से तैयार करने का उपाक्रम किया। अमेरीकी नौसेना को मुद्रण करने के लिए उन्होंने बहुत काम किया था, उन्होंने कठपुतली राज्य मंचूकुओ को मान्यता देना अस्वीकार कर दिया। हूल के साथ मिलकर उन्होंने 'उत्तम पड़ोसी नीति' द्वारा पश्चिमी गोलार्ध के राष्ट्रों में सम्यक् स्थापित करने में महत्वपूर्ण प्रगति की। १९३५ में जब हूल की पारस्परिक व्यापारिक सन्धियों की पुनः पुष्टि की गयी तब उनकी साथ अमेरीका ने छः लैटिन अमेरीकी राष्ट्रों के साथ सन्धियों की और हस्ताक्षर-कर्तव्यों को बचनबद्ध कर दिया कि हूल द्वारा किए गए प्रादेशिक परिवर्तनों को मान्यता न दी जायेगी।

रूसी समग्रवादी नीति अधिक आक्रमणकारी हो गयी और हिटलर ने पोलैंड, डैन्मार्क, नार्वे, हावैण्ड, बेल्जियम और फ्रांस के विपक्ष युद्ध-गर्जन की इसलिए अमेरीकी भावना भी और कठोर हो गयी। अमेरीकियों को पहली प्रवृत्ति यूरोपीय सभ्यता से दूर रहने की थी। किन्तु कुछ समय बाद उन्हें इस बात पर विचाराव हो गया कि शक्तियों का जो गुट प्रत्येक की सुरक्षा को घमकी दे सकता है उससे उनकी अपनी सुरक्षा को भी खतरा हो सकता है।

इस विचाराव में शीघ्र ही दृढ़ता लाने का कारण था फ्रांस के पतन से होने वाली नाजी सैनिक शक्ति का प्रदर्शन। जब १९४० के प्रौथमकाल में बिट्टेन पर हवाई आक्रमण आरम्भ हुए तब बहुत कम अमेरीकी विचारों में तटस्थ रह गए थे। अमेरीका

ने लैटिन अमरीकी गणराज्यों के साथ रॉसफ़ेल्ट होकर पश्चिमी गोलार्ध के लोक-तन्त्रीय राष्ट्रों की सम्पत्ति को सामूहिक सुरक्षा प्रदान की। संयुक्तराज्य अमरीका और कनाडा ने एक संयुक्त रक्षा बंध के स्थापना की। कापेंगे ने आरोंपिल सभकों का सामना करने के लिए पुनः सार्वभौमिकण के लिए वृद्ध धन राशि स्वीकृत की। नवम्बर १९६० में अमरीकी इतिहास में पहला शान्तिवादीय अतिवाधे भस्मी बिल्ड लागू किया गया।

१९६० में राष्ट्रपति के चुनाव आन्दोलन ने अमरीकी मनोभावों की प्रबल एकता का प्रदर्शन हुआ। रूब्रकेट के प्रविष्टि के डेरेल विस्की ने राष्ट्रपति की विदेशी नीति का समर्थन किया और रूब्रि बरू रूब्रकेट के शेरुड कायंकमा मे भी अधिकतर महत्त्व ये डम कारण उनके गाम शायकरी विचार-रन्तु की कमी थी और नवम्बर के चुनाव में रूब्रकेट को फिर से बहुमत प्राप्त हुआ। अमरीकी इतिहास में यह पहला अवसर था कि एक ही व्यक्ति राष्ट्रपति पद पर तीसरी अवधि के लिए चुना गया।

अधिकतर अमरीकी जब उन्मुक्ततापूर्वक युरोपीय युद्ध-गति का निरीक्षण कर रहे थे तब मुद्र पूर्वीय देशों में तनाव बढ़ रहा था। अपनी युद्धनीतिक स्थिति को सुधारने के अवसर ने लाभ उठाने की उन्मुक्तता में जापान ने भारत पूर्वंक एक 'नई व्यवस्था' द्वारा संपूर्ण पूरुषों और प्रधान-महामात्र श्वर पर अना प्रभुत्व फेजाने की घोषणा की। स्वयं को प्रतिरोध में अत्याधे देवकर ब्रिटेन शर्षाई मे पीछे हट गया और उसने अश्वामी रूप मे वर्मा गंग को बंद कर दिया। १९६० के शीत काल में जापान ने कमहोर विषी सरकार मे फागिमी हिन्द चीन में हवाईअड्डे डम्नेमाल करने की अनुमति प्राप्त कर ली। नवम्बर में जापान के रोम-बलिन्द धुरी शक्तियों में रॉसफ़ेल्ट हो जाने के बाद संयुक्त राज्य ने जापान को होनेवाला रूही लोहे का निर्यात निषिद्ध कर दिया।

युद्ध में तत्परता से संलग्न

१९६० तक यह प्रतीत होने लगा था कि जापानी कदाचित ब्रिटिश मर्यादा और नीदरलैण्ड्स एण्डीज के तेल, टिन और स्वड के लिए दक्षिण दिशा में घुम जाएंगे। जुलाई, १९६१ में जब विषी सरकार ने जापानियों को बाकी-हिल्डचीन पर अधिकार कर देने दिया तब संयुक्त राज्य ने जापानी परिसम्पत्ति को जन्त कर लिया। १९ नवम्बर को, जनरल टोडो की सरकार के शासन महत्त्व लेने के बाद साबुरो कुक्यु नामक एक विधायक राजदूत अमरीका आया। कुक्यु ने

घोषणा की कि उसके मिशन का उद्देश्य एक शान्तिपूर्ण सम्झौते पर पहुँचना था और ९ दिसम्बर को राष्ट्रपति रूब्रकेट ने जापान के मन्त्रालय के पास एक निजी शान्ति मन्देश भेजा। ७ दिसम्बर की प्रातः जापानियों का जवाब अमरीकी रक्षा मंत्र के अट्टे पर्ल हाथर पर बसों की बोलार के रूप में आया।

हवाई, मिट्टे, बेक, और प्रथम पर जापानी हमलों की खबर देने ही अमरीकी रक्षियों द्वारा प्रशासन की गयी तो अतिरिक्त फौज में परिचालन हो गया। राष्ट्रपति रूब्रकेट के शब्दों में वह 'अनुमेजित और भोलापूर्ण' हमला था। ८ दिसम्बर की कापेंगे में जापान के साथ युद्ध स्थिति घोषित कर दी। तीन दिन पश्चात् जर्मनी और इटली ने संयुक्त राज्य अमरीका के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया।

युद्ध का पुरु होना अमरीकी लोगों को एक बड़ी शर्मिलक पराजय-सी लगी। उन्होंने सैन्यवाद को फभी भी पसन्द या स्वीकार नहीं किया और क्यासम्भर अमरीकी संविधान में अमरीकी जनजीवन पर अयोगिक नियन्त्रण की ही व्यवस्था है। अतः अमरीका में युद्ध को भयानक और दुर्भाग्यपूर्ण परन्तु इतिहास का एक आवश्यक मांड माना गया है। कोई भी अमरीकी युद्ध के उद्देश्य को स्थायी शान्ति स्थापना के अतिरिक्त नहीं मानता। ९ दिसम्बर को अमरीकी जनता का युद्ध मन्देश देते हुए राष्ट्रपति रूब्रकेट ने उक्त याद दिलाया कि 'हमारा मरणा उद्देश्य शीघ्र युद्ध-स्थिति में बहून पर और ऊँचा है। जब हम बल प्रयोग का सहाय लेते हैं, जैसा हम समय हमारे लिए आवश्यक है, तो हमारा मरणा यही होगा है कि यह बल प्रयोग शार्वारिक अन्तिम के विस्फाद और चरम अशर्षाई के लिए हो। हम अमरीकी विन्मन्धारी नहीं हैं—हम निरामन्धारी हैं।'

राष्ट्र नेत्री मे युद्धप्रथम में नूट गया जिसमें उसे अपनी जनान्ति और समस्त औद्योगिक क्षमता को एकत्रित करना था। ९ जनवरी, १९६० को राष्ट्रपति रूब्रकेट ने जिन उत्पादन लक्ष्यों की घोषणा की उन्हें मुनुकर सामान्य समय में राष्ट्र विन्धित हो जाना। उन्होंने उग पंग ३०,००० हवाई बहाज, ८५,००० टैंक, २०,००० हवामार तोपों और व्यापारिक जहाजों बंदे में १,८०,००,००० टन कुल भार वृद्धि की मांग की। राष्ट्र की समस्त कारखाने—खेती, उत्पादन, खनन, व्यापार, श्रम, धन-जमाना, संचार और शिक्षा तथा सामूहिक सभ्या तक भी किसी न किसी रूप में नग्न व परिश्रान्त नियन्त्रण में ले ली गयी। अत्यधिक राशि में धन एकत्रित किया गया; नग्न बड़े उद्योग स्थापित किए गए; विमानों और जहाजों के बड़ी मात्रा में उत्पादन के लिए अद्भुत नयी तकनीकी प्रणालियों का विकास हुआ; जनसंख्या में बहून स्थानान्तरण हुआ। बहून में



१९४५ में, संकलित क्लॉकवेट के आकस्मिक निषण के उप-
रालत राष्ट्रपति पर की शपथ लेते हुए उप-राष्ट्रपति हैरी
ट्रूमैन। तीन वर्ष बाद राष्ट्रपति पर के लिए उन्हें पुनः चुना गया।

अनिवार्य भरती कानूनों द्वारा अमरीकी फौजों में सैनिकों की गिनती १,५१,००,००० तक पहुँच गयी। १९४३ के अन्त तक लगभग ६,५०,००,००० स्त्री-पुरुष फौजी बर्ही या अनिवार्य व्यवसायों में लगे थे।

अमरीका के युद्ध में उतरने के वीर ही बार यह निश्चय किया गया कि पश्चिमी मित्रराष्ट्रों का आवश्यक युद्ध-प्रयाग यूरोप में संकेन्द्रित होना चाहिए जहाँ शत्रु शक्ति का केन्द्रबिन्दु था। इन चीज प्रशान्त महासागर के युद्ध क्षेत्रको गण्य माना गया। तथापि, १९४२ के उस अन्धकारपूर्ण वर्ष में पहली महत्वपूर्ण अमरीकी मफलताएँ प्रशान्त महासागर क्षेत्र के युद्ध में हुईं। ये मुख्यतः नौसेना और नौसेना के वायुयानों की मफलताएँ थीं। मई १९४२ में कोरल सागर के युद्ध में जापानियों को भारी नुकसान हुआ और जापानी नौसेना को आस्ट्रेलिया पर आक्रमण करने के विचार को छोड़ने पर मजबूर हो जाना पड़ा। जून में नौसेना वायुयानों ने मित्रबे द्वीपों के पास जापानी जमीं बेड़े को भारी क्षति पहुँचाई। जगसून में थल और जलसेना द्वारा संयुक्त कदम उठाया गया जिनके परिणामस्वरूप अमरीकी फौजें गुआडाल कनाल पर उतरी और बिस्माथ सागर के युद्ध में एक अन्य नौमैकिक विजय हुई। जहाजों के उत्पादन में आधिपत्य के फलस्वरूप नौसेना में वीरघना में वृद्धि हुई और हमले आगे के लिए जीत को आगा भी बढ़ी।

मित्रराष्ट्रों की विजय

हमी चीज यूरोपीय रणक्षेत्र में युद्ध-सामग्री व रगद का सम्भरण शुरु हो चुका था। १९४२ के अन्त और शीतकाल में अमरीकी युद्ध सामग्री द्वारा युद्ध बल जाने पर ब्रिटेन की सेनाओं ने मिथ पर लखित जर्मन हमले को तोड़ दिया और रोमेल को बिचौली में दबक कर स्वेड्र क्षेत्र के लन्दे को समाप्त कर दिया। ७ नवम्बर को एक अमरीकी सेना फ्रांसीसी उत्तरी अफ्रीका में उतरी। विषम युद्ध के बार इटली और जर्मनी की सेनाओं को बुरी तरह परास्त किया गया। युद्धबादियों की संख्या ३,६९,००० थी। १९४३ के शीतम के मध्य तक मेडिटरेनियन सागर के दक्षिणी तट में फासिस्ट सेनाएँ साफ कर दी गयी थीं। नवम्बर में मार्शल बेरोल्लियो के नेतृत्व में इटली ने युद्ध विराम सन्धि पर हस्ताक्षर किये और जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। यद्यपि इटली में घोर युद्ध चल रहा था। मित्र सेनाओं ने जर्मनी के रेल मार्गों, कारखानों और अस्त्रागारों पर सवनासी हवाई हमले किए। यूरोप के काफी अन्दर की ओर ज्योग्स्ट्री 'रूमानिया' में जर्मन तेल भण्डार ध्वंस कर दिए गए।

१९४३ के अन्त में, मित्र राष्ट्रों में युद्ध नीति पर काफी तर्क-वितर्क के बाद पश्चिमी मोर्चा शुरू करने का फैसला हुआ जिसमें रूसों ने जर्मनी को उसमें कहीं अधिक सेनाएं हटानी पड़ी जितनी कि इटली की लड़ाई में लड़ायी जा सकती थी। जनरल ड्यूवाइट डी. आइज़नहाइवर सर्वोच्च कमाण्डर नियुक्त हुए और बड़ी मात्रा में सैन्यता से तैयारी की गयी। ६ जून को जब रूस की ओर से जवाबी हमला हो रहा था तो अमेरिकी और ब्रिटिश बहादुरी सेना को पहली टुकड़ी एक उल्लूकत वायुसेना के संरक्षण में तामंगरी समुद्र तट पर उतरी। कितारे के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया गया, और अधिक सैनिक लाए गए; बहुत से जर्मन बचाव दलें घूम कर सैन्य संचालन में फंसा लिए गए; और अन्त में मित्र सेनाएं फ्रांस में से होकर जर्मनी में बढ़ने लगी परन्तु उन्हें हमेशा ही बहुत दुर्बलाव का सामना करना पड़ा। २५ अगस्त को पेरिस फिर से ले लिया गया। जर्मनी की सीमा पर मित्र सेनाओं को कैंटन जवाबी हमलों के कारण काफी देर लगी परन्तु फरवरी और मार्च, १९४५ में पश्चिम में सेनाएं जर्मनी में घुसने लगी और जर्मन सेनाएं पूर्ण में पीछे हटने लगी। ८ मई को तीसरी रादृष (जर्मनी) की बची-खुबी बल, जल और वायु सेनाओं ने हथियार डाल दिए।

इस बीच पैसिफिक क्षेत्र में अमेरिकी सेनाओं ने बहुत उन्नति कर ली थी। जैसे-जैसे अमेरिका और आस्ट्रेलिया की सेनाएं एक के बाद एक मालोम्बन, न्यू-ब्रिटेन, न्यू गिनी और बोंगनरिल द्वीप देखी गयी। बहरी हुई नौसेनाओं ने जापानी रसाद मार्ग बन्द कर दिए। अक्टूबर, १९४४ में फिलिपाइन सागर में नौसेना विजयी हुई। आइसो-जिमा और ओकिनावा में अन्ती कार्रवाइयों में ऐसा पता चला कि यद्यपि जापानी स्थिति नैराश्वर्यपूर्ण थी तथापि साधद जापानी प्रतिरोध काफी दिव चलेगा। परन्तु अगस्त में हीरोशिमा और नागासाकी पर अणु बम पड़ने से युद्ध एकाएक समाप्त हो गया। जापान में २ अक्टूबर, १९४५ को आत्म-समर्पण कर दिया।

मित्र राष्ट्रों ने युद्ध प्रयासों के साथ-साथ युद्ध के राजनीतिक पहलुओं पर विचार करने के लिए कई बैठकें की। इनमें से पहली बैठक अगस्त १९४१ में राष्ट्रपति रूजवेल्ट और प्रधानमन्त्री चर्चिल के बीच एम्स सगर पर हुई जब तक अमेरिका युद्ध में सक्रिय रूप से नहीं लगा था और इंग्लैण्ड व रूस को मैसिक स्थिति बड़ी कमजोर प्रतीत होनी थी। उनकी यह मुलाकात एक त्रयी जहाज पर हुई और रूजवेल्ट व चर्चिल ने एक उद्देश्य-वक्तव्य—एटलान्टिक चार्टर—जारी किया जिसमें उन्होंने इन उद्देश्यों का समर्पण किया: क्षेत्रीय विवर्धन नहीं होगा;



दूसरे महायुद्ध का यह एक सुप्रसिद्ध चित्र है। चित्र में, अमेरिकी नौसेना के जवान पैसिफिक महासागर के एक सामरिक-दृष्टि में महत्वपूर्ण द्वीप, आइसो जिमा में अमेरिकी हथका गाड़ रहे हैं। इस पर नौसेना के ५०,००० जवानों ने हमला किया था और २६ दिनों बाद इस पर अधिकार हो पाया था।



१९४१ में, 'एटलांटिक चार्टर' पर हस्ताक्षर करने के लिए अमरीका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट और ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री बर्बिल म्यूफाउण्डलैण्ड के सागर तट के निकट 'प्रिंस आथ वेल्स' नामक ब्रिटिश युद्धपोत पर मिले। 'एटलांटिक चार्टर' एक ऐसी आठ प्रमुखी घोषणा थी जिसके अन्तर्गत अमरीका और ब्रिटेन ने संयुक्त रूप से शान्ति के लिए आधारभूत सिद्धान्त घोषित किए थे।

प्रारंभिक परिवर्तन बिना वहा की जनता की इच्छा के नहीं होगे; जनता को अपने शासन का रूप निर्धारित करने का अधिकार होगा; लोगों के छोले गए स्वशासन अधिकार जोटा दिए जाएंगे; सब राष्ट्रों के बीच आर्थिक सहयोग; सब लोगों के लिए युद्ध, भय और अभाव से मुक्ति; नौबालन स्वतन्त्रता; अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बल-प्रयोग की समाप्ति।

इसके बाद का बड़ा आँग्ल-अमरीकी सम्मेलन जनवरी, १९४३ में कामाब्लोंका में हुआ। इसमें यह निश्चय हुआ कि धुरी-शक्तियों और उनके बालकन पिछल्लगुओं से 'बिना शर्त समर्पण' के बिना किसी तरह की शान्ति मन्थि नहीं की जायगी। इस शर्त का उद्देश्य युद्धरत राष्ट्रों को समझ जतना को यह आश्वासन देना था कि फासिस्ट और नाजीवाद के प्रतिनिधियों से कोई शान्ति बार्ता नहीं की जायगी, कि ऐसे प्रतिनिधियों अपनी श्रवणों शक्ति को बचाने के लिए कोई मोदेकारी नहीं कर सकते; इससे पहले कि जर्मनी, इटली और जापान की जनता से अन्तिम शान्ति मन्थि की शर्तों की जाय उनके नैतिक सहायिकाशियों को समस्त संसार के सामने अपनी पूर्ण पराजय स्वीकार करनी पड़ेगी।

युद्ध की समाप्ति

अगस्त, १९४३ में संयुक्त में एक आँग्ल-अमरीकी सम्मेलन हुआ जियम जापान के विरुद्ध कार्रवाई और राजनीति व युद्धनीति के अन्य पहलुओं पर विचार किया गया। दो महीने बाद इंग्लैण्ड, अमरीका और रूस के विदेश मन्त्रियों की बैठक मारको में हुई। उन्होंने 'बिना शर्त आत्मसमर्पण' की नीति की पुनः पुष्टि की, इटली के फासिस्टवाद को समाप्त करने और आशिया की स्वाधीनता वापस देने की मांग की और शान्ति के हिल में शक्तियों के बीच युद्धोत्तर सहयोग का समर्थन किया। कैरो में, जहाँ रूजवेल्ट और बर्बिल ने बांग काई-शेक में भेंट की, जापान के बारे में शर्तें तय की गयी जिसमें उनके पिछले आक्रमण के मजरी लाभों को त्यागना भी शामिल था। नेहरा में २८ नवम्बर को बर्बिल, रूजवेल्ट और स्टालिन ने मारको सम्मेलन की शर्तों की पुनः पुष्टि की और संयुक्तराष्ट्र के द्वारा स्वाधीन शान्ति की मांग की। लगभग दो वर्ष उपरालत करवरी १९४५ में, जब विश्वय अवसम्भावी प्रतीत होनी थी, उनकी एक बैठक यावटा में हुई, जिसमें कुछ और समझे हुए। जर्मनी के समर्पण के कुछ ही समय बाद रूस जापान के विरुद्ध युद्ध में शामिल होने को मुत्तकण से राजी हो गया; पोलेण्ड का पूर्वी सीमान्त मोटे तौर से १९१९ की कर्जने-रेखा पर तय किया गया; जर्मनी ने

भारी क्षतिपूर्ति बसूल करने की स्टालिन की मांग पर कुछ विचार करने के बाद निरपेक्ष स्थागित रखा गया (रूज़वेल्ट और चर्चिल ने इस मांग का विरोध किया था); मित्रराष्ट्रों द्वारा जर्मनी पर कब्जा करने और युद्ध अपराधियों के मुकदमों के विधिगत प्रबंध किए गए; परिष्कृत क्षेत्रों की जनता से सम्बन्धों के बारे में एटलांटिक चार्टर के सिद्धान्तों की पुनः पुष्टि की गयी। यह आसानी से मान लिया गया कि संयुक्त राष्ट्र की मुरझा परिपक्व की रजिनियों को अपनी मुरझा से सम्बन्धित मामलों में निपेधाधिकार मिलने चाहिए। काफी मतभेद के उपरान्त जिसमें स्टालिन और चर्चिल एक तरफ और रूज़वेल्ट दूसरी तरफ थे, यह तय हो गया कि यूक्रेन और बाइंगोरिया की बड़ी जनसंख्या के आधार पर संयुक्तराष्ट्र-सभा में संवियन मंच को दो प्रतिनिक्त वोटों की मांग का सभी शक्तियां सम्पन्न करेगी।

याल्टा से लौटने के केवल दो महीने बाद ही जब वे जार्जिया में अपने 'लिटिल ब्लाइट हाउस' में छुट्टी बिना रहे थे, फंक्लिन डी. रूज़वेल्ट की पक्षाघात से मृत्यु हो गयी। अमरीकी दनिहास में देव और बाहर बहुत कम लोगों की मृत्यु का इतना शोक मनाया गया है और कुछ समय तक अमरीकी लोग कभी पूरी न होने वाली क्षति की भावना से ग्रस्त रहे। तथापि, लोकतन्त्री नेतृत्व किसी भी व्यक्ति की अपरिहार्यता पर आधारित नहीं है; अधिक समय नहीं गुजरा था कि रूज़वेल्ट के उत्तराधिकारी हेरी एम. ट्रूमैन ने न्यू डील की परेन्ट और विदेश नीति के अनिवार्य उद्देश्यों के आधार पर सक्रिय नेतृत्व करना शुरू कर दिया।

जुलाई, १९४५ तक जब पोट्सडैम में फिर से इंग्लैण्ड, अमरीका और रूस का सम्मेलन हुआ तो जर्मनी आत्मसमर्पण कर चुका था। सम्मेलन के बीच में ही इंग्लैण्ड में आम चुनाव हुए जिसका नतीजा यह हुआ कि यद्यपि चर्चिल और

कनीमेण्ट एटली दोनों ही सम्मेलन के प्रथम भाग में उपस्थित थे, केवल एटली ही सम्मेलन-तार्ता की अन्तिम भाग में रहे गए थे। यद्यपि प्रधान महासचिव क्षेत्र के युद्ध के कुछ पहलुओं पर विचार किया गया, परन्तु सम्मेलन का आरम्भिक उद्देश्य कब्जा करने की नीति और जर्मनी के भविष्य के सम्बन्ध में कार्यक्रम निर्धारित करना था। यह तय हुआ कि जर्मनी की शासितार्तीय आरक्षकताओं के लिए पर्याप्त औद्योगिक क्षमता छोड़ देनी चाहिए परन्तु उनके पास मैनिफेस्ट संशयियों के लिए कोई अतिरिक्त गुजरात नहीं होना चाहिए। यह भी तय हुआ कि जाने हुए नाशियों पर मुकदमा चलाया जाएगा और अगर उनमें यह गांठिन हो गया कि नाशियों को याजता के अनुसार उन्होंने बचन-लव नर-माराय म भ्राय लिया है तो उन्हें मृत्युदण्ड भोगना पड़ेगा। नाशियों की यातावरण म पत्नी पूरी पीछी को पुनः शिक्षित करने की आवश्यकता स्वीकार की गयी और साथ ही साथ जर्मनी में फिर से लोकतन्त्रीय यातावरण को पैदा करने के वाटे निश्चालन भी। जर्मनी से क्षतिपूर्ति बसूल करने के मसले पर विचार करने में भी काफी समय लगा। संवियन मंच के कब्जे में आए हुए क्षेत्र में उन्हें औद्योगिक कारखाने और सम्पत्ति उठा ले जाने की इजाजत दे दी गयी, परन्तु याल्टा सम्मेलन में उठाए हुए क्षतिपूर्ति के रूमी दावे, जिनकी रकम कुल १०,००,००,००,००० डॉलर थी, विवाद का विषय बने रहे। पोट्सडैम में तय हुए आसगी मुकदमे नवम्बर १९४५ में ग्यूरम्बर्ग में शुरू हुए। इंग्लैण्ड, फ्रांस, संवियन मंच और अमरीका के कुछ सम्मानित न्यायशास्त्रियों के सामने जर्मन नेताओं पर न केवल आक्रमणकारी युद्ध करने और उत्सका पडयन्त्र रखने बल्कि युद्ध और मानवता के नियम तोड़ने के भी आरोप लगाए गए। मुकदमे दम महीने में अधिक चले और उनके परिणामस्वरूप तीन प्रतिवाधियों को छोड़कर बाकी सभी दण्डित हुए।

आधुनिक संसार में अमरीका

“हमारा बुनियादी उद्देश्य अब भी वही है; स्वतन्त्र और स्वाधीन राष्ट्रों का वास्तविक विश्व सम्बन्ध—जिन्हें अपना भविष्य और अपनी प्रणाली चुनने की पूरी आज़ादी हो।”

—जॉन एफ० केनेडी,
कांग्रेस को संदेश, ११ जनवरी, १९६२

जब कि 'पोट्रमडैम-यार्तो' चल रही थी तभी ५१ राष्ट्रों के प्रतिनिधि संयुक्त राष्ट्र की रूपरेखा तैयार करने के लिए सत्र कागमिस्को में एकत्र हुए। अठ सप्ताह काम करने के उपरान्त उन्होंने संयुक्तराष्ट्र-घाटेर का समीक्षा पूरी तरह तैयार कर लिया, जिसमें एक नये विव्ध-नगठन की रूपरेखा थी जहां अन्तरराष्ट्रीय मतभेदों पर शांतिपूर्ण ढंग से विचार किया जा सके और भूत्व तथा बीमारी का मिलकर सामना किया जा सके। यद्यपि प्रथम महायुद्ध के पश्चात् मनेट ने अमरीका को 'लीग आव नेशन्स' का सदस्य बनने की अनुमति नहीं दी थी तथापि अब उनसे ० बोटों के मुकाबले ८९ बोटों से संयुक्त राष्ट्र घाटेर का तुलना ही अनुसमर्षण कर दिया। इस कार्रवाई से अलगावकार, जो अमरीकी विदेश-नीति का महत्वपूर्ण तत्व रहा था, समाप्त हो गया और अमरीका ने अन्तरराष्ट्रीय मामलों में अपनी पूरी जिम्मेदारी स्वीकार की।

अगस्त १९६५ में जापान के आत्मसमर्पण के उपरान्त अमरीकियों ने अपनी समस्त शक्ति धरंठ मामलों पर केन्द्रित की। एक सत्रिकट समस्या थी चीटने वाले लाखों सैनिकों का अर्थनिक जीवन में पुनः समाकलन। दो वर्षों से सैनिकों की संख्या १ करोड़ २० लाख से घटाकर १५ लाख कर दी गयी। फौजी पुनः समजन कानून (जिसका प्रचलित नाम 'जी. आई. बिल ऑफ राइट्स' है) के अनुसार पुराने सैनिकों को सरकारी ऋण द्वारा घर खरीदने और व्यापार या पारिग का काम शुरू करने की सुविधा दी गयी। इसके द्वारा लाखों पुराने सैनिकों को निराशा के लिए भी धन दिया गया और टम प्रकार अधिक आयु के विद्यार्थी भी कालेजों में पहुँचे जो प्रायः विवाहित और बाल-बच्चों वाले थे।

अनेक अर्थशास्त्रियों की आशाकाओं के विपरीत अमरीकी अर्थ-व्यवस्था ने बिना किसी गम्भीर बेंरोजगारी समस्या के युद्धकाल से आनिन्काल से संक्रमण किया। उद्योगों के अर्थनिक उत्पादन में लगने ही लाखों आर्थियों को काम मिल गया और फिर भी युद्धकालीन अभाव, थकी हुई मजदूरी और जमा-बचत के

कारण उपभोक्ता सामग्री की बढ़ी हुई मांगें मुश्किल से पूरी हो सकीं। १९६५ और १९६८ के बीच रोजगार में लगे हुए व्यक्तियों की संख्या ५४० लाख से बढ़कर ६१० लाख हो गयी और राष्ट्रीय आय १८,१०० करोड़ डालर से लेकर २२,३०० करोड़ डालर प्रतिवर्ष में अधिक हो गयी।

परन्तु समृद्धि के साथ दूसरी प्रकार की समस्या भी सामने आई। उपलब्ध धरों की संख्या मांग की तुलना में बहुत कम थी। स्थिति केवल १९४७ के बाद ही सुधर सकी जब भवन निर्माण-उद्योग में कुछ तेजी से काम करना शुरू किया। युद्ध के बाद के काल में मूल एकदम से बढ़ गए जिससे स्थिति का भय पैदा हुआ परन्तु दृष्टिगत वस्तुओं के उत्पादन और मांग में मामूजस्य पैदा होने ही मूल्य अधिक स्थायी स्तरों पर आ गए। बढ़ते हुए मूल्यों के कारण बहुत से धर्मिक संगठनों ने अधिक मजदूरी की मांग की और १९६६ की हड़तालों में ४५,००,००० से अधिक मजदूर शामिल हुए। १९६७ में कांग्रेस ने नया धर्मिक कानून 'टैप हाटले गैबट' पास किया। इस कानून में जिसका धर्मिक नेताओं द्वारा बहुत विरोध हुआ, यह व्यवस्था थी कि किसी भी युनिवर्सिटी या मालिक के लिए कोई अनुबंध तोड़ने से पहले ६० दिन का नोटिस देना आवश्यक था। इस में प्रबंधकों को यह अनुमति भी दी गयी थी कि वे युनिवर्सिटी के अधिकारियों पर अनुबंध तोड़ने का मुकदमा भी चला सकें और वतमान अनुबंधों में दी गयी युनिवर्सिटी सुविधाओं को भी कम कर दिया गया था। इन प्रतिबंधों के होते हुए भी धर्मिकों को और अधिक मजदूरी मिलनी रही और विविध वेतन व मालिकों द्वारा दिए गए स्वास्थ्य बीमा के कारण उनको सुरक्षा में भी वृद्धि हुई।

राष्ट्रों के सामने एक बड़ी समस्या थी अणुशक्ति का विकास तथा नियंत्रण की। जुलाई १९६६ में कांग्रेस ने टमका 'उत्तराधिक्य ५' अर्थनिक मदद्यों वाले 'अमरीकी अणुऊर्जा आयोग' का दे दिया। आयोग के पर्यवेक्षण में अमरीकी वैज्ञानिकों ने अणु-ज्ञान का विकास किया और दूसरे राष्ट्रों के लिए उसे उपलब्ध किया।

उन्होंने कृषि, उद्योग, औषधि-विज्ञान के क्षेत्र में उनके अनेक दार्शनिकालीन उपयोग प्रदान किए।

रिपब्लिकन उम्मेदवार थामस ई. रीकी के विपक्ष १९८८ के चुनाव में राष्ट्रपति ट्रूमैन की अल्पमत पर नुत्तु निष्पत्त्यात्मक विजय ने उन्हें अपने 'किंगर ड्रीम' मुद्दा कार्यक्रम को पाम कराने के लिए प्रेरित किया। यद्यपि कावेम ने इस कार्यक्रम के कुछ भाग अस्वीकार कर दिए परन्तु उन्हें अधिकतर को पाम करके पानून बना दिया। सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था को विस्तारित करके उसे १ करोड़ अधिक व्यक्तियों पर लागू किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय उद्योगों के मजदूरी की ग्यूनक मजदूरी ४० से बढ़ाकर ७५ गैट प्रतिशत बना दी गई। गन्दी बर्नियो हटाने और कम किए गए के पकान बनाने का एक केन्द्रीय कार्यक्रम स्वीकृत हुआ। १९९० के आन्तरिक सुरक्षा पानून में जिसके अनुसार साम्यवादी संगठनों पर महात्मायवादी के पास अपने सस्त्रों की सूची दर्ज कराने का प्रतिबन्ध लागू हुआ, साथ अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का पता चलता था।

अणुशक्ति के अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण का सुझाव

दूसरे महायुद्ध के अन्त में अमेरिकियों और उनकी सरकार को यह आशा थी कि मौखिक संध और पारस्मिक लोकसन्धों के बीच युद्धकालीन सहाय्य जारी रहेगा जिससे सुरक्षित और पारिन्तुष विदेश का निर्माण होगा। अमेरिका ने म्यूकुराण्ट के कई अधिकरणों को स्थापना और वित्तीय सहायता में गतिव भंग किया। अधिकरणों का उद्देश्य था यूरोप, एशिया और अफ्रीका के युद्ध-व्यभिक्त क्षेत्रों का आधिक पुननिर्माण और उनके कटौती का निवारण। बड़ी मात्रा में अमेरिकी महात्मा साम्यवादी व प्रसास्यवादी, दोनों ही देशों के जसुरतमन्द लोगों को पहुँचायी गई।

एक महत्वपूर्ण क्षेत्र जिसमें अमेरिका को अन्तर्राष्ट्रीय गणसंघे की पूर्ण आशा थी, यह था 'अणु बम पर नियन्त्रण'। इस भवानक अन्ध का विकास अमेरिका द्वारा दूसरे महायुद्ध के दौरान में किया गया था जब कि वैज्ञानिकों ने यह प्रमाणित कर दिया था कि जर्मन ऐसे ही बम के निर्माण का प्रयत्न कर रहे हैं। जापान में आत्मसमर्पण कराने के लिए इसका उपयोग किया गया क्योंकि केवल दूसरा रास्ता जापानी हीनों पर बड़ी चढाई करना था जिसमें दोनों तरफ में १० लाख से भी अधिक व्यक्तियों के हतहत होने की सम्भावना थी। अमेरिकी ने यह स्वीकार किया कि आणविक अस्त्रों के विस्तार ने मानवमात के अस्तित्व को खतरा है। इसलिए जून, १९८६ में अमेरिकी प्रतिनिधि बनाई बासक ने

राष्ट्रसभ में एक प्रस्ताव पेश किया जिसमें आणविक सस्त्रों का निषेध करने और समस्त आणविक सस्त्रों पर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण की मांग की गयी थी। अमेरिका ही उस समय ऐसा राष्ट्र था जिसके पास अणु बम था और उनके बमों के अपने भण्डार को गूट करके और गमस्त-व्योत और प्रगट करके अपना सर्वोपरिता छोड़ देने का प्रस्ताव किया। बासक याचना की एक ही मन्ष्य दर्श थी, निरीक्षण और उस लागू कराने के लिए अधिकतम अन्तर्राष्ट्रीय अधिकरण पर किसी भी एक राष्ट्र का निष्पार्थिकरण लागू न हो।

अमेरिकी प्रस्ताव का सम्बन्ध म्यूकुराण्ट सुरक्षा परिषद के १० सदस्यों में से ५ ने किया, परन्तु सोवियत संध ने निष्पार्थिकरण का प्रयोग किया। सभी पारि-प्रस्ताव में यद्यपि सब राष्ट्रों ने अणु अस्त्रों का त्याग करने को मांग की गयी थी तथापि उममें उनके उल्लंघन का पता लगाने के लिए कोई निरीक्षण प्रणाली या उल्लंघन करने वालों को पकड़ देने के लिए किसी लागू कराने की प्रणाली का कोई प्रकथ नहीं था। बासक याचना के अस्वीकरण होने का एक परिणाम हुआ अणु बम में भी कई नूने विनाशकारी अस्त्रों का विकास। निरीक्षण और निष्पार्थिकरण के प्रयत्नों पर इसी प्रकार के मतभेदों के कारण निरन्तरिकरण के लिए बाद में किए गए सम्मेलन भी निष्फल रहे।

सोवियत संध ने पूर्वी यूरोप में स्थित अपनी फोर्सों का उपयोग अत्यन्त के साम्यवादी देशों को मदद देने और प्रसास्यवादी देशों को उपाय कर सभ-सम्बन्ध सन्धारों स्थापित करने के लिए किया। अमेरिका में यह एक बड़ी चिन्ता का विषय बन गया। युद्ध समाप्त होने के दो वर्षों ने भी कम के अन्दर पोलैण्ड, हंगरी, युगोस्लाविया, बुल्गारिया, अल्बानिया और ब्रमनी के सभी अधिकतम क्षेत्रों में कम्प्यूनिस्ट सरकारें बन गईं। (अर्थात् ही वर्षों ने कोसोवो-नाकिया भी साम्यवादियों के हाथ आ गया।) १९८० के अन्त में साम्यवादी विस्तार का खतरा और भी गूट हो गया जब यूनात में कम्प्यूनिस्ट छापेमार दस्तों को सभी सहायता मिली और शार्डेनेवित्ज पर तुर्की के नियन्त्रण के विपक्ष सभ ने घमकी दी। राष्ट्रपति ट्रूमैन ने कावेम के सफल यह धोषणा की कि 'अमेरिका को यह नीति हानी चाहिए कि उन स्बन्ध लोमों की सहायता की जाय जो सभसभ अत्यन्तम्बको या बाहरी दबाव द्वारा अर्थात् किए जाने के प्रयासों का मुकाबला कर रहे हैं।' यह नीति बाद में 'ट्रूमैन डाकिटन' कहलायी और इसके परिणामस्वरूप पहले-पहल कावेम द्वारा सींग और तुर्की को आधिक और फोर्सी सहायता के लिए ४० करोड़ डालर की धनराशि प्रदान की गयी। दो वर्षों के अन्दर ही सींग में पून-धरण्या हा गयी, तुर्की को उपकी

प्रादेशिक अलखटना का विरुद्धता दिला दिया गया और भूमध्यसागर की ओर साम्यवादी विस्तार रोक दिया गया।

उपनिवेशवाद के शीघ्र अन्त की मांग

अमरीका ने उपनिवेशवाद का विरोध और दूसरे क्षेत्रों में आत्म-निकलप के सिद्धान्तों का समर्थन प्रदर्शित किया। १९४६ में राष्ट्रपति ट्रूमैन ने फिलीपीन्स की पूर्ण स्वतन्त्रता घोषित की। अगले वर्ष कोरिया में पोटोरीको के लोगों को अपना गवर्नर चुनने की अनुमति दे दी। यह १९५२ में उनको स्वशासन के पूर्ण अधिकार देकर सामान्य नागरिकता और स्वतन्त्र चुनाव के आधार पर अमरीका में सम्मिलित करने की दिशा में पहला कदम था। अमरीकी नेताओं ने भारत, पाकिस्तान और बर्मा को स्वतन्त्रता दिए जाने के लिए भी इंग्लैण्ड को प्रोत्साहित किया और दक्षिण-पश्चिम में दक्षिण-पश्चिम को मुक्ति दिलाने में भीघ्नता करने के लिए, मध्यस्थता भी की। १९४९ में राष्ट्रपति ट्रूमैन ने विश्व के नव-विकसित क्षेत्रों को तकनीकी और वित्तीय अमरीकी सहायता में भीघ्नता करने के लिए अपने 'प्लानेट फोर' (चारभूमी) कार्यक्रम का प्रस्ताव पेश किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि, शिक्षा, तांत्रिकीय स्वास्थ्य, आवास और कई दूसरे क्षेत्रों में अमरीकी विशेषज्ञों ने समस्त एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीकी देशों को सहायता और सलाह प्रदान की।

जिस समय इन नवोदित राष्ट्रों में राजनीतिक और आर्थिक विकास हो रहा था, यूरोप के युद्ध-व्यथित देशों को कठोर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के समर्थन, १९४७ में, व्याख्यात देने हुए विदेश मंत्री जार्ज सी. मार्शल ने यूरोप में आर्थिक व्यवस्थाओं को पुनः स्थापित करने के एक विस्तृत कार्यक्रम का प्रस्ताव किया। यह कार्यक्रम बाद में 'मार्शल योजना' कहा गया और इसके अन्तर्गत भाग लेने के इच्छुक किसी भी यूरोपीय राष्ट्र को अमरीकी धन, सामग्री और मशीनें देने का प्रस्ताव किया गया। (यद्यपि सोवियत संघ और उसके पूर्व-यूरोपीय पिछलग्गू देशों को भी कार्यक्रम में सम्मिलित करने का प्रस्ताव किया गया था तथापि उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया।) १२ अरब डॉलर के सामान और सेवाओं की अमरीकी सहायता का यह वृहत कार्यक्रम अप्रैल १९४८ में, लागू किया गया। आइसलैण्ड से लेकर तुर्की तक १६ देशों को शीघ्र आर्थिक पुनर्गठन प्राप्त करने में इसने सहायता दी। तीन वर्षों में कम की अवधि में युद्ध से पहले की तुलना में औद्योगिक उत्पादन २५ प्रतिशत और कृषि-उत्पादन १४ प्रतिशत बढ़ गया।

जिस समय 'मार्शल योजना' प्रगति कर रही थी, पश्चिमी बलिन में, जो इंग्लैण्ड, फ्रांस और अमरीकी फौजों के कब्जे में था, एक विषम स्थिति उत्पन्न हो गयी। पूर्वी जर्मनी के रूसी क्षेत्र में १९० मील अन्दर की ओर इस समूह, नॉकनन्बेरी और पश्चिमोराट्टों के समर्थक समुदाय की उपस्थिति साम्यवादी नेताओं के लिए कठिनाई का कारण थी। बलिन में पश्चिमी शक्तियों को बाहर निकाल देने की आशा में १९४८ के वसन्त में रूसी अधिकारियों ने जर्मनी के पश्चिमी क्षेत्र और बलिन के बीच मुक्त और रेल यातायात पर पहले पाबन्दी लगायी और फिर पूर्णतः रोक लगा दी। १९४८ की शीघ्र में शुरू करके और लगभग १ वर्ष तक निरन्तर अखंड और अमरीकी विमानों ने २० लाख टन से अधिक सारा सामग्री, ईंधन, दवाइयाँ और पश्चिमी बलिन के लोगों को जरूरत का अन्य सामान डोया। अन्त में जब रूसियों को यह विरुद्ध हो गया कि उनको बाल असफल रही है तो मई १९४९ में उन्होंने ताकेबन्दी उठा दी।

पूर्वी यूरोप में रूसी प्रभाव के बढ़ने और यीप व तुर्की के विरुद्ध धमकियों के पड़ना बलिन संकट आने में समस्त पश्चिमी यूरोप में तनसनी फैल गयी। इसके परिणामस्वरूप उत्तरी अंतर्जातिक गठिप संघटन (एन. ए. टी. ओ.) की स्थापना अप्रैल, १९४९ में रूसी आक्रमण की सम्भावना के विरुद्ध सदस्य राष्ट्रों के फौजी बचावों का समर्थन करने के लिए हुई। बेल्जियम, कॅनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, इंग्लैण्ड, आइसलैण्ड, लक्जेंबर्ग, नीदरलैण्ड, नार्वे, पुर्तगाल और अमरीका इस बात पर सहमत हुए, कि उनमें में किसी के भी विरुद्ध आक्रमण सबके विरुद्ध माना जायेगा। यीप, तुर्की और पश्चिमी जर्मनी भी बाद में इसमें शामिल हुए। दिसम्बर, १९५० में जनरल इवाइट डी. आइजनहाइवर एन. ए. टी. ओ. फौजों के सर्वोच्च कमाण्डर नियुक्त हुए। ट्रूमैन प्रशासन के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अमरीका का पञ्चना काल यूरोप तक ही सीमित नहीं था। १९४८ में अमरीका ने २१ लैटिन अमरीकी राष्ट्रों में मिलकर अमरीकी राज्य संगठन की स्थापना की जिसका उद्देश्य अन्तर अमरीकी विवादों का शांतिपूर्ण समाधान करना और आक्रमण के मौके पर सामूहिक कार्रवाई का प्रबंध करना था। यह संगठन उन कई अन्तर अमरीकी राज्यों के समूह का उत्तराधिकारी था जिसका विचार लगभग ११। शान्ताब्दी पहले साइमन बोलीवर ने दिया था और दूनमें में पहला सम्मूह १८८९ में स्थापित हुआ था।

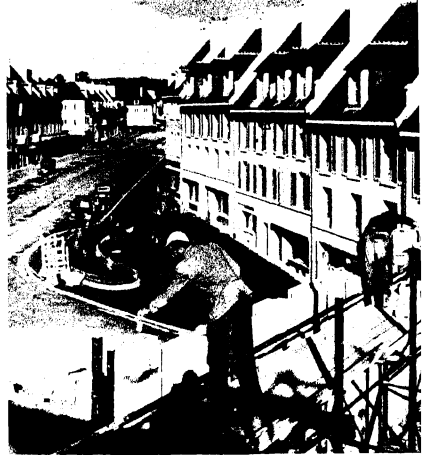
मध्य पूर्व में जब मई १९४८ में इजराइल के यहूदी राज्य की घोषणा में उस देश और उसके अरब पड़ोसियों के बीच युद्ध छिड़ गया तो अमरीका ने

संयुक्तराष्ट्र के एक विराम-सन्धि दल को सन्धि प्रबन्ध के सकल प्रयासों में सहायता दी। इस दल के नेता और एक अमरीकी गुलाम के पोते डाक्टर राफ कथ्य को उनके काम के लिए शान्ति का नोबेल पुरस्कार मिला।

कोरिया में आक्रमण के विरुद्ध संयुक्तराष्ट्रीय मोर्चा

तथापि राष्ट्रपति ट्रूमैन के कार्यकाल के अन्तिम वर्षों में अमरीकी अन्तरराष्ट्रीय उल्लंघनों एशिया में गम्भीरमय थीं। २५ जून, १९५० को रूसी कब्जा करने वाली सेनाओं द्वारा प्रतिष्ठित और सुसज्जित साम्यवादी उत्तरी कोरिया की सेनाओं ने ३८ अक्षांश पार कर कोरियाई गणराज्य पर हमला कर दिया, जिसकी सरकार संयुक्तराष्ट्र के निरीक्षण में हुए स्वतन्त्र चुनावों में निर्वाचित हुई थी। संयुक्तराष्ट्र सुरक्षा परिषद की एक अग्रणी बैठक में इस हमले को शान्ति-व्यवस्था बनाया गया और मांग की गयी कि आक्रमणकारी फौरन ही पीछे हट जायें। दो दिन बाद परिषद ने उत्तरी कोरिया को आक्रमणकारी करार दिया और संयुक्तराष्ट्र के सदस्यों में दक्षिणी कोरिया की हुर सम्भव सहायता की जाने का अनुरोध किया। अमरीका, जिसने कोरिया को अमरीकी मागल में मुक्त किया था, ने घिरे हुए गणराज्य के प्रति विषय उत्तरदायित्व का अनुभव किया और मोझ ही काय और धल सेनाएँ कोरिया भेज दीं। इसके बाद १५ और राष्ट्रों ने सैनिक और ४९ देशों ने सहायता गामयी भेजी। संयुक्तराष्ट्र-कमान की स्वागत हुई और इतिहास में पहली बार संगठित अन्तरराष्ट्रीय बलों ने अतिरक्रमण के विरुद्ध कार्रवाई की। संयुक्तराष्ट्र की यह कार्रवाई दूरीलिय गम्भव हो सकी कि कुछ समय में सोवियत संध सुरक्षा परिषद की बैठकों का बहिष्कार किए हुए था और इस कार्रवाई को रोकने में अपना निषेधाधिकार प्रयोग करने के लिए उपस्थित नहीं था।

कोरियाई युद्ध की गति बड़ी कटु, रक्तपात वाली और नैराश्रयपूर्ण रही। आरम्भिक हानियों के उपरान्त संयुक्तराष्ट्र की बलों ने पीरे-पीरे हमलावर कार्रवाई शुरू कर दी और आक्रमणकारियों को पीछे धकेल दिया। लड़ाई का अन्त निकट ही प्रतीत होना था जब कि साम्यवादी चीन ने लार्बों की गथ्या में तथासन्धित 'सूय मरक' संयुक्त राष्ट्र सेनाओं के विरुद्ध लड़ाई में प्रवेश किया। इस हस्तक्षेप से डर पैदा हुआ कि लड़ाई कोरियाई सीमा में बाहर भी फैल जायगी परन्तु संयुक्तराष्ट्रीय कमान एक प्रबन्ध आग लगाने का खतरा मोल लेने को तैयार नहीं थी और इसलिए सीमित उद्देश्य के लिए सीमित युद्ध करने में ही



संयुक्त राज्य अमरीका से प्राप्त मार्शल प्लान निधि की सहायता से फ्रांस के आने-सर-ओहात का पुनर्निर्माण जिसे द्वितीय महायुद्ध में ध्वस्त कर दिया गया था।

मग्नूट रही। समय से अतिक्रमणकारियों को लगभग ३८ अक्षांश रेखा तक पीछे हटा दिया गया। लम्बी यात्री के बाद १९५३ की गर्मियों में हुई सन्धि में युद्ध-क्षेत्र के तथ्यों को ही मान लिया गया। लड़ाई के अन्त तक अमरीका ढाई लाख मैनुिक देस में आधी दुनिया दूर भेज चुका था और उसके ३०,००० से अधिक मैनुिक भारे गए जो साम्यवादी अतिक्रमण के विरुद्ध स्वतन्त्र राष्ट्यों को बचाने के उमके दृढ़ निश्चय का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अमरीकियों ने नवम्बर १९५२ के चुनाव में एक रिपब्लिकन राष्ट्रपति निर्वाचन किया जिसमें राष्ट्रपति पद पर डेमोक्रेटिक दल की २० वर्ष की पकड़ छूट गयी। जनरल दुबाउट वी. आइज़नहोवर ने डेमोक्रेटिक उम्मीदवार, इलिनॉय के गवर्नर जस्टाई ई. स्ट्रोबेसन को निश्चयात्मक रूप में पराजित कर दिया। परन्तु जब १९५६ में राष्ट्रपति आइज़नहोवर का पुनर्निर्वाचन पहले से भी अधिक बहुमत से हुआ तो उन्हें अपने पद के आखिरी छः वर्षों में डेमोक्रेटिक नियन्त्रित कायम के साथ काम करना पड़ा।

आइज़नहोवर द्वारा घरेलू समस्याओं का सामना

घरेलू मामलों में आइज़नहोवर प्रयासन में जिन नीतियों को अपनाया उन्हें प्रायः "भाईन रिपब्लिकनिज्म" के नाम से पुकारा जाता है। इस नीति का एक पहलू राश्यों और निजी व्यवसाय के मामलों में कम से कम हस्तक्षेप करना था। परन्तु दूसरी ओर "न्यू डील-फॉर डील" काल में विकसित बुनियादी सामाजिक और आर्थिक विधान कायम रखे गए और उनका सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा के लिए केंद्रीय सहायता, सार्वजनिक आवास, सन्दी बर्लियों की सफाई, और सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों जैसे क्षेत्रों में विस्तार भी किया गया। जनवरी, १९५३ में पदासीन होने के कुछ ही समय बाद राष्ट्रपति आइज़नहोवर ने केंद्रीय सुरक्षा अभिकरण को मन्त्रिमण्डल स्तरीय स्वास्थ्य, शिक्षा तथा कल्याण विभाग में बदला जाना स्वीकार कर लिया। उन्होंने न्यूनतम मजदूरी दर का ७५ सेण्ट प्रति घण्टा से १ डॉलर तक बढ़ाए जाने की कोशेमी कार्रवाई का भी समर्थन किया।

१९५५ में श्रमिकों की दो अन्य विचारों में भी प्रोत्साहन मिला। पहला था कुछ युनियन प्रबंधक अनुबंधों में मालिकों द्वारा दिए जाने वाले बेरोजगारी भत्ते के प्रबंध का समावेश जो राश्यों द्वारा दिए जाने वाले भत्तों के अनिश्चित था और दूसरा था दो स्वतन्त्र युनियन संधों का एक संयुक्त ए. एफ. एल-सी. आई. आ. में मिलाया जाना जिसमें १५० लाख सदस्य थे। कुछ युनियनों में



बिदेहा संबंधी जार्ज सी. मार्शल को १९५३ में, सोबुल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें उनको मानवीय कल्याण सम्बन्धी उस योजना पर प्रदान किया गया था जो उन्होंने उन यूरोपीय देशों को सहायताएं बनायी थी जिन्हें युद्ध के दौरान में काफी क्षति पहुँची थी। चित्र : जिस सत्पारोह में भी मार्शल को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया उसमें वे भाषण दे रहे हैं।



संयुक्त राष्ट्र संघ के अवर-सचिव तथा १९५० में नोबल शान्ति पुरस्कार के अमरीकी विजेता डा. राल्फ बें. बन्ना (बाएँ)। संयुक्त राष्ट्र महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष ईरान के नसरोल्ला इतेजाय (बाएँ) उन्हें पुरस्कार प्रान्ति के समय बर्षाई दे रहे हैं।

भ्रष्टाचार का पता चलाने पर ए. एफ. एल.सी. आर्. ओ. ने आन्तर नीति सम्बन्धी कड़ी नियमावली अपनायी और कांग्रेस ने एक विधान पारित कराया जिसके अनुसार यूनियन के विनयी भाग्यों नियमित: पंगन, और कल्याण निधि सम्बन्धी मामलों का सांवेजनिक प्रकटीकरण अनिवार्य हो गया। इस प्रकार यूनियन सदस्यों को लोकतन्त्रीय अधिकारों की गारन्टी मिली।

अन्य परेन्ड मामलाओं का समाधान कठिन मानित हुआ। कृषि तकनीक में तयी प्रगतिशे के कारण कृषि उत्पादन राष्ट्रीय माग में अधिक बढ़ जाने की समस्या अधिक गूढ़ हो गयी। आइज़नहोवर प्रशासन ने कृषकों की निर्धारित मूल्य समयेन गारन्टी सम्बन्धी मौजूदा नीति के स्थान पर निर्धारित मूल्यों का एक लोकशील पंथाना स्थापित किया जिससे किसानों को ऐसी फलसे उपजाने का प्रात्याह्न मिले जिनका अधिकरण था। इसके अतिरिक्त एक 'भूमि बैंक' कार्यक्रम ने चारा उगाने, पेड़ लगाने और तालाब बनाने के लिए अधिक भूमि के उपयोग की प्रोत्साहन दिया।

अमरीकियों की आलोचना व साहचर्य स्वतन्त्रता के सर्वाधिक अधिकारों का उल्लंघन किए बिना देश का नांड-फांड की कार्रवाइयों में बचाने की समस्या भी आइज़नहोवर प्रशासन को विरोधत में मिली। सेनेटर जामस मेकार्थी के नेतृत्व में कांग्रेस की एक उपसर्गमिति ने धारण में कम्युनिस्ट प्रभाव की सम्भावना की पूरी जांच-पड़ताल की और सरकारी व गैर-सरकारी व्यक्तियों पर आरोप लगाए। बहुत से अमरीकियों ने सेनेटर मेकार्थी के प्रयासों की प्रशंसा की परन्तु दूसरे बहुत से लोगों ने उनकी असावधानी और स्वयं सम्बन्धी रीतियों की अजहलता की आलोचना की। १९५४ में उनका प्रभाव बहुत घट गया जिसका कारण प्रधानत: उनकी कुछ कार्रवाइयों के विप्लाव सेनेटर का प्रस्ताव था।

आइज़नहोवर शासनकाल में तयी अमरीकियों के राजनीतिक, वैधानिक व सामाजिक अधिकारों में निरन्तर वृद्धि हुई। पहले में अधिक नीचा कालेज में जाने लग, चुनावों में मतदान देने लग, उनके अपने घर और मोटरगाडियाँ हो उनकी अधिक स्वायत्ताधिक व पर्यवेदी नोकरीया मिली और वे सरकार में उभे पदों पर आयोजित हुए। परन्तु इस काल का अमेरिकी अधिकारों का सबसे अधिक महत्वपूर्ण विषय था सर्वोच्च न्यायालय का एक नए फैसला जिसके अनुसार नीचा और श्वेत बच्चों को लिए अलग-अलग स्कूलों की व्यवस्था करने वाले राजकीय और स्थानीय नियमों को असंवैधानिक करार दिया गया। कृषि अधिकार राज्यों के सांवेजनिक स्कूलों में वृषकारण नहीं था उम्मीदग यह फैसला मुख्यत:



रिपब्लिकन डेल श्री ओर से राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव जीतने के उपरान्त श्री ह्यूबर्ट डी. आइबन होवर अपने पद का कार्यभार सम्भालने के पहले तत्कालीन डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति श्री ट्रुमैन से सला के सरल हस्तान्तरण के आश्वासन के लिए मिले। यह एक अमरीकी परम्परा है।

घोड़े से दक्षिणी राज्यों पर ही लागू हुआ। अहाँ जातीय पृथक्करण की पुरानी परम्परा थी। सर्वोच्च न्यायालय ने इन क्षेत्रों के मधीय सरकार के मुबा न्यायालयों को यह आदेश दिया कि स्थानीय स्कूल अधिकारियों डाग टम कैमले के पूर्ण पालन की वीछ और उचित धुरआन कराने का प्रबन्ध करें। कोल्म्बिया मुबे और कुछ मीथान राज्यों में एकीकरण तेजी से चला परन्तु दूर दक्षिण में उसका धोर निरोध हुआ। इस मामले पर १९५० में लिटिल गक आरकन्सास में हिसात्मक कारंवाई शुरू होने के बाद मधीय फोरमें भेजी गई। यह सरकार के इस सकृप का प्रमाण था कि स्कूलों के एकीकरण के लिए न्याया-लय आदेश का पुरातन पालन किया जाय। अलास्का और हवाई को १९५८ और १९५९ में पूर्ण राज्यीय स्तर दिया जाना, अहाँ विभिन्न जातियों के स्थानिक बसते हैं, सामाजिक और राजनीतिक लोकतन्त्र की प्रगति का और अधिक प्रमाण है। १९५० और १९६० के बीच अमरीकी लोगों का जीवन स्तर बढ़ना गया। १९५७-१९५८ की मन्त के पश्चात बेरोजगारी बढ़ने के बावजूद भी मजदूरी में निरन्तर वृद्धि हुई, व्यापार गतिशील हो गया आजावादी भावना बनी रही। कुल राष्ट्रीय उत्पादन—राष्ट्र की समस्त सामग्रि और सेवाओं का मन्व—१९५० में २६,४७० करोड़ डालर हो गया। तथापि विद्वन्-माम्यवाद ने चलने वाले सषर्ष और अन्तर्राष्ट्रीय तनावों की वृद्धि, समृद्धि के उपभोग में बाधक हुई।

अमरीका द्वारा एशियाई स्वतन्त्रता का समर्थन

राष्ट्रपति आइज़नहोवर का प्रथम प्रशासन फिरीही मामलों में सम्बन्धित एक आपातपूर्ण विषय से प्रारम्भ हुआ। कोरिया में कौत्री मान के कारण उत्तरी कोरियाई साम्यवादियों ने जुलाई १९५३ में संयुक्तराष्ट्र कमान के माध युद्ध विराम सन्धि कर ली। इस सन्धि में औपचारिक रूप में कोरिया का विभाजन और युद्ध बन्दियों की अदशा-बददी स्वीकार की गयी थी। जब लाओ उत्तरी कोरियाई और चीनी युद्ध बन्दियों में भारतीय प्रेसकों की उपस्थिति में अपने धरों को वापस जाना अस्वीकार कर दिया तो इसमें साम्यवादी मनोबल को बहुत अधिक धक्का लगा।

परन्तु कोरियाई सन्धि से एशिया में साम्यवादी विस्तार गमान नहीं हुआ। १९५४ के बसल में हिन्द चीन को बंध सरकार के विरुद्ध कम्युनिस्ट चीन की मदद से मुलमती हुई छोपेमार कारंवायों के कारण पूरी तरह लड़ाई भड़क उठी। हिन्द चीन, फ्रांस, कम्युनिस्ट चीन, सोवियत संघ और इंग्लैण्ड के प्रतिनिधियों का

एक सम्मेलन जुलाई में जेनीवा में हुआ जिसमें यह तय हुआ कि देश को दो भागों में बांट दिया जाय। उत्तरी क्षेत्र को विवेकभिरु के साम्यवादी राज्य का नाम दिया गया (जो बाद में उत्तरी वियननाम कहलाया)। जब कि बाकी भाग को लाओस, कम्बोडिया और दक्षिणी वियननाम के तीन प्रजास्यवादी राज्यों में बांट दिया गया। एक अल्पवृष्ण बान यह हुई कि वियतमिन्ह की लगभग १० प्रतिशत जनसंख्या ने कम्युनिस्ट प्रशासन में रहने की बजाय दक्षिण की ओर चले आना पसन्द किया।

स्वतन्त्र एशियाई देशों को अधिक्य में साम्यवादी घुसपैठ या आक्रमण से बचाने के लिए अमरीका ने थाईलैण्ड, फिलीपाइन्स, पाकिस्तान, इंग्लैण्ड, फ्रांस, आस्ट्रेलिया और न्यूझिलैण्ड के माध मिलकर गिनम्बर, १९५४ में दक्षिणी एशिया सन्धि सन्धि सन्धि किया। पारम्परिक महायत्ता की इस सन्धि में जा 'पीटी' नाम में पुकारी गयी आधिक सहयोग, तकनीकी महायत्ता और आक्रमण और विषयक तावों के विरुद्ध सामूहिक कारंवाई का प्रबन्ध किया गया। एक सम्बद्ध धारा के अनुसार सन्धि की शर्तें लाओस, कम्बोडिया और दक्षिणी वियननाम की मुस्था और आधिक महायत्ता के लिए भी लागू कर दी गयी।

यह स्वीकार करने हुए कि अमरीकी मुस्था व कण्ठाण और नवोदित क्षेत्रों के लोगों की आधिक और सामाजिक प्रगति के बीच मोधा सम्बन्ध है, अमरीका ने एशिया, मध्यपूर्व, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के लिए अपना तकनीकी महायत्ता कार्यक्रम बढा दिया। युद्ध-रुधिरान दक्षिणी कोरिया की महायत्ता और पुनर्निर्माण के लिए अमरीका ने १०० करोड़ डालर में अधिक की धनराशि व्यय की। १९५९ तक बहू देश लड़ाई में पहले के अधिकतर उत्पादन व उपभोग स्तर घटत कर चुका था या उगने आये निकल चुका था। फिलीपाइन गणराज्य को युद्ध-विराम के बाद पुनर्निर्माण और कम्युनिस्ट छापाधरों में गकलतापूर्वक युद्ध करने के लिए दी गयी बृहत् महायत्ता भी समान रूप में प्रभावशी थी। कुल मिलाकर १९५० और १९६० के बीच अमरीका ने ६० राष्ट्रों को औपचारिक, मधीन, स्रुण और तकनीकियन दिए।

शान्तिपूर्ण सहयोग के प्रयास

१९५९ में विभिन्न महायत्ता कार्यक्रमों और यथा में 'मांगल योजना' के बंधे हुए भाग की मिलाकर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग प्रशासन की स्थापना हुई जो अमरीकी सरकार का स्वायी भाग बना। नवोदित क्षेत्रों को परिवहन, बिजली, उद्योग,

नदी घाटी योजनाओं, मिचर्ड और आर्थिक उन्नति के दूसरे मापनों के विकास के लिए आवश्यक पूंजी प्रदान करने के लिए अमरीका ने १९५७ में 'विकास ऋण निधि' की स्थापना की। १९६० के अन्त तक इस निधि में ४९ देशों को १८४ करोड़ डॉलर के कुल १८३ ऋण दिए जा चुके थे। इसके अतिरिक्त १९५४ और १९६० के बीच अमरीका ने १,००० करोड़ डॉलर के लागत की खाद्य सामग्री जरूरतमंद देशों में वितरित की। दुर्भाग्य व अल्प आयी खाद्य-सामग्रीों सीधे उपहार के रूप में पाकिस्तान, नेपाल, जार्डन, हेटी और घाना जैसे देशों को अकाल में बचाने के लिए दे दी गयी। बाकी आधा भाग विदेशी मुद्राओं में बंध दिया गया और वही राशि आदाता देशों को ऋण के रूप में कम या बिना किसी श्रांति के उनके अधिक विकास योजनाओं के लिए दे दी गयी।

१९५५ के जेनोवा 'विश्व सम्मेलन' ने साम्यवादी व असाध्यवादी शक्तिव्यो के बीच उन्नति के लिए शान्तिपूर्ण सहयोग की आशाएं बढ़ी। किन्तु अमरीका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस के नेता काफी विचार-विनिमय के बाद भी निस्सहकारण या जर्मनी के पुन-एकीकरण करने के तरीकों पर सहमत नहीं हो सके। अचानक हमले के खतरे को न्यूनतम करने और हथियार बन्दी रोकने के प्रयास में राष्ट्रपति आइज़नहावर ने प्रस्ताव किया कि सोवियत संघ और अमरीका अपने फौजी संस्थानों के नवनों को अदला-बदली कर लें और फौजी संस्थानों के पारस्परिक हवाई प्रेषण की अनुमति दें। रूसी नेताओं ने इन योजना को राष्ट्रीय प्रभुता पर आक्रमण मानकर ठुकरा दिया जिसमें बहुत से देशों की जनता का जो आइज़नहावर योजना का समर्थन करने और निरीक्षण की विवर प्रणाली की और पहला बंदन माननी थी, घोर निराशा हुई। तबर्बाप जेनोवा सम्मेलन का परिणाम यह जरूर हुआ कि रूसी तकनीशियन, बुद्धिजीवियों और कलाकारों की एक बड़ी संख्या ने एक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत अमरीका का दौरा किया और उनके प्रतिरूप अमरीकी मॉडियत संघ गए।

हंगरी और स्वेज पर संकट

१९५६ में, अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में कई विफोडकारी घटनाएं हुईं। उन वर्षों के आरम्भ में सोवियत दल के नेता निकिता ख्रुश्चेव ने अकस्मात ही मून डिस्टेंटर स्टालिन को पुर अत्याचारी सामक कड़कर बांधी ठहराया। ख्रुश्चेव द्वारा स्टालिन के अत्याच कोटि जाने पर पूर्वी यूरोप के रूसी अधिभावी देशों की जनता ने रूसी नियन्त्रण और घरेलू भामलों में रूसी हस्तक्षेप में मुक्ति को मांग

की। पोलैण्ड में एक राष्ट्रीय साम्यवादी नेता व्लाडीस्ला गोमुल्का, जो स्टालिन काल में बन्दी बना लिए गए थे, पोलैण्ड के साम्यवादी दल के प्रमुख बने और उन्होंने जनता को अधिक वाक्-स्वातन्त्र्य, प्रेम स्वातन्त्र्य और धर्म-स्वातन्त्र्य देने का वादा किया। पोलैण्ड के उदाहरण ने प्रोत्साहित होकर हंगरी की जनता ने अक्टूबर १९५६ में विद्रोह कर दिया, एक उदार सरकार की स्थापना की और सोवियत फौजों को बापन वृत्तान्त जाने की मांग की। पोलै हट जाने के बजाय सोवियत फौजों ने हंगरी के स्वतन्त्रता सेनानियों पर एक वृहत् हमला किया। म्यूकनराष्ट्र महासभा ने बहुमत से इन कार्य की निन्दा की। सोवियत नियन्त्रण द्वारा विद्रोह के इस बरहमी में कुचले जाने पर अमरीकी जनता ने समस्त संसार के लोगों के साथ मिलकर विरोध प्रकट किया। और हंगरी के उन हजारों घरघाणियों का स्वागत किया जिन्होंने निर्वासन में उस स्वतन्त्रता को पाने का प्रयास किया था जो उन्हें स्वयं अपने देश में नहीं मिल सकी थी।

हंगरी में विद्रोह के साथ ही साथ स्वेज नहर पर नियन्त्रण के बारे में एक मन्त्री विदेश सकट उत्पन्न हो गया। मिस्त्री रायच क्षत्र में १८९९ में पूरा किया जाने के बाद में इस नहर का संचालन एक अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी द्वारा किया जाता था जिस पर मुख्यतः अरबी व फार्सीयों नियन्त्रण था। जुलाई, १९५६ में मिस्र के राष्ट्रपति नसर ने नहर के राष्ट्रीयकरण की घोषणा कर दी। पश्चिमी शक्तियों ने मिस्र के साथ सम्भोजता करने के प्रयत्न किए, जिनका आधार नहर का निर्यात उपयोग करने वाले १८ देशों द्वारा एक नए प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण था। परन्तु यह प्रयास अफल रहे। फिर अक्टूबर में बढ़ते हुए गीमान्त भ्रष्टा की घृष्णुषि में इजराइल ने मिस्र पर आक्रमण की योजना बनाने का आरंभ लगाया और इजराइली फौजें मिनाई प्रायद्वीप की पार करके स्वेज नहर की तन्क भेज दी। इस घटना को नहर के नोपरिवहन के लिए खतरा मानकर इम्ब्रेण्ड और फ्रांस ने नहर क्षेत्र में अपनी फौजें उतारी। अमरीका ने अपने 'नाटो' मित्रों की इन कार्रवाई को आत्मसंकल्प के मिद्वान्त का उल्लेखन मानकर विरोध किया। म्यूकन राष्ट्र में उसके प्रतिनिधि ने लडाई बन्दी और आक्रमणकारी फौजें पीछे हटाने जाने की मांग सम्बन्धी महासभा के एक प्रस्ताव के समर्थन में मतदान दिया। इम्ब्रेण्ड, फ्रांस और इजराइल ने इन शर्तों को मान लिया। परन्तु इसके विरुद्ध रूसी फौजें हंगरी पर कब्जा किए रहीं। म्यूकन राष्ट्र की पुलिस के निरीक्षण में स्वेज नहर ने भयंशय सा किए गए और नहर नोपरिवहन के लिए मार्च, १९५७ में बोल दी गयी।



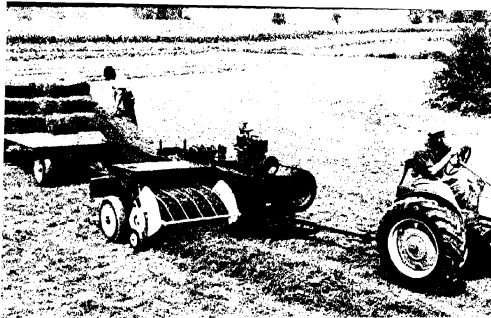
नोबल पुरस्कार विजेता विलियम फॉकनर को एक सशक्त और कल्पना के धनी उपन्यासकार के रूप में याद किया जाता है। श्री फॉकनर ने संयुक्त राज्य अमरीका के दक्षिणी भाग के बारे में लिखा है।

जॉन स्टीनबेक ऐसे अनेक सुप्रसिद्ध उपन्यासों के लेखक हैं जिनमें सामाजिक विरोध की भावनाएँ प्रभावशाली ढंग से उभर कर सामने आयी हैं। उनके इन उपन्यासों में से एक है - 'प्रेम आब रंब' जिस पर उन्हें १९६२ में साहित्य का नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया।



नोबल और पुलिट्जर पुरस्कारों के विजेता अनेक हेमिंग्वे ने अपनी विभिन्न शैली से अनेक समाचारिक लेखकों को प्रभावित किया।





पूर्वा औरियात में जहाँ बहुत कम खर्चा होता है, सिचाई को विस्तृत व्यवस्था करने हजारों एकड़ बंजर भूमि को उपजाऊ पापों में बदल दिया गया।

सकट ने जिनमें सोवियत संघ को सहाय्य हस्तक्षेप करने और विश्व में कच्ची स्वयंसेवक भेजने की धमकी देने की प्रेरित किया था, मध्यपूर्व में कदम जमाने के बड़े हुए साम्यवादी प्रयासों का पता लगा। इन खतरों का मुकाबला करने और इन क्षेत्र के स्थायित्व व स्वतन्त्रता को प्रोत्साहन देने के लिए अमेरिका ने वह नीति अपनायी जो बाद में 'आइजनाहोवर मिशन' के नाम से प्रचलित हुई। जनवरी, १९५३ में राइट्पति आइजनाहोवर ने पहले तो यह अनुरोध किया कि साम्यवादी आक्रमण रोकने के लिए मध्यपूर्व का कोई राष्ट्र फौजी सहायता मांगे तो उन्हें उसको देने के अधिकार मिलने चाहिए। उन्होंने दूसरा यह अनुरोध किया कि २० करोड़ डॉलर की एक धनराशि मध्यपूर्व के उन देशों की महाद्वारों जैसा संयुक्त राज्य ने उसकी प्रार्थना करें, अलग कच्ची जानी चाहिए। कायम ने दोनों अनुरोध स्वीकार कर लिए। षेड साल बाद लेबनीज सरकार ने अमेरिकी सहायता की प्रार्थना की और संयुक्त अरब संघराज्य (सीरिया और विश्व का संगठन) के उपर लेबनान में विद्रोह उकसाने और उसके लिए सहाय्य की महायत्ना देने का आरोप लगाया। राइट्पति आइजनाहोवर ने अमेरिकी

फौजें उस देश के प्रतिकूल विदेशी ताकतों में बचने की सुनिश्चिता के लिए भेजी। कई सप्ताह बाद लेबनान की स्थिति सुधर गई और अमेरिका ने अपनी फौजें वापस बुला ली। इन प्रकार का एक सकट जार्जट और ईराक के बीच भी उत्पन्न हुआ परन्तु उस देश की प्रार्थना पर अमेरिकी फौजों के जाईन पहुँचते ही वह शीघ्रता से समाप्त हो गया। फौजें भी जल्दी वापस बुला ली गईं।

फ्रांसिस और बर्लिन को धमकी

१९५८ के प्रथम में, जब कि मध्यपूर्व में अब भी बहुत अस्थिर थी, सुदूर पूर्व में एक नया सकट उपस्थित हुआ। साम्यवादी चीन ने राइट्वादियों के समुदाय और भारतसू द्वीपों पर बमबारी आगम्य कर दी। यह फार्सीया पर आक्रमण करने की दिशा में पहला कदम प्रतीत होता था। विदेश मन्त्री डेलमे ने इस धमकी के जवाब में यह घोषणा की कि अमेरिका कितारे के द्वीपों पर हमला रोकने और फार्सीया के बनाव के लिए समयानुकूल व प्रभावी कार्रवाई करेगा। इन द्वीपों पर लाल चीन के दावे को स्वी



बांग्लादेश डी. सी. के एक स्कूल की पहली कक्षा। इस स्कूल में रंग के आधार पर भेद नहीं करता जाता।

समर्थन प्राप्त होने के बावजूद बमबारी कम हो गयी और फिर जब कि राष्ट्रपति आइजनहॉवर ने यह चेतावनी दी कि सशस्त्र अतिक्रमण के सामने अमरीका पीछे नहीं हटेगा, वह बमबारी काटई बन्द हो गयी। हालाँकि कम्युनिस्ट चीन फार्मोसा और निकटवर्ती द्वीपों को मुक्त कराने के अपने अन्तिम इरादे घोषित करता रहा।

मुद्रपुर्र्ण का संकट बीतने भी न पाया था कि नवम्बर में रूसी प्रधानमन्त्री ने पश्चिमी शक्तियों को छः महीने की अन्तिम चेतावनी दी कि वे बर्लिन को वापसी करने उसे स्वतन्त्र और निरस्त्रीकृत नगर बना दें। रूसोब ने घोषणा की कि इस अवधि के उपरान्त पश्चिमी बर्लिन के लिए समस्त संचार माध्यों का नियन्त्रण सोवियत संघ पूर्वी जर्मनी को सौंप देगा और पश्चिमी शक्तियों को पहुँच पश्चिमी बर्लिन तक केवल पूर्वी जर्मन सरकार की अनुमति से ही हो सकेगी। अमरीका, इंग्लैण्ड और फ्रांस ने इस चेतावनी के उत्तर में दृढ़तापूर्वक कहा कि पश्चिमी बर्लिन में टिके रहने का और इस नगर तक अपनी सैन्य पहुँच बनाए रखने का उनका दृढ़ निश्चय है।

१९५९ में सोवियत संघ ने अपनी अन्तिम अवधि वापिस ले ली और इसके स्थान पर पश्चिमी शक्तियों के साथ चार बड़े विदेश मन्त्रियों के सम्मेलन में सम्मिलित हुआ। यद्यपि ३ महीने लम्बे इस सम्मेलन में कोई महत्वपूर्ण समझौते नहीं हो सके तथापि उसने आगामी समझौता वार्ता के लिए द्वार खुल गया। प्रधान मन्त्री रूसोब की मिनम्बर, १९५९ की अमरीका यात्रा के उपरान्त ऐसा प्रतीत हुआ कि यह द्वार कुछ और अधिक खुल गया है। इस यात्रा की समाप्ति पर उन्होंने और राष्ट्रपति आइजनहोवर ने एक संयुक्त घोषणा की जिसमें कहा गया कि संसार के सामने इस समय सब से सम्भोद समझ्या मार्बज्रिक निरस्त्रीकरण की है। वे इस पर भी सहमत हुए कि बर्लिन की समस्या और समस्त अनिर्णीत अल्ट्रास्ट्रीट प्रश्नों का समाधान बल प्रयोग से नहीं बल्कि शान्तिपूर्ण तरीकों से समझौता वार्ता द्वारा किया जाना चाहिए। इसके बाद पेरिस में, मई १९६० में, एक 'सिखर सम्मेलन' करने के प्रबन्ध किए जाने लगे। परन्तु रूसी प्रधान मन्त्री ने १ मई को भांगियत संघ में एक अमरीकी यू२ टोहक-विमान के गिराए जाने के आधार पर इस सम्मेलन को अस्वीकार कर दिया। यद्यपि रूसी सरकार नियन्त्रण ही एक वयं से अधिक इन उड़ानों के बारे में जानकारी थी और राष्ट्रपति आइजनहोवर को घोषणा के बावजूद कि यह उड़ानें बन्द कर दी गयी हैं और आगे चालू नहीं की जायगी, रूसोब ने कहा कि उन्हें धक्का

लगा है और वे कुपित हैं और उन्होंने राष्ट्रपति आइजनहोवर से व्यक्तिगत क्षमा-याचना मांगने को कहा। जब इसको अस्वीकृत कर दिया गया तब वे पेरिस से मारको चले गए और सम्मेलन की सब योजनाएँ त्याग दी गयीं।

क्यूबा में कैस्ट्रो और साम्यवाद

इसी बीच अमरीकी दक्षिणी पूर्वी तट रेखा से ९० मील के अन्दर ही क्यूबा में कम्युनिस्ट चालों का एक उदाहरण सामने आया। कई साल युद्ध करने के उपरान्त १९५९ के आरम्भ में फीडल कैस्ट्रो क्यूबा के डिक्टेटर फुलजेंगियों बतिस्ता की सरकार को उलटने में सफल हो गए। अमरीकी सरकार और अमरीकी जनता को बतिस्ता के क्रूर कारनामों का पता था और इसलिए उन्होंने कैस्ट्रो को शक्ति मिल जाने का स्वागत किया और उसे लोकतन्त्रीय विजय माना।

किन्तु अमरीकी सहानुभूति जल्दी ही समाप्त हो गई, जब प्रधानमन्त्री कैस्ट्रो एक कम्युनिस्ट डिक्टेटर के समान व्यवहार और बात करने लगे। उन्होंने क्यूबा की जनता से स्वतन्त्र चुनावों के जो वायदे किए थे पूरे नहीं किए। उन्होंने शोषणा पूर्वक किए हुए मुकदमों के बाद जिनका आसय अदालती कार्रवाई के बजाय प्रचार अधिक था, अपने सैनिकों राजनीतिक दण्डियों को मृत्यु दण्ड दे दिया। उसके बाद उन्होंने क्यूबा की जंग एक बार फिर से राजनीतिक आलोचकों से भर दी, जिसमें कैस्ट्रो के पहले वाले साथी, कम्युनिस्ट विरोधी शक्ति नेता और बतिस्ता शासन के पुराने विरोधी भी थे। प्रस के ऊपर कड़ा संसार लगा दिया गया। विदेशी सम्पत्ति बिना पूरे मुआवजें के स्वेच्छापूर्वक जन्त कर ली गयी। बहुत से मामलों में कोई भी मुआवजा नहीं दिया गया। कैस्ट्रो की दमनात्मक और बदले की कार्रवाइयों ने केवल कम्युनिस्ट ही बच पाए।

सैन्य-सेने उसकी आन्तरिक तानाशाही पक्की होनी गयी, कैस्ट्रो अधिकाधिक रूप से अमरीका की निन्दा करने लगा और कम्युनिस्ट राष्ट्रों से समर्थन प्राप्त करने की कोशिश करने लगा।

उत्तेजित किए जाने के बावजूद आइजनहोवर प्रशासन ने पहले तो पर्यपूर्वक प्रतीक्षा की नीति अपनायी। तथापि, १९६० की गर्मियों में अमरीकी नीति सख्त हो गयी। अमरीका ने क्यूबा से चीनी खरीदी जाने पर सम्मार्थी रोक लगा दी और अमरीकी राज्य संगठन (ओ. ए. ए. ए.) के २१ सदस्य राष्ट्रों से क्यूबा की कार्रवाई को निन्दा करने का अतुरोध किया। ओ. ए. ए. ने यद्यपि इस दफा सीधी तौर पर कैस्ट्रो प्रशासन की आलोचना नहीं की, उसने पश्चिमी गोलाघं में कम्युनिस्ट हस्तक्षेप की निन्दा अवश्य की।



कोरिया के घुट्टे में बहूतों को जानें लीं और हर तरह बिनाश के दुःख उरस्थित किए। संपूज्य राज्य अमरीका और राष्ट्रसंघ की सहायता से दक्षिणी कोरिया में कारखानों, स्कूलों और घरों का पुनर्निर्माण हुआ, संसार के साथियों की धरम्मत की गयी और किसानों ने नए औजारों के साथ अपने खेतों में काम करना शुरू किया।

उद्योगों व घरों को इस्तेमाल के लिए सस्ती बिजली की व्यवस्था करने के उद्देश्य से अमरीका दूसरे देशों को जो महान सहयोग प्रदान कर रहा है उसका एक उदाहरण है। उत्तर प्रदेश में अमरीकी आर्थिक सहायता से निर्मित रिहेंव बांध।

१९६० के अंत में एक और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विश्व के आशाजनक और उपद्रवकारी पक्षद्वयों का पता चलता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा की न्यूयार्क में हुई बैठक में १६ नए राष्ट्रों को सम्मिलित किया गया, जिनमें से एक को, छोड़कर सभी अफ्रीकी महाद्वीप के थे। इसमें पता चलता था कि यूरोप के काल में पहले के उपनिवेशों की जनता को शोषित से स्वतंत्रता मिली है। संयुक्त-राष्ट्र के प्रतिनिधियों के लिए एक भाषण में राष्ट्रपति आइज़नहावर ने दूसरे राष्ट्रों से अनुरोध किया कि अमरीका के साथ मिलकर सामान्य रूप से सभी नवोदित राष्ट्रों को और विशेषतः अफ्रीकी राष्ट्रों को अधिक से अधिक सहायता दें। उन्होंने यह भी बयान दिया कि अमरीका निरीक्षण और नियन्त्रण की प्रभावी प्रणाली पर आधारित विश्व निरस्त्रीकरण का व्यावहारिक कार्यक्रम कोजने को कोशिश करता रहेगा।

सामान्य की बैठक में पहले, अमरीकरण की होय के ऊपर झकटे हुए किता नतुप की कन्वेंशन विश्व के और भी अधिक रोष हो गयी थी। यही विकास अधिक शान्तिपूर्ण काल में केवल प्रकृता और सब का विश्वास होता। मोविगत सभ द्वारा अक्टूबर, १९५० में और अमरीका द्वारा जनवरी, १९५८ में प्रथम क्षयित उपग्रह छोड़े जाने से यह प्रदर्शित हो गया कि दोनों देशों के पास तकनीकाली राकेट हैं जिनमें जन्म और हाइड्रोजन बम हजारी मील दूर सभ देश के ऊपर केंडे जा सकते हैं। एक निर्दोष अणु निरीक्षण प्रणाली के अभाव में यह बनना संभव ही था कि दुश्मंटा या और किसी कारण बटन दबा कर किया जाने वाला युद्ध छिड़ जाएगा और चक्रवर्तीय पैदा करने वाले एक ही क्षण में करोड़ों जीवन नष्ट हो जायेंगे। विश्व भर को उस समय बड़ा धक्का लगा और निराशा हुई जब प्रधान मन्त्री इडुशाव ने धमकीपूर्ण स्वर में संयुक्त राष्ट्र महासभा में कहा कि सोवियत सभ निरस्त्रीकरण सम्मेलनों की आरम्भिक दशा में निरीक्षण और नियन्त्रण स्वीकार नहीं करेगा। मोविगत नेता जानते थे कि निरीक्षण के बिना निरस्त्रीकरण लोकान्तीय राष्ट्रों को अमान्य है क्योंकि इसमें मोविगत सभ जैसे आचरण में ढंके मसाज को बतनाका लाभ मिल सकते हैं जहा निरस्त्रीकरण सम्बन्धी वचनों के उल्लंघन का आगामी से पता नहीं चल सकता, जब कि दूसरी ओर लोकान्त्रण में उस प्रकार के उल्लंघनों के पता चलने के अधिक अवसर होंगे।

घरेलू मोर्चे पर केनेडी की कार्यवाही

विश्व तनावों की इस पृष्ठभूमि में अमरीकी लोगों ने नवम्बर १९६० में एक नए राष्ट्रपति को चुना। पूर्व सेनेटर जॉन एफ. केनेडी अपने रिपब्लिकन प्रति-

द्वन्दी उपराष्ट्रपति रिचर्ड एम. निक्सन से बहुत कम वोटों में जीते। राष्ट्रपति पद के इन दो युवा उम्मीदवारों ने एक वादविवाद शृंखला में साध-साध टेलीविजन पर आकर एक घण्टात्म स्थापित किया। निक्सन ने आइज़नहावर प्रदासन में अपने आठ मास के अनुभव पर जोर दिया और मतदाताओं को रिपब्लिकन नेतृत्व में प्राप्त हुई 'शांति और समृद्धि' की याद दिलाई। केनेडी ने देण के मानवीय और आर्थिक साधनों के अधिक प्रभावी उपयोग के लिए एक नए और दूरदर्शी नेतृत्व की माग की।

अपने उद्घाटन भाषण में राष्ट्रपति केनेडी ने, जो अब तक निर्वाचित राष्ट्रपतियों में सबसे कम उम्र के थे, अपनी युवावाणिक का परिचय दिया जो उनके प्रशासनकाल का प्रधान तत्व रही है। उन्होंने कहा कि 'ज्योनिगिषा अमरीकियों की तबी पीठी को दे बी गई है।' वस्तुतः उनके मन्त्रिमण्डल और मलाहकार वन में देण के इतिहास में सबसे कम उम्र वाले उच्च स्तरीय अधिकारी थे। वह वन नए विचारों को प्रहल करने और प्रबल कार्यवाई करने की तत्परता के लिए विख्यात था।

जब राष्ट्रपति केनेडी ने पर-बहुल जिज्ञा तब देश को अर्ध-स्वच्छा सामान्यतः समृद्ध थी और एक जीवन औद्योगिक श्रमिक की मजदूरी १५ डालर प्रति मण्डाह के सबसे उंच स्तर पर थी। परन्तु बेरोजगारी भी बढ़ी हुई थी विशेषतः मेक्सिकोवानिया और पश्चिमी बर्जिनिया के कोयला खानन क्षेत्रों में, जिन पर नए उत्पादनों की प्रतियोगिता और अमरीकी जीवन में परिवर्तनों के कारण गम्भीर प्रभाव पड़ा था। इस स्थिति का सुधार करने के लिए नए प्रदासन ने क्षेत्रीय विकास कानून पास कराया जिसमें केन्द्रीय सरकार को विषयदम्भ समुदायों को नए उद्योग शुरू करने और आवश्यक सार्व-जनिक सुविधाओं के निर्माण में सहायता करने के आवश्यक अधिकार प्राप्त हुए। एक दूसरे कानून द्वारा बेरोजगार श्रमिकों के लिए या ऐसे व्यक्तियों के लिए जो उद्योग में आवश्यक कुशलता के अभाव में कम वेतन पा रहे व वेतन महिन पुनः परीक्षण का प्रबन्ध हुआ। इसके अतिरिक्त राय्यों को २६ मण्डाह की मानक अर्थात् वे आगे १३ मण्डाह तक और बेरोजगारी बीमा बढ़ाने के आगामी अधिकार दिए गए।

अमरीकियों की सामान्य दशा सुधारने के लिए और भी कानून बनाए गए। सामाजिक सुरक्षा प्रणाली और उदात्त कर दी गयी जिसमें ६५ वर्ष की आयु तक प्रतीक्षा करने की बजाय किसी भी व्यक्ति को ६० वर्ष की आयु में ही निवृत्ति पंशन मिलनी शुरू हो गई। प्युनतम मजदूरी १ डालर के बढाकर

१९७५ राब्टर प्रॉन पण्टा कर दी गयी। बड़ी आयु के व्यक्तियों और कम आयु की बच्चे परिवारों के लिए उचित त्याग पर मकानों का प्रबंध करने के लिए कार्यक्रम ने एक बड़ा आवास कार्यक्रम भी गम किया।

जहां कहीं जानीय भेदभाव अब भी मौजूद था उसे समाप्त करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। १९६१ को राब्टर ने दक्षिण के ४१ और स्कूली जिलों में नीचो विद्यार्थी पहले के समस्त स्वेन स्कूलों में भरनी किए जाने लगे जिसमें १९५४ के सर्वोच्च न्यायालय आदेश के उपरान्त समकित स्कूली जिलों की संख्या ८९.७ तक पहुँच गयी। नीचो और स्वेन विद्यार्थियों द्वारा करवरी १९६० में शुरू किए गए शान्तिपूर्ण धरनों के फलस्वरूप २०० से अधिक दक्षिणो मसूदाओं में जल्थान गृहों से पृथक्करण सफलतापूर्वक समाप्त हो गया। इसके बाद १९६१ में बम-परिवहन और प्रतीशालय मुक्तिधाराओं में पृथक्करण के विरुद्ध शान्तिपूर्ण और व्यवस्थित विरोध शुरू हुआ, जिसका 'पीडम राइट्स' का नाम दिया गया। नवम्बर १९६१ में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार निगम ने अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा में पृथक्करण पर निषेध आदेश जारी किए। अगले वर्ष सर्वोच्च न्यायालय ने इस आदेश का समर्थन किया और कहा कि "हमने अतयव रूप में सहन कर दिया है कि कोई भी राज्य अन्तर्राष्ट्रीय या राज्य के भीतर परिवहन सुविधाओं में जानिय पृथक्करण की मांग नहीं कर सकता।" केनेडी शासन ने जानिय समानता के मामले में उच्च सरकारी पदों पर बड़ी संख्या में विशिष्ट नीचो व्यक्तियों की नियुक्ति करने और प्रगति की। राबर्ट सी. बीबर केन्द्रीय आवास और गृह-निर्माण अधिकरण के प्रधान बने, थरमुड मार्शल, जो पहले काले लोगों की प्रगति की राष्ट्रीय संस्था के मुख्य सलाहकार थे, केन्द्रीय न्यायाधीश बनाए गए; और दर्जनों अन्य अमरीकी नीचो राष्ट्रपति के सहायक से लेकर राजदूत पदों पर नियुक्त किए गए। १९६२ में २२०,००० से अधिक नीचो विद्यार्थी उच्च शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, इमिलिय यह विद्यमानिय था कि नीचो व्यक्तियों को अन्धी नौकरियाँ और प्रभाववादी सरकारी पद मिलने की प्रवृत्ति गतिशील हो जायगी।

अमरीका द्वारा प्रगति के लिये मैत्री का अनुरोध

विदेशी मामलों के क्षेत्र में राष्ट्रपति केनेडी को क्यूबा, दक्षिणी पूर्वी एशिया बर्लिन और अन्य स्थानों पर कई चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ा।

उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर अपने प्रदान के विचार निम्नलिखित रूप में व्यक्त किए: "अपने पुराने मित्रों के लिए जितना मासुक्त और आध्यात्मिक उद्गम हमारे जेगा ही है, हम कनादा और निरुपाना दोस्तों का वचन देने हैं।... उन नए राज्यों को, जिनका हमने स्वतन्त्रता की पंक्ति में स्वागत किया है, हम वचन देने हैं कि एक प्रकार का ओपनिबेसिक नियंत्रण, जो कभी चूना है, के स्थान पर दूसरा अधिक अत्याचारी शासन नहीं आने दिया जायगा। हम उनसे सदैव अपने दृष्टिकोण के समर्थन की ओराना नहीं करते हैं। परन्तु हम सदैव ही यह आशा करेगे कि वह स्वयं अपनी स्वतन्त्रता का कसुतक समर्थन करने रहें।... उन लोगों के लिए जो भांगदियों और गावों में रहते हैं और बड़ी संख्या में दुख में छुटकारा पाने के लिए समर्थ कर रहे हैं हम उनको स्वयं अपनी मदद करने में सहायता देने का वचन देने हैं।... अपने माथी दक्षिणी गणराज्यों को हम अपने अन्धे शब्दों को अन्धे वायों में बदलने प्रगति के लिए एक नयी मंथी करने—स्वतन्त्र मनुष्यों और स्वतन्त्र सरकारों को गरीबी की बेडिया तोड़ फेंकने का विरोध वचन देने हैं।... प्रभु-गन्ता पुराने राज्यों के उम विद्व संमेलन, मसूक्त राष्ट्र को, जो हमारे युग की ज़िम्मे में युद्ध-शक्तिवा शान्ति-शक्तियों में कहीं अधिक बढ़ गयी है, अनिम आशा है, हम अपने समर्थन का शुरु वचन देने हैं।... अन्त में उन राष्ट्रों को जो हमारे आपको हमारा विरोधी बना लेंगे हम कोई वचन नहीं देने परन्तु उनसे हम अनुरोध करते हैं कि हमारे पहले के शिक्षा द्वारा परिधीन विनाशकारी शक्तियाँ समस्त मानव समाज को आयोजित या चुपेतावाय आत्म विनाश में लगेत ले, दानों पक्षां को शान्ति की खाज फिर से शुरू करने चाहिए।... हमें डर कर समझौता बार्ता नहीं करना चाहिए। परन्तु, गमभीता बार्ता करने में कभी इरना भी नहीं चाहिए।"

राष्ट्रपति केनेडी के पदग्रहण करने के तीन सप्ताह में कम पहले अमरीका ने क्यूबा में राजनयिक सभ्य विच्छेद कर दिया था। यह कार्रवाई केंस्ट्रो सरकार द्वारा अमरीका को बदनाम किए जाने, अमरीकी दूतावास के अधिकारियों को तप किए जाने और लैटिन अमरीका में कम्युनिस्ट प्रयत्नों के प्रवेश के लिए क्यूबा को अड्डे के रूप में प्रयोग किए जाने पर की गयी थी। (दूसरी वर्ष, बाद में, प्रधान मन्त्री केंस्ट्रो ने एक महत्वपूर्ण व्याख्यान में रबीकार किया कि वह कई वर्ष तक गुप्त रूप से कम्युनिस्ट रहे थे।)

जैसे जैसे केंस्ट्रो की तानाशाही कड़ी होती गयी, हज़ारों क्यूबा निवासियों ने अपना देश छोड़ दिया, और उनमें से बहुत से अमरीका आये। अप्रैल,



संयुक्त राज्य अमरीका की सहायता संसार भर के लोगों को उपलब्ध है। मानव कल्याण के प्रोत्साहन और आर्थिक मजबूती एवम् समृद्धि के पुनर्स्थापन के लिए अमरीका ने करोड़ों डालर प्रदान किए हैं।

१९६१ में क्यूबा के शरणाभियोगों के एक समूह ने अपने देश पर हमला कर कस्ट्रो सरकार को उलटने का अतकल प्रयास किया। यद्यपि अमरीकियों ने इन शरणाभियोगों को प्रशिक्षण और सहायता दी थी तथापि किसी भी अमरीकी सैनिक ने चढ़ाई में भाग नहीं लिया। संसार को बहुत अचरज हुआ जब प्रधानमन्त्री कस्ट्रो ने पकड़े गए क्यूबा के लोकतन्त्रवाधियों को छोड़ने के लिए कई लाख डालरों का उद्धार-मूल्य मांगा।

अक्टूबर, १९६२ में संसार को और भी अधिक धक्का लगा जब पता चला कि कस्ट्रो सरकार ने गुप्त रूप से सोवियत संघ की क्यूबा में मिजादल अड्डा बनाने की अनुमति दे दी है। इन अड्डों में केवल स्त्री तकनीशियन व और वहां से उत्तरी व दक्षिणी अमरीका के अधिकतर बड़े नगरों पर न्यूक्लीय मिजादल छोड़े जा सकते थे। अमरीका ने इन अड्डों को फौरन हटा लेने की मांग की और क्यूबा में भेजे जाने वाले सम्पत्त को भी मामान पर दृढ़ मरोध लगा दिया। अमरीकी राज्यों के संगठन ने सैन्य के मुकाबले २० बोटों से यह विफारिश की कि सदस्य राष्ट्र क्यूबा में आत्मक दारुओं का जाना रोकने के लिए हर सम्भव कारवाई करें। इतने अधिक प्रतिरोध का सामना होने पर रूसी सरकार ने इन अड्डों को तोड़ा और संयुक्त राष्ट्र के निरीक्षण में उनका रूम वापस भेजा जाना स्वीकार कर लिया।

आर्थिक क्षेत्र में अपने पहली नैटिन अमरीकी देशों के साथ अमरीका के सम्बन्धों में सुधार होता रहा। मार्च १९६१ में राष्ट्रपति केनेडी ने औपचारिक रूप से 'प्रगति के लिए मैत्री' का प्रस्ताव किया जिसके अन्तर्गत अमरीका, अन्य स्वतन्त्र देशों, विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों और व्यक्तिगत पूंजीपतियों से मिलकर नैटिन अमरीका की आर्थिक प्रगति और जीवन स्तर में सुधार के लिए २० अरब डालर के अनुदान व १० वर्ष की अवधि के लिए ऋण की व्यवस्था करेगा। अगस्त में १९ नैटिन अमरीकी राष्ट्रों ने मैत्री चार्टर का अनुमोदन कर दिया और मैत्री की धरोहर के अनुसार सब व्यक्तियों को आर्थिक व सामाजिक लाभ देने के लिए भूमि और कर सम्बन्धी सुधार करने का करार किया। १९६१ के अन्त में राष्ट्रपति केनेडी और उनकी पत्नी ने अपनी वेनेजुला और कोलम्बिया यात्रा के दौरान इस कार्यक्रम को चालू हालत में देखा। इन दो देशों ने छोटे किसानों के बीच भूमि का पुनर्वितरण शुरू कर दिया। मैत्री धन का उपयोग सड़कें, घर और स्कूल बनाने, सर्कई-प्रबन्ध और जल व्यवस्था के सुधार, छोटे किसानों को ऋण देने और शिक्षकों के पत्रिण के लिए हुआ।

दक्षिण अमरीका में अन्तराष्ट्रिक के उभार अफ्रीका महाद्वीप विस्फोटकारी रूप में उदय हो रहा था। १९५६ में मोरक्को और १९५७ में ट्यूनिज और घाना में लेकर १९६१ तक २० अफ्रीकी देशों का स्वतन्त्रता मिल चुकी थी। अमरीका ने इन नवोदित राष्ट्रों का स्वागत किया। दन्तव्य औपनिवेशिक स्थिति से निकलना अमरीका को स्वयं अपने भूतकाल की याद दिलाता था। संयुक्तराष्ट्रसंघ में अमरीकी राजदूत अडलाई ई. स्टीवेन्सन ने भीषणय में विषय मान पर इन नए राष्ट्रों की महत्वपूर्ण भूमिका की आगा प्रारंभ की। राजदूत की हैसियत से उनका पहला काम अमरीका का मत अफ्रीका द्वारा किए गए उस प्रस्ताव के पक्ष में देना था जिसमें पश्चिमी अफ्रीका के अलावा नामक पूर्वजातीय उपनिवेश में जातीय अस्वस्थता की संयुक्तराष्ट्र द्वारा जांच वहेनाल किए जाने की मांग की गयी थी।

नए अफ्रीका ने राष्ट्रसंघ के लिए एक जटिल व चुनौतीपूर्ण समस्या उपस्थित कर दी जब १९६० में बेल्जियम से स्वतन्त्रता प्राप्त करने के उपरान्त कांगो गृह-कलह में घुस हो गया। राष्ट्रपति कागावूवू की प्रार्थना पर संयुक्तराष्ट्रों की फौज कागो भेजी गई जिनका प्रथम उद्देश्य जीवन रक्षा और व्यवस्था स्थापित करना था और बाद में १९६१ में खनिज पदार्थों से भरे-पूरे कटागा के सूबे को फिर से बाकी देश से मिलाना था। यद्यपि कुल अमरीकियों ने कटागा में संयुक्तराष्ट्रों की फौजी कार्रवाई की कागो के आन्तरिक मामलों में अन्वेषित हस्तक्षेप बनाकर आलोचना की, तथापि अमरीकी सरकार ने संयुक्त राष्ट्रों के कार्यों को संयुक्त करने के उद्देश्य का समर्थन किया और उसे उस देश की आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं के समाधान का एक माध्यम माना। इस उद्देश्य के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रयासों में अमरीका ने धन, साध सामग्री और सेवाओं के रूप में ४ करोड़ डालर का अंशदान दिया। १९६२ तक कागो के सन्तुष्टि और संयुक्त बनने की आगा बहुत बढ़ गई।

दक्षिण पूर्वी एशिया में कम्युनिस्टों के छापामार आक्रमणों से लाओस और दक्षिणी वियतनाम की सुरक्षा व स्वतन्त्रता की बहुत खतरा पैदा हो गया था। अमरीका को मिलाकर १४ राष्ट्रों का मई, १९६१ में लाओस के भ्रष्टाचार का समाधान खोजने के लिए जेनीवा में एक सम्मेलन हुआ। डॉ. महीनों की बार्ता के उपरान्त, जिस बीच लहाईकंबी की जा चुकी थी, उन्होंने यह नय किया कि तीनों विरोधी गुटों के नेता लाओसी नरेशों से अनुरोध किया जाय कि वे मिलकर

१९५५ में, निःशस्त्रीकरण और तनाव को कम करने के लक्ष्य से आयोजित जेनीवा शिखर सम्मेलन में राष्ट्रपति आइडनहोवर (बाएं में दूसरे) ने परस्पर वैधानिक निरोक्षण का प्रस्ताव रखा जिसे सोवियत नेताओं ने नहीं माना। बाएं से दूसरे हैं, अमरीकी विदेश मंत्री जॉन फास्टर डलेस।





अमरीकी राष्ट्रपति जॉन एक. केनेडी और (बाईं ओर पीछे) तत्कालीन उप-राष्ट्रपति लिण्डन बी. जॉनसन। इलास (टैबसास) में राष्ट्रपति केनेडी की हत्या के बाद, २२ नवम्बर १९६३ को भी जॉनसन को अमरीका के ३६ वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ पढ़ना कराई गई।

एक नटखट, संयुक्त और स्वतंत्र राष्ट्र बनाए। तथापि दक्षिणी विघननाम में १९६२ तक लड़ाई बलती रही क्योंकि मध्यम कम्युनिस्ट उत्तरी विघननाम से घुस आए थे और अपहरण, कत्ल और विद्रोहान नागरिकों पर तरह-तरह के अत्याचार कर रहे थे। देश की प्रादेशिक अखण्डता की सुरक्षा के लिए वहाँ की सरकार की प्रार्थना पर अमरीकी फौजी अधिकारियों ने दक्षिणी विघननाम की फौजों की प्रशिक्षण दिया। अमरीका ने राष्ट्रपति डीम की सरकार को नया सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी सुधार करने और कम्युनिस्ट छात्रों मार हमलाचारों से लड़ने के लिए सौभाग्य की जनता की महायत्ना प्राप्त करने के प्रयासों की प्रोत्साहन दिया।

कम्युनिस्टों ने पश्चिमी बलिन में एक नया संकट खड़ा करके स्वतंत्र सत्तार के क्षेत्रों की हथियाने का एक अन्य प्रयत्न किया। जून १९६१ में, प्रधान मन्त्री क्यूबाव ने पूर्वी जर्मनी के साथ एक अलग सन्धि करने की फिर में धमकी दी और कहा कि हमसे चार सन्धियों के बीच वह भीतुरदा सम्बन्धीना टूट जायगा जिसके अनुसार, अमरीका, इंग्लैण्ड और फ्रान को पश्चिमी बलिन में पहुँच के अधिकारों की गारण्टी दी गयी है। तीनों राष्ट्रों ने इसका उत्तर दिया कि कोई भी एक-तरफा सन्धि पश्चिमी बलिन में उनके अधिकारों और उन्नतदासियों का निराकरण नहीं कर सकती, और इसमें अगर तक बरोंक पहुँच भी शामिल है। संकट के बाताकरण के कारण बहुत से पूर्वी जर्मनी के निवासी पश्चिमी बलिन में आ गए। केवल जूनवाँ में लगभग ३०,००० व्यक्ति भाग कर स्वतन्त्रता की आर आए। अक्टूबर १३ अगस्त को पूर्वी जर्मनी की कम्युनिस्ट सरकार ने बलिन के पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों के बीच एक कन्स्ट्री की दीवार खड़ी कर दी और बलपूर्वक पूर्वी जर्मनी के निवासियों का आना जाना बन्द कर दिया। समस्त सत्तार में यह कारे-वाई कम्युनिस्ट प्रणाली की अगक्रन्ता के रूप में देखी गयी। पश्चिमी बलिन में पहुँच के अधिकारों को बनाए रखने के मित्र राष्ट्रों के दृढ़ निश्चय के कारण सोवियत सत्तार ने वरुं की अन्तियम अवधि निबन्ध जाने दी और पूर्वी जर्मनी के साथ शान्ति सन्धि करने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

विश्व शान्ति की ओर प्रगति

जिस महान बलिन में दीवार खड़ी की गयी, सोवियत मण ने यह घोषणा करने कि यह अनु-सत्तारों के परीक्षण फिर में खालू करेगा, विश्व के जनमत को फिर से क्रोधित कर दिया। दग घोषणा ने तीन साल पहले का सोवियत संध, इंग्लैण्ड और अमरीका के बीच किया गया परीक्षणों के ऊपर स्तेण्डिक निबंध

आकस्मिक रूप से समाप्त हो गया। अगले दिन १ सितम्बर को सोवियत संघ ने वायुमण्डल में परीक्षण विस्फोटों की ताजिकी शुरु की जिसके कारण रेडियो संचिकाता में बहुत वृद्धि हुई और संसार भर में आनेवाली पीढ़ियों में जनन शक्ति के क्षय का डर फैल गया। जिस मति से लगभग ५० न्यूक्लीय विस्फोट किए गए उनसे पता चलता है कि सोवियत संघ उनकी योजना गुप्त रूप से कई महिनों से कर रहा था और इसी बीच वह अमरीका और इंग्लैंड से स्थायी परीक्षण निषेध सन्धि के लिए नेकनियती से बार्ता करने का दावा भी कर रहा था।

रूसी परीक्षणों के बाद भी राष्ट्रपति केनेडी ने सोवियत संघ से अनुरोध किया कि वह अविश्व में सभी परीक्षणों के निषेध का आश्वासन देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण प्रबन्ध के सम्भोले पर हस्ताक्षर कर दे। यह प्रस्ताव भी टुकरा दिया गया और अमरीका ने बिचारा होकर घोंघणा की कि इसके लिए अब वायुमण्डलीय परीक्षण शुरु करने के सिवा और कई रास्ता नहीं है जिससे शत्रु के न्यूक्लीय आक्रमण का जवाब देने की अपनी क्षमता कायम रह सके। तथापि, अमरीकी सरकार शास्त्रीकरण की होड़ समाप्त करने के अपने दृढ़ निश्चय पर लगातार काम करती रही। उसने एक विशेष शास्त्र नियन्त्रण व निःशस्त्रीकरण अभिकरण की स्थापना की और सन्धि प्राप्त करने के लिए तत्परता से प्रयास करता रहा।

२५ जुलाई १९६३ को ये प्रयास अपनी परिणति पर पहुँचे जब कि अमरीका ब्रिटेन और सोवियत संघ के प्रतिनिधियों ने मास्को में आंशिक आणविक परीक्षण प्रतिबन्ध सन्धि सम्बन्धी सम्झौता किया जिसके अनुसार वायुमण्डल बाह्य-अन्तर्गति और जल में आणविक परीक्षण पर रोक लगा दी गई। इस सन्धि में भूमिगत आणविक परीक्षणों को इसलिए शामिल नहीं किया गया क्योंकि ये तीनों शक्तियाँ भूमिगत परीक्षणों का पता लगाने की किसी प्रभावपूर्ण प्रणाली के बारे में एकमत न हो सकीं। इस आंशिक सन्धि पर औपचारिक रूप से ५ अगस्त १९६३ को हस्ताक्षर हुए। स्वर्गीय जॉन ए. केनेडी के शब्दों में "यह एक पहला कदम था तनाव को कम करने, आणविक दस्त्रान्तों की होड़ को धीमा करने और विश्व को सम्पूर्ण विनाश की ओर फिसलने से बचाने की दिशा में।"

इस अमान अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण के बीच संकटों आदासंबारी अमरीकी नवयुवकों ने स्वेच्छा से बाहर के नवोदित देशों में नर्सों, सर्वेक्षकों, शिक्षकों, स्वास्थ्य मकहई विद्यार्थियों, मिस्त्रियों और कृषि सहायकों का काम करना स्वीकार किया। राष्ट्रपति केनेडी द्वारा मार्च, १९६१ में आरम्भ की गयी इस दान्त-सेना के

सा-मारिटा (केनेडुला) में, जहाँ ८६ किसान परिवारों को उनके अपने फार्मों पर पुनः बसाया गया था, आयोजित 'एलावेन्स थोब प्रायेस' समारोह में भाग लेते हुए राष्ट्रपति बेटनकोर्ट, राष्ट्रपति केनेडी और श्रीमती केनेडी।



KEN

मदर्या ने अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में सामान्य नागरिकों की भांति रहकर काम किया। उनका उद्देश्य अपने में कम सम्पन्न व्यक्तियों की एकता में बाधना है, इस कार्यक्रम के प्रथम वर्ष के अन्त में २२ देशों ने शान्ति सेना के मन्वैयकों की मांग की और कायम ने इन सेना की मदद-सहायता दम हज्राय कर देने के लिए आवश्यक रकम प्रदान की।

अमरीकियों में शान्ति सेना की लोकप्रियता उस साहसिक आदर्शवाद की प्रतीक है जिसकी जड़ें अमरीकी इतिहास में 'उपनिवेशवादी' और 'सोमान' को बसाने के लिए अमरीकी अन्वेलन के समय से ही बहुत गहरी हैं और जिसके फलस्वरूप अमरीकियों ने अनेक देशों के लाखों आश्रयार्थियों को दम देय में स्थापित किया है। यह लक्षण वांछनीय समय

में विश्वविद्यालय क्षेत्रों में भी प्रचलित था जहां विद्यार्थी अध्ययन किये जाने वाले विषयों के संकीर्ण दायरे से बाहर आकर युद्ध शान्ति की समस्याओं, न्यूक्लीय नीति, संयुक्तराष्ट्र और असैनिक अधिकारों के बारे में भी अधिक चिन्तित थे और उन पर बातचीत करते थे। यही आदर्शवाद उपन्यासों, नाटकों संगीत, चित्रकारी, नृत्य, शिल्पकला, चल-चित्र और टेलीविजन क्षेत्र में भी व्याप्त हो गया जहां नए और मौलिक गुणवाले व्यक्ति वैभितान सभ्या में प्रकट हुए। अमरीकी विज्ञान, टंकनीयोंनी और उद्योग की सैद्धांतिक और व्यावहारिक उपलब्धियों में भी यही दृष्टिकोण होता था। और अमरीका के राजनीतिक नेताओं के विश्वशान्ति के समे वृद्धने व देश और विदेश में पारीकी और अत्याय में वृधने की तत्परता का भी यही कारण है।



घाना स्थित एक स्कूल की कक्षा में अध्यापिका के प्रश्न का उत्तर देने के लिए उत्सुक विद्यार्थी। यह अध्यापिका अमरीकी शान्ति सेना की सदस्या है।



कायो यमत्तन में डाक्टरों सहायता को सामान्यतः सुकभ बनाए रखने के लिए राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में जाने वाला भारतीय डाक्टरों दल अपने साज्ज-सामान के साथ एक अमरीकी परिवहन विमान में बंट रहा है।

सहायक पुस्तकों व संदर्भ ग्रन्थों की सूची

- Allen, Frederick Lewis *The Big Change: America Transforms Itself, 1900-1950*, Harper and Brothers, 1952
- Barck, Oscar Theodore
and
Blake, Nelson Manfred *Since 1900: A History of the United States in Our Times*, 3rd Ed., The Macmillan Company, 1959
- Beard, Charles A. and
Mary R. *The Beard's New Basic History of the United States*, Doubleday and Company, Inc., 1960
- The Rise of American Civilization*, The Macmillan Company, 1939
- Bragdon, Henry Wilkinson
and
McCutchen, Samuel Proctor *History of a Free People*, The Macmillan Company, 1961
- Chase, Gilbert *America's Music, from the Pilgrims to the Present*, McGraw-Hill Book Company, Inc., 1955
- Foerster, Norman, Ed. *American Poetry and Prose*, 4th Ed., Houghton Mifflin Company, 1957
- Franklin, John Hope *From Slavery to Freedom Etc.*, Alfred A. Knopf, Inc., 1956
- Hofstadter, Richard *United States: The History of a Republic*, Prentice-Hall, Inc., 1957
- Larkin, Oliver Waterman *Art and Life in America*, 2nd Ed., Henry Holt and Company, Inc., 1960

- Morison, Samuel Eliot and
Commager, Henry Steele *The Growth of the American Republic*, 4th Ed., Oxford University Press, 1950
- Morris, Richard Brandon,
Ed. *Encyclopedia of American History*, 2nd Ed., Harper and Brothers, 1961
- Muzzey, David *Our Country's History*, Ginn and Company, 1961
- Nevins, Allan and
Commager, Henry Steele *The Pocket History of the United States*, Washington Square Press, Inc., 1960
- Parkes, Henry Bamford *The United States of America; a History*, 2nd Ed., Alfred A. Knopf, Inc., 1959
- Parrington, Vernon *Main Currents in American Thought*, Harcourt, Brace, and Company, Inc., 1927
- Saville, Max *A Short History of American Civilization*, The Dryden Press, 1957
- Schlesinger, Arthur Meier, Jr. *The Age of Jackson*, Little, Brown and Company, 1945
- Schlesinger, Arthur Meier, Sr. *Paths to the Present*, The Macmillan Company, 1949
- Smith, Guy E. *American Literature; a Complete Survey*, Littlefield, Adams and Company, 1957



